हिन्दी-समिति-ग्रन्थमाला – २९

सूक्तिसागर

युग-युग के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानो की अमरवाणी का
अनुपम सन्दर्भ-ग्रन्थ

संग्रहकर्ता

रमाशंकर गुप्त, बी०ए०, सी०एल०एस-सी०

प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग
उत्तर प्रदेश

प्रथम सस्करण

१९५९

मूल्य १०)

प्रकाशकीय

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार एव समृद्धि के लिए उत्तर प्रदेश प्रग.सन ने जो योजना परिचालित की है, उसका प्रमुख अग हिन्दी के उत्तमोत्तम ग्रन्थो के रचयिताओ को पुरस्कृत करने के अतिरिक्त स्वय भी विविध विपयो के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ, मौलिक तथा अनूदित, प्रकाशित कर हिन्दी वाड्मय के उन अगो की पूर्ति करना है जिनमें उपयोगी एव प्रामाणिक पुस्तको की नितान्त कमी अथवा अभाव-सा रहा है। ग्रन्थ-प्रकाशन का यह कार्य "हिन्दी समिति" के तत्त्वाववान में सुचारु रूप से चल रहा है और हमारे लिए यह अत्यन्त प्रसन्नता एव गौरव की वस्तु है कि राष्ट्रभापा की उन्नति के इस पुनीत कार्य में हमें इस अल्पकाल में ही अनेक विद्वानो एव विशेपज्ञो का सहयोग प्राप्त हो गया है। इससे हमें आशा होती है कि देश में, विशेपकर हिन्दी भापाभापी जनता में, हमारे इस प्रयास का सर्वत्र स्वागत होगा और हम योजना की सम्पूर्ति में अविकाविक सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

हमारा यह नवीन प्रकाशन हिन्दी-समिति-ग्रन्थमाला का २९वाँ ग्रन्थ है। इसके लेखक श्री रमाशकर गुप्त प्रयाग विश्वविद्यालय के ग्रेजुएट हैं जिनके मन में विद्यार्थी-जीवन से ही हिन्दी के प्रति विशेप अभिरुचि रही है। आप अत्यन्त परिश्रमी तथा अध्ययनशील रहे हैं। आज से लगभग दस वर्प पूर्व आपने हिन्दी, सस्कृत, अग्रेजी आदि के विविध ग्रन्थो से सूक्तियो का सग्रह क ना आरम्भ कर दिया था, जो आज "सूक्ति सागर" के रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत है। इसमें लेखक ने भारत के ही नहीं, यूरोप, अमेरिका, चीन आदि के भी विद्वानो, कवियो, विचारको एव दार्शनिको की चुनी हुई सूक्तियो का समावेश किया है, क्योकि आपकी यह धारणा रही है, जो ठीक ही है, कि महान् विचार सार्वभौम तथा शाश्वत होते हैं और वे भौगोलिक अथवा जाति-पाँति की सीमाओ में बाँधे नही जा सकते।

साहित्य में सूक्तियो का अपना विशेप महत्त्व होता है, क्योंकि उनमें जीवन के व्यापक अनुभवो का निचोड, ज्ञान का सार और नीति-वचनो का उपदेशामृत बडे मनोरम ढग से सन्निविष्ट रहता है। वे हमारा मार्ग-दर्शन ही नही करती वरन् निराशा और विपत्ति के समय उनसे हमें बडी प्रेरणा एव बल मिलता है। सग्रह कैसा बन

पडा है, इसका आभास इसी से मिल जाता है कि अनेक विद्वानो ने मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशसा की है। हमें आशा है कि हिन्दी प्रेमियो के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी और बहुमूल्य प्रमाणित होगा।

भगवतीशरण सिह
सचिव, हिन्दी-समिति

भूमिका

श्री रमाशकर गुप्त द्वारा सकलित 'सूक्तिसागर' ग्रन्थ की पाण्डुलिपि मैंने देखी। श्री गुप्त जी ने विभिन्न देशो के नये और पुराने मनीषियो की सूक्तियो का वहुत सुन्दर सग्रह किया है। सूक्तिया वडे परिश्रम से चुनी गयी है। महापुरुपो की वाणियो में अद्भुत शक्ति होती है। कठिनाई के समय और कर्त्तव्य-गत द्वन्द्व उपस्थित होने पर ये सूक्तिया प्रकाश और प्रेरणा देती है। ससार की समृद्ध भापाओ मे इस प्रकार की सूक्तियो का वडा मान है। सस्कृत साहित्य में तो सुभाषितो का सग्रह वहुत ही समृद्ध है। दीर्घ काल से विषम परिस्थितियो को सुलझानेवाली सूक्तियो को वहुमान देकर हमारे पूर्वजो ने साहित्य के इस अग का महत्त्व स्वीकार किया है।

ससार में व्यवहार-कुशल होने एव सुख पूर्वक निर्वाह के लिए नीति का जानना अति आवश्यक है। सूक्तियो में नीति के वचन थोडे शव्दो में गागर में सागर की भाँति वडी सुन्दरता से व्यक्त होते है। इनमें उपदेश देने की छटा निराली होती है। सूक्तियो की आवश्यकता प्राय विद्यार्थियो, उपदेशको, वक्ताओ, साहित्यकारो एव राजनीतिज्ञो को वरावर पडा करती है। भावो को सजा-सँवार कर सजीव वनाने एव वक्तृत्व कला को चमकाने में ये वडी सहायक होती है।

मुझे गुप्त जी के सग्रह को देखकर वडी प्रसन्नता हुई। 'सूक्तिसागर' वास्तव में यथा नाम तथा गुण के अनुसार सूक्तिसागर ही है। इस सग्रह की कुछ विशेपताएँ उल्लेखनीय है। सूक्तियो के सग्रह अनेक देशी और विदेशी भापाओ के महापुरुपो की रचनाओ से किये गये है। लेखक ने विदेशी भापाओ के लव्धप्रतिष्ठ लेखको की रचनाएँ अधिकतर अग्रेजी के माध्यम से ही पढी है। अग्रेजी समृद्ध भापा है। आज लगभग आधी दुनिया में इसी का वोलवाला है। इसमें प्राय ससार के सभी समृद्ध साहित्यो के निर्माता मनीपियो की प्रमुख-प्रमुख रचनाओ का उत्तम अनुवाद हो चुका है। गुप्त जी ने फ्रेन्च, जर्मन, रूसी, चीनी आदि विदेशी भापाओ की सूक्तिया उन्ही अग्रेजी में अनूदित पुस्तको के माध्यम से ही सगृहीत की है, मूल लेखक की मूल भापाओ से नही। सस्कृत भापा में तो सूक्तियो का भाण्डार है। गुप्त जी ने सस्कृत के महान् कवियो, लेखको, जैसे वाल्मीकि, वेदव्यास, कालिदास, भर्तृहरि, चाणक्य, माघ,

भारवि आदि की रचनाओ से अधिक सूक्तिया सग्रह की हैं। अग्रेजी, फारसी की चुनी हुई सूक्तियो और सस्कृत भाषा की सूक्तियो का मूल देकर इनका हिन्दी अनुवाद भी दे दिया गया है, जिससे इस सग्रह का मूल्य बहुत बढ गया है।

इस सग्रह की एक विशेषता यह भी है कि गुप्त जी ने आधुनिक लेखको, साहित्यकारो, महापुरुषो, राजनीतिज्ञो और सतो की रचनाओ का मथन करके उनकी सूक्तियो को भी सग्रह किया है। विश्व-कवि रवीन्द्र, राष्ट्र-पिता महात्मा गाधी और सत विनोबा की सूक्तियाँ तो अधिक विस्तार से दी गयी हैं। हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग के महारथी प्रसाद, प्रेमचन्द, रामचन्द्र शुक्ल आदि की सूक्तियो को भी यथा स्थान देख कर बडी प्रसन्नता होती है।

सग्रह के अन्त में लेखको की एक विस्तृत और पूर्ण अनुक्रमणिका भी जोड दी गयी है, जिससे पुस्तक की उपादेयता में कई गुनी वृद्धि हुई है। इस सग्रह की कितनी ही सूक्तिया तो इतनी प्रेरणादायक हैं कि उन्हे अमूल्य सम्पत्ति कहा जा सकता है। पुस्तक छात्रो के लिए तो लाभदायक और उपयोगी है ही, पुस्तकालयो के लिए भी सग्रहणीय है। नि सन्देह 'सूक्तिसागर' नये साहित्य के निर्माण में सहायक होगा। मेरा विश्वास है कि हिन्दी-भाषी जनता इस सुन्दर ग्रन्थ का उचित स्वागत करेगी।

हजारीप्रसाद द्विवेदी

परिचय

सूक्तिया साहित्य-गगन में देदीप्यमान उज्ज्वल नक्षत्र के समान हैं। इनकी आभा देश और काल की सकुचित सीमा पार करके सर्वदा एक समान और एक रस रहने वाली है। मानव जीवन के विविध क्षेत्रो में सहस्रो वर्षों की अनुभूतियो ने इनको अमरता प्रदान की है और करोडो कण्ठो से निकलने के कारण इनमें माधुर्य और कोमलता का यथेष्ट परिपाक हुआ है। ये सूक्तियाँ यदि न हो तो साहित्य मे रस की कोई स्थिति ही न रहे और कविता, कहानी, उपन्यास, निवन्ध और वक्तृता की कला विकल हो जाय। दस-बीस वाक्यो को ही नही, पूरे पृष्ठ एव सन्दर्भ को भी सजीव वनाने की इनमें अद्‌भुत क्षमता होती है और वक्तृत्व कला को चमकाने में तो ये अपनी अद्वितीय स्थिति रखती हैं। वहुधा लेखको, कवियो एव साहित्यकारो के समान ही इनकी आवश्यकता सामाजिक कार्य करनेवालो को एव राजनीतिज्ञो को भी हुआ करती है तथा महापुरुषो, उपदेशको एव कथावाचको के समान ही गृहस्थी के विभिन्न झझट में रहनेवाले लोगो को भी इनकी आवश्यकता पडती है। मानव जीवन का ऐसा कोई कोना वचा हुआ नही है, जिस पर अमर सूक्तियो के कण अमृत के समान शीतलता एव प्रेरणा प्रदान करने की शक्ति न रखते हो और ससार की ऐसी कोई जटिल समस्या नही है जिसको वात-की-वात में सुलझाने की सूझ इनसे न मिलती हो।

अनेक प्राचीन साहित्यकारो के सम्वन्ध में ऐसी अनेक किवदन्तिया प्रसिद्ध हैं कि उनकी किसी एक सूक्ति से ही वडे-वडे अनर्थ एव दुर्घटनाए रुक गयी हैं और निविड अन्धकार में भी पथ का प्रदर्शन हुआ है। यही नही, केवल एक सूक्ति को ही लाखो सुवर्ण मुद्राओ में क्रय करने की मनोहर किवदन्तिया भी पायी जाती हैं और उनके द्वारा क्रय करनेवाले का सर्वविध कल्याण भी सुना जाता है। तात्पर्य यह है कि ये सूक्तिया अमूल्य रत्न हैं और इनकी आवश्यकता प्रत्येक सहृदय को सर्वदा पडा करती है।

सूक्तियो में शिक्षा एव सदुपदेश की जितनी अमोघ शक्ति रहती है उतनी ही आत्म-मन्थन एव अनुभूतियो को झकृत करने की भी इनमे क्षमता होती है। सद्‌ग्रन्थो के सैकडो पृष्ठ अथवा किसी सदुपदेशक के घटे दो घटे के मनोहर व्याख्यान भी उतना प्रभाव नही डालते जितना गभीर प्रभाव किसी एक सूक्ति का हमारे हृदय पर

पड़ता है। इसका कारण यह है कि सूक्तियो का प्रभाव सीधे हृदय पर पड़ता है। कर्णकुहरो में पड़ते ही ये विद्युत्तरगो की भाँति समूचे शरीर और अन्तरात्मा को विमुग्ध कर लेती है। मानस की गहराई में व्याप्त आनद की लहरो को उद्वेलित बना देती है और कियत्क्षणो के लिए ऐसा ज्ञात होने लगता है कि हृदय को ब्रह्मानन्द का साक्षात्कार हो रहा है और अकस्मात् बहुत दिनो तक सजोकर रखने योग्य कोई बहुमूल्य मणि मिल गयी है। ऐसी अद्भुत एव विचित्र शक्ति से भरी हुई इन सूक्तियो पर आदिम काल से सहृदयो की लोलुप दृष्टि रही है। और अधिक से अधिक इन बहुमूल्य रत्नो की माला से अपने कण्ठ को अलकृत करने की इच्छा भी सदा से पायी जाती है।

साहित्य का आनन्द ससार में सर्वोपरि माना जाता है। उसकी सज्ञा ब्रह्मानन्द सहोदर ही है। किन्तु सत्य तो यह है कि यदि ये सूक्तियाँ न हो तो साहित्य के उस अमन्द आनन्द को आत्मसात् करना सुगम नही होता। बहुत बार तो ऐसा भी होता है कि कठिन सन्दर्भों एव जटिल शब्द-समूहो को भी ये सूक्तियाँ अत्यन्त प्रसाद गुणयुक्त कर देती है और अपनी मोहिनी प्रभा से अन्धकाराच्छन्न वातावरण को प्रभासित कर देती हैं। एक ओर इनमें गभीर घाव करने की यदि अटूट सामर्थ्य रहती है तो दूसरी ओर वज्र के समान क्रूर-कठोर एव मरुस्थल के समान नीरस हृदय को भी सरस, स्निग्ध एव रसाप्लुत करने की इनमें अपार क्षमता रहती है। इनमें वे पोषक तत्त्व रहते है जो निर्बलो में भी अपार बल भर देते है और निराशा से थके हुए चरणो में पवन की गति डाल देते हैं। नीरस एव बकवादी भी सूक्तियो की चमक से चमत्कृत हो उठता है और गर्वीले से गर्वीले स्वभाववाला भी इनकी अमृतस्यन्दिनी धारा में नहाकर अपने ताप-सन्ताप को दूर कर देता है। दु ख एव वेदना के असह्य भारो को क्षण भर में ही दूर कर देने की तो इनमें वह करामात है जिसका अनुभव भुक्तभोगी ही कर सकता है। तात्पर्य यह है कि विधाता की इस मानव सृष्टि में ये सूक्तियाँ कल्पतरु के समान हैं। इनकी सुविस्तृत सघन छाया में जीवन-पथ की थकान को ही दूर करने की शक्ति नही है, प्रत्युत भविष्य की दुर्गम यात्रा को सुखपूर्वक समाप्त करने का इनमें अक्षय तथा दैवी सम्बल भी रहता है। किंबहुना मानव कर्तव्यो की ऐसी कोई अज्ञात दिशा अथवा अँधेरी गली नही है जिनमें इन सूक्तियो की किरणो का शुभ्र प्रकाश न पड़ता हो। सुख-दु ख, सम्पत्ति-विपत्ति, अनुराग-विराग, सज्जन-दुर्जन, योग-भोग, एव प्रशसा-निन्दा से भरे इस द्वन्द्वात्मक जगत् मे इन सूक्तियो की गति सर्वत्र है। ब्रह्म की भाँति ये सर्वव्यापी बन गयी है और इनके कारण अनादि काल से मानव जीवन को सब प्रकार से सुख-सन्तोष और सबल मिलता आया है।

किन्तु इन सूक्तियो का आनन्द उठाने की पात्रता भी सहृदयो में ही रहती है। सस्कृत साहित्य में इनके अपूर्व सग्रह पाये जाते हैं। और सत्य तो यह है कि उनकी तुलना में विश्व का सुविशाल वाङ्मय अव भी वहुत कुछ रिक्त ही मिलेगा। सूक्तियो एव सुभापितो के जैसे विशाल भाण्डार सस्कृत-साहित्य में पाये जाते हैं वैसे अन्यत्र दुर्लभ हैं। इधर हिन्दी में भी इस प्रकार के दो चार प्रकाशन देखने में आये है, किन्तु उन्हें उतना महत्त्व नही प्राप्त हुआ। उसका मुख्य कारण यही रहा है कि इनके सग्रह-कारो ने पाश्चात्य विदेशी साहित्य एव हिन्दी की पुस्तको से ही उनका सग्रह किया है। सस्कृत के रससिद्ध कवीश्वरो की अमरवाणी को देखने का एव उनसे लाभ उठाने का कष्ट उन्होने नही उठाया है। यदि किसी ने किया भी है तो वह वहुत ही अल्प मात्रा में है।

गुप्त जी के इस 'सूक्तिसागर' का हमने साद्यन्त अवलोकन किया है। मैं यह कहने की स्थिति में हूँ कि यह हिन्दी में अपने ढग की अद्वितीय पुस्तक है। इसमें न केवल सस्कृत, फारसी, उर्दू, हिन्दी, बगला, गुजराती, मराठी आदि भारतीय भाषाओ के विद्वानो एव लेखको की सूक्तिया ही सगृहीत हैं वरन् इसमें विदेशी विद्वानो, लेखको, महापुरुषो एव राजनीतिज्ञो की भी सूक्तिया हैं। देववाणी सस्कृत में सूक्तियो का अक्षय भाण्डार है, गुप्त जी ने उनमें से चुनकर प्राय अति सरस, सरल तथा गेय पदावली की सूक्तियाँ ली हैं, उनका मूल भी जहाँ तक सम्भव था, उन्होने दे दिया है। इसी प्रकार अग्रेजी सूक्तियो का भी मूल पाठ देने की उन्होने चेष्टा की है। उनके इस महान् परिश्रम का सदुपयोग छात्र, वक्ता, विद्वान् एव लेखक—सभी कर सकते हैं।

मैं यह तो नही कह सकता कि जिन-जिन विपयो पर सूक्तियो का सग्रह गुप्त जी ने किया है, उन पर ऐसी सूक्तियो का मिलना कठिन है, जो इसमें नही सगृहीत की गयी हैं, किन्तु मैं यह कह सकता हू कि इतने विभिन्न विपयो पर सूक्तियो के सग्रह का जो श्रमसाध्य कार्य गुप्त जी ने उठाया था, उसका दायित्व उन्होने वडे मनोयोग, निष्ठा और तत्परता से पूरा किया है। यह पुस्तक उनके प्राय दस वर्षो के परिश्रम का फल है। मधु के सचय की भाँति उन्होने न जाने कितने ग्रन्थो एव पत्र-पत्रिकाओ को छाना है। आधुनिक लेखको, कवियो एव कथाकारो की कृतियो का भी उन्होने भलीभाँति परिशीलन किया है। हिन्दी में एकाध सूक्तियो की पुस्तकें अभी कुछ दिनो पूर्व प्रकाशित हुई है, किन्तु उनमें आधुनिक लेखको एव महापुरुषो के विचारो का सग्रह प्राय नही के वरावर है। इस दृष्टि से गुप्त जी का यह सग्रह अनुपम है। जहाँ तक हो सका है, उन्होने अपने अगाध परिश्रम और प्रतिभा के इस प्रासाद को सर्वाङ्ग सुन्दर वनाने की चेष्टा की है। यद्यपि कुछ ऐसे शब्द आपको मिल जायगे, जिनके पर्यायवाची प्रत्येक

शब्द पर सूक्तियो का सकलन इस पुस्तक में अलग-अलग किया गया है, किन्तु ऐसा करने का कारण यह था कि गुप्त जी ने मूल शब्द को ही ध्यान में रखा है। उदाहरण के लिए रमणीयता, सुन्दरता, सौन्दर्य आदि शब्दो की सूक्तियाँ इसलिए पृथक्-पृथक् उपनिबद्ध हैं कि उनके नीचे दी गयी सूक्तियो में उन्ही-उन्ही शब्दो का प्रयोग हुआ है।

एक विशेषता इसकी यह भी है कि इसमें विषयो की अनुक्रमणिका के साथ-साथ लेखको की सूची भी दे दी गयी है और उनकी सूक्तियो के सन्दर्भ भी बता दिये गये हैं। इससे पाठको एव जिज्ञासुओ को विशेष सुविधा मिलेगी—ऐसी आशा है।

हमें परम प्रसन्नता है कि श्री रमाशकर गुप्त जी ने अपने इस सग्रह को सब प्रकार से उपादेय तथा अपूर्व बनाया है। श्री गुप्त जी बडी लगन के व्यक्ति हैं। ज्ञान के प्रति उनमें अविचल निष्ठा है। अपने इस दीर्घ प्रयत्न में उन्होने जो धैर्य और सुरुचि दिखायी है वह सब प्रकार से प्रशसा के योग्य है। मुझे आशा है कि हिन्दी-जगत् उनकी इस उज्ज्वल निधि से विशेष लाभ उठायेगा। हम उनकी इस परिश्रम एव खोजपूर्ण रचना का हृदय से स्वागत करते हैं।

रामप्रताप त्रिपाठी, शास्त्री

निवेदन

मानव-जीवन अथाह सागर की भांति रहस्यमय है और सदा से ही उसकी उलझनो को सुलझाना सुगम नही रहा है। समय समय पर विश्व के महान् विद्वानो, सतो, महापुरुषो तथा जन-नायको ने जीवन-सागर की अतल गहराई में पैठ कर और उसका मथन कर जिन रत्नो का सचयन किया है वे अमूल्य हैं और उनके द्वारा मानव-जीवन का उचित पथ-प्रदर्शन होता आया है। जीवन-पारखी उन्ही महापुरुषो के अनुभवो का साराश हमको उनकी साहित्यिक रचनाओ एव सूक्तियो से प्राप्त होता है जिन्हें वे इस नश्वर जगत् में अपनी अमरता के प्रतीक के रूप में छोड जाते हैं। महापुरुषो के इन्ही विचारो एव सूक्तियो का सहारा लेकर हम मानव-जीवन की गूढ समस्याओ को पूर्णत नही तो अशत हल करने का प्रयत्न कर सकते हैं।

इन सूक्तियो में ससार के अनुभव है, जीवन के बहुमूल्य सिद्धान्त हैं। इनमें शाश्वतिक सत्य, उद्‌बुद्ध चिन्तन और गभीर अनुशीलन की ज्योति अन्तर्हित रहती है। इनमें युगो युगो की मानव चेतना तथा अनुभूतियाँ ही नही हैं, तर्क हैं, युक्तियाँ हैं, निर्देशन है तथा इन सबसे बढकर अटूट विश्वास और गहरी निष्ठा है, जिससे वे हमारा पथ-प्रदर्शन करती हैं। इन सूक्तियो का हमारे नित्यप्रति की जीवनचर्या से लगाव रहता है और इनको हम अपने ही जीवन की निधि मान लेते हैं। अपने जीवन की समस्याओ को सुलझाने का सफल सुझाव इन सूक्तियो द्वारा हम सदैव प्राप्त कर सकते हैं और हमारे लिए वे सभी स्थितियो में माननीय एव आदरणीय है। ये सूक्तियाँ यह भी सिद्ध करती हैं कि मानव-हृदय सभी देशो में एव सभी युगो में एक सा रहा हैं और समान अनुभव मनुष्यो के मस्तिष्क में समान विचार प्रसूत करते हैं।

भारत में जैसे वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, पुराणो तथा धर्मशास्त्र का, सस्कृत के कालिदास, माघ, भारवि आदि अमर कवियो का, तथा कबीर, तुलसी, गाधी, रवीन्द्र और प्रेमचन्द की सूक्तियो एव विचारो का बडा आदर है उसी प्रकार यूनान में सुकरात, प्लेटो और अरस्तू के, चीन में कन्फ्यूशस के, जर्मनी में शोपेनहावर और गेटे के, रूस में टालस्टाय तथा लेनिन के, इंग्लैंड में शेक्सपियर और मिल्टन के और अमेरिका में एमर्सन तथा लिंकन के विचार बडे प्रसिद्ध है।

विद्यार्थी-जीवन से ही सूक्तियो के पीछे मै दीवाना रहा हूँ एव अच्छी पुस्तको का अध्ययन मेरा प्रिय व्यसन रहा है। मेरी आदत रही है कि जहाँ कही भी उनमें कोई सुन्दर सूक्ति मिली उसको अपनी नोटबुक मे लिख लिया। धीरे-धीरे ऐसी सूक्तियो की सख्या में वृद्धि होती गयी और अब तक के मेरे परिश्रम का परिणाम सूक्ति-सागर के रूप में आपके सामने है।

अग्रेजी में इस प्रकार के एक से एक अच्छे ग्रन्थ एव विचार-कोष है परन्तु उनके सपादक सम्भवत भारतीय विद्वानो के विचारो से अनभिज्ञ होने के कारण उनकी सूक्तियो को अपने सग्रहो में स्थान न दे सके। उनको कदाचित् यह ज्ञान ही नही कि भारत आदि काल से विश्व का आध्यात्मिक गुरु रहा है और अपनी गिरी से गिरी दशा में भी उसने सारे विश्व को अध्यात्म, दर्शन एव सात्विक जीवन की शिक्षा दी है और उसके ग्रन्थो में इतने ऊँचे विचार है जहाँ पहुँच कर पाश्चात्य प्रतिभा, फ्रेंच दार्शनिक विक्टर कजिन्स के शब्दो में, भारत के तत्त्वज्ञान के आगे घुटने टेक देती है।

सस्कृत साहित्य तो सूक्तियो का अक्षय भाडार है। इसमें उत्तम सूक्ति-कोप भी है किन्तु राष्ट्र भाषा हिन्दी में इस प्रकार के किसी अच्छे सूक्ति-कोष का अभाव देख कर मुझे खेद हुआ। मैंने अपने पास उपलब्ध सामग्री को ही सकलित करने का निश्चय किया। सूक्ति-सागर उसी निश्चय का फल है। मै चाहता तो पाश्चात्य सग्रह कर्त्ताओ की भाँति सूक्ति-सागर में केवल भारतीय विद्वानो के ही विचार सग्रह करता, किन्तु अनुभव के क्षेत्र में काले-गोरे का यह भेद-भाव मुझे अच्छा नही लगा, क्योकि महान् विचार सार्वभौम तथा शाश्वत होते है और वे भौगोलिक अथवा जाति-पाँति की सीमाओ में बाँधे नही जा सकते।

अस्तु, यह सूक्ति-सागर भिन्न भिन्न देशो के विद्वानो के विचारो एव सूक्तियो का सग्रह है। इसमें जहाँ एक ओर वाल्मीकि, वेदव्यास, गौतम बुद्ध, कालिदास, शकराचार्य, भर्तृहरि, चाणक्य, तुलसी, कबीर, रहीम, रामकृष्ण परमहस, रामतीर्थ, विवेकानन्द, तिलक, गाधी, रवीन्द्र और प्रेमचन्द के चुने हुए विचार है वहाँ दूसरी ओर कनफ्यूशस, सुकरात, प्लेटो , अरस्तू, वर्जिल, गेटे, बेकन, बर्क, शेक्सपियर, टालस्टाय, लेनिन, एमर्सन, लिकन आदि विदेशी विद्वानो की सर्वमान्य सूक्तियाँ भी दी गयी है। सकलित सूक्तियो में प्राच्य बुद्धिमत्ता तथा अध्यात्मवाद के चमत्कार के साथ-साथ पाठको को पाश्चात्य व्यावहारिकता एव भौतिकवाद की आभा भी दृष्टिगोचर होगी।

साहित्य-मर्मज्ञ पद्मभूषण डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी डी० लिट्० अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रति मै हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने सूक्ति-सागर की भूमिका लिख कर इसे गौरवान्वित किया।

हिन्दी के उन अन्य विद्वानो का भी मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर सूक्ति-सागर की पाडुलिपि देखने और अपनी सम्मति लिखने की कृपा की है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के सहायक मत्री, सस्कृत और हिन्दी के प्रकाड विद्वान्, सुविख्यात लेखक एव सूक्ति-पारखी श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री का मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने अपने व्यस्त दैनिक जीवन से पर्याप्त समय निकाल कर सूक्ति-सागर के प्रत्येक पृष्ठ को पढा और अनेकानेक सुझाव दिये तथा 'परिचय' लिखने की कृपा की। उनकी सहृदयता और उदारता को मैं कभी भूल नही सकता।

इसी सिलसिले में मैं अपने अनुज डा० केदारनाथ एम० डी० (रीडर इन मेडिसिन मेडिकल कालेज लखनऊ) के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ तथा अपनी सहधर्मिणी के छोटे भाई श्री वीरेन्द्र कुमार एम० एस-सी० को भी आशीर्वाद दिये विना नही रह सकता जिन्होंने सग्रह तैयार करने में पूर्ण सहयोग दिया है।

अत में मैं उन समस्त सतो, महात्माओ, ऋषियो एव साहित्यकारो के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनकी अमूल्य रचनाओ से मैंने सूक्तियाँ सग्रह कर सूक्ति-सागर को अलकृत और सुसज्जित किया है।

एक प्रार्थना अपने विज्ञ पाठको से है। पुस्तक में जो अपूर्णता और त्रुटि उन्हें खटके उसे वे सग्रहकर्त्ता को सूचित करने का कष्ट करें जिससे अगले सस्करण में उनसे लाभ उठाया जा सके।

विनीत

बी/३ राधा बिल्डिग
चौक, लखनऊ

रमाशकर गुप्त
(सग्रहकर्त्ता)

श

अंतःकरण

सता हि सदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्त करणप्रवृत्तय. ।

सन्देह की स्थिति में सज्जनो के अत करण की प्रवृत्ति ही प्रमाण होती है।

—कालिदास (अभिज्ञान शाकुन्तलम्)

The foundation of true joy is in the conscience

सच्चे आनन्द का आधार हमारे अत करण में ही है। —सेनेका

जिस प्रकार दीपक दूसरी वस्तुओ को प्रकाशित करता है और अपने स्वरूप को भी प्रकाशित करता है, उसी प्रकार अत करण दूसरी वस्तुओ का भी प्रत्यक्ष करता है और अपना भी प्रत्यक्ष करता है। —डा० सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

Man's conscience is the oracle of God

मानव का अत करण ही ईश्वर की वाणी है। —बायरन

In matters of conscience, the law of majority has no place

अत करण के मामले में बहुमत के नियम को कोई स्थान नही है।

—महात्मा गाधी

The torture of a bad conscience is the hell of a living soul

पापी अत करण की यत्रणा जीवित मनुष्य के लिए नरक है। —काल्विन

निर्मल अत करण को जिस समय जो प्रतीत हो वही सत्य है। उस पर दृढ रहने मे शुद्ध सत्य की प्राप्ति हो जाती है। —महात्मा गाधी

दयाशील अत करण प्रत्यक्ष स्वर्ग है। —स्वामी विवेकानन्द

Conscience is the voice of the soul as the passions are the voice of the body No wonder they often contradict each other.

अत करण आत्मा की वाणी है, जैसे कि वासनाए शरीर की। इसमे आश्चर्य ही क्या यदि वे एक दूसरे का खडन करती हैं। —रूसो

ज्ञाताज्ञात पाप ही अत करण की मलिनता है। जब तक अत करण मलरहित, पापरहित नही होगा, तब तक वास्तविक दृष्टि—दिव्य-दृष्टि—का उदय नही होगा।

—स्वामी शकराचार्य

Conscience, though ever so small a worm while we live, grows suddenly into a serpent on our death-bed

अत करण यद्यपि, जव तक हम जीवित रहते हैं, एक तुच्छ कीडे के रूप में रहता है, तथापि वही मृत्यु-शय्या पर अकस्मात् सर्प का रूप धारण कर लेता है।

—जेरोल्ड

There is no witness so terrible—no accuser so powerful as conscience which dwells within us

कोई साक्षी इतना विकट और कोई अभियोक्ता इतना शक्तिशाली नही है, जितना कि अपना ही अत करण। —सोफोक्लीज

वही मनुष्य ईश्वर के दर्शन कर सकता है, जिसका अत करण निर्मल और पवित्र है।

—स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

अत करण जव प्रेमानुभूति से आप्लुत हो जाता है, तभी जीवन की गति सरल हो जाती है। —अज्ञात

Cowardice asks, Is it safe ? Expediency asks, Is it politic ? Vanity asks, Is it popular ? but Conscience asks, Is it right ?

कायरता पूछती है—क्या यह भयरहित है ? औचित्य पूछता है—क्या यह व्यावहारिक है ? अहकार पूछता है—क्या यह लोकप्रिय है ? परन्तु अत करण पूछता है—क्या यह न्यायोचित है ? —पुन्शान

Conscience is a coward, and those faults it has not strength to prevent, it seldom has justice to accuse

अत करण डरपोक होता है, और जिन दोषो को रोकने की उसमें शक्ति नहीं होती, उन्हें अपराधी ठहराने की उसमें प्राय न्यायवुद्धि भी नही होती।

—गोल्डस्मिथ (विकार आफ वेकफील्ड)

Conscience does make cowards of us all

अत करण हम सव को कायर वना देता है। —शेक्सपियर (हैम्लेट)

The soft whispers of the God in man.

ईश्वर का मानव ने कोमल सलाप ही अत करण है। —यग

मनुष्य के अन्दर ईश्वर की उपस्थिति को अत करण कहते है।

—स्वेडन बोर्ग

केवल निष्काम कर्मयोग के साधन से भी अत करण की शुद्धि होकर अपने आप ही परमात्मा के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान हो जाता है। —अज्ञात

जैसे नेत्रो में जरा भी कण पड जाने से कोई वस्तु ठीक-ठीक नही दीख पडती, ऐसे ही अत करण में थोडी भी वासना रहने से आत्मा के दर्शन नही हो पाते।

—स्वामी भजनानन्द

जैसे कपडे को साफ करने के लिए साबुन, सोडा, रेह तथा रीठा आदि अनेक वस्तुएँ है, इसी प्रकार अन्त करण को शुद्ध करने के लिए कर्म, भक्ति, ज्ञान, जप, तप, प्राणायाम व सत्सग आदि अनेक साधन है। —अज्ञात

मनुष्य का अन्त करण उसके आकार, सकेत, गति, चेहरे की बनावट, बोलचाल तथा आँख और मुख के विकारो से मालूम पड जाता है। —पचतन्त्र

जैसे शीशे में अपना चेहरा तभी दिखलाई पडता है जब कि शीशा साफ व स्थिर हो, इसी प्रकार शुद्ध अन्त करण में ही भगवान् के दर्शन होते है।

—स्वामी भजनानन्द

अन्त करण को 'मैं, मेरा' ये भावनाएँ बहुत तकलीफ देती है। इनके निकल जाने से अन्त करण को उसी प्रकार सुख होता है जैसे काँटा निकल जाने से शरीर को।

—अज्ञात

मैले शीशे में सूर्य की किरणो का प्रतिबिम्ब नही पडता। उसी प्रकार जिनका अन्त करण मलिन और अपवित्र है उनके हृदय में ईश्वर के प्रकाश का प्रतिबिम्ब नहीं पड सकता। —रामकृष्ण परमहस

Conscience is the chamber of justice.

अत करण न्याय का कक्ष है। —ओरिजन

अंत

सर्वे क्षयान्ता निचया. पतनान्ता समुच्छ्रया ।
सयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्त च जीवितम् ॥

सभी सग्रहो का अन्त क्षय है, वहुत ऊँचे चढने का अन्त नीचे गिरना है। सयोग का अन्त वियोग है और जीवन का अन्त मरण है। —वाल्मीकि रामायण

अंधकार

It is always darkest just before the day dawneth
प्रभात होने से पूर्व घोर अधकार होता है। —फुलर

तमसो मा ज्योतिर्गमय। —मुझे अधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।

आरोह तमसो ज्योति । —अधकार (अविद्या) से निकलकर प्रकाश (ज्ञान) की ओर बढो। —वेद

अंधा

को वा महान्धो, मदनातुरो य ।
बडा भारी अधा कौन है, जो काम-वश व्याकुल है। —स्वामी शकराचार्य

Darkness travels towards light, but blindness towards death.
अधकार प्रकाश की ओर चलता है, परन्तु अधापन मृत्यु की ओर।
—रवीन्द्र

कजूस आदमी अधा होता है, क्योकि वह धन के सिवाय और किसी सम्पत्ति को नही देखता। फिजूलखर्ची करनेवाला अधा होता है क्योकि वह आज को ही देखता है, कल को नही देखता। रिझानेवाली नारी अधी होती है क्योकि वह बुढापे की झुरियाँ नही देखती। विद्वान् अधा होता है क्योकि वह अपने अज्ञान को नही देखता।
—विक्टर ह्यूगो

न पश्यन्ति च जन्मान्धा कामान्धो नैव पश्यति।
मदोन्मत्ता न पश्यन्ति अर्थी दोष न पश्यति॥

जन्म से अधे नही देखते, काम से जो अधा हो रहा है उसको सूझता नही, मदोन्मत्त किसी को देखते नही, स्वार्थी मनुष्य दोषो को नही देखता। —चाणक्य

अंधा वह नहीं है जिसकी आँखें फूट गयी हैं, वरन् वह है जो अपने दोष छिपाता है।

—एक संत

अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः ॥

शास्त्रों द्वारा नाना प्रकार के संशयों का निराकरण और परोक्ष विषयों का ज्ञान होता है। इसलिए शास्त्र सभी के नेत्ररूप हैं। इसी लिए कहा जाता है कि जिसे शास्त्रों का ज्ञान नहीं वह एक प्रकार से अंधा है।

—हितोपदेश

अकर्म में कर्म

एक स्थिति ऐसी होती है जब मनुष्य को विचार प्रकट करने की आवश्यकता नहीं रहती। उसके विचार ही कर्म बन जाते हैं, वह संकल्प से कर्म कर लेता है। ऐसी स्थिति जब आती है तब मनुष्य अकर्म में कर्म देखता है, अर्थात् अकर्म से कर्म होता है।

—महात्मा गांधी

अकर्मण्य

पुरुषार्थी मनुष्य सर्वत्र भाग्य के अनुसार प्रतिष्ठा पाता है, परंतु जो अकर्मण्य है, वह सम्मान से भ्रष्ट होकर घाव पर नमक छिड़कने के समान असह्य दुःख भोगता है।

—वेदव्यास (महाभारत, अनु०)

अकर्मण्यता

Nature knows no pause in her progress and development, and attaches her curse on all inaction.

प्रकृति अपनी उन्नति और विकास में रुकना नहीं जानती और अपना अभिशाप प्रत्येक अकर्मण्यता पर लगाती है।

—गेटे

Inactivity is death —अकर्मण्यता मृत्यु है।

—मुसोलिनी

अकृतज्ञ

अकृतज्ञ मानव से एक कृतज्ञ कुत्ता बेहतर है।

—संत सादी

वार-बार शरीर धारण करना जीव के अज्ञान का परिणाम है।

—डा० सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

अज्ञान हठधर्म की जननी है। —पोप

अज्ञान की अवस्था में सर्वस्व खो जाने पर भी वेदना सोयी रहती है।

—अज्ञात

आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञा काम व्यग्रा भवन्ति च।
महारम्भा कृतवियस्तिष्ठन्ति च निराकुला ॥

अज्ञानी मनुष्य थोडा ही आरभ करते हैं और बहुत व्याकुल होते है, परन्तु ज्ञानी बडा कार्य आरम्भ करने पर भी नही घबराते।

— हितोपदेश

अशिक्षित रहने से पैदा न होना अच्छा है, क्योकि अज्ञान विपत्तियो का मूल है।

— प्लेटो

To be proud of learning is the greatest ignorance

अपनी विद्वत्ता पर अभिमान करना सबसे बडा अज्ञान है। —जैरेमी टेलर

To be ignorant is not the special prerogative of man , to know that he is ignorant is his special privilege

अज्ञानी होना मनुष्य का असाधारण अधिकार नही है, वरन् अपने को अज्ञानी जानना ही उसका विशेष अधिकार है। —डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

There are times when ignorance is bliss, indeed

कभी-कभी ऐसा भी समय आता है जब अज्ञानता ही सुखद होती है।

— डिकेन्स

अज्ञान के समान दूसरा वैरी नही है। — चाणक्य

There is no darkness but ignorance

अज्ञान ही अधकार है। —शेक्सपियर (ट्वेल्फ्थ नाइट)

Where ignorance is bliss,
'Tis folly to be wise.
जहाँ अज्ञानता परम सुख हो वहाँ ज्ञानी होना मूर्खता है। —ग्रे

Ingratitude is treason to mankind

अकृतज्ञता मानवता के प्रति विश्वासघात है। —टामसन

Not to return one good office for another is inhuman, but to return evil for good is diabolical

नेकी का बदला न देना क्रूरता है और उसका बदी में जवाब देना पिशाचता है। — सेनेका

अकृतज्ञता ही मनुष्यत्व का विष है। — सर पी० सिडनी

Brutes leave ingratitude to man

पशुओ ने अकृतज्ञता मानव के लिए छोड दी है। — कोल्टन

अकेला

The strongest man of the world is the one who stands most alone

ससार में सबसे शक्तिशाली मनुष्य वही है जो अकेला (आत्म-निर्भर) रहता है। — इब्सन

They walk with speed who walk alone

जो अकेले चलते है वे तेजी से बढते है। — नेपोलियन

एकेनापि हि शूरेण पदाक्रान्त महीतलम्।
क्रियते भास्करेणेव स्फारस्फुरिततेजसा॥

जिस प्रकार सूर्य अकेला ही अपनी किरणो से समस्त ससार को प्रकाशमान कर देता है, उसी प्रकार एक ही वीर अपनी शूरता और पराक्रम-साहस से सारी पृथ्वी को अपने पैरो तले कर लेता है। — भर्तृहरि

अज्ञान

Ignorance is the night of the mind but a night without moon or star

अज्ञान मन की रात्रि है, लेकिन वह रात्रि जिसमें न तो चाद है और न तारे। — कनफ्यूशस

बार-बार शरीर धारण करना जीव के अज्ञान का परिणाम है।

—डा० सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

अज्ञान हठधर्म की जननी है। —पोप

अज्ञान की अवस्था में सर्वस्व खो जाने पर भी वेदना सोयी रहती है।

—अज्ञात

आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञा काम व्यग्रा भवन्ति च।
महारम्भा कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुला ॥

अज्ञानी मनुष्य थोडा ही आरभ करते हैं और बहुत व्याकुल होते है, परन्तु ज्ञानी बडा कार्य आरम्भ करने पर भी नही घबराते।

—हितोपदेश

अशिक्षित रहने से पैदा न होना अच्छा है, क्योंकि अज्ञान विपत्तियो का मूल है।

—प्लेटो

To be proud of learning is the greatest ignorance

अपनी विद्वत्ता पर अभिमान करना सबसे बडा अज्ञान है। —जॅरेमी टेलर

To be ignorant is not the special prerogative of man , to know that he is ignorant is his special privilege

अज्ञानी होना मनुष्य का असाधारण अधिकार नहीं है, वरन् अपने को अज्ञानी जानना ही उसका विशेष अधिकार है। —डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

There are times when ignorance is bliss, indeed

कभी-कभी ऐसा भी समय आता है जब अज्ञानता ही सुखद होती है।

—डिकेन्स

अज्ञान के समान दूसरा वैरी नहो है। —चाणक्य

There is no darkness but ignorance

अज्ञान ही अंधकार है। —शेक्सपियर (ट्वेल्फ्थ नाइट)

Where ignorance is bliss,
'Tis folly to be wise.
जहाँ अज्ञानता परम सुख हो वहाँ ज्ञानी होना मूर्खता है। —ग्रे

अज्ञान को ज्ञान ही मिटा सकता है। —स्वामी शकराचार्य

Ignorance is the mother of fear
अज्ञान भय की जननी है। —एच० होम

अज्ञानी

हितहू की कहिये नही, जो नर होय अबोध।
ज्यो नकटे को आरसी, होत दिखाये क्रोध॥ —वृन्द

निपट अबुध समझै कहा, बुध-जन-वचन-विलास।
कबहू भेक न जानई, अमल कमल की बास॥ —अज्ञात

रूपयौवनसपन्ना विशालकुलसभवा।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुका॥

(सुन्दर, तरुण और बडे कुल में उत्पन्न भी विद्याहीन (अज्ञानी) मनुष्य ऐसे नही शोभा पाते जैसे विना गन्ध वाला पलाश का फूल।) —चाणक्य

अति

अतिरूपेण वै सीता अतिगर्वेण रावण।
अतिदानाद्वलिर्बद्धो ह्यति सर्वत्र वर्जयेत्॥ —चाणक्य

अति सुन्दरता के कारण सीता हरी गयी, अति गर्व से रावण मारा गया, अति दान के कारण वलि को बँधना पडा, अति को सब जगह छोड देना चाहिए।

Excess generally causes reaction, and produces a change in the opposite direction, whether it be in the season, or in individual or in government

प्राय अति से प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है और विपरीत दिशा में परिवर्तन होता है, चाहे यह ऋतु, व्यक्ति या शासन में हो।

—प्लेटो

There can be no excess to love, to knowledge, to beauty, when these attributes are considered in the purest sense

प्रेम में, ज्ञान में और सौन्दर्य में कभी अति नही होती, जब ये गुण पूर्ण शुद्ध अर्थ में समझे जायं। —एमर्सन

अति संघरपन जौं कर कोई।
अनल प्रगट चदन ते होई।। —तुलसी (मानस, उत्तर)

अधिक हर्ष और अधिक उन्नति के बाद ही अधिक दुःख और पतन की बारी आती है। —जयशंकर प्रसाद

अतिथि

'अतिथि देव' का अर्थ है समाज-देवता।

समाज अव्यक्त है अतिथि व्यक्त है। अतिथि समाज की व्यक्त मूर्ति है। —विनोबा

अकर्मण्य, बहुत खानेवाले, क्रूर, देश-काल का ज्ञान न रखनेवाले और निन्दित वेश धारण करनेवाले मनुष्य को कभी अपने घर में न ठहरने दे। —विदुर

The first day, a guest, the second, a burden, the third, a pest

पहले दिन अतिथि, दूसरे दिन बोझ और तीसरे दिन कंटक है। —लेबोये

अतिथि समाज का एक प्रतिनिधि है। अतिथि के रूप में समाज हमसे सेवा माँग रहा है, हमारी यह भावना होनी चाहिए। —विनोबा

अतिथि-सत्कार

अतिथि-सत्कार से मनुष्य देवत्व को प्राप्त होता है। —बाइबिल

जो मनुष्य योग्य अतिथि का प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करता है, उसके घर में निवास करने से लक्ष्मी को आह्लाद होता है। —संत तिरुवल्लुवर

पुष्प सूंघने से मुरझा जाता है, मगर अतिथि का दिल तोड़ने के लिए एक निगाह ही काफी है। —संत तिरुवल्लुवर

किसी को भी भूख-प्यास अगर न लगती तो हमें अतिथि-सत्कार का मौका कैसे मिलता। —विनोबा

True friendship's laws are by this rule expressed welcome the coming, speed the parting guest

सच्ची मित्रता के नियम इस सूत्र से सूचित होते हैं—आनेवाले का स्वागत करना, जानेवाले को शीघ्रता से विदा करना। —पोप

अज्ञान को ज्ञान ही मिटा सकता है। —स्वामी शकराचार्य

Ignorance is the mother of fear
अज्ञान भय की जननी है। —एच० होम

अज्ञानी

हितहू की कहिये नही, जो नर होय अबोध।
ज्यो नकटे को आरसी, होत दिखाये क्रोध।। —वृन्द

निपट अबुध समझै कहा, बुध-जन-वचन-विलास।
कवहू भेक न जानई, अमल कमल की बास।। —अज्ञात

रूपयौवनसपन्ना विशालकुलसभवा ।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुका ।।

(सुन्दर, तरुण और वडे कुल में उत्पन्न भी विद्याहीन (अज्ञानी) मनुष्य ऐसे नही शोभा पाते जैसे विना गन्ध वाला पलाश का फूल।) —चाणक्य

अति

अतिरूपेण वै सीता अतिगर्वेण रावण ।
अतिदानाद्वलिर्वद्धो ह्यति सर्वत्र वर्जयेत्।। —चाणक्य

अति सुन्दरता के कारण सीता हरी गयी, अति गर्व से रावण मारा गया, अति दान के कारण वलि को वँधना पडा, अति को सव जगह छोड देना चाहिए।

Excess generally causes reaction, and produces a change in the opposite direction, whether it be in the season, or in individual or in government

प्राय. अति से प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है और विपरीत दिशा में परिवर्तन होता है, चाहे यह ऋतु, व्यक्ति या शासन में हो।

—प्लेटो

There can be no excess to love, to knowledge, to beauty, when these attributes are considered in the purest sense.

प्रेम में, ज्ञान में और सौन्दर्य में कभी अति नही होती, जव ये गुण पूर्ण शुद्ध अर्थ में समझे जायं। —एमर्सन

अति सघरषन जौं कर कोई।
अनल प्रगट चंदन तें होई॥ —तुलसी (मानस, उत्तर)

अधिक हर्ष और अधिक उन्नति के बाद ही अधिक दुःख और पतन की बारी आती है। —जयशंकर प्रसाद

अतिथि

'अतिथि देव' का अर्थ है समाज-देवता।

समाज अव्यक्त है अतिथि व्यक्त है। अतिथि समाज की व्यक्त मूर्ति है। —विनोबा

अकर्मण्य, बहुत खानेवाले, क्रूर, देश-काल का ज्ञान न रखनेवाले और निन्दित वेश धारण करनेवाले मनुष्य को कभी अपने घर में न ठहरने दे। —विदुर

The first day, a guest, the second, a burden, the third, a pest.

पहले दिन अतिथि, दूसरे दिन बोझ और तीसरे दिन कंटक है। —लैबोये

अतिथि समाज का एक प्रतिनिधि है। अतिथि के रूप में समाज हमसे सेवा माँग रहा है; हमारी यह भावना होनी चाहिए। —विनोबा

अतिथि-सत्कार

अतिथि-सत्कार से मनुष्य देवत्व को प्राप्त होता है। —बाइबिल

जो मनुष्य योग्य अतिथि का प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करता है, उसके घर में निवास करने से लक्ष्मी को आह्लाद होता है। —संत तिरुवल्लुवर

पुष्प सूँघने से मुरझा जाता है, मगर अतिथि का दिल तोड़ने के लिए एक निगाह ही काफी है। —संत तिरुवल्लुवर

किसी को भी भूख-प्यास अगर न लगती तो हमें अतिथि-सत्कार का मौका कैसे मिलता। —विनोबा

True friendship's laws are by this rule expressed welcome the coming, speed the parting guest

सच्ची मित्रता के नियम इस ढंग से सूचित होते हैं—आनेवाले का स्वागत करना, जानेवाले को शीघ्रता से विदा करना। —पोप

अज्ञान को ज्ञान ही मिटा सकता है। —स्वामी शकराचार्य

Ignorance is the mother of fear
अज्ञान भय की जननी है। —एच० होम

अज्ञानी

हितहू की कहिये नही, जो नर होय अबोध।
ज्यो नकटे को आरसी, होत दिखाये क्रोध॥ —वृन्द

निपट अबुध समझै कहा, बुध-जन-वचन-विलास।
कबहू भेक न जानई, अमल कमल की बास॥ —अज्ञात

रूपयौवनसपन्ना विशालकुलसभवा।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुका॥

(सुन्दर, तरुण और बडे कुल में उत्पन्न भी विद्याहीन (अज्ञानी) मनुष्य ऐसे नही शोभा पाते जैसे विना गन्ध वाला पलाश का फूल।) —चाणक्य

अति

अतिरूपेण वै सीता अतिगर्वेण रावण।
अतिदानाद्वलिर्बद्धो ह्यति सर्वत्र वर्जयेत्॥ —चाणक्य

अति सुन्दरता के कारण सीता हरी गयी, अति गर्व से रावण मारा गया, अति दान के कारण वलि को वँधना पडा, अति को सब जगह छोड देना चाहिए।

Excess generally causes reaction, and produces a change in the opposite direction, *whether it be in the season, or in individual or* in government

प्राय. अति से प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है और विपरीत दिशा में परिवर्तन होता है, चाहे यह ऋतु, व्यक्ति या शासन में हो।

—प्लेटो

There can be no excess to love, to knowledge, to beauty, when these attributes are considered in the purest sense

प्रेम में, ज्ञान में और सौन्दर्य में कभी अति नही होती, जब ये गुण पूर्ण शुद्ध अर्थ में समझे जायं। —एमर्सन

अति सघरपन जौं कर कोई।
अनल प्रगट चदन ते होई॥ —तुलसी (मानस, उत्तर)

अधिक हर्ष और अधिक उन्नति के बाद ही अधिक दुःख और पतन की बारी आती है। — जयशंकर प्रसाद

अतिथि

'अतिथि देव' का अर्थ है समाज-देवता।

समाज अव्यक्त है अतिथि व्यक्त है। अतिथि समाज की व्यक्त मूर्ति है। — विनोबा

अकर्मण्य, बहुत खानेवाले, क्रूर, देश-काल का ज्ञान न रखनेवाले और निन्दित वेश धारण करनेवाले मनुष्य को कभी अपने घर में न ठहरने दे। —विदुर

The first day, a guest, the second, a burden, the third, a pest

पहले दिन अतिथि, दूसरे दिन बोझ और तीसरे दिन कटक है। — लेबोया

अतिथि समाज का एक प्रतिनिधि है। अतिथि के रूप में समाज हमसे सेवा माग रहा है, हमारी यह भावना होनी चाहिए। — विनोबा

अतिथि-सत्कार

अतिथि-सत्कार से मनुष्य देवत्व को प्राप्त होता है। — बाइबिल

जो मनुष्य योग्य अतिथि का प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करता है, उसके घर में निवास करने से लक्ष्मी को आह्लाद होता है। — संत तिरुवल्लुवर

पुष्प सँघने से मुरझा जाता है, मगर अतिथि का दिल तोड़ने के लिए एक निगाह ही काफी है। — संत तिरुवल्लुवर

किसी को भी भूख-प्यास अगर न लगती तो हमें अतिथि-सत्कार का मौका कैसे मिलता। — विनोबा

True friendship's laws are by this rule expressed welcome the coming, speed the parting guest

सच्ची मित्रता के नियम इस सूत्र से सूचित होते हैं—आनेवाले का स्वागत करना, जानेवाले को शीघ्रता से विदा करना। —पोप

यदि कुछ न हो तो प्रेमपूर्वक बोलकर ही अतिथि का सत्कार करना चाहिए।
—हितोपदेश

अतिथि-सत्कार मनुष्य का परम कर्तव्य है। —बाइबिल

रहिमन तब लगि ठहरिए, दान-मान सनमान।
घटत मान देखिय जबहिं, तुरतहि करिय पयान।। —रहीम

प्रेम रीति से जो मिलै, तासो मिलिए धाय।
अतर राखे जो मिलै, तासो मिलै बलाय।। —कबीर

आवत ही हर्षे नही, नयनन नही सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइए, कचन बरसे मेह।। —तुलसी

An honest, hearty welcome to a guest works miracles with the fare, and is capable of turning the coarsest food to nectar and ambrosia

अतिथि के साथ सच्चे और हार्दिक स्वागत में वह शक्ति है कि जो साधारण से साधारण भोजन को अमृत और देवताओ का भोजन बना देती है। —हाथोनी

अति भोजन

बहुत खानेवाले मनुष्य का कभी आदर नही होता। —सादी

Their kitchen is their shrine, the cook their priest, the table their altar, and their belly their God

उन (पेटू मनुष्यो) की पाकशाला उनका तीर्थ-स्थान, रसोइया उनका पुरोहित, मेज उनकी वेदी और पेट उनका ईश्वर है। —बक

अतीत की स्मृति

The music of the far-away summer flatters around the autumn seeking its former nest

ग्रीष्मकाल का सगीत, शरत्काल के आसपास, अपने पुराने निवास की खोज में फडफडा रहा है। —रवीन्द्र

I desire no future that will break the ties of the past

मैं ऐसे भविष्य को नहीं चाहती, जो अतीत से मेरा सम्बन्ध छुड़ा दे।

—जार्ज इलियट

अतीत चाहे दुःखद ही क्यों न हो, उसकी स्मृतियां मधुर होती हैं। —प्रेमचन्द

Study the past if you would divine the future

भविष्य का अनुमान लगाने के लिए अतीत का अध्ययन करो। —कनफ्यूशस

अतृप्त

पक्षी चाहता है—'मैं बादल होता'।
बादल चाहता है—'मैं पक्षी होता'। —रवीन्द्र

धनेषु जीवितव्येषु स्त्रीषु चाहारकर्मसु।
अतृप्ताः प्राणिनः सर्वे याता यास्यन्ति यान्ति च॥ —चाणक्य

धन, जीवन, स्त्री और भोजन के विषय में सब प्राणी अतृप्त होकर गये, जाते हैं और जायेंगे।

The desire of the moth for the star
Of the night for the morrow,
The devotion to something afar
From the sphere of our sorrow

पतिंगे की नक्षत्र के लिए इच्छा, रात्रि की दिवस के प्रति और अपने दुःख से एक अज्ञात सुख की कामना—यही तो जीवन की चिर-अतृप्त इच्छा है। —शेली

अत्याचार

Cruelty and fear shake hands together

अत्याचार और भय परस्पर हाथ मिलाते हैं। —बाल्जक

अत्याचार-परायण राजसत्ता जब अपनी शक्ति बढ़ाती हुई अत्याचार की मात्रा बढ़ाती जाती है, तब उसकी गति को रोकना अनिवार्य हो जाता है। ऐसी अवस्था में छल, बल और कौशल से काम लिये बिना काम नहीं चलता।

—[illegible]

अनाचार और अत्याचार को चुपचाप सिर झुकाकर वे ही सहन करते है जिनमें नैतिकता और चरित्र का अभाव हुआ करता है। —अज्ञात

Man's inhumanity to man
Makes countless thousands mourn !

मानव का मानव के प्रति अत्याचार असख्य मनुष्यो को दु ख में डाल देता है।
—राबर्ट बर्न्स

अत्याचार जब निरकुश होकर नग्न ताण्डव करने लगता है, तब बलिवेदी पर चढने को तैयार होने के सिवा और कोई भी उपाय नही रह जाता। —अज्ञात

All cruelty springs from hard-heartedness and weakness

समस्त अत्याचार क्रूरता एव दुर्बलताओ से उत्पन्न होते हैं। —सेनेका

अत्याचारी

Kings will be tyrants from policy, when subjects are rebels from principle

जब प्रजा सिद्धान्त के लिए विद्रोह करती है तब राजा अपनी नीति से अत्याचारी हो जाता है। —बर्क

बद अख्तर तरज़ मरदुमाज़ार नेस्त।
कि रोज़े मुसीबत कसरा भार नेस्त।।

अत्याचारी से बढकर अभागा आदमी और कोई नही है, क्योकि विपत्ति के समय उसका कोई मित्र नही होता। —सादी (गुलिस्तां)

अन्यायी और अत्याचारी की करतूतें मनुष्यता के नाम खुली चुनौती है, जिसे वीर पुरुषो को स्वीकार करना ही चाहिए। —अज्ञात

Rebellion to tyrants is obedience to God

अत्याचारी के प्रति विद्रोह करना ईश्वर की आज्ञा मानना है। —फ्रैंकलिन

जो अत्याचारी है उसका सोना जागने से अच्छा है, सच तो यह है कि उसके जीवन से उसका मरण ही अच्छा है। —सादी (गुलिस्तां)

That sovereign is a tyrant who knows no law but his own caprice

वह शासक अत्याचारी है जो अपनी इच्छा के अतिरिक्त कोई नियम नही जानता। —वाल्टेयर

अधर्म

अधर्म की सेना का सेनापति झूठ है, जहाँ झूठ पहुँच जाता है वहाँ अधर्म राज्य की विजय-दुन्दुभी अवश्य बजती है। —सुदर्शन (पुष्पलता)

अधर्म साम्राज्य-लोलुपता की तरह बर्बर और स्वार्थमय है। —रस्किन

The most complete injustice is to seem just, when not so

अपने को न्यायी दिखलाना, जब कि ऐसा न हो, सबसे बडा अधर्म है। —प्लेटो (रिपब्लिक)

जो अधर्म करते है चाहे उन्हें उसका फल तत्काल न मिले पर धीरे-धीरे वह उनकी जड़ काट डालता है। —वेदव्यास (महा० आ० प०)

अधर्म पर स्थापित राज्य कभी नही टिकता। —सेनेका

जैसे बुढापा सुन्दर रूप-रग का नाश कर देता है उसी प्रकार अधर्म से लक्ष्मी का नाश हो जाता है। —स्वामी भजनानन्द

अधिकार

अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है। —जयशकर प्रसाद

Power corrupts, absolute power absolutely

अधिकार भ्रष्ट करता है, पूर्ण अधिकार पूर्ण रूप से। —लार्ड आक्टन

Power, like a desolating pestilence
Pollutes whatever it touches

अधिकार विनाशकारी प्लेग के सदृश है। यह जिसे छूता है उसे ही भ्रष्ट कर देता है। —शेली

ससार में सबसे बड़े अधिकार सेवा और त्याग से मिलते हैं। —प्रेमचन्द

अधिकारमद पीत्वा को न मुह्यात् पुनश्चिरम् ।

अधिकाररूपी मदिरा का पान कर कौन है जो चिरकाल तक उन्मत्त नहीं बना रहता । —शुक्राचार्य (शुक्रनीति)

अपनत्व की अनुभूति ही तो अधिकारो की जननी है । —अज्ञात

नहर यह सोचना पसन्द करती है कि नदियाँ केवल उसे जल देने के लिए है ।
—रवीन्द्र

अधिकारो की भी सीमा होती है और शासन का समय । सीमा लाँघने के बाद अधिकार अधिकार न रहकर तानाशाही बन जाता है, समय लाँघने के बाद शासन अत्याचार की भयानकता बन जाता है । —अज्ञात

अध्ययन

Studies serve for delight, for ornament and for ability

अध्ययन आनद का, अलकरण का और योग्यता का काम करता है ।
—बेकन

Read not to contradict and confute, nor to believe and take for granted, nor to find talk and discourse, but to weigh and consider

अध्ययन खडन और असत्य सिद्ध करने के लिए न करो, न विश्वास करके मान लेने के लिए करो, न वातचीत और विवाद करने के लिए करो, वल्कि मनन और परिशीलन के लिए करो । —बेकन

There are more men ennobled by study than by nature

प्रकृति की अपेक्षा अध्ययन से अधिक मनुष्य श्रेष्ठ बने है । —सिसरो

मनुष्य-मात्र में वुद्धिगत ऐसा कोई दोप नही है जिसका प्रतिकार उचित अभ्यास के द्वारा न हो सकता हो । शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए जैसे अनेक प्रकार के व्यायाम हैं वैसे ही मानसिक रुकावटो को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के अध्ययन है । —बेकन

जितना ही हम अध्ययन करते है, उतना ही हमको अपने अज्ञान का आभास होता जाता है । —शेली

Crafty men condemn studies, simple men admire them, and wise men use them

धूर्त मनुष्य अध्ययन का तिरस्कार करते है, सरल मनुष्य उसकी प्रशसा करते हैं और ज्ञानी पुरुष उसका उपयोग करते हैं। —बेकन

सद्ग्रन्थ इस लोक के चिन्तामणि हैं। उनके अध्ययन से सब कुचिन्ताएँ मिट जाती हैं। सशय-पिशाच भाग जाते है और मन में सद्भाव जाग्रत होकर परम शान्ति प्राप्त होती है। —स्वामी शिवानन्द

अध्यापक

अध्यापक राष्ट्र की सस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे सस्कारो की जडो में खाद देते हैं और अपने श्रम से उन्हें सीच-सीच कर महाप्राण शक्तियाँ बनाते हैं।

—महर्षि अरविन्द

अध्यापक-जीवन का एक बडा भारी अभिशाप यह है कि आप को ऐसी सैकडो बातो को पढना-पढाना होगा जिन्हें आप न तो हृदय से स्वीकार करते हैं और न साहित्य के लिए हितकर मानते हैं। यहाँ आदमी को आपा खोकर ही सफलता मिलती है।

—डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

अध्यापक के सामने बडे से बडे व्यक्ति ने सिर झुकाया है। सासारिक ऐश्वर्य एव प्रभुता उसके महत्त्व के आगे तुच्छ हैं और शक्तिशाली उसके आगे हमेशा श्रद्धावनत हुए हैं। —डा० अमरनाथ झा

लब्धास्पदोऽस्मीति विवादभीरोस्तितिक्षमाणस्य परेण निन्दाम्।
यस्यागम केवलजीविकाया त ज्ञानपण्य वणिज वदन्ति॥

जो अध्यापक नौकरी पा लेने पर शास्त्रार्थ से भागता है, दूसरो के अंगुली उठाने पर भी चुप रह जाता है और केवल पेट पालने के लिए विद्या पढाता है, ऐसा व्यक्ति पडित नही वरन् ज्ञान बेचनेवाला बनिया कहलाता है। —कालिदास

अनर्थ

यौवन धनसम्पत्ति प्रभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्॥ —पंचतंत्र

यौवन, धनसम्पत्ति, प्रभुता और अविवेक—इनमें से एक-एक भी अनर्थ का कारण होता है, फिर जहाँ ये चारो मौजूद हो उसके लिए क्या कहना।

अनाथ

अनाथ बच्चो का हृदय उस चित्र की भाँति होता है जिस पर एक बहुत ही साधारण परदा पडा हुआ हो। पवन का साधारण झकोरा भी उसे हटा देता है।

—प्रेमचन्द (मानसरोवर)

अनादर

सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किये, उपजै क्रोध ज्ञानिहुँ के हिये ॥

—तुलसी (मानस, उत्तर)

It is better not to live at all than to live disgraced
अनादरपूर्वक जीने से बिलकुल न जीना ही अच्छा है। —सोफोक्लीज़

गुरुजनो का अनादर ही उनका वध कहलाता है।

—भगवान कृष्ण (महाभारत)

अनासक्ति

कर्मफल और इद्रिय-विषयो में मन न लगाकर कार्य करना ही अनासक्ति है।

—अरविन्द

अनासक्ति की कसौटी यह है कि फिर उस वस्तु के अभाव में हम कष्ट का अनुभव न करें। —हरिभाऊ उपाध्याय

अनिमन्त्रित

जदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा। जाइय बिनु बोलेहु न सँदेहा॥
तदपि विरोध मान जहँ कोई। तहाँ गये कल्यान न होई॥

—तुलसी (मानस, बाल)

अनुकरण

अभी तक अनुकरण करके कोई भी व्यक्ति महान् नही हो पाया है।

—सैमुअल जानसन

Man is an imitative creature, and whoever is foremost leads the herd

मनुष्य अनुकरण करनेवाला प्राणी है और जो सबसे आगे बढ जाता है वही समूह का नेतृत्व करता है। —शिलर

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन ।
स यत्प्रमाण कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।। —भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

सज्जन पुरुष जो कुछ आचरण करते हैं, उसी का अनुकरण दूसरे लोग करते हैं। जिसे प्रमाण बनाते हैं, उसी का साधारण लोग अनुसरण करते हैं।

It is by imitation, far more than by precept, that we learn everything

उपदेश की अपेक्षा कही अधिक हम अनुकरण करके ही सब कुछ सीखते हैं। —बर्क

अनुकरण पूर्ण निष्कपट चापलूसी है। —कोल्टन

यदि तुम भलाई का अनुकरण परिश्रम के साथ करो तो परिश्रम समाप्त हो जाता है और भलाई बनी रहती है, यदि तुम बुराई का अनुकरण सुख के साथ करो तो सुख चला जाता है और बुराई बनी रहती है। —सिसरो

एकस्य कर्म सवीक्ष्य करोत्यन्योऽपि गर्हितम्।
गतानुगतिको लोको न लोक॰ पारमार्थिक ।। —पंचतत्र

ससार में भेड़ियाधसान है। एक का अनुकरण करके दूसरा भी बुरा काम करने लगता है। लेकिन परमार्थ के काम का कोई भी अनुकरण नही करता।

अधानुकरण से आत्मविश्वास के बजाय आत्म-सकोच होता है। —अरविन्द घोष

अनुग्रह

Obligation is thraldom, and thraldom is hateful

अनुग्रह दासता है और दासता घृणास्पद है। —हौब्स

मनुष्य न केवल अपनी सेवाओ का ही अपितु अपने लिए भी ईश्वर का ऋणी है। —सीकर

किसी के अनुग्रह की याचना करना अपनी आजादी बेचना है।

—महात्मा गाधी

अनुचित

विषवृक्षोऽपि सवर्ध्य स्वय छेत्तुमसाम्प्रतम।

अपने हाथ से लगाये हुए विषवृक्ष को भी अपने ही हाथ से काटना ठीक नही।

—कालिदास

जो लरिका कछु अनुचित करही। गुरु पितु मातु मोद मन भरही।

—तुलसी (मानस, बाल)

अनुभव

ठोकर लगे और दर्द हो तभी मैं सीख पाता हू। —महात्मा गाधी

Experience is a jewel, and it had need be so, for it is often purchased at an infinite rate

अनुभव एक रत्न है और इसे ऐसा होना भी चाहिए, क्योकि प्राय यह अधिक मूल्य में खरीदा जाता है। —शेक्सपियर

Experience takes dreadfully high school-wages, but it teaches like no other

अनुभव-प्राप्ति के लिए अत्यन्त अधिक मूल्य चुकाना पडता है, परन्तु उससे जो शिक्षा मिलती है वह अन्य किसी साधन द्वारा नही मिल सकती। —कारलाइल

आतम अनुभव ज्ञान की, जो कोई पूछै वात।
सो गूगा गुड खाइ कै, कहै कौन मुख स्वाद॥ —कबीर

व्यथा और वेदना की पाठशाला में जो पाठ सीखे जाते है, वे पुस्तको तथा विश्वविद्यालयो मे नही मिलते। —अज्ञात

विना ठोकर खाये आदमी की आंख नही खुलती। —प्रेमचन्द

कष्ट सहने पर ही अनुभव होता है। —महात्मा गाधी

Experience convinces me that permanent good can never be the outcome of untruth and violence

अनुभव हमें विश्वास दिलाता है कि असत्य और हिंसा का परिणाम स्थायी अच्छाई कभी नहीं हो सकती। —महात्मा गाधी

दूसरो के अनुभव जान लेना भी एक अनुभव है। —अज्ञात

स्वय अपने को लेकर मैं तो प्रति दिन यही अनुभव करता हूं कि मेरे भीतर और वाहरी जीवन के निर्माण में कितने अगणित व्यक्तियो के श्रम और कृपा का हाथ रहा है और इस अनुभूति से उद्दीप्त मेरा अत करण कितना छटपटाता है कि मैं कम से कम इतना तो इस दुनिया को दे सकू जितना कि मैंने उससे अभी तक लिया है।

—आइस्टाइन

अनुभूति

जीवन की गहराई की अनुभूति के कुछ क्षण ही होते है, वर्ष नही।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

ज्यो गूगे के सैन को, गूगा ही पहिचान।
त्यो ज्ञानी के सुक्ख को ज्ञानी होय सो जान।। —कबीर

अनुभूति अपनी सीमा में जितनी सवल है उतनी बुद्धि नही। हमारे स्वय जलने की हलकी अनुभूति भी दूसरे के राख हो जाने के ज्ञान से अधिक स्थायी रहती है।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

कागद लिखै सो कागदी की व्योहारी जीव।
आतम दृष्टि कहां लिखै जित देखै तित पीव।। —कबीर

(दे० 'अनुभव')

अनुराग

अनुराग, यौवन, रूप या धन से नही उत्पन्न होता। अनुराग अनुराग से उत्पन्न होता है। —प्रेमचन्द (ग़बन)

रहिमन प्रीति सराहिए, मिले होत रग दून।
ज्यो हरदी जरदी तजी, तजी सफेदी चून।। —रहीम

अनुराग स्फूर्ति का भडार है। —प्रेमचन्द्र (ग़बन)

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाड़ति छोह।। —रहीम

The affections are like lightning, you cannot tell where they will strike, till thev have fallen

अनुराग विद्युत की भाँति होता है—आप नही कह सकते कि वह कहाँ टकरायेगा जब तक वह कही (किसी पर) गिर न जाय। —लैकोरडेयर

अनुराग का वुद्धि, अनुभव या तर्क से कोई सम्बन्ध नही है। यह तो युवावस्था की दुनियाँ में मस्त वहती हुई बयार है। —अज्ञात

We live in this world when we love it

ससार में हमारा जन्म तभी तक सार्थक है, जब तक ससार से हम अनुराग रखते है। —रवीन्द्र (स्ट्रे बर्ड्स)

अन्न

अन्न वै प्राणा । (अन्न ही हमारे प्राण है।) —वेद

दीपो भक्षयते ध्वान्त कज्जल च प्रसूयते।
यदन्न भक्ष्यते नित्य जायते तादृशी प्रजा।।

दीपक अधकार को खाता है और काजल को जन्म देता है। प्राणी नित्य जैसा अन्न खाता है उसकी वैसी ही सन्तति होती है। —चाणक्य

कलावन्नगता प्राणा ।

कलियुग में प्राण अन्न के ही अधीन है। —अज्ञात

अन्न पर स्वत्व है भूखो का, और घन पर स्वत्व है देशवासियो का। प्रकृति ने उन्हें भूखो के लिए रख छोडा है। वह उनकी थाती है। —जयशकर प्रसाद

अधे, लूले और लँगडे भी जो काम कर सकें वह काम उनसे लेकर उन्हें रोटी देनी चाहिए। इससे श्रम की पूजा होती है और अन्न की भी। —विनोबा

जो पुरुष हितकारी भोजन करता है उसके लिए वह अन्न अमृत रूप हो जाता है।
—वेदव्यास (महा० शा० प०)

जैसा अनजल खाइए तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिये तैसी वानी सोय।। —कबीर

अन्न, बल से श्रेष्ठ है। राष्ट्र में अन्न नही होगा तो बल कहाँ से आयेगा। पहले अन्न का प्रबन्ध होगा, तब ज्ञान, दान का प्रबन्ध हो सकेगा। — उपनिषद्

अधर्मी राजा का अन्न खानेवाले विद्वानो की भी बुद्धि मारी जाती है।
— वेदव्यास (महाभारत)

अन्नदाता

जिसके पेट में भूख है और जो उस भूख को मिटाना चाहता है, उसका तो पेट ही परमेश्वर है। जो आदमी उसे रोटी का साधन देगा, वही उसका अन्नदाता बनेगा।
— महात्मा गांधी

अन्याय

अन्याय सहकर बैठ रहना,
यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी
दण्ड देना धर्म है। — मैथिलीशरण गुप्त

He who commits injustice is ever made more wretched than he who suffers it

अन्याय सहनेवाले की अपेक्षा अन्याय करनेवाला अधिक दु खी होता है।
— प्लेटो

अन्याय को मिटाइए, पर अपने को मिटाकर नही। — प्रेमचन्द

अन्याय के आगे माथा टेक देने का परिणाम प्राय उतना ही भयकर होता है जितना कि स्वय अन्याय करने का। — अज्ञात

अन्याय के सामने जो छाती खोलकर खडा हो जाय वही सच्चा वीर है।
— प्रेमचन्द

अन्याय के विरुद्ध लडते रहना एक बड़ी ही सम्माननीय वीरोचित जीवन-प्रणाली है। — अज्ञात

अन्याय में सहयोग देना अन्याय करने के ही समान है। — प्रेमचन्द

अन्याय को सह जाने में ही यदि कोई महत्त्व होता तो कसाई की छुरी तले पडी हुई गाय ससार में सबसे अधिक महत्त्वशालिनी होती। — आत

यदि राज-शक्ति के केन्द्र में ही अन्याय होगा, तब तो समग्र राष्ट्र अन्यायो का क्रीडा-स्थल हो जायगा। —जयशकर प्रसाद

No one will dare maintain that it is better to do injustice than to bear it

अन्याय सहने से अन्याय करना ज्यादा अच्छा है। इस सिद्धान्त को स्वीकार करने का साहस कोई नही कर सकता। —अरस्तू

अन्वेषक

The investigator should have a robust faith, yet not believe

अन्वेषक मे दृढ निष्ठा होनी चाहिए, विश्वास नही। —क्लाड बर्नर्ड

अपकीर्ति

सभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते।

सम्मानित पुरुष के लिए अकीर्ति मरण से भी बुरी है। —गीता

No one can disgrace us but ourselves

अपनी अपकीर्ति के जिम्मेदार हम स्वय है। —जे० जी० हालैंड

Disgrace is not in the punishment, but in the crime

अपकीर्ति दड में नही, अपितु अपराध में है। —एल्फिरी

मृत्युश्च को वापयश स्वकीयम्।

मृत्यु क्या है? अपनी अपकीर्ति। —स्वामी शकराचार्य

Disgrace is immortal and living even when one thinks it dead

अपकीर्ति अमर है और जब कोई उसे मृतक समझता है तब भी वह जीवित रहती है। —प्ल्यूटस

अपमान

वर प्राणपरित्यागो मानभङ्गेन जीवनात्।
प्राणत्यागे क्षण दु ख मानभङ्गे दिने दिने॥ —चाणक्य

(मानभङ्गपूर्वक जीने से प्राणत्याग श्रेष्ठ है। प्राणत्याग में क्षण भर दु ख होता है, मानभङ्ग होने पर प्रतिदिन।)

तलवार का घाव भर जाता है, पर अपमान का घाव नही भरता।

—एक कहावत

जद्यपि जग दारुन दु ख नाना। सव तें कठिन जाति अपमाना।

—तुलसी (मानस, वाल०)

पवित्र नारी का अपमान ससार में क्रान्ति का अग्रदूत है। —अज्ञात

ठोकर खाकर साँप-जैसा नाचीज़ कीडा वदला लेता है, चीटी-जैसी तुच्छ हस्ती काट खाती है, मनुष्य भी स्वाभिमान की रक्षा के लिए सर्वस्व की वाजी लगा देता है।

—अज्ञात

धनुष से छूटा हुआ तीर और मुख से निकला हुआ शब्द कभी वापस नही लौटता। एक वार सहा हुआ अपमान भुलाया नही जा सकता। —अज्ञात

मानवप्रकृति सब कुछ सहन कर सकती है, परन्तु अपमान का, वेइज्जती का घूँट गले से नही उतार सकती। —अज्ञात

अपमान के हलके झोके से ही गर्व दावाग्नि वनकर वैभव के नन्दनवन को क्षण भर में भस्म कर सकता है। —अज्ञात

अपमान का भय कानून के भय से किसी तरह कम क्रियाशील नही होता।

—प्रेमचन्द

पादाहत यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति।
स्वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वर रज ॥ —माघ (शिशु०)

जो धूल पैर से आहत होने पर उडकर (आहत करने वाले के) सिर पर चढ जाती है, वह अपमान होने पर भी स्वस्थ वने रहनेवाले शरीरधारी मनुष्य से श्रेष्ठ है।

जैसे सूर्यकान्त मणि जड होने पर भी सूर्य की किरण के स्पर्श से जल उठती है, उसी तरह चैतन्य तेजस्वी पुरुष भी दूसरो के अपमान को नही सह सकते।

—अज्ञात

मा जीवन् य परावज्ञादु खदग्धोऽपि जीवति।
तस्याजननिरेवास्तु जननीक्लेशकारिण ।। —माघ (शिशुपालवध)

जो मनुष्य शत्रु के अपमान से प्राप्त दु ख से दग्ध होकर भी गर्हित जीवन बिताते हुए अपने प्राणो को धारण करता है, उस माता को क्लेश देनेवाले (गर्भ धारण और प्रसवादि के दु खो को देनेवाले) की उत्पत्ति मत हो (तभी ठीक)।

The dust receives insult and in return offers her flowers
धूल स्वय अपमान सहन कर लेती है, और बदले में वह पुष्पो का उपहार देती है।
— रवीन्द्र

मातर पितर विप्रमाचार्यं चावमन्य वै।
स पश्यति फल तस्य प्रेतराजवश गत । —वाल्मीकि (रा०, उत्तर)

जो माता, पिता, ब्राह्मण और आचार्य का अपमान करता है, वह यमराज के वश में पडकर उस पाप का फल भोगता है।

अपमानपूर्वक हजार वर्ष जीने की अपेक्षा सम्मान के साथ एक घडी भर जीना अच्छा है। — एमर्सन

अपमान के घूंट पी-पीकर जिसने अपना पेट भरा है उसके मन, वचन और कर्म से सदा आसुरी तत्त्व ही निकलते रहेंगे। — अज्ञात

(दे० "अनादर")

अपराध

अपराध की सहस्र जिह्वाएं है, जो अग्नि-शिखा की भांति चचल हो सकती है।
— अज्ञात

Guiltiness will speak though tongues were out of use
जिह्वा के बिना भी अपराध बोलेगा। — शेक्सपियर

जहां धर्म, ईश्वर और सतो की निन्दा होती है, वहां बैठकर उसे सुनना भी अपराध है। — श्री चक्र

The mind of guilt is full of scorpions
अपराधी मन बिच्छुओ से भरा होता है। — शेक्सपियर

अपराधी अपने सिवाय और सबको दोष देता है। हम सब उसी प्रकार के हैं। मानव प्रकृति इसी प्रकार काम करती है। —डेल कारनेगी

Suspicion always haunts the guilty mind the thief doth fear each bush an officer

अपराधी मन सन्देह का अड्डा है—चोर को हर झाडी में पुलिस का भय बना रहता है। —शेक्सपियर

छिप कर किया गया अपराध जीवन-पर्यन्त हृदय में काटे की तरह चुभता रहता है। —अज्ञात

Fear follows crime, and is its punishment

अपराध करने के बाद भय उत्पन्न होता है और यही उसका दण्ड है।

—वाल्टेयर

Whenever man commits a crime, heaven finds a witness

जब कभी मनुष्य अपराध करता है, ईश्वर को उसका साक्षी मिल जाता है। —बुलवर

अभागा

अभागा वह है जो ससार के सब से पवित्र धर्म कृतज्ञता को भूल जाता है।

—जयशकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)

अभागा मनुष्य देवता का प्रसाद प्राप्त करके भी दु खदायक पाप-कर्म में प्रवृत्त हो जाता है। —वेदव्यास (महाभारत)

अभिमान

अभिमान सौंदर्य का कटाक्ष है। —अज्ञात

We rise in glory as we sink in pride

ज्यो-ज्यो अभिमान कम होता है, कीर्ति बढती है। —यंग

मान बडाई जगत में कूकर की पहिचानि।
मीत किए मुख चाटही बैर किए तन हानि।। —कबीर

अभिमान नरक का मूल है। —महाभारत (आदिपर्व)

Pride that dines in vanity, sups on contempt

अभिमान जो अहकारपूर्वक प्रात जलपान करता है उसको सायकाल का भोजन तिरस्कार से मिलता है। —फ्रैंकलिन

अभियान

नीतिरापदि यद्गम्य परस्तन्मानिनो ह्रिये।
विधुर्विधुन्तुदस्येव पूर्णस्तस्योत्सवाय स।

शत्रु पर आपत्तिकाल में अभियान करना चाहिए, यह जो नीति है, वह मानी पुरुष के लिए लज्जाजनक है। राहु के लिए पूर्णिमा के चन्द्रमा की भाँति सुस्थिर शत्रु (अभियान के लिए) आनन्ददायक होता है। —माघ (शिशुपाल वध)

अभिलाषा

हमारी हार्दिक अभिलाषाए हमारे उत्पादक अन्तर्बल को उत्तेजित करती है।
—स्वेट् मार्डेन (दिव्य जीवन)

अभिलाषा तभी फलोत्पादक होती है जब वह दृढ निश्चय में परिणित कर दी जाती है। —स्वेट् मार्डेन

जिस अभिलाषा में शक्ति नही उसकी पूर्ति असम्भव है। —अज्ञात

जिसकी हम चाह करते है, जिसकी सिद्धि के लिए सम्पूर्ण अन्त करण से अभिलापा करते है उसकी हमें अवश्य ही प्राप्ति होगी।

—स्वेट मॉडिन

(दे० "इच्छा")

अभ्यास

मनुष्य-मात्र में बुद्धिगत ऐसा कोई दोप नही है जिसका प्रतिकार उचित अभ्यास के द्वारा न हो सकता हो। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए जैसे अनेक प्रकार के व्यायाम है वैसे ही मानसिक रुकावटो को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के अध्ययन है। —बेकन

करत करत अभ्यास के, जडमति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर होत निसान।। —वृन्द

अमृत

जो आदमी हमेशा अमृत ही अमृत पीता है उसको अमृत उतना मीठा नही लगता जितना कि जहर का प्याला पीने के वाद अमृत की दो बूदें। —महात्मा गांधी

अवगुण

हर ऐब की सुल्तां बेपसन्द दहुनरस्त।
यदि राजा किसी अवगुण को पसन्द करे तो वह गुण हो जाता है।
—सादी

गुण भी इस जगत में दुर्जनो के अपवाद से अवगुण समझे जाते हैं। —अज्ञात

Drink is more a disease than a vice
मदिरा पान करना अवगुण की अपेक्षा वीमारी अधिक है।
—महात्मा गाधी

The road to vices is not only smooth, but steep
अवगुण का मार्ग चिकना ही नही, अपितु ढालू है। —सेनेका

अवतार

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मान सृजाम्यह।।
परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म सस्थापनार्थाय सभवामि युगे युगे।।

जव-जव धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तव-तव मैं अवतार धारण करता हू। साधुओ की रक्षा के लिए, पापियो के नाश के लिए और धर्म की स्थापना के लिए मैं युग-युग में अवतार लेता हूँ। —भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

हरि व्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहि मैं जाना।।
—तुलसी (मानस-अयो०)

अवतार, तात्पर्य है शरीरधारी पुरुष विशेष। जीवमात्र ईश्वर का अवतार है, परन्तु लौकिक भाषा में सबको हम अवतार नही कहते। जो पुरुष अपने युग में सबसे श्रेष्ठ धर्मवान है उसी को भावी प्रजा अवतार-रूप से पूजती है।

—महात्मा गाधी

जव-जव युग का परिवर्तन होता है, तब-तब मैं प्रजा की भलाई के लिए भिन्न भिन्न योनियो में प्रतिष्ठित होकर, धर्म-मर्यादा की स्थापना करता हूँ। जव जिस योनि में अवतार लेता हू उस समय उसी की भाँति सारे आचार-विचार का पालन करता हू।

—वेदव्यास (म० आ० प०)

अवतारी पुरुष देश के प्राण हैं, वे समाज में चेतना उत्पन्न करते है और अपने पवित्र आचरण तथा उपयोगी उपदेशो से देश का कल्याण-साधन करते हैं।

—अज्ञात

मोक्ष-प्राप्ति के समीप पहुची हुई आत्मा अवतार रूप है। —महात्मा गांधी

अवसर

The secret of success in life, is for a man to be ready for his opportunity when it comes

मनुष्य के लिए जीवन में सफलता का रहस्य हर आनेवाले अवसर के लिए तैयार रहना है। —डिजरायली

Chance fights on the side of prudent

अवसर वुद्धिमान के पक्ष में लडता है। —यूरीपेडीज

Do not suppose opportunity will knock twice at your door

ऐसा न सोचो कि अवसर तुम्हारा द्वार दोवारा खटखटाएगा। —शैम्फोर्ट

Chnce nevr helps those who do not help themselves

अवसर उनकी सहायता कभी नही करता जो अपनी सहायता नही करते।

—सफोक्लीज

नीकी पै फीकी लगै, विन अवसर की वात।
जैसे वरनत युद्ध में, रस शृगार न सुहात॥ —वृन्द

अवसर कौडी जो चुकै, वहुरि दिये का लाख।
दुइज न चदा देखिए, उदौ कहा भरि पाख ।।

—तुलसी (दोहावली)

There is a tide in the affairs of men, which taken at the flood, leads on to fortune

मनुष्य के सारे व्यवहारो में ज्वार-भाटा का-सा चढाव-उतार होता है । यदि मनुष्य वाढ को पकडे तो भाग्य की ड्योढी पर पहुच जाय। —शेक्सपियर

फीकी पै नीकी लगै, कहिए समय विचारि।
सब को मन हर्षित करे, ज्यौं विवाह में गारि ।। —वृन्द

लाभ समय को पालिवो हानि समय की चूक।
सदा विचारहिं चारुमति सुदिन कुदिन दिन दूक ।।

—तुलसी (दोहावली)

A word spoken in season, at the right moment, is the matter of ages

समय और उचित अवसर पर वोला गया एक शव्द युगो की वात है।

—कार्लाइल

तृषित वारि विनु जो तनु त्यागा । मुएँ करइ का सुधा तडागा।
का वरषा जव कृषी सुखाने । समय चुके पुनि का पछिताने ।।

—तुलसी (मानस-वाल०)

अविवेक

मज्जन्त्यविचेतस.।
अविचारशील मनुष्य दु ख को प्राप्त होते हैं। —ऋग्वेद

अविश्वास

To trust is a virtue It is weakness that begets distrust

विश्वास करना एक गुण है। अविश्वास दुर्वलता की जननी है।

—महात्मा गांधी

अविश्वास से अर्थ की प्राप्ति नही हो सकती, और जो हो भी सकती है तो जो विश्वास-पात्र नही है उससे कुछ लेने को जी ही नही चाहता। अविश्वास के कारण सदा भय लगा रहता है और भय से जीवित मनुष्य मृतक के समान हो जाता है।

—वेदव्यास (महा०)

एक वार अविश्वस्त ठहराये गये का कभी विश्वास न करो। —पचतत्र

What loneliness is more lonely than distrust
अविश्वास से वढकर एकाकीपन कोई दूसरा नही है। —जार्ज इलिएट

अशान्ति

अशान्ति के विना शान्ति नही मिलती। लेकिन अशान्ति हमारी अपनी हो। हमारे मन का जब खूब मन्थन हो जायगा, जब हम दु ख की अग्नि में खूब तप जायेंगे, तभी हम सच्ची शान्ति पा सकेंगे। —महात्मा गाघी

असतोष

असतोष अपने ऊपर अविश्वास का फल है, यह कमजोर इच्छा का रूप है।

—एमर्सन

काल्पनिक किलो में रहने से अधिक सुख और सतोष मिलता है, परन्तु असतोषी मनुष्यो के वनाये महलो में सुख नही है। —एमर्सन

असन्तुष्ट मनुष्य ससार में अधिक दिनो तक जीवित नही रहते।

—शेक्सपियर

असतोषी से आनन्द दूर रहता है। —अज्ञात

असफलता

जितनी वार हमारा पतन हो उतनी वार उठने में गौरव है।

—महात्मा गाघी

They never fail who die in a great cause
वे कभी असफल नही होते जिनकी मृत्यु महान् उद्देश्य के लिए होती है।

—वायरन

असफलता के विचार से सफलता का उत्पन्न होना उतना ही असम्भव है जितना ववूल के पेड से गुलाव के फूल का निकलना। —स्वेट् मार्डेन

असंभव

Asks the Possible of the Impossible, "Where is your dwelling place?"
"In the dreams of the impotent", comes the answer

सभव, असभव से पूछता है—"तुम्हारा निवास-स्थान कहा है?"
उत्तर मिला—"निर्वल के स्वप्न में।" — रवीन्द्र

Impossible is a word only to be found in the dictionary of fools
"असभव" एक शव्द है जो केवल मूर्खों के शव्द-कोष में पाया जाता है।
— नेपोलियन

To the timid and hesitating everything is impossible because it seems so

कायरो और सशयशील व्यक्तियो के लिए प्रत्येक वस्तु असम्भव है, क्योकि उसे ऐसी ही प्रतीत होती हैं। — वाल्टर स्काट

काके शौच द्यूतकारे च सत्य
सर्पे क्षान्ति स्त्रीषु कामोपशान्ति।
क्लीवे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिन्ता
भूपे सख्य केन दृष्ट श्रुत वा॥

कौवे में पवित्रता, जुआरी में सत्यवादिता, सर्प में क्षमा, स्त्रियो में काम की शान्ति, कायर में धैर्य, शरावी में तत्व का विचार और राजा में मित्रता का होना किसने देखा या सुना है। — अज्ञात

अस्पृश्यता

अस्पृश्यता एक ऐसा सर्प है जिसके सहस्र मुख है और जिसके प्रत्येक मुख में जहरीले दात दिखाई पडते हैं। यह इतनी विस्तृत है कि इसकी परिभाषा नही की जा सकती। यह इतनी जवरदस्त है कि इसे अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए मनु अथवा प्राचीन स्मृतिकारो की आवश्यकता नहीं पडती। —महात्मा गांधी

शरीर किसी का हो स्पष्टत गन्दगी की गठरी है, और आत्मा तो सर्वत्र एक और अत्यन्त शुद्ध है। ऐसी स्थिति में अस्पृश्यता किसकी और किसके लिए ?

—विनोवा

अस्पृश्यता हिन्दू जाति पर कलक है। —महात्मा गाधी

जिस प्रकार एक रत्ती सखिया से लोटा भर दूध बिगड जाता है उसी प्रकार अस्पृश्यता से हिन्दू धर्म चौपट हो रहा है। —महात्मा गाधी

अस्पृश्यता की खोज करने के लिए पास का अपना हृदय छोड कर योगशास्त्र तक दौडने की क्या जरूरत है। —विनोवा

अहंकार

Pride is at the bottom of all great mistakes

अहकार समस्त महान् गलतियो की तह में होता है। —रस्किन

अह की भावना रखना एक अक्षम्य अपराध है। —अज्ञात

अहकार नशे का मुख्य रूप है। —प्रेमचन्द्र

धनी को अपने धन का मद रहता है, घमड रहता है, परन्तु गरीब के झोपडे में क्रोध और अहकार के लिए स्थान नही रहता। —प्रेमचन्द

घोडे और हाथी के लिए व्ययसाध्य चारा चाहिए, किन्तु अहभाव के लिए किसी रसद की आवश्यकता नही होती। —रवीन्द्र

निरहकारिता से सेवा की कीमत वढती है और अहकार से घटती है।

—विनोवा

Pride, like the magnet, constantly points to one object, self, but unlike the magnet, it has no attractive pole, but at all points repels

अहकार चुम्बक की भांति सदा एक ही वस्तु का निर्देश करता है—स्व का, परन्तु चुम्बक की भांति वह अपनी ओर आकृष्ट नही करता, बल्कि अपने से दूर हटा देता है। —कोल्टन

माया तजी तो क्या भया, मान तजा नहिं जाय।
जेहि मानै मुनिवर ठगे, मान सवन को खाय॥ —कवीर

The infinitely little have a pride infinitely great
मनुष्य जितना छोटा होता है, उसका अहकार उतना ही वडा होता है।
—वाल्टेयर

अहकारी

The proud are ever most provoked by pride
अहकारपूर्ण व्यक्ति अहकार से वहुत उत्तेजित हो उठता है। —कूपर

The conceited man relates only his own great deeds and only the evil ones of others

अहकारी मनुष्य केवल अपने ही महान् कार्यों का वर्णन करता है और दूसरो के केवल कुकर्मों का। —स्पिनोजा

A proud man is seldom a grateful man, for he never thinks he gets as much as he deserves

अहकारी मनुष्य में कृतज्ञता वहुत कम होती है, क्योकि वह यही समझता है कि मैं जितना पाने योग्य हूँ उतना मुझे कभी प्राप्त नही होता।
—एच० डब्ल्यू० वीचर

अहिंसा

अहिंसा सत्य का प्राण है। उसके विना मनुष्य पशु है। —महात्मा गाधी

मनुष्य क्रोध को प्रेम से, पाप को सदाचार से, लोभ को दान से और मिथ्या-भाषण को सत्य से जीत सकेगा। —गौतम बुद्ध

अहिंसा में ही सत्येश्वर के दर्शन करने का सीधा और छोटा सा मार्ग दिखाई देता है। —महात्मा गाधी

मनसा, वाचा, कर्मणा कभी किसी को किसी प्रकार का दु ख न पहुंचाओ। क्रोध को क्षमा से, विरोध को अनुरोध से, घृणा को दया से, द्वेष को प्रेम से और हिंसा को अहिंसा की प्रतिपक्ष भावना से जीतो। —स्वामी शिवानन्द

मैं तो शुरू से यह मानता आया हूं कि अहिंसा ही धर्म है, वही जिन्दगी का एक रास्ता है। —महात्मा गांधी

जीव-मात्र की अहिंसा स्वर्ग को देनेवाली है। —स्वामी शंकराचार्य

जिस भाँति भौंरा फूलों की रक्षा करता हुआ मधु को ग्रहण करता है, उसी प्रकार मनुष्य को हिंसा न करते हुए अर्थों को ग्रहण करना चाहिए। —विदुर

जो तुम्हारे बायें गाल पर मारे उसकी ओर दाहिना गाल भी फेर दो।

—महात्मा ईसा

हममें दया, प्रेम, त्याग ये सब प्रवृत्तियाँ मौजूद हैं। इन प्रवृत्तियों को विकसित करके अपने सत्य को और मानवता के सत्य को एकरूप कर देना—यही अहिंसा है। —अज्ञात

अनेकों को जो एक रखती है, भेदों में से अभेद को ढूंढती है, वही अहिंसा है।

—विनोबा

अहिंसा का अर्थ है ईश्वर पर भरोसा रखना। —महात्मा गांधी

जब कोई व्यक्ति अहिंसा की कसौटी पर खरा उतर जाता है तो दूसरे व्यक्ति स्वयं ही उसके पास आकर वैरभाव भूल जाते हैं। —पतंजलि

अहिंसा का मार्ग तलवार की धार पर चलने-जैसा है, जरा-सी गफलत हुई कि नीचे गिरे। घोर अन्याय करनेवाले पर भी गुस्सा न करे, बल्कि उससे प्रेम करे, उसका भला चाहे और करे। लेकिन प्रेम करते हुए भी अन्याय के वश में न हो। अन्याय का विरोध करे और वैसा करने पर वह जो कष्ट दे उसे धैर्य के साथ और अन्यायी के लिए दिल में द्वेष रखे बिना सह ले। —महात्मा गांधी

अपने शत्रु से प्रेम करो, जो तुम्हें सताये उसके लिए प्रार्थना करो, जिससे तुम अपने दैवी पिता के बेटे कहला सको। —महात्मा ईसा

यदि सत्य नहीं तो अहिंसा की भी रक्षा नहीं हो सकती। —विनोबा

मानवों के व्यवहार में ही अहिंसा की कसौटी होती है। —महात्मा गांधी

अहिंसा प्रचण्ड शस्त्र है। उसमें परम पुरुषार्थ है, वह भीरु से दूर भागती है। वह वीर पुरुष की शोभा है, उसका सर्वस्व है, वह शुष्क, नीरस, जड़ पदार्थ नहीं है। वह चेतन है। वह आत्मा का विशेष गुण है। —महात्मा गांधी

अहिंसक

अहिंसा की शक्ति अमाप है, वैसी ही अहिंसक की है। अहिंसक स्वय कुछ नही करता, उसका प्रेरक ईश्वर होता है। —महात्मा गाधी

आँख (दे० 'नयन')

आँखें सारे शरीर का दीपक है। —महात्मा गाधी

आँखो में मनुष्य की आत्मा का प्रतिविम्व होता है। —अज्ञात

आँखें हृदय की तालिका हैं। —अज्ञात

अमिय हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत, जेहि चितवत एक वार॥ —बिहारी

मनुष्य की आँखें आन्तरिक भाव को ग्रहण करने में इतनी पटु हैं कि कोई लज्जा-स्पद वात देखी नही कि झुक गयी, आनन्द का भान हुआ नही कि चमक पडी, रोप का उदय हुआ नही कि जल उठी, करुणा का उद्रेक हुआ नही कि नम हो गयी—वरस पडी। —अज्ञात

जो वात वाणी नही प्रकट कर पाती वह वात, आँखें आसानी से वोल देती हैं। —अज्ञात

आँखो में जादू उत्पन्न करने की वैज्ञानिक कला है। —अज्ञात

मनुष्य की आँखें उसके चरित्र, व्यक्तित्व और अन्त प्रवृत्ति का दर्पण है। —अज्ञात

मन सो कहाँ रहीम प्रभु, दृग सो कहा दिवान।
दृगन देखि जेहि आदरैं, मन तेहि हाथ विकान॥ —रहीम

आँख जहाँ वह्माड एव शरीर के परस्पर आदान-प्रदान का माध्यम है, वही वह आत्मा-परमात्मा के अनत प्रणय का सेतु भी है। —अज्ञात

आँखें तो जीवन के अनुभवो से भरा हुआ भडार है। —साने गुरु (आस्तीक)

आँसू

नारी का अश्रु-जल अपनी एक-एक बूंद में एक-एक बाढ लिये रहता है।

—जयशकर प्रसाद (जनमेजय का नागयज्ञ)

स्त्री—तूने अपने अथाह अश्रुओ से ससार के हृदय को उसी प्रकार घेर रखा है जिस प्रकार समुद्र पृथ्वी को घेरे हुए है। —रवीन्द्र

स्त्रियो के आँसू पुरुषो की क्रोधाग्नि भडकाने में तेल का काम देते हैं।

—प्रेमचन्द

Beauty's tears are lovelier than her smiles
सौन्दर्य के आसू उसकी मुस्कुराहट की अपेक्षा अधिक प्यारे होते हैं। —कैम्पबेल

Love is loveliest when embalmed in tears
अश्रुपूर्ण प्रेम अत्यन्त लुभावना होता है। —वाल्टर स्काट

आँख के आँसू अमूल्य वस्तु हैं। प्रेम के, कृतज्ञता के, आनन्द के, दुःख के और पश्चात्ताप के आसुओ से ही तो जीवन का बाग पनपता है।

—साने गुरु (आस्तीक)

जो घनीभूत पीडा थी
मस्तक में स्मृति सी छायी।
दुर्दिन में आँसू बन कर
वह आज बरसने आयी॥

—जयशकर प्रसाद (आँसू)

दुखियारो को हमदर्दी के आँसू भी कम प्यारे नही होते। —प्रेमचन्द

नेह न नैननि को कछू, उपजी बडी बलाय,
नीर भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाय। —बिहारी

मेरे छोटे जीवन में देना न तृप्ति का कण भर,
रहने दो प्यासी आँखें भरती आँसू के सागर। —महादेवी वर्मा

आँख का आँसू ढलकता देखकर,
जी तडप करके हमारा रह गया।

क्या गया मोती किसी का है बिखर,
या हुआ पैदा रतन कोई नया। —'हरिऔध'

या जिगर पर जो फफोला था पडा,
फूट करके वह अचानक वह गया।
हाय! था अरमान जो इतना वडा,
आज वह कुछ वूद वनकर रह गया। —"हरिऔध'

आकर्षण

जिन वस्तुओ में आकर्षण नही रहता वे उपेक्षित रहती है।

यदि पुरुष के जीवन-विकास में स्त्री का आकर्षण विनाशकारी होता तो प्रकृति यह आकर्षण पैदा ही क्यो करती। —यशपाल

आकांक्षा

सासारिक आकाक्षा मनुष्य को वांधती और घसीटती है।

—स्वामी रामतीर्थ

हमारी आकाक्षा, जीवन-रूपी भाप को, इद्र-धनुष का रग दे देती है।

—रवीन्द्र

जीवन में आकाक्षाएँ होती है तो अपना सम्मान और आत्माभिमान भी होता है।
—अज्ञात

Renunciation of objects, without renunciation of desires, is short-lived, however hard you may try

इन्द्रिय-विपयो का त्याग विना कामना-त्याग क्षणिक होता है, चाहे हम कैसा ही प्रयास क्यो न करें। —महात्मा गाधी

जो प्रकाश में अदृश्य रहता है और जिसका अधकार में ही अनुभव होता है—उसी के लिए मेरी आकाक्षा है। —रवीन्द्र

आक्षेप

जब तक हम स्वय निरपराध न हो तब तक दूसरो पर कोई आक्षेप सफलता के साथ नहीं कर सकते। —सरदार पटेल

आग

अग्नि देवताओ का मुख है, अग्नि में डाली गयी सोमरस की आहुतियाँ देवताओ को पहुँच जाती हैं। —अज्ञात

आचरण

Man is worse than an animal when he is an animal

मनुष्य जिस समय पशु-तुल्य आचरण करता है उस समय वह पशुओ से भी नीचे गिर जाता है। —रवीन्द्र

Behavior is a mirror in which every one displays his image

आचरण एक दर्पण के सदृश है जिसमें हर मनुष्य अपना प्रतिविम्ब दिखाता है। —गेटे

आचरण और सत्यता के लिए आर्य-जाति चिरकाल से प्रसिद्ध है। —मेगस्थेनीज

A beautiful behaviour is better than a beautiful form, it gives a higher pleasure than statues and pictures, it is the finest of fine art

सुन्दर आचरण, सुन्दर शरीर से अच्छा है, मूर्ति और चित्र की अपेक्षा यह उच्च-कोटि का आनद देता है। यह कलाओ में सुन्दरतम कला है। —एमर्सन

आचरण भाव का प्रकट रूप है। —अज्ञात

जिसने ज्ञान को आचरण में उतार लिया उसने ईश्वर को ही मूर्तिमान् कर लिया। —विनोबा

शास्त्र पढकर भी लोग मूर्ख होते है, किन्तु जो उसके अनुसार आचरण करता है वस्तुत वही विद्वान् है। रोगियो के लिए भली-भाँति सोचकर निश्चित की हुई औषधि नाम उच्चारण करने मात्र से (विना खिलाये) किसी को नीरोग नही कर सकती। —हितोपदेश

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन ।
स यत्प्रमाण कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।।

श्रेष्ठ पुरुष जो-जो करता है अन्य पुरुष भी उसके अनुसार व्यवहार करते हैं। वह जो आदर्श स्थापित कर देता है, लोग उसके अनुसार चलते हैं। —भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

कुलीनमकुलीन वा वीर पुरुपमानिनम् ।
चारित्र्यमेव व्याख्याति शुचि वा यदि वाशुचिम् ।।

मनुष्य का आचरण ही यह बतलाता है कि वह कुलीन है या अकुलीन, वीर है या कायर, अथवा पवित्र है या अपवित्र । —वाल्मीकि (रा०)

आचार

आचारादायुर्वर्धते कीर्तिश्च

आचार से आयु बढती है, और कीर्ति भी । —कौटिल्य

विचार का चिराग बुझ जाने से आचार अधा हो जाता है। —सत विनोबा

आचार परमो धर्म

आचार ही परम धर्म है। अज्ञात

आज

न कश्चिदपि जानाति किं कस्य श्वो भविष्यति ।
अत श्व करणीयानि कुर्यादद्यैव बुद्धिमान् ।।

यह कोई नही जानता है कि कल किसको क्या होगा। अत बुद्धिमान् को कल जो करना हो सो आज ही कर लेना चाहिए। —अज्ञात

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलय होयगा, बहुरि करोगे कब्ब ।। —कबीर

आजादी

तुम मुझको खून दो मै तुम्हें आजादी दूगा। —सुभाषचन्द्र बोस

Freedom of speech, freedom of religion, freedom from want andfreedom from fear

विचारो की स्वतन्त्रता, धार्मिक स्वतन्त्रता, अभावो से स्वतन्त्रता और भय से स्वतन्त्रता (ये चार प्रत्येक व्यक्ति को मिलनी चाहिए) । —रूजवेल्ट

We gain freedom when we have paid the full price for our right to live

हम आजादी पाते है जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते है। —रवीन्द्र

The road to freedom is not strewn with roses It is a path covered with thorns, but at the end of it, there is the full-blown rose of liberty, awaiting the tired pilgrim

आज़ादी का मार्ग फूलो की सेज नही है। इस पथ पर काँटे बिछे है, लेकिन इसके अत में आज़ादी का पूर्ण विकसित फूल, आनेवाले थके यात्री की प्रतीक्षा करता है। —सुभाषचन्द्र बोस

No amount of political freedom will satisfy the hungry masses

कितनी ही राजनीतिक स्वतन्त्रता हो वह भूखी जनता को सतुष्ट नही कर सकती। —लेनिन

आज्ञा-पालन

अनुचित उचित विचार तजि, जे पालहि पितु-बैन।
ते भाजन सुख सुजस के, बसहि अमरपति-ऐन॥

—तुलसी (मानस-अयो०)

Wicked men obey from fear, good men from love

दुष्ट स्वभाव के मनुष्य भय से आज्ञा-पालन करते है, और अच्छे स्वभाववाले प्रेम से। —अरस्तू

Let them obey, that know not how to rule

जो मनुष्य शासन करना नही जानते, वे आज्ञापालन करना सीखें। —शेक्सपियर

आत्म-अनुभव

अपनी आत्मा पर अपने आप को एकाग्र करो, तुरन्त ही उसी क्षण आत्मानुभव की प्राप्ति होगी। —स्वामी रामतीर्थ

आत्म-कथा

It is a hard and nice subject for a man to write of himself it grates his own heart to say anything of disparagement, and the reader's ears to hear anything of praise for him

—*Abraham Cowley* (Quoted by J Nehru in his Autobiography)

किसी मनुष्य के लिए अपनी आत्म-कथा लिखना एक कठिन तथा नाजुक विषय है। यदि वह अपनी निन्दा करे तो उसके दिल में चोट-सी लगती है और यदि वह अपनी प्रशसा करे तो पाठको के कानो में उसकी बातें खटकती है। —अब्राहम काउले

प्रत्येक आत्मकथा पीडा का इतिहास है क्योकि प्रत्येक जीवन महान् और छोटे दुर्भाग्य का क्रमिक विकसित रुप है। —शोपेनहार

अपने विपय में कुछ कहना प्राय वहुत कठिन हो जाता है क्योकि अपने दोप देखना अपने आपको अप्रिय लगता है और उनको अनदेखा करना औरो को।

— महादेवी वर्मा (यामा)

आत्म-गौरव

मानवजीवन का मन्थन करने पर जो अमृत निकलता है उसका नाम आत्म-गौरव है। — अज्ञात

आत्मगौरव नष्ट करके जीना मृत्यु से भी वुरा है। — भर्तृहरि

आध्यात्मिक महत्वाकाक्षा की, आत्मगौरव की भूख शारीरिक भूख की अपेक्षा कईगुनी तीव्र, आवश्यक एव महत्त्वपूर्ण है। — अज्ञात

वेईमानी का आचरण करके जिस प्रकार मनुष्य अपना स्वाभिमान खो देता है, उसी प्रकार अत्याचारी के आगे नाक रगडने से भी आत्मगौरव नष्ट होता है।

— अज्ञात

आत्म-ज्ञान

आत्मज्ञान पर ज्ञानम्

आत्मज्ञान सवसे वडा ज्ञान है। —वेदव्यास (महा० शा०)

वेद से उत्पन्न आत्मज्ञान ससार का हरनेवाला है और मोक्ष का कारण कहा गया है। — स्वामी शङ्कराचार्य

जिसने अपने को समझ लिया वह दूसरो को समझाने नही जायगा।

— धम्मपद

जिस अवस्था में इसके लिए सव कुछ आत्मा ही हो जाता है, उस समय किसके द्वारा किसको देखे, किसके द्वारा किसको सूँघे, किसके द्वारा किसको सुने तथा किसके द्वारा किसको जाने। —वृहदारण्यक उपनिषद्

तमेव विद्वान् न विभाय मृत्यो

उस आत्मा को ही जान लेने पर मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता। — ऋग्वेद

आत्मज्ञान का सम्पादन करना और आत्मकेन्द्र में स्थिर रहना मनुष्य-मात्र का सबसे पहला और प्रधान कर्तव्य है। —स्वामी रामतीर्थ

हमें अपनी आत्मा का ज्ञान चरित्र से ही मिल सकता है। —महात्मा गाधी

केवल आत्मज्ञान ही ऐसा है जो हमें सब जरूरतो से परे कर सकता है।
—स्वामी रामतीर्थ

जैसे स्वप्न में काटे गये सिर का दु ख विना जागे दूर नही होता, इसी प्रकार इस ससार का दु ख विना आत्मज्ञान हुए दूर नही होता। —स्वामी भजनानन्द

ससार स्वप्न की तरह है। जिस प्रकार जागने पर स्वप्न झूठा प्रतीत होता है, उसी प्रकार आत्मा का ज्ञान होने पर यह ससार मिथ्या मालूम होता है।
—याज्ञवल्क्य

आत्म-तत्त्व

आत्मतत्त्व को प्राप्त करना अखिल विश्व का स्वामी वनना है।
—स्वामी रामतीर्थ

आत्म-दर्शन

पीडा से दृष्टि मिलती है। इसलिए आत्मपीडन ही आत्मदर्शन का माध्यम है।
—अज्ञेय

मनुष्यजीवन का उद्देश्य आत्म-दर्शन है और उसकी सिद्धि का मुख्य एव एकमात्र उपाय पारमार्थिक भाव से जीवमात्र की सेवा करना है। —महात्मा गाधी

आत्म-दर्शन अपने को ईश्वर के हाथो सौंप देने पर शून्य ध्यान द्वारा हो जाता है।
—अज्ञात

आत्म-निर्भरता

The basis of all progress is self-reliance
समस्त उन्नति का आधार आत्मनिर्भरता है। —सी० हम्फ्रेज

आत्म-प्रशंसा

आत्मप्रशसा ओछेपन का चिह्न है। —महात्मा गाधी

जिन्हें कहीं से प्रशसा नही मिलती वे आत्मप्रशसा करते हैं। —अज्ञात

आत्म-बल

आवेश और क्रोध को वश में कर लेने पर शक्ति बढती है और आवेश को आत्म-बल के रूप में परिवर्तित कर दिया जा सकता है। —महात्मा गाधी

जो मनुष्य लोगो के व्यवहार से ऊब कर क्षण प्रतिक्षण अपने मन बदलते रहते है वे दुर्बल हैं—उनमें आत्म-बल नही। —सुभाषचन्द्र बोस

आत्मबल की सफलता का सबसे बडा प्रमाण तो यही है कि इतने युद्धो के बावजूद दुनिया अभी कायम है। —महात्मा गांधी (हिन्द-स्वराज्य)

आत्म-रक्षा

आपदर्थे धन रक्षेद् दारान् रक्षेद्धनैरपि।
आत्मान सतत रक्षेद्, दारैरपि धनैरपि॥ —चाणक्य

आपत्ति के लिए धन की रक्षा करनी चाहिए, धन से स्त्री की रक्षा करनी चाहिए, किन्तु धन और स्त्री दोनो से सदा अपनी रक्षा करना चाहिए।

आत्म-विजय

जिसने अपनेको वश में कर लिया है, उसकी जीत को देवता भी हार में नही बदल सकते। —भगवान् बुद्ध

आत्म-विजय अनेक आत्मोत्सर्गों से भी श्रेष्ठतर है। —स्वामी शिवानन्द

आत्म-विश्वास

आत्म-विश्वास में वह शक्ति है जो सहस्र विपत्तियो का सामना कर उन पर विजय प्राप्त कर सकती है। —स्वेट मार्डेन

सर्वप्रथम आत्म-विश्वास करना सीखो। —स्वामी विवेकानन्द

अपने ऊपर विश्वास रखो, यह विश्वास ही वह अटूट तार है जिसके सहारे हृदय स्पन्दित होता है। —एमर्सन

Self-trust is the first secret of success
आत्मविश्वास सफलता का मुख्य रहस्य है। —एमर्सन

Remember, you are the most necessary man on earth
यह आत्मविश्वास रखो कि तुम पृथ्वी के सबसे आवश्यक मनुष्य हो।
—मैक्सिम गोर्की

The way to develop Self-confidence is to do the thing you fear to do and get a record of successful experiences behind you
आत्मविश्वास बढाने की रीति यह है कि तुम वह काम करो जिसे तुम करते हुए डरते हो। इस प्रकार ज्यो-ज्यो तुम्हें सफलता मिलती जायगी तुम्हारा आत्मविश्वास बढता जायगा। —डेल कारनेगी

आत्म-विश्वास सरीखा दूसरा मित्र नही। आत्म-विश्वास ही भावी उन्नति की प्रथम सीढी है। —स्वामी विवेकानन्द

हमारी मानसिक शक्तियाँ हमारे आत्मविश्वास और धैर्य पर अवलम्बित रहती है।
—स्वेट मार्डेन

जब मनुष्य स्वय आत्म-विश्वास खो बैठता है तो उसके पतन का सिरा खोजने से भी नही मिलता। —अज्ञात

जो मनुष्य आत्मविश्वास से सुरक्षित है वह उन चिन्ताओ, आशकाओ से मुक्त रहता है, जिनसे दूसरे आदमी दबे रहते है। —अज्ञात

जिस मनुष्य में आत्म-विश्वास नही है वह शक्तिमान् होकर भी कायर है और पण्डित होकर भी मूर्ख है। —अज्ञात

आत्म-विश्वास की कमी ही हमारी बहुत-सी असफलताओ का कारण होती है, शक्ति के विश्वास में ही शक्ति है। वे सबसे कमजोर है, चाहे वे कितने ही शक्तिशाली क्यो न हो, जिन्हें अपने आप तथा अपनी शक्ति पर विश्वास नही है। —बो वी

आत्मविश्वास के द्वारा दुर्गम पथ भी सुगम हो जाता है। —अज्ञात

आत्मविश्वास की मात्रा हममें जितनी अधिक होगी उतना ही हमारा सम्बन्ध अनन्त जीवन और अनन्त शक्ति के साथ गहरा होता जायेगा। —स्वेट मार्डेन

Self-trust is the essence of heroism
आत्मविश्वास पराक्रम का सार है। —एमर्सन

Self-reverence, Self-knowledge, Self-control, these three alone lead life to Sovereign power

आत्मविश्वास, आत्मज्ञान और आत्मसयम केवल यही तीन जीवन को परम शक्ति-सम्पन्न बना देते हैं। —टेनीसन

आत्म-सम्मान

हमें सबसे पहले आत्म-सम्मान की रक्षा करनी चाहिए। हम कायर और दब्बू हो गये हैं, अपमान और हानि चुपके से सह लेते हैं। ऐसे प्राणियो को तो स्वर्ग में भी सुख नही प्राप्त हो सकता। —प्रेमचन्द

जिस प्रकार दूसरो के अधिकार की प्रतिष्ठा करना मनुष्य का कर्तव्य है, उसी प्रकार से अपना मान धारण रखना भी उसका कर्तव्य है। —स्पेन्सर

बिना अपनी स्वीकृति के कोई मनुष्य आत्मसम्मान नही गँवाता।

—महात्मा गाधी

आत्म-सम्मान करना सफलता की सीढी पर पग रखना है। —अज्ञात

आत्म-हत्या

आत्म-हत्या करना कायरता है। —नेपोलियन

Against self-slaughter, there is a prohibition so divine that cravens my weak hand

आत्महत्या के विरुद्ध एक दिव्य निषेध है जो हमारे कमजोर हाथो को डरा देता है। —शेक्सपियर

युवा पुरुष के लिए असफल प्रेम पर अपना जीवन बलिदान करना आत्म-हत्या करना है।

आत्म-हीनता

मृत्यु दुखदायी मानी जाती है, परन्तु वह जीवन में एक बार ही दुख देती है, लेकिन आत्महीनता ऐसी मृत्यु है जो पल-पल पर आती है और तिल-तिल करके आन्तरिक शान्ति को जलाती रहती है। —अज्ञात

पाप, अनीति और अत्याचार के सम्मुख सिर झुकाना अपनी आत्मा का अपमान और हनन करना है। —अज्ञात

आत्मा

मत्वा धीरो न शोचति —कठोपनिषद्

आत्मा को जानकर बुद्धिमान मनुष्य शोक नही करता।

नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि नैन दहति पावक ।
न चैन क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत ।।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

इस आत्मा को शस्त्र काट नही सकते, अग्नि जला नही सकती, जल इसे भिगो नही सकता और पवन इसे सुखा नही सकता।

आत्मैवेद सर्वम्।

आत्मा ही यह सब है। —छान्दोग्य उपनिषद्

अयमात्मा ब्रह्म।

यह आत्मा ही ब्रह्म है। —बृहदा० उपनिषद्

मै तो आत्मा की अमरता पर विश्वास करता हूँ। जीवन के सागर में हम सब बिन्दु-मात्र है और जीवन की वास्तविकता ही सत्य है, आत्मा है, परमात्मा है।
—महात्मा गाधी

हमारी आत्मा अमर है। —सुकरात

आत्मा को रथ में बैठा हुआ योद्धा जान, शरीर को रथ जान, बुद्धि को सारथि जान और मन को लगाम जान। —कठोपनिषद्

आत्मा एक चेतन तत्त्व है, जो अपने रहने के लिए उपयुक्त शरीर का आश्रय लेता है और एक देह से दूसरी देह में जाता है। भौतिक शरीर आत्मा को धारण करने के लिए विवश होता है। —गेटे

आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्, नान्यत्किञ्चन मिषत्। स ऐक्षत लोकान्नु सृजा इति। —ऐतरेय ब्राह्मण

यह सारा जगत पूर्व में आत्मा ही था, अन्य कोई तत्त्व नही था, उस आत्मा ने अपनी इच्छा से लोक का सर्जन किया।

न जायते म्रियते वा विपश्चि–
न्नाय कुतश्चिन्न वभूव कश्चित्।
अजो नित्य शाश्वतोऽय पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

नित्य चैतन्यरूप आत्मा न उत्पन्न होता है न मरता है, न यह किसी से हुआ है और न इससे कोई हुआ है—अर्थात् इसका कारण या कार्य नही है। यह अजन्मा है, नित्य है, शाश्वत है और पुराण है, शरीर के मारे जाने पर भी यह मरता नही है।

—कठोपनिषद्

घटावभासको भानुर्घटनाशे न नश्यति।
देहावभासक साक्षी देहनाशे न नश्यति॥

जैसे घडे का प्रकाशक सूर्य, घडे के नाश हो जाने पर नष्ट नही होता, वैसे ही देह का प्रकाशक आत्मा देह के नष्ट होने पर नष्ट नही होता। —आत्म प्रबोध उप०

जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश अलग-अलग घरो में जाकर भिन्न नही हो जाता, उसी प्रकार ईश्वर की महान् आत्मा पृथक्-पृथक् जीवो में प्रविष्ट होकर विभिन्न नहीं होती। —प्रेमचन्द

जितनी प्रिय वस्तुएँ है उनमें आत्मा ही प्रधान है और भगवान् हरि ही उन सवमें आत्मारूप मे स्थित हैं, अत. उनसे वढकर प्रिय वस्तु और कौन हो सकती है।

—नारद मुनि

अहमिन्द्रो न पराजिग्ये।
मैं आत्मा हूँ, मुझे कोई हरा नही सकता। —ऋग्वेद

आत्मा वह अक्षय और अमर तत्त्व है जो अपनी चिरन्तनता के कारण जन्म और मृत्यु की सीमा से परे है। —पं० कमलापति त्रिपाठी

य आत्मापहतपाप्मा विजरो विमृत्युर्विशोको विजिघत्सोऽपिपास सत्यकाम' सत्यसकल्प सोऽन्वेष्टव्य स विजिज्ञासितव्य। —छान्दोग्योपनिषद्

जो आत्मा पापरहित, जरारहित, मृत्युरहित, शोकरहित, भूखरहित, प्यास रहित, सत्यकाम, सत्यसकल्प है उसे खोजना चाहिए, उसे जानने की इच्छा करनी चाहिए। —प्रेमचन्द

एन्थोनी ने प्रेम में, ब्रूटस ने कीर्ति में और सीज़र ने साम्राज्य-शासन के विस्तार में आनन्द ढूंढा। प्रथम को अपमान, द्वितीय को घृणा और तृतीय को कृतघ्नता मिली एव प्रत्येक नष्ट हो गया। ससार की सभी वस्तुएँ जब अनुभव के तराज़ू पर तोली गयी तो सबकी सब निकम्मी निकली अर्थात् सबके सब निस्सार प्रतीत हुए। केवल आत्मज्ञान ही हृदय को आनन्द देने वाला निकला। —स्वामी रामतीर्थ

जीवन का आनन्द गौरव के साथ, सम्मान के साथ, स्वाभिमान के साथ जीन में है। —अज्ञात

सुख या आनन्द कर्म के रूप में रहता है। —स्वामी रामतीर्थ

सुख और आनद ऐसे इत्र हैं, जिन्हें जितना अधिक दूसरो पर छिडकेंगे उतनी ही सुगध आपके भीतर समायेगी। —एमर्सन

आपत्ति

पाच रूप पाडव भए, रथ-वाहक नलराज।
दुरदिन परै 'रहीम' कहि, बडेन किये घटि काज॥ —रहीम

दुनिया के जितने बडे आदमी हुए हैं—धनिक हो, राजनीतिज्ञ हो, कलाकार हो—कठोर अनुभव और विपदाओ से गुज़रे विना उनकी उन्नति नही हुई है। शिल्पकार की हथौडी के प्रहार सहे विना देवता की मूर्ति बनती ही नही। —अज्ञात

Gold is tried by fire, brave men by adversity
अग्नि सोने को परखती है, आपत्ति वीर पुरुष को। —सेनेका

विपति बराबर सुख नही, जो थोरे दिन होय। —रहीम

कर्सै कनकु मनि पारिखि पाये।
पुरुप परखियहि समय सुभाये॥ —तुलसी (मा०-आ०)

हम तकलीफ में बहुत जल्द झुंझला उठते हैं। गर्म पानी को उबालने के लिए तेज आच की आवश्यकता नही, हलकी सी आच ही काफी है। —सुदर्शन

धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपति काल परखिये चारी॥ —तुलसी (मानस)

मदा सर्वदा सहज मगल साधन करते हुए भी जो आपत्ति आ पडे तो उसे ईश्वर की इच्छा ही समझकर सतोष करना चाहिए। —अज्ञात

To overcome difficulties is to experience the full delight of existence.

आपत्तियो पर विजय पाना ही जीवन के आनन्द की पराकाष्ठा का अनुभव करना है। —शोपेनहार

आपत्तियाँ हमें आत्मज्ञान कराती हैं, वे हमें दिखा देती हैं कि हम किस मिट्टी के बने हैं। —जवाहरलाल नेहरू

मनुष्य आपत्तियो का लक्ष्य बनने के लिए ही जन्मा है, अतएव बुद्धिमान् मनुष्य को आपत्ति से घबराना नही चाहिए। कन्फ्यूशियस

आपत्तियाँ मनुष्यता की कसौटी हैं, बिना इनसे खरा उतरे कोई सफल नही हो सकता। —अज्ञात

एक आपत्ति अनेक आपत्तियो की जननी होती है। —अज्ञात

आपत्ति 'मनुष्य' बनाती है और सम्पत्ति 'राक्षस'। विक्टर ह्यूगो

आभूषण

आभूषण से स्त्रियाँ नही सजती, वह सजती है अपने गुणो से, अपने रूप से, अपने मन की निर्मलता से, अपने स्वभाव की पवित्रता से। —अज्ञात

लज्जा और विनय ही भारत की देवियो का आभूषण है। —प्रेमचन्द

सुन्दर आकृतिवालो के लिए आभूषण की आवश्यकता नही है। —कालिदास

वाणी ही मनुष्य का एक ऐसा आभूषण है जो अन्य भूषणो के सदृश कभी घिसता नही। —भर्तृहरि

नारी का सतीत्व ही उसका आभूषण है। —अज्ञात

नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य के आभूषण होते हैं। शेष सब नाममात्र के भूषण हैं। —सत तिरुवल्लुवर

ऐश्वर्यस्य विभूपण सुजनता शौर्यस्य वाक्सयमो
ज्ञानस्योपशम कुलस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्यय
अक्रोधस्तपस क्षमा वलवता धर्मस्य निर्व्याजिता
सर्वेषामपि सर्वकारणमिद शील पर भूषणम् ।।

ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता, शूरता का वाक्सयम, ज्ञान का शान्ति, कुल का विनय, धन का सुपात्र के लिए व्यय, तपस्वी का भूषण क्रोध न करना, बलवान् का क्षमा, धर्म का निश्छलता और सब गुणो का आभूषण केवल शील है। —भर्तृहरि

आय

अपार धनशाली कुबेर भी यदि आय से अधिक व्यय करे तो कगाल हो जाता है।
— चाणक्य

ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। — प्रेमचन्द

आयु

अहोरात्राणि गच्छन्ति सर्वेषा प्राणिनामिह।
आयूषि क्षपयन्त्याशु ग्रीष्मे जलमिवाशव ।। — वाल्मीकि-रा०, अयोध्या०

दिन रात लगातार वीत रहे हैं और ससार में सभी प्राणियो की आयु का तीव्र गति से नाश कर रहे हैं—ठीक उसी तरह, जैसे सूर्य की किरणें गर्मी में शीघ्रतापूर्वक जल को सुखाती रहती हैं।

Youth is blunder, manhood a struggle, old age a regret
जवानी वडी भूल है, मनुष्यत्व सघर्ष है, बुढापा पश्चात्ताप है। —डिजराइल

At 20 years of age the will reigns, at 30 the wit, at 40 the judgement
वीस वर्ष की आयु में सकल्प शासन करता है, तीस वर्ष में वुद्धि, चालीस वर्ष में विवेक। — फ्रैंकलिन

आरत

आरत काह न करइ कुकरमू। — तुल्सी

आरत कर्हाह विचार न काऊ
सूझ जुआरिहि आपन दाऊँ। —तुलसी

रहत न आरत के चित चेतू। — तुलसी

आरम्भ

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्या ।
विघ्नैः पुन पुनरपि प्रतिहन्यमाना. प्रारभ्यमुत्तमजना न परित्यजन्ति ।।

— भर्तृहरि

नीच लोग विघ्न के भय से कोई कार्य आरम्भ नही करते, मध्यम श्रेणी के लोग कार्य को आरम्भ करके विघ्न पडने पर बीच में ही छोड देते है, किन्तु उत्तम लोग बारम्बार विघ्न पडने पर भी आरम्भ किये हुए काम को बीच मे नही छोडते ।

The beginning is the most important part of the work
किसी कार्य का आरम्भ उसका सबसे महत्त्वपूर्ण अग होता है। — प्लेटो

Well-begun is half-done.
यदि आरभ अच्छा हुआ तो समझिए कि आधा काम पूरा हो गया।

What you can do, or dream you can, begin it, boldness has genius, power and magic in it, only engage and then the mind grows muled, begin and then the work will be completed

जिस काम को तुम कर सकते हो या कल्पना करते हो कि तुम कर सकोगे, उसको आरम्भ करो, साहस में प्रतिभा, शक्ति और जादू है। सिर्फ काम में जुट जाओ, मस्तिष्क में वेग आ जायगा। आरम्भ करो, कार्य समाप्त होगा। — गेटे

आराम

आराम हराम है। — जवाहरलाल नेहरू

बहुत ज्यादा आराम स्वय दर्द बन जाता है। — होमर

Most of our comforts grow up between our crosses
हमारे बहुत से आराम की उत्पत्ति विपत्ति के समय होती है। — यग

आराम उनके प्रति विश्वासघात है जो इस ससार से चले गये हैं और जाते समय स्वतन्त्रता का दीप सदा प्रज्ज्वलित रखने के लिए हमें दे गये हैं। यह उस ध्येय के प्रति विश्वासघात है जिसे हमने अपनाया है और जिसे प्राप्त करने की हमने प्रतिज्ञा की है। यह उन लाखो के प्रति विश्वासघात है जो कभी आराम नही करते।

— जवाहरलाल नेहरू

आलस्य

आलस्य वह राजरोग है जिसका रोगी कभी नही सँभलता।

—प्रेमचन्द (मानसरोवर)

आलस्य आपके लिए मृत्यु है और केवल उद्योग ही आपका जीवन है।

—स्वामी रामतीर्थ

भूत्यै जागरणम् अभूत्यै स्वप्नम्। —यजुर्वेद

जागना (ज्ञान) ऐश्वर्यप्रद है। सोना (आलस्य) दरिद्रता का मूल है।

उच्चकुलरूपी दीपक, आलस्यरूपी मैल लगने पर प्रकाश में घटकर बुझ जायगा। —संत तिरुवल्लुवर

इच्छन्ति देवा सुन्वन्त न सुप्ताय स्पृहयन्ति। —ऋग्वेद

देवता यज्ञकर्ता, पुरुषार्थी तथा भक्त को चाहते है, आलसी से प्रेम नही करते।

आलसियो की तरह जीने से समय और जीवन पवित्र नही किये जा सकते।

—रस्किन

आलस्य को अपना एकमात्र शत्रु समझनेवाला कर्तव्य-परायण व्यक्ति ही वर्तमान परिस्थिति का सदुपयोग करते हुए उसे अपने अनुकल वना लेता है।

—अज्ञात

दुनिया में आलस्य वढाने-सरीखा दूसरा भयकर पाप नही है। —विनोबा

In idleness alone there is perpetual despair

आलस्य में ही सान्ततिक निराशा रहती है। —कार्लाइल

आलस्य दरिद्रता की कुजी और सारे अवगुणो की जड है। —स्परजन

आलस्य जीवित मनुष्य को दफना देता है। —जैरेमी टेरल

Idleness is only the refuge of weak minds, and the holiday of fools

आलस्य दुर्वल मनवालो का एकमात्र शरण है, और मूर्खो का अवकाश दिवस।

—चेस्टरफील्ड

आलस्य स्त्रीसेवा सरोगता जन्मभूमिवात्सल्यम्।
संतोषो भीरुत्व षड् व्याघाता महत्त्वस्य॥ —हितोपदेश

आलस्य, स्त्री की सेवा, रोगी रहना, जन्मभूमि का स्नेह, सतोप और डरपोकपन ये छ' बातें उन्नति के लिए बाधक हैं।

आलस्य में दरिद्रता का वास है मगर जो आलस्य नही करता उसके परिश्रम में कमला बसती ह। —सत तिरुवल्लुवर

अगर तूने स्वर्ग और नरक नही देखा है तो समझ ले कि उद्यम स्वर्ग है और आलस्य नरक है। —अज्ञात

आलस्य सब कामो को कठिन और परिश्रम सबको सरल कर देता है। —अज्ञात

आलस्य हि मनुष्याणा शरीरस्थो महान् रिपु ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धु कृत्वा य नावसीदति। —भर्तृहरि

आलस्य ही मनुष्य के शरीर में रहनेवाला सबसे बडा शत्रु है, उद्यम के समान मनुष्य का कोई बन्धु नही है जिसके करने से मनुष्य दुखी नही होता।

आलस्य परमेश्वर के दिये हुए हाथ-पैरो का अपमान है। —अज्ञात

परिश्रम ऋण को चुकाता और आलस्य उसे बढाता है। —विनोबा

आलस्य से ही दरिद्रता और परतन्त्रता मिलती है। —अज्ञात

आलसी

आलसी मनुष्य सदा ऋणी और दूसरो के लिए भार-रूप रहता है। —अज्ञात

बरतने से कोई वस्तु इतनी जल्दी नही घिसती जितनी जल्दी मोर्चा लगने से घिसती है। इसी प्रकार आलस्य आलसी आदमी को निकम्मा कर देता है। —अज्ञात

आलसी को सदा असतोप रहता है। —अज्ञात

आलोचना

कभी कभी मौन रह जाना सबसे तीखी आलोचना होती है। —अज्ञात

जब तक तुममें दूसरो को व्यवस्था देने या दूसरो के अवगुण ढूढने, दूसरो के दोष ही देखने की आदत मौजूद है, तब तक तुम्हारे लिए ईश्वर का साक्षात् करना अत्यन्त कठिन है। —स्वामी रामतीर्थ

आलस्य

आलस्य वह राजरोग है जिसका रोगी कभी नही सँभलता।

—प्रेमचन्द (मानसरोवर)

आलस्य आपके लिए मृत्यु है और केवल उद्योग ही आपका जीवन है।

—स्वामी रामतीर्थ

भूत्यै जागरणम् अभूत्यै स्वप्नम्। —यजुर्वेद

जागना (ज्ञान) ऐश्वर्यप्रद है। सोना (आलस्य) दरिद्रता का मूल है।

उच्चकुलरूपी दीपक, आलस्यरूपी मैल लगने पर प्रकाश में घटकर बुझ जायगा। —संत तिरुवल्लुवर

इच्छन्ति देवा सुन्वन्त न सुप्ताय स्पृहयन्ति। —ऋग्वेद

देवता यज्ञकर्ता, पुरुषार्थी तथा भक्त को चाहते हैं, आलसी से प्रेम नही करते।

आलसियो की तरह जीने से समय और जीवन पवित्र नही किये जा सकते।

—रस्किन

आलस्य को अपना एकमात्र शत्रु समझनेवाला कर्तव्य-परायण व्यक्ति ही वर्तमान परिस्थिति का सदुपयोग करते हुए उसे अपने अनुकल बना लेता है।

—अज्ञात

दुनिया में आलस्य बढाने-सरीखा दूसरा भयकर पाप नही है। —विनोबा

In idleness alone there is perpetual despair

आलस्य में ही सान्ततिक निराशा रहती है। —कार्लाइल

आलस्य दरिद्रता की कुजी और सारे अवगुणो की जड है। —स्परजन

आलस्य जीवित मनुष्य को दफना देता है। —जैरेमी टेरल

Idleness is only the refuge of weak minds, and the holiday of fools

आलस्य दुर्बल मनवालो का एकमात्र शरण है, और मूर्खो का अवकाश दिवस।

—चेस्टरफील्ड

आलस्य स्त्रीसेवा सरोगता जन्मभूमिवात्सल्यम्।
सतोषो भीरुत्व षड् व्याघाता महत्त्वस्य॥ —हितोपदेश

आलस्य, स्त्री की सेवा, रोगी रहना, जन्मभूमि का स्नेह, सतोप और डरपोकपन ये छ बातें उन्नति के लिए वाधक हैं।

आलस्य में दरिद्रता का वास है मगर जो आलस्य नही करता उसके परिश्रम में कमला बसती ह। —सत तिरुवल्लुवर

अगर तूने स्वर्ग और नरक नही देखा है तो समझ ले कि उद्यम स्वर्ग है और आलस्य नरक है। —अज्ञात

आलस्य सव कामो को कठिन और परिश्रम सवको सरल कर देता है।
—अज्ञात

आलस्य हि मनुष्याणा शरीरस्थो महान् रिपु ।
नास्त्युद्यमसमो वन्धु कृत्वा य नावसीदति। —भर्तृहरि

आलस्य ही मनुष्य के शरीर में रहनेवाला सवसे वडा शत्रु है, उद्यम के समान मनुष्य का कोई वन्धु नही है जिसके करने से मनुष्य दुखी नही होता।

आलस्य परमेश्वर के दिये हुए हाथ-पैरो का अपमान है। —अज्ञात

परिश्रम ऋण को चुकाता और आलस्य उसे वढाता है। —विनोवा

आलस्य से ही दरिद्रता और परतन्त्रता मिलती है। —अज्ञात

आलसी

आलसी मनुष्य सदा ऋणी और दूसरो के लिए भार-रूप रहता है।
—अज्ञात

वरतने से कोई वस्तु इतनी जल्दी नही घिसती जितनी जल्दी मोर्चा लगने से घिसती है। इसी प्रकार आलस्य आलसी आदमी को निकम्मा कर देता है। —अज्ञात

आलसी को सदा असतोप रहता है। —अज्ञात

आलोचना

कभी कभी मौन रह जाना सवसे तीखी आलोचना होती है। —अज्ञात

जव तक तुममें दूसरो को व्यवस्था देने या दूसरो के अवगुण ढूटने, दूसरो के दोप ही देखने की आदत मौजूद है, तव तक तुम्हारे लिए ईश्वर का साक्षात् करना अत्यन्त कठिन है।
—स्वामी रामतीर्थ

Don't complain about the snow on your neighbour's roof, when your own door-step is unclean

जब आपके अपने द्वार की सीढियाँ मैली है तो अपने पडोसी की छत पर पडी हुई गन्दगी का उलाहना मत दीजिए। —कनफ्यूशियस

Criticism is futile because it puts a man on the defensive and usually makes him strive to justify himself Criticism is dangerous, because it wounds a man's precious pride, hurts his sense of importance and arouses his resentment

आलोचना व्यर्थ होती है, क्योकि इससे दोषी प्राय अपने को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयत्न करने लगता है। आलोचना भयावह भी है, क्योकि वह मनुष्य के बहुमूल्य गर्व पर घाव करती है, उसकी महत्ता के भाव को पीडा पहुँचाती है और उसके क्रोध को भडकाती है। —डेल कारनेगी

दूसरो में दोष न निकालना, दूसरो को उतना उन दोषो से नही बचाता, जितना अपने को बचाता है। —स्वामी रामतीर्थ

आलोचना वृक्ष की शाखा से प्राय फूल और कीडे—दोनो को एक साथ ही पृथक कर देती है। —रिश्टर

Judge not, that ye be not judged

किसी की आलोचना मत करो, जिससे तुम्हारी भी कोई आलोचना न करे। —लिंकन

स्वय भगवान् भी मनुष्य के कर्मों का विचार उसकी मृत्यु के पहले नही करते। —डा० जानसन

Criticism is a dangerous spark—spark that is liable to cause an explosion in the powder magazine of pride,—an explosion that sometimes hastens death

आलोचना एक भयानक चिनगारी है—ऐसी चिनगारी है जो अहकाररूपी बारूद के गोदाम में विस्फोट उत्पन्न कर सकती है और वह विस्फोट कभी कभी मृत्यु को शीघ्र ले आता है। —डेल कारनेगी

कभी कभी आलोचना अपने मित्र को भी शत्रु के शिविर में भेज देती है। —अज्ञात

आवश्यकता

I hold that to need nothing is divine, and the less a man needs, the nearer does he approach divinity.

मेरा विश्वास है कि कोई भी आवश्यकता न होना दिव्य है, और जिस मनुष्य की जितनी कम आवश्यकता होती है उतना ही वह ईश्वर के निकट होता है।

—सुकरात

There is no virtue like necessity
आवश्यकता के सदृश कोई सद्गुण नही। —शेक्सपियर

Necessity is the mother of invention
आवश्यकता आविष्कार की जननी है। —कहावत

आवश्यकता ही ससार के व्यवहारो की दलाल है। —जयशकर प्रसाद

Necessity is the argument of tyrants, it is the creed of slaves
आवश्यकता अत्याचारियो का तर्क है, यह पराधीनो का मजहब है।

—विलियम पिट

Necessity is often the spur to genius.
आवश्यकता बहुधा प्रतिभा को प्रोत्साहित करती है। —बालजक

आवश्यकता तर्क के सम्मुख नही झुकती। —गेरीबाल्डी

आवश्यकता कायर को भी वीर बना देती है। —सेलहास्ट

आवश्यकता कभी मुनाफे का सौदा नही करती। —फ्रेंकलिन

Necessity hath no law
आवश्यकता के लिए कोई नियम (कानून) नही है। —क्रामवेल

It is necessity and not pleasure that compels us
यह आवश्यकता है, आनन्द नही, जो हमें बाध्य करती है। —दाने

The mother of useful arts is necessity, that of the fine arts is luxury

आवश्यकता उपयोगी कलाओं की जननी है, और विलासिता ललित कलाओं की।

—शापेनहॉवर

आवागमन

यदि मनुष्य आवागमन के चक्कर से छूटना चाहता है तो उसे इच्छाओ का दमन करना होगा। परन्तु इन्द्रियो पर काबू पाना बहुत बडी तपस्या है। —अज्ञात

जन्म और मृत्यु ससार के दो निर्विवाद सत्य है। आवागमन की समस्या इन्ही दो सत्यो का स्पर्श करती है। —अज्ञात

जीवन तो मृत्यु और पुनर्जन्म की परम्परा की कहानी है। हमें पुनर्जन्म पाने के लिए पहले मरना होगा। रोम्यां रोला

आवागमन ससार का सहज धर्म है, इससे परमात्मा को भी अवकाश नही है। —अज्ञात

आवेश

आवेश और क्रोध को वश में कर लेने से शक्ति बढती है और आवेश को आत्म-बल के रूप में परिवर्तित कर दिया जा सकता है। —महात्मा गाधी

आवेश के प्रभाव से बुद्धि विपरीत हो जाती है। —अज्ञात

आवेश बुद्धि, बल, शक्ति, क्षमता—सबका दिवाला निकाल देता है। —अज्ञात

आश्चर्य

Wonder is the first cause of philosophy
आश्चर्य दर्शन का प्रथम कारण है। —अरस्तू

Wonder is the daughter of ignorance
आश्चर्य अज्ञानता की बेटी है। — — जान फ्लेरियो

Wonder is the basis of worship
आश्चर्य आराधना का आधार है। —कार्लाइल

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यमसादनम्।
शेपा जीवितुमिच्छन्ति किमाश्चर्यमत परम्॥ —वेदव्यास (महा०)

प्रतिदिन जीव मृत्यु के मुख में जा रहे हैं, पर बचे हुए लोग अमर रहना चाहते हैं, इनसे बढकर आश्चर्य क्या होगा।

आश्चर्य ज्ञान का मूल है। —बेफन

Wonder is involuntary praise.
आश्चर्य अनैच्छिक प्रशसा है। —यंग

All wonder is the effect of novelty or ignorance
सम्पूर्ण आश्चर्य कुतूहलत्व या अज्ञानता का परिणाम है। —जानसन

आशा

ससार में ऐसा कोई नही हुआ है जो मनुष्य की आशा का पेट भर सके। पुरुष की आशा समुद्र के समान है, वह कभी भरती ही नही।

—वेदव्यास (महाभारत)

आशा अमर है, उसकी आराधना कभी निष्फल नही होती। —महात्मा गाधी

निरर्थक आशा से बँधा मानव अपना हृदय सुखा डालता है और आशा की कड़ी टूटते ही वह झट से विदा हो जाता है। —रवीन्द्र

आशा और आत्म-विश्वास ही वे वस्तुएँ है जो हमारी शक्तियो को जाग्रत करती हैं और हमारी उत्पादनशक्ति को दुगना तिगुना बढा देती हैं।

—स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

Hope is good breakfast, but it is a bad supper
आशा उत्तम जलपान है किन्तु यह रात्रि का निकृष्ट भोजन है। —बेकन

आशा बुद्धि को धोखा दे जाती है। —अज्ञात

निराशाओ के सघन अधकार में जो नन्ही नन्ही आशाओ की धुधली किरणें खोयी सी रहती हैं, उनका भी जीवन में कम महत्त्व नही होता। —अज्ञात

आशा नाम नदी मनोरथ जला तृष्णातरगाकुला
रागग्राहवती वितर्कविहगा धैर्यद्रुमध्वसिनी।
मोहावर्त्तसुदुस्तराऽतिगहना प्रोत्तुगचिन्तातटी,
तस्या पारगता विशुद्धमनसो नन्दन्ति योगीश्वरा ॥ —भर्तृहरि (वैराग्य०)

आशा एक नदी है, उसमें इच्छारूपी जल है, तृष्णा उस नदी की तरगें है, आसक्ति उसके मगर है, तर्क-वितर्क उसके पक्षी है, मोहरूपी भँवरो के कारण वह दुस्तर तथा गहरी है, चिन्ता ही उसके ऊँचे ऊँचे किनारे हैं, धैर्यरूपी वृक्षो को नष्ट करने वाली है, जो शुद्धचित्त योगीश्वर उसके पार चले जाते हैं, वे बडा आनन्द उपभोग करते हैं।

Biography is the only true history
जीवनियाँ ही केवल सच्चा इतिहास हैं। —कार्लाइल

वृत्त यत्नेन सरक्षेत् वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्तत क्षीण वृत्ततस्तु हतो हत ॥

—वेदव्यास (महाभारत)

इतिहास की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन तो आता और जाता है। धन से हीन होने पर कोई नष्ट नही होता किन्तु इतिहास और अपना प्राचीन गौरव नष्ट कर देने पर विनाश निश्चित है।

इतिहास राजनीति की पाठशाला है। —प्रोफेसर शेली

इतिहास के अनुभवो से हम सवक नही लेते, इसी से इतिहास की पुनरावृत्ति होती है। —विनोबा

इन्द्रियाँ

वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता। —भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

अपनी इन्द्रिया जिसके वश में है उसकी वुद्धि स्थिर है। वही विद्वान् और पण्डित है।

यदा सहरते चाय कूर्मोऽङ्गानीव सर्वश।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेम्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

—श्रीकृष्ण (गीता)

कछुआ जैसे सव ओर से अग समेट लेता है वैसे ही जव पुरुष इन्द्रियो को उनके विषयो से समेट लेता है तव उसकी वुद्धि स्थिर हुई कही जाती है।

कुरगमातगपतगभृगमीना हता पचभिरेव पच।
एक प्रमादी स कथ न हन्यते यस्सेवते पचभिरेव पच॥

—अज्ञात

हिरण गाने से, हाथी हस्तिनी मे, पतग दीपक से, भ्रमर गध से, और मछलियाँ जीभ के स्वाद से मोहित होकर अपने प्राण खो देती हैं। फिर जिन्हें पाँच इन्द्रियाँ है और जो सभी विषयो की आसक्ति में फसते हैं तो उनको मृत्यु क्यो छोड़ेगी ?

इन्द्रिय-दमन

इन्द्रिय-दमन का अभ्यास भविष्य जीवन को बहुत शान्त और सहनशील बना देता है। —अज्ञात

इन्द्रिय-संयम

इन्द्रिय-सयम और मन शुद्धि ऐसी दवा है कि इनसे शारीरिक स्वास्थ्य तो मिलता ही है, पारमार्थिक स्वास्थ की भी प्राप्ति होती है। —अज्ञात

जिसने इन्द्रियो को अपने वश में कर लिया है, उसको स्त्री तृण-तुल्य जान पडती है। —चाणक्य

ईमानदारी

मनुष्य की प्रतिष्ठा ईमानदारी पर ही निर्भर है। —अज्ञात

Honesty is the best policy.
ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। —फ्रैंकलिन

ईमानदारी, वचन का पालन और उदारता—ये तीन ऐसे गुण है जो स्वाभिमान के साथ अनिवार्य रूप से रहते हैं। —अज्ञात

No legacy is so rich as honesty
कोई उत्तरदान, ईमानदारी के सदृश बहुमूल्य नही है। —शेक्सपियर

ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट कृति है। —पोप

जिस देश के बुद्धिजीवी लोग अपनी बुद्धि का प्रयोग ईमानदारी के साथ करना छोड देते हैं, वह देश सब प्रकार से दीन-हीन और नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। —अज्ञात

जो मनुष्य स्वाभिमानी होगा वह अवश्य ही ईमानदार होगा। —अज्ञात

ईश-कीर्तन

प्रभुकीर्तन और कथा मखमल का बिछौना है, उस पर नीद न आयेगी तो और कहाँ आयेगी ? नाच-रग कांटो की कंटीली और नुकीली जमीन है, उस पर नींद कहां ? —स्वामी दयानन्द

ईश-कृपा

मूक होइ बाचाल, पगु चढै गिरिवर गहन।
जासु कृपा सो दयाल, द्रवौ सकल कलिमल-दहन।। —तुलसी

जिसकी पीठ पर परमेश्वर का हाथ हो उसके लिए कुछ भी कठिन नही। भगवान जो चाहे कर दे उसका हाथ कौन पकड सकता है? —अज्ञात

जा पर कृपा राम कै होई। ता पर कृपा करहि सब कोई।।
—तुलसी (मानस बाल०)

जो अपना चित्त मुझमें लगा देते है वह मेरी कृपा से ससार के समस्त दु खो से पार हो जाते हैं। —भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

सकल विघ्न व्यापहि नहि तेही, राम कृपा करि चितवहि जेही।।
—तुलसी (मानस बाल०)

सर्वकर्मण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रय।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वत पदमव्ययम्।।
—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

मेरा आश्रय ग्रहण करनेवाला सदा सब कर्म करता हुआ भी मेरी कृपा से शाश्वत, अव्यय पद को पाता है।

बिनु बिस्वास भगति नहि, तेहि बिनु द्रवहि न राम।
रामकृपा बिनु सपनेहुँ, जीव न लह बिश्राम।।
—तुलसी (मानस-उत्तर)

पतितोऽप्यातिदुर्गतोऽपि सन्नकृतज्ञो निखिलागसा पदम्।
भवदीय इतीरयस्त्वया दयनीयस्त्रपयैव केवलम्।।

अत्यन्त पतित, दुर्गत, अकृतज्ञ और निखिल अपराधो का स्थान तो मैं हू, फिर भी मैं आपका हूँ, यही लज्जा रखने के लिए आपकी दया मुझ पर होनी चाहिए।
—अज्ञात

ईश-चर्चा

जिन्हें दोनो वक्त भूखे रहना पडता है उनसे मैं ईश्वर की चर्चा कैसे करूँ? उनके सामने तो परमात्मा दाल रोटी के ही रूप में प्रकट हो सकते है।
—महात्मा गाधी

ईश-चिन्तन

जिस प्रकार औषधि शरीर के सब रोगों को दूर कर देती है, उसी प्रकार ईश-चिन्तन से मन के क्लेश दूर होते हैं। —प्रेमचन्द

ईश-चिन्तन से करोड़ो पाप इस तरह नष्ट हो जाते हैं, जैसे आग की एक चिनगारी घास के ढेर को जला देती है। —अज्ञात

धन, दारा अरु सुतन में, रहत लगाये चित्त।
क्यों रहीम खोजत नहीं, गाढे दिन को मित्त ॥ —रहीम

सच्चे भक्तों का एकमात्र वल भगवान का भरोसा ही है। वे पूर्ण निर्भयता के साथ भगवान के होकर अपना जीवन केवल भगवान के चिन्तन में ही लगाया करते हैं। —अज्ञात

अनन्याश्चिन्तयन्तो मा ये जना पर्युपासते।
तेषा नित्याभियुक्ताना योगक्षेम वहाम्यहम् ॥ —(गीता)

जो अनन्य भक्त मेरा चिन्तन करते हुए मेरी उपासना करते हैं उन नित्य मुझमे रत रहनेवालों के योग-क्षेम का भार मैं उठाता हूं।

ईश-तुल्य

नारि नयन सर जाहि न लागा। घोर क्रोध-तम निसि जो जागा ॥
लोभ-पास जेहि गर न बँधाया। सो नर तुम्ह समान रघुराया ॥
—तुलसी (मानस, किष्किंधा)

जिसके चित्त में कभी क्रोध नहीं आता, और जिसके हृदय में सर्वदा परमेश्वर विराजमान रहता है, वह भक्त ईश्वरतुल्य है। —रैदास

ईश-दर्शन

मेरे प्रभु ! तुम्हारे वियोग के क्षण मुझे शत्रुओं के वाणों की भांति लगते हैं। तुम्हारे हाथ कब उन वाणों को मेरे शरीर से दूर करेंगे ? —अज्ञात

ईश-दर्शन और उसमें वास्तविक प्रवेश केवल अनत भक्ति से ही सम्भव है।
—गीता

ईश-प्रिय

अमीर जो गरीबो के समान नम्र है और गरीब जो कि अमीरो के समान उदार हैं वही ईश्वर के प्रिय-पात्र होते हैं। —सादी

ईश-पूजा

ईश्वर की पूजा करना अन्तर्निहित आत्मा की उपासना ही है।

—स्वामी विवेकानद

जो अपने पेट का गुलाम है वह ईश्वर की पूजा कभी नही कर सकता।

—सादी

लोकसेवा हमारी मूर्तिपूजा है। —विनोवा

मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोच्च साक्षात् मन्दिर है। इसलिए साक्षात् देवता की पूजा करो। —स्वामी विवेकानद

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानव ।

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

अपने-अपने कर्मों के द्वारा इस ईश्वर की पूजा करने से मनुष्य सिद्धि को प्राप्त होता है।

ईश-प्राप्ति

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।
अन्त शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो य पश्यन्ति यतय क्षीणदोपा ॥

—महर्षि अगिरा

यह शरीर के भीतर ही (हृदय में विराजमान) प्रकाशस्वरूप (और) परम विशुद्ध परमात्मा निस्सदेह सत्य-भापण, तप, (और) ब्रह्मचर्यपूर्वक यथार्थ ज्ञान से ही सदा प्राप्त होनेवाला है, जिसे सब प्रकार के दोपो से रहित हुए यत्नशील साधक ही देख पाते हैं।

यथा नद्य स्यन्दमाना समुद्रेऽस्त गच्छन्ति नामरूपे विहाय।
तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्त परात्पर पुरुपमुपैति दिव्यम् ॥

—महर्षि अगिरा

जिस प्रकार वहती हुई नदियां नाम-रूप को छोड़कर समुद्र में विलीन हो जाती है, वैसे ही ज्ञानी महात्मा नाम-रूप से रहित होकर उत्तम से उत्तम दिव्य परम पुरुष परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्त सङ्गवर्जित ।
निर्वैर सर्वभूतेषु य. स मामेति पाण्डव ।।

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

हे पाण्डव! जो सब कर्म मुझे समर्पित करता है, मुझ में परायण रहता है, मेरा भक्त बनता है, आसक्ति का त्याग करता है और प्राणी-मात्र में द्वेष रहित होकर रहता है, वह मुझे पाता है।

सूधे मन सूधे वचन, सूधी सब करतूति ।
तुलसी सूधी सकल विधि, रघुवरप्रेम प्रसूति ।। —तुलसी

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्त पर्युपासते ।
सर्वत्रगमचिन्त्य च कूटस्थमचल ध्रुवम् ।।
सनियम्येन्द्रियग्राम सर्वत्र समवुद्धय ।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रता. ।। —गीता

सब इन्द्रियों को वश में रखकर, सर्वत्र समत्व का पालन करके जो दृढ, अचल, और अचिंत्य, सर्वव्यापी, अवर्णनीय, अविनाशी स्वरूप की उपासना करते हैं वे सब प्राणियों के हित में लगे हुए मुझे ही पाते है।

'भोले भाव मिलें रघुराई' —गुरु नानक

निर्मल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छिद्र न भावा ।।

—भगवान श्रीरामचन्द्र (रामचरितमानस)

सम शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयो ।
शीतोष्ण सुखदु खेषु सम सङ्गविवर्जित ।।

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

शत्रु-मित्र, मान-अपमान, शीत-उष्ण, सुख-दु ख आदि में जो समतावान् है और आसक्ति से रहित है वही पुरुष परमात्मा को प्राप्त कर सकता है।

ईश-प्रेम

ईश-प्रेम के द्वारा जीवन का वास्तविक अर्थ सिद्ध होता है।—स्वामी शिवानन्द

जहाँ एविरादर न मानद बकस।
दिल अन्दर जहाँ आफिरी बन्दोबस ॥ —सादी (गुलिस्ता)

भाई! यह ससार किसी के साथ नही जाता। इसलिए इसके साथ दिल मत लगाओ—लगाओ इसके बनाने वाले के साथ। उसके साथ सम्बन्ध जोडने से तुम्हारा भला होगा।

भगवत-प्रेम विना इन्द्र के जैसा ऐश्वर्य भी व्यर्थ है। —नरोत्तमदास

ईश्वरीय-प्रेम अविनश्वर तथा अपरिवर्त्तनशील है। इसकी पवित्र ज्योति कभी भी लुप्त नही होती। —स्वामी शिवानन्द

ईश-भक्ति

शरीर सुरूप तथा वा कलत्र,
यशश्चारुचित्र धन मेरुतुल्यम्।
मनश्चेन्न लग्न हरेरङ्घ्रिमध्ये,
तत कि तत कि तत कि तत. किम् ॥ —अज्ञात

सुन्दर शरीर, सुन्दरी भार्या, यश, सच्चरित्रता, अपार धन आदि सब कुछ रहते हुए भी यदि भगवान् के चरणो में मन नही लगा तो इन पदार्थो के रहने का कोई फल नही।

भक्ति ईश्वर तक पहुँचने का सुखद, सुचिक्कण राज-पथ है।
—स्वामी शिवानन्द

हृदय के अतरतम से ईश्वर के प्रति सतत एव अनन्य प्रेम करना ही भक्ति है।
—स्वामी शिवानन्द

ईश-रक्षक

जाको राखै साइयाँ मार न सकिहै कोय।
वार न वाका करि सकै जो जग वैरी होय ॥ —कबीर

सीम कि चाँपि सकै कोउ तासू। बड रखवार रमापति जासू ॥
—तुलसी (मानस बाल०)

अरक्षित तिष्ठति दैवरक्षित सुरक्षित दैवहत विनश्यति।
जीवत्यनाथोऽपि वने विसर्जित कृतप्रयत्नोऽपि गृहे न जीवति ।। —पचतत्र

दैव से रक्षा किया हुआ, विना रक्षा के भी बच जाता है, और अच्छी तरह रक्षा किया हुआ भी, दैव का मारा हुआ नहीं बचता, जैसे माता-पिता द्वारा वन में छोड़ा गया अनाथ भी जीवित रहता है किन्तु घर में अनेक उपाय करने पर भी नही जीता।

पीसनेवाली चक्की में भी वे अन्न के दाने जो कील से सटे रहते हैं सकुशल रहते हैं, उसी प्रकार जो भगवान के नाम तथा उनके पादपद्मों से आसक्त होते हैं वे ससार की विपत्तियों से पीड़ित नही होते। —स्वामी शिवानन्द

ईश्वर

ईश्वर सर्वभूताना हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ।। —गीता

हे अर्जुन! ईश्वर सबके हृदय में निवास करता है। वह माया से सब जीवों को वैसे ही नचाता है जैसे सूत्रधार कठपुतलियों को मच पर घुमाता है।

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता,
पश्यत्यचक्षु न शृणोत्यकर्ण ।
स वेत्ति वेद्य न च तस्यास्ति वेत्ता
तमाहुरग्र्य पुरुष महान्तम् ।।
—श्वेताश्वतर उ०

विना हाथ पकड़नेवाला है, विना पैर तेज दौड़नेवाला है, विना आंख के देखता है, विना कान के सुनता है, वह जानने योग्य को जानता है, उसका जाननेवाला नही है। उसको आदि, महान् पुरुष कहते है।

जिस प्रकार अक्षरों में 'अ' है, उसी प्रकार जगत् में ईश्वर है।

—सत तिरुवल्लुवर

ईश्वर न काबा में है, न काशी में है। वह तो घर घर मे व्याप्त है—हर दिल मे मौजूद है। —महात्मा गांधी

God is like a circle whose centre is everywhere but circumference nowhere

ईश्वर एक वृत्त है, जिसका केन्द्र तो सर्वत्र है, किन्तु वृत्तरेखा कहीं नहीं।

—सेंट आगस्टिन

जहन में जो घिर गया लाइन्तहा क्योकर हुआ।
जो समझ में आ गया फिर वो खुदा क्यो कर हुआ। —अकबर

न सदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम्।
ज्ञान प्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु त पश्यते निष्कल ध्यायमान ॥

—श्वेता० उ०

ईश्वर को आँखो से कोई देख नही सकता, किन्तु हममें से हर एक मन को पवित्र करके विमल वुद्धि से ईश्वर को देख सकता है।

समस्त विश्व ईश्वर से पूर्ण है। —स्वामी विवेकानन्द

व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी। सत चेतन घन आनद राशी॥
आदि-अन्त कोउ जासु न पावा। मति-अनुमान निगम यश गावा॥
विनु पद चलै सुनै विनु काना। कर-विनु कर्म करै विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी। विनु वानी वक्ता बड योगी॥
तनु विनु परस नयन विनु देखा। ग्रहै घ्रान विनु वास अशेषा॥
अस सब भाँति अलौकिक करणी। महिमा तासु जाइ किमि बरणी॥

—तुलसी (मानस-बाल०)

एको विश्वस्य भुवनस्य राजा। —ऋग्वेद

वह सब लोको का एकमात्र स्वामी है।

जिस तरह पानी को कोई जल, कोई आव, कोई वाटर कहते हैं, उसी तरह एक ही सच्चिदानन्द परमेश्वर को कोई अल्लाह, कोई हरि, कोई गॉड पुकारते हैं।

—रामकृष्ण परमहस

God grows weary of great kingdoms but never of little flowers.

ईश्वर वडे वडे साम्राज्यो से विमुख हो जाता है, परन्तु छोटे-छोटे पुष्पो से कभी खिन्न नही होता। —रवीन्द्र

प्रत्येक मनुष्य मानवता की सेवा करके ईश्वर के दर्शन कर सकता है, क्योकि न ईश्वर स्वर्ग में है, न पाताल में है, वल्कि प्रत्येक के हृदय में है। —महात्मा गाधी

तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा। ऋग्वेद

इस परमात्मा में ही सम्पूर्ण लोक स्थित है।

ईश्वर का दाहिना हाथ कोमल है, परन्तु बायां हाथ बहुत कठोर है।—रवीन्द्र

Nature is too thin a screen, the glory of the omnipresent God bursts through everywhere

प्रकृति बहुत महीन पर्दा है, सर्वव्यापी ईश्वर का प्रताप सब तरफ से फूट पड़ता है। —एमर्सन

मैं ईश्वर से डरता हूँ, ईश्वर के बाद मुख्यत. उससे डरता हूँ, जो ईश्वर से नहीं डरता। —सादी

A foe to god was never a true friend to man

ईश्वर का शत्रु कभी मानव का सच्चा मित्र नहीं हुआ। —यंग

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति। —ऋग्वेद

उस एक प्रभु को विद्वान् लोग अनेक नामों से पुकारते हैं।

ईश्वर सत्य है और प्रकाश उसकी छाया है। —प्लेटो

If God did not exist it would be necessary to invent him.

यदि ईश्वर का अस्तित्व न होता तो उसके आविष्कार की आवश्यकता होती।

—वाल्टेयर

जिधर भी जाओ, जिधर भी देखो,
उसी का प्रकाश दिखाई देता है। —गुरु नानक

ईश-विमुख

मित्र करइँ सत रिपु की करनी। ता कहँ बिबुधनदी बैतरनी॥
सब जग तेहि अनलहु ते ताता। जो रघुबीर बिमुख सुनु भ्राता॥
तुलसी (मानस—अरण्यकाण्ड)

बिंध्य न ईंधन पाइए, सागर जुरै न नीर।
परै उपास कुबेर घर, जो बिपच्छ रघुबीर॥
राम दूरि माया बढ़ति, घटति जानि मन माँह।
भूरि होति रबि दूरि लखि, सिर पर पगतर छाँह॥
बरषा को गोबर भयो, को चहै को करै प्रीति।
तुलसी तू अनुभवहि अब, राम बिमुख की रीति॥ —तुलसी

हर कि दवद ओगन जे दरे सोग बरखानद।
बांरा कि बख्यानद बदरे गन न दवानद। —सादी

उद्यम

उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथै.।
न हि सुप्तस्य सिहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा ॥ —पंचतन्त्र

कार्य मनोरथ से नही उद्यम से सिद्ध होते है । जैसे सोते हुए सिह के मुह में मृग अपने आप नही चले जाते।

विश्राम में भी उद्यम की गति है।
शात समुद्र की तरगे गतिहीन नही है। —रवीन्द्र

उद्यम ही सफलता की कुजी है। विना उद्यम किये थाली की रोटी भी अपने मुह में नही जाती। —अज्ञात

अगर तूने स्वर्ग और नरक नही देखा है तो समझ ले कि उद्यम स्वर्ग है और आलस्य नरक है। —अज्ञात

उद्यमी

नात्युच्चशिखरो मेरु नातिनीच रसातलम्।
व्यवसायद्वितीयाना नाप्यपारो महोदधि ॥

व्यवसायी मनुष्य के लिए सुमेरु पहाड की चोटी भी वहुत ऊँची नही है और उसके लिए रसातल भी अधिक नीचा नही है और वह (उद्यमी) समुद्र को भी अथाह नही समझता। —अज्ञात

उद्योग

उद्योगी मनुष्य की सहायता करने के लिए प्रकृति वाध्य है। —स्वामी रामतीर्थ

उद्योगिन पुरुपसिंहमुपैति लक्ष्मी-
र्दैवेन देयमिति कापुरुपा वदन्ति।
दैव निहत्य कुरु पौरुपमात्मशक्त्या,
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोप ? —भर्तृहरि

उद्योगी पुरुप-सिह लक्ष्मी का उपार्जन करता है, परन्तु कायर मनुष्य भाग्य के भरोसे वैठा रहता है। भाग्य को ठोकर मारकर उद्योगी पुरुप अपने कार्य में दृढता से निमग्न हो जाता है और यदि फिर भी उसे सफलता नही मिलती, तो यह भाग्य का नही वरन् अपनी कार्य-पद्धति का दोप है।

कलि शयानो भवति सजिहानस्तु द्वापर।
उत्तिष्ठस्त्रेता भवति कृत सम्पद्यते चरन्॥

—एतरेय ब्राह्मण

पड़े सोते रहना ही कलियुग है, ऊंघते रहना ही द्वापर है, उठ बैठना त्रेता है और चल पड़ना ही सतयुग है। (अत चलते रहो, चलते रहो।)

वर्तमानेन सतुष्टस् तथाप्युन्नत्यभीप्सया।
समुद्योग परस्तिष्ठेत् फल न्यस्य परात्मनि॥ —अज्ञात

मनुष्य को वर्तमान से सतुष्ट रहते हुए भी उन्नति की इच्छा से उद्योग में तत्पर होना चाहिए। साथ ही उस उद्योग के फल को परमात्मा पर छोड़ देना चाहिए।

समुद्योगपरैर्भाव्य जीवने मानवै सदा।
परमुद्योगसीमाया धीमान् ध्यान न विस्मरेत्॥ —अज्ञात

मनुष्यो को जीवन में उद्योग अवश्य करना चाहिए। परन्तु बुद्धिमान् मनुष्य को यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि फल के विषय में उद्योग की अपनी सीमा भी होती है।

जहाँ उद्योग नही वहाँ सुख नही। जिस देश से उद्योग गया उस देश को भारी घुन लगा। —विनोबा

स्वावलम्बन और सहयोगात्मक उद्योग, दोनो नागरिक जीवन की कुजी है।

—सरदार पटेल

जिस घर में उद्योग की तालीम नही उस घर के लड़के जल्दी ही घर का नाश कर देंगे। —विनोबा

मांगना एक लज्जास्पद कार्य है। अपने उद्योग से कोई वस्तु प्राप्त करना ही सच्चे मनुष्य का कर्तव्य है। —महात्मा गाधी

पहले अपनी परीक्षा करो, फिर ईश्वर को पुकारो, क्योंकि ईश्वर उद्योगी की ही सहायता करता है। —एमर्सन

उद्धार

उद्धार वही कर सकते हैं जो उद्धार के अभिमान को हृदय में आने नही देते।

—अज्ञात

अगर ससार में तीन करोड ईसा, मुहम्मद, बुद्ध या राम जन्म लें तो भी तुम्हारा उद्धार नही हो सकता, जब तक तुम स्वय अपने अज्ञान को दूर करने के लिए कटिवद्ध नही होते, तब तक तुम्हारा कोई उद्धार नही कर सकता, इसलिए दूसरो का भरोसा मत करो। —स्वामी रामतीर्थ

उधार (दे० 'ऋण')

उधार माँगना भीख माँगने से अधिक अच्छा नही है। —लेसिंग

Neither a borrower nor a lender be, for loan oft loses both itself and friend

न उधार लो और न उधार दो क्योकि उधार प्राय स्वय को और मित्र दोनो को खो देता है। —शेक्सपियर

उधार देना ही पाप करना है। —रस्किन

उन्नति

वही उन्नति कर सकता है जो स्वय अपने को उपदेश देता है। —स्वामी रामतीर्थ

स्त्री की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है। —अरस्तू

Progress—the onward stride of God

उन्नति आगे की ओर ईश्वर की लम्बी डग है। —विक्टर ह्यूगो

Intercourse is the soul of progress

मेलमिलाप उन्नति की आत्मा है। —वक्सटन

Nature knows no pause in progress and development and attaches her curse on all inaction.

प्रकृति अपनी उन्नति और विकास में रुकना नही जानती और अपना अभिशाप प्रत्येक अकर्मण्यता पर लगाती है। —गेटे

सभी वस्तुएँ जो मानव से सम्बन्धित है यदि उन्नति नही करती तो उनका ह्रास होने लगता है। —गिबन

He only is advancing in life whose heart is getting softer, whose blood warmer, whose brain quicker, whose spirit is entering into living peace

केवल वही जीवन में उन्नति कर रहा है जिसका हृदय कोमल, रुधिर उष्ण, मस्तिष्क तीक्ष्ण होता जाता है, एव जिसके मन को शान्ति मिलती जाती है।

—रस्किन

तस्मादुन्नतिकामेन मानवेनेह जन्मनि।
आत्मनो भावसशुद्ध्यै सर्वदैव प्रयत्यताम्॥ —अज्ञात

इस जन्म में जो मनुष्य उन्नति करना चाहता है उसको अपने भावो की शुद्धि के लिए वरावर प्रयत्नशील रहना चाहिए।

जन्म-जन्मान्तरस्यैतद् विज्ञा आहु प्रयोजनम्।
अनुभूतिविशेषैर्यदुत्तरोत्तरमुन्नति ॥ —अज्ञात

विज्ञजनो का कथन है कि जन्म-जन्मान्तर का प्रयोजन यही है कि विभिन्न अनुभवो द्वारा उत्तरोत्तर उन्नति की जाय।

उन्माद

जो प्रेम असहिष्णु हो, जो दूसरो के मनोभावो का जरा भी विचार न करे, जो मिथ्या कलक आरोपण करने में सकोच न करे, वह उन्माद है प्रेम नही।

—प्रेमचन्द

O Judgment, thou art fled to brutish beasts,
And men have lost their reason.

अरे न्याय! क्या तू भी जानवरो के हृदय में चला गया और मनुष्यो में ज्ञान नही रह गया। —शेक्सपियर

Insanity destroys reason, but not wit

उन्माद ज्ञान का नाश करता है, परन्तु वुद्धि का नही। —इमन्स

ज्ञान का उन्माद मदिरा के उन्माद से भयकर है। क्योकि ज्ञानोन्मादी अपने साथ दूसरो को भी हानि पहुँचाते है जव कि मदिरोन्मादी केवल अपनी ही हानि करते है। —अज्ञात

उपकार

यो रहीम सुख होत है, उपकारी के अग।
वाँटन वारे के लगैं, ज्यो मेंहदी के रग॥ —रहीम

अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्ण
शमयति परिताप छायया सश्रितानाम्। —कालिदास (मेघदूत)

वृक्ष अपने सिर पर गर्मी सहन करता है, परन्तु अपनी छाया से दूसरो की गर्मी से रक्षा करता है।

पर-उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसपति पाइ। —तुलसी (मानस-अरण्य)

Men resemble the gods in nothing so much as in doing good to their fellow creatures

मनुष्य मानव के साथ केवल भलाई करके ही अपने को देवतुल्य वनाते हैं।
—सिसरो

रहिमन पर उपकार के, करत न पारैं वीच।
मास दियो शिवि भूप ने, दीन्ह्यो हाड दधीच॥ —रहीम

न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया सश्रयाय
प्राप्ते मित्रे भवति विमुख किम्पुनर्यस्तथोच्चै।
—कालिदास (मेघदूत)

अपने ऊपर उपकार करनेवाला मित्र यदि दैवयोग से अपने घर आ जाय तो नीचात्मा भी भक्तिभाव-पूर्वक उसका आदर करते है, उससे विमुख नही होते—उच्चात्माओ का तो कहना ही क्या है।

उपकुर्यान्निराकाक्षी य स साधुरितीर्यते।
माकाक्षमुपकुर्याद्य साधुत्वे तन्य को गुण॥

जो निष्काम भाव से किसी का उपकार करता है, वही साधु कहलाता है, जो किसी वस्तु की इच्छा से उपकार करता है, उसकी साधुता मे कौन गुण है? वह निरर्थक है। —अज्ञात

जो मनुष्य दूसरे का उपकार करता है वह अपना भी उपकार न केवल परिणाम में अपितु उसी कर्म में करता है, क्योकि अच्छा कर्म करने का भाव ही स्वय उचित पुरस्कार है। —सेनेका

सद्भावार्द्रं फलति न चिरेणोपकारो महत्सु।

—कालिदास

सज्जनो के ऊपर किये गये सद्भावसूचक उपकार का फल मिलते कुछ भी देर नही लगती।

दूसरो का उपकार करना मानो एक प्रकार से अपना ही कल्याण करना है।

—अज्ञात

He who wants to do good knocks at the gate, he who loves finds the gate open

जो दूसरो पर उपकार जताने का इच्छुक है, वह द्वार खटखटाता है। जिसके हृदय में प्रेम है उसके लिए द्वार खुले हैं। —रवीन्द्र

मनुष्यजीवन की सफलता इसी में है कि वह उपकारी के उपकार को कभी न भूले। उसके उपकार से भी बढ़कर उसका उपकार कर दे।

—वेदव्यास (महा० आदि०)

उपकर्त्रारिणा सन्धिर्न मित्रेणापकारिणा।
उपकारापकारौ हि लक्ष्य लक्षणमेतयो ॥ —माघ

उपकार करनेवाले शत्रु से मेल करना चाहिए, अपकार करनेवाले मित्र से नही, क्योकि इन दोनो के उपकार और अपकार यही दो लक्षण जानने चाहिए, अर्थात् उपकार करे सो मित्र और अपकार करे सो शत्रु।

महान पुरुष जो उपकार करते है, उसका बदला नही चाहते। भला ससार जल बरसानेवाले बादलो का बदला किस तरह चुका सकता है?

—सत तिरुवल्लुवर

उपदेश

उपदेश चाहे जिसको नही देना चाहिए, समझ बूझ कर देना चाहिए। —अज्ञात

मर्द बायद कि गीरद अन्दर गोश
गर नाविश्तास्त पन्द बर दीवार। —सादी

मनुष्य को चाहिए कि यदि दीवार पर भी उपदेश लिखा हुआ मिले तो उसे ग्रहण करे।

Give every man thine ear, but few thy voice

प्रत्येक का उपदेश सुनो, परन्तु अपना उपदेश कुछ ही व्यक्तियो को दो।

—शेक्सपियर

धर्म का उपदेश सुनने से कोई धर्मात्मा नही हो जाता, किन्तु उपदेशानुसार व्यवहार करने से मनुष्य धर्मात्मा हो सकता है। —अज्ञात

Admonish your friends privately but praise them openly.

अपने मित्रो को एकान्त में वुरा भला कहो परन्तु उनकी प्रशसा सवके सम्मुख करो। साइरस

परोपदेशवेलाया शिष्टा सर्वे भवन्ति वै।
विस्मरन्तीह शिष्टत्व स्वकार्ये समुपस्थिते ॥ अज्ञात

दूसरे को उपदेश देने के समय सभी सज्जन हो जाते है, किन्तु जव स्वय वैसा आचरण करने का अवसर आ पडता है तो सज्जनता भूल जाते हैं।

पर उपदेश कुशल वहुतेरे । जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥

—तुलसी (मानस)

None preaches better than the ant, and she says nothing

चीटी से अच्छा कोई उपदेश नही देता, और वह मौन रहती है।—फ्रेन्कलिन

उपद्रव

निर्विवेकतया वाल्य, कोपोन्मादेन यौवनम्।
वृद्धत्व विकलत्वेन, सदा सोपद्रव नृणाम् ॥ —अज्ञात

वचपन में अविवेकिता, जवानी में क्रोध-उन्माद और वुढापे में विकलता—इस प्रकार मनुष्य के पीछे सर्वदा एक न एक उपद्रव लगा रहता है।

उपनिवेशवाद

उपनिवेशवाद वीते युग की वस्तु है। —वाल्टर पी

उपनिषद्

उपनिषदें हमारी युग युग की सबसे मूल्यवान् धरोहर हैं। —रविशंकर शुक्ल

In the whole world there is no study so elevating as that of the Upanisads It has been the solace of my life It will be the solace of my death.

सम्पूर्ण विश्व में उपनिषदो के समान जीवन को ऊँचा उठाने वाला कोई दूसरा अध्ययन का विषय नही है। इनसे मेरे जीवन को शान्ति मिली है, इन्ही से मुझे मृत्यु में भी शान्ति मिलेगी। —शोपेनहार

शोपेनहार के इन शब्दो के लिए यदि किसी समर्थन की आवश्यकता हो तो अपने जीवन भर के अध्ययन के आधार पर मैं प्रसन्नतापूर्वक उनका समर्थन करूँगा।

—मैक्समूलर

उपनिषदें सनातन दार्शनिक ज्ञान के मूल स्रोत हैं। वे केवल प्रखरतम बुद्धि का ही परिणाम नही है, अपितु प्राचीन ऋषियो की अनुभूति के फल हैं।

—प० गोविन्दवल्लभ पन्त

यह सिद्धान्त ऐसे हैं जो एक प्रकार से अपौरुषेय ही हैं। यह जिनके मस्तिष्क की उपज हैं उन्हें निरे मनुष्य कहना कठिन है। —शोपेनहार

उपनिषद् वेद का ज्ञान-काण्ड है। यह चिरप्रदीप्त वह ज्ञानदीपक है, जो सृष्टि के आदि से प्रकाश देता चला आ रहा है और प्रलय-पर्यन्त पूर्ववत् प्रकाशित रहेगा। इसके प्रकाश में वह अमरत्व है, जिसने सनातन धर्म के मूल का सिंचन किया है। यह जगत्-कल्याणकारी भारत की अपनी निधि है। —स्वामी ब्रह्मानन्द

उपनिषदो के भीतर जो दार्शनिक कल्पना है वह भारत में तो अद्वितीय है ही, सम्भवत सम्पूर्ण विश्व में अतुलनीय है। —पाल डायसन

मानवीय चिन्तन के इतिहास मे पहले-पहल वृहदारण्यक उपनिषद् मे ही ब्रह्म अथवा पूर्ण तत्त्व को ग्रहण करके उसकी यथार्थ व्यञ्जना की गयी है। —मैकडानेल

व्यक्तिगत रूप से मैं उपनिषदो को मानवचेतना का सर्वोच्च फल मानती हूँ।

—डा० एनी बेसेन्ट

Even the loftiest philosophy of the Europeans appears in comparison with the abundant light of oriental idealism like a feeble Promethsan spark in full flood of the heavenly glory of the noonday sun—faltering and feeble and ever ready to be extinguished

(उपनिषदो में वर्णित) पूर्वीय अध्यात्मवाद के प्रचुर प्रकाशपुज की तुलना में यूरोपवासियो का उच्चतम तत्त्वज्ञान ऐसा ही लगता है, जैसे मध्याह्न-सूर्य के व्योम-व्यापी प्रताप की पूर्ण प्रखरता में टिमटिमाती हुई अनलशिखा की कोई आदि किरण, जिसकी अस्थिर और निस्तेज ज्योति ऐसी हो रही हो मानो अव बुझी कि तव बुझी।

—फ्रेडरिक शेलिंग

उपनिषदो मे वे सिद्धान्त स्पष्ट रूप से दिये हुए है, जिनके आधार पर कोई भी विचारशील मनुष्य अपने लिए कर्तव्य का निश्चय कर सकता है। इस पथ पर चलने-वाला अपने लिए तो नि श्रेयस का द्वार खोल ही लेगा, उसके तप पूत व्यक्तित्व के प्रकाश में मानवसमाज भी अभ्युदय-पथ पर आरूढ हो सकेगा। —डा० सम्पूर्णानन्द

उपन्यास

Novels are sweet All people with healthy literary appetites love them

उपन्यास मिठाइयां हैं। साहित्य के भूखे स्त्री-पुरुष इनकी चाह में रहते है।

—थैकेरे

Novels do not force their readers to sin, but only instruct them how to sin

उपन्यास अपने पाठक को पाप करने को वाध्य नही करते, लेकिन केवल वताते है कि पाप कैसे किया जाता है। —जमीरमन

उपवास

अग्नि आहार को पचाती है और उपवास दोपो को पचाता है अर्थात् नष्ट करता है। —आयुर्वेद

उपवास शुद्धि का एक जवरदस्त साधन है और मानवसमाज में उपवास के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान अवश्य होना चाहिए। —महात्मा गाधी

सच्चे उपवास का अर्थ है कि हम अपनी व्यक्तिगत स्वार्थ-पूर्ण इच्छाओ और क्रिया-कलापो मे मुक्त हो जायें। —स्वामी रामतीर्थ

उपवास सत्याग्रह के शस्त्रागार में महान् शक्तिशाली अस्त्र है। इसको हर कोई नही चला सकता। केवल शारीरिक योग्यता इसके लिए कोई योग्यता नही। यदि ईश्वर में जीती-जागती श्रद्धा न हो तो दूसरी योग्यताएँ बिलकुल निरुपयोगी है।

—महात्मा गाधी

उपवास शब्द का अर्थ है दुर्गुणो एव दोषो से वचकर आत्मा अथवा गुणो के साथ वास अर्थात् निवास। अनुभव से देखा जा सकता है कि पाप अथवा कलुपित भावनाओ से मुक्त होकर चित्तवृत्तियो को आत्मा अथवा सद्गुणो में सन्निविष्ट करने की प्रेरणा उपवास के समय सर्वाधिक होती है। अज्ञात

त्यागश्च सनतिश्चैव शस्यते तप उत्तमम्।
सदोपवासी च भवेद् ब्रह्मचारी सदा भवेत्॥ —महाभा०

श्रेष्ठ पुरुषो के मत में त्याग और विनय ही उत्तम तप है। इनका पालन करने वाला मनुष्य नित्य उपवासी और सदा ब्रह्मचारी है।

यदि शारीरिक उपवास के साथ-साथ मन का उपवास न हो तो वह दम्भपूर्ण और हानिकारक हो सकता है। —महात्मा गांधी

धार्मिक आन्दोलन की सफलता उसके समर्थको की बौद्धिक शक्ति पर निर्भर नही करती, एकमात्र आध्यात्मिक शक्ति पर ही सफलता निर्भर करती है, और उस शक्ति के बढाने में उपवास ही अत्यन्त सुन्दर साधन है। —महात्मा गांधी

असकृज्जलपानाच्च सकृत् ताम्बूलभक्षणात्।
उपवास प्रणश्येत दिवा-स्वापाच्च मैथुनात्॥ —अज्ञात

एक से अधिक बार पानी पी लेने, एक बार भी ताम्बूल खा लेने, दिन में सो लेने तथा स्त्रीप्रसग से उपवास का फल नष्ट हो जाता है।

अन्तरा प्रातराश च सायमाश तथैव च।
सदोपवासी स भवेद् यो न भुङ्क्तेऽन्तरा पुन ॥

—वेदव्यास (महा० शान्ति०)

जो प्रतिदिन प्रात काल के सिवा फिर शाम को ही भोजन करे और बीच में कुछ न खाय, वह नित्य उपवास करनेवाला होता है।

उपहार

The best thing to give to our enemy is forgiveness, to an opponent, tolerance, to a friend, your heart, to your child, a good example, to a father, deference, to your mother, conduct that will make her proud of you, to yourself, respect, to all men, charity

शत्रु को उपहार देने योग्य सर्वोत्तम वस्तु है क्षमा, विरोधी को सहनशीलता, मित्र को अपना हृदय, शिशु को उत्तम दृष्टान्त, पिता को आदर, माता को अपना ऐसा आचरण जिससे वह तुम पर गर्व करे, अपने को प्रतिष्ठा, और सभी मनुष्यो को उपकार। —बालफोर

That which is given with pride and ostentation is rather ambition than a bounty

अभिमान और आडम्बर के साथ दी हुई वस्तु उदारता की नही वरन् महत्वाकाक्षा की सूचक है। —सेनेका

The manner of giving shows the character of the giver, more than the gift itself

किसी वस्तु के देने का तरीका उपहार से अधिक उपहार देनेवाले के चरित्र को वताता है। —लवाटर

धूल स्वय अपमान सहन कर लेती है, और वदले में वह पुष्पो का उपहार देती है। —रवीन्द्र

The heart of the giver makes the gift dear and precious

देनेवाले का हृदय उपहार को प्रिय और मूल्यवान् वना देता है। —लूयर

Love's gift cannot be given, it waits to be accepted

प्रेम के उपहार दिये नही जाते, वे स्वीकार किये जाने की प्रतीक्षा करते है। —रवीन्द्र

उपहास

समय परिवर्तन का धन है, परन्तु घडी उसका उपहास करती है। उसे केवल परिवर्तन के रूप में दिखाती है, धन के रूप मे नही। —रवीन्द्र

मित्रो का उपहास करना उनके पावन प्रेम को खण्डित करना है। —अज्ञात

मृत्यु शरीरगोप्तार धनरक्ष वसुधरा।
दुश्चारिणी च हसति स्वपति पुत्रवत्सलम् ॥ — अज्ञात

शरीर की रक्षा करनेवाले को मृत्यु, धन की रक्षा करनेवाले को पृथ्वी और पुत्र का दुलार करनेवाले अपने पति को व्यभिचारिणी स्त्री हँसती है।

उपाधि (पदवी)

The three highest titles that can be given to a man are those of a martyr, hero, saint

तीन सब से बडी उपाधियाँ जो मनुष्य को दी जा सकती ह यह हे; शहीद, वीर और सन्त। —ग्लेडस्टन

It is not titles that reflect honour on men, but men on their titles

उपाधि मनुष्य के सम्मान की सूचक नही है वरन् मनुष्य ही उपाधि के सम्मान का सूचक है। —मैकियावेली

उपेक्षा

प्रेम सब कुछ सह लेता है परन्तु उपेक्षा नही सह सकता। — अज्ञात

In persons grafted in a serious trust negligence is a crime

ऐसे व्यक्तियो द्वारा की गयी उपेक्षा अपराध है जिन पर गम्भीर विश्वास किया जाता है। — शेक्सपियर

उपेक्षाभाव मनुष्य के लिए निकृष्टतर व्यवहार है। वह गालियाँ सह सकता है, मार खा सकता है परन्तु उपेक्षा नही सह सकता। — अज्ञात

उषा

विगत रात्रि के तूफान ने आज के प्रभात को स्वर्णमयी शान्ति का ताज पहना दिया है। — रवीन्द्र

सूर्य, प्रकाश का सादा वेश धारण किये हुए है। बादलो की वेश-भूषा कैसी रंगीली है। — रवीन्द्र

Solitude shows us what we should be, society shows us what we are

एकान्त हमें वताता है कि हमें कैसा होना चाहिए, समाज हमें वताता है कि हम क्या है। —सिसिल

अपने हृदय की नीरवता में मुझे निर्जन सध्या के उच्छ्वास का आभास होता है। —रवीन्द्र

Solitude is sometimes best society
एकान्त प्राय सर्वोत्तम सगति है। —मिल्टन

O solitude ! where are the charms
That sages have seen in thy face ?

हे एकान्त ! तुम्हारा वह आकर्षण कहाँ है जिसे ऋषियो ने तुममें देखा है ? —काउपर

एकान्त में रहना ही महान आत्माओ का भाग्य है। —शोपेनहार

एकाग्रता

अपनी अभिलाषाओ को वशीभूत कर लेने के वाद मन को जितनी देर तक चाहो एकाग्र किया जा सकता है। —स्वामी रामतीर्थ

तुम्हारी विजयशक्ति है—मन की एकाग्रता। यह शक्ति मनुष्य-जीवन की समस्त ताकतो को समेटकर मानसिक क्राति उत्पन्न करती है। —अज्ञात

एकाग्रता आवेश को पवित्र और शान्त कर देती है, विचारधारा को शक्तिशाली और कल्पना को स्पष्ट करती है। —स्वामी शिवानन्द

तुम एकाग्रता द्वारा उस अनत शक्ति के अटूट भडार के साथ मिल जाते हो, जिससे इस ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई है। —अज्ञात

पवित्रता के विना एकाग्रता का कोई मूल्य नहीं। —स्वामी शिवानन्द

मन में एकाग्र शक्ति प्राप्त करनेवाले मनुष्य ससार में किसी समय असफल नही होते। —अज्ञात

ससार के प्रत्येक कार्य में विजय पाने के लिए एकाग्रचित्त होना आवश्यक है। जो लोग चित्त को चारो ओर विखेरकर काम करते है उन्हें सैकडो वर्षो तक सफलता का मूल्य मालूम नही होता। —मार्ले

ऐक्य

हार्दिक ऐक्य के विना दिमागी ऐक्य का उपदेश देना मानो आसमान से तारे तोडना है। —रस्किन

ऐक्य हमारी आत्मा का गुण है। —स्वेट मार्डेन

ऐब

लोगो के छिपे हुए ऐब जाहिर मत करो। इससे उनकी इज्जत तो जरूर घट जायगी, मगर तुम्हारा तो एतबार ही उठ जायगा। —सादी

चुप्पा ऐब वह चिकना घडा है, जिस पर किसी बात का असर नही होता। —प्रेमचन्द

ऐश्वर्य

ऐश्वर्य उपाधि में नही वरन् इस चेतना में है कि हम उसके योग्य है। —अरस्तू

स्थान के प्राप्त होने से कभी वास्तविक ऐश्वर्य नही मिलता और न उपाधि के वापस ले लेने पर कभी समाप्त हो जाता है। —मेसिजर

ऐश्वर्य ईश्वर का विशेष गुण है। —विनोबा

ऐश्वर्य के मद से मस्त व्यक्ति ऐश्वर्य के भ्रष्ट होने तक प्रकाश में नही आता। —जर्मन कहावत

ओम्

अपने भीतर की परम निधि को पाने के लिए और स्वर्ग के साम्राज्य का ताला खोलने के लिए इसी ॐ की ताली को काम में लाना होगा। —स्वामी रामतीर्थ

जैसे स्वभावत रोगी मनुष्य फैले हुए वृक्ष की शीतल छाया ढूंढता है, वैसे ही हर एक व्यक्ति व्यथा की हालत में स्वभावत इस अक्षर ॐ का आश्रय लेता है। —स्वामी रामतीर्थ

ॐ समग्र विश्व को ढके हुए है, सारे ससार का एक भी पदार्थ ऐसा नही है जो ॐ के बाहर हो। —स्वामी रामतीर्थ

ॐ—यह ध्वनि उस सुन्दर वृक्ष के तुल्य है जो प्रचण्ड सूर्य के ताप से झुलसे हुए रोगी मनुष्य को शीतल छाया प्रदान करता है। —स्वामी रामतीर्थ

सम्पूर्ण वेदान्त, वरन् हिन्दुओ का सम्पूर्ण दर्शन-शास्त्र केवल इस ॐ अक्षर की व्याख्या है। —स्वामी रामतीर्थ

ॐ इत्येकाक्षर ब्रह्म। —उपनिषद्

ॐ यही एक अक्षर चराचर में व्याप्त ब्रह्म का दूसरा पर्याय है।

औरत

औरत मर्द की सबसे बडी कमजोरी है। जो मर्द औरत की दुनिया में जाता है वह बर्बाद हो जाता है, और दुनिया उसे समुद्र मे डूबे हुए जहाज की तरह भूल जाती है। —अज्ञात

औरत मर्द की सबसे बडी ताकत है। मर्द की जिन्दगी अधूरी है, औरत उसे पूर्ण करती है। मर्द की जिन्दगी अँधेरी है, औरत उसे रोशनी देती है, मर्द की जिन्दगी फीकी है, औरत उसमें रौनक लाती है। औरत न हो तो मर्द की दुनिया वीरान हो जाय और आदमी अपना गला घोटकर मर जाय। —अज्ञात

खूबसूरत औरत रत्न है, अच्छी औरत खजाना है। —सादी

अगर औरत स्वय आत्मत्याग और पवित्रता की मूर्ति नही, तो वह कुछ भी नही है। —महात्मा गाधी

There is a woman at the beginning of all great things

सभी महान कार्यों के प्रारम्भ मे औरत का हाथ रहा है। —लामर्टिना

औरतें मर्दों से अधिक बुद्धिमती होती है, क्योकि वे जानती कम, समझती अधिक है। —जेम्स स्टीफेन

कचहरी

कचहरी प्रोत्साहन की क्षेत्रभूमि है। यहाँ रिश्वत लेना और देना दोनो पाप नहीं समझे जाते। —अज्ञात

कचहरी-अदालत उन्ही के साथ है, जिनके पास पैसा है।

—प्रेमचन्द (गो-दान)

कंचन

यथा विहगास्तरुमाश्रयन्ति,
नद्यो यथा सागरमाश्रयन्ति।
यथा तरुण्य पतिमाश्रयन्ति,
सर्वे गुणा काञ्चनमाश्रयन्ति॥ —अज्ञात

जैसे पक्षीगण वृक्ष का आश्रय लेते हैं, नदियाँ समुद्र का आश्रय लेती हैं और युवतियाँ पति का आश्रय लेती हैं, उसी तरह सभी गुण काचन का आश्रय लेते हैं।

कंजूस

A miser is as furious about a half-penny as the man of ambition about the conquest of a kingdom.

कजूस आदमी एक पाई के लिए उतना ही उत्तेजित हो जाता है, जितना कि महत्त्वाकाक्षी एक राज्य की विजय के लिए। —एडम स्मिथ

कजूस लोग अपने धन को न तो खाते हैं, न किसी अन्य कार्य मे खर्च करते है और न किसी को दान देते हैं। उनका धन आखिर में चोर ही ले जाते है। —अज्ञात

कनक

कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वहि खाये बौराय जग, यहि पाये बौराय॥ —बिहारीलाल

As the touch-stone tries gold so gold tries men

जिस प्रकार कसौटी सोने को परखती है उसी प्रकार सोना मनुष्यो को परखता है। —चिलो

कनकहु पुनि पाषाण ते होई। जारेहु सहज न परिहरि सोई॥ —तुलसी

कनक-कामिनी

चलौ चलौ सब कोइ कहै, पहुँचे बिरला कोय।
एक कनक और कामिनी, दुरगम घाटी दोय॥ —कबीर

कनक कामिनी देखि कै, तू मति भूल सुरग।
बिछुरन मरन दुहेलरा, कैंचुकि तजै भुजग॥ —कबीर

तुलसी या ससार में, कौन भयो समरत्थ।
इक कचन इक कुचन पर, को न चलायो हत्थ॥ —तुलसी

कनक और कामिनी को त्यागे विना आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त नही हो सकती।
—रामकृष्ण परमहस

कपट

कपट सार सूची सदृस, बाँधि वचन परबास।
करि दुराउ चह चातुरी, सो सठ तुलसीदास॥ —तुलसी

कविरा तहाँ न जाइए, जहाँ कपट का हेत।
जानो कली अनार की, तन राता मन स्वेत॥ —कबीर

हेत प्रीति से जो मिलै, ताको मिलिए धाय।
अतर राखे जो मिलै, तासो मिलै बलाय॥ —कबीर

कपटी

हृदय कपट वर वेष धरि, वचन कहहिं गढि छोलि।
अब के लोग मयूर ज्यो, क्यो मिलिए मन खोलि॥ —तुलसी

कपड़ा

कपडा अग को ढकने के लिए है, ठड-गर्मी से उसकी रक्षा करने के लिए है, उसे सजाने के लिए नही है। —महात्मा गाधी

अपने पुराने कपडे भी मँगनी के कपडो से अच्छे है। —सादी

Eat to please thyself, but dress to please others

अपने को प्रसन्न करने के लिए भोजन करो, दूसरो को प्रसन्न करने के लिए कपडा पहनो। —फ्रैंकलिन

No man is esteemed for gay garments but by fools and women.

भडकीले कपडो से मनुष्य मूर्खो और स्त्रियो के अतिरिक्त और किसी का आदर-पात्र नहीं वन सकता। —वाल्टर रैले

कमजोरी

कमजोरी का इलाज कमजोरी की चिन्ता करना नही पर शक्ति का विचार करना है। —स्वामी विवेकानन्द

To be week is miserable
कमजोर होना दुःखी होना है। —मिल्टन

कमजोरी कभी न हटनेवाला बोझ और यत्रणा है, कमजोरी ही मृत्यु है।
—स्वामी विवेकानन्द

Some of our weaknesses are born in us, others are the result of our education, it is a question, which of the two gives us most trouble

हमारी कुछ कमजोरियाँ पैदायशी होती है, और अन्य हमारी शिक्षा का परिणाम है। प्रश्न यह है कि इन में मे कौन अधिक दुखदायी है।—गेटे

कमाई

रमन्ता पुण्या लक्ष्मीर्या पापीस्ता अनीनशम्। —अथर्ववेद

पुण्य की कमाई मेरे घर की शोभा बढाये, पाप की कमाई को मैंने नष्ट कर दिया है।

कर

यथा गौदुह्यते काले पाल्यते च तथा प्रजा
सिच्यते चीयते चैव लता पुष्पफलप्रदा।

—अज्ञात

गाय समय पर ही दुही जाती है, उसी तरह राजा प्रजा का पालन करते हुए समय पर उससे लाभ (कर) उठाता है। जैसे लताए बराबर सींची जाती है किन्तु उचित समय पर ही उनके फल-फूल चुने जाते है।

पाके पकए विटप दल, उत्तम मध्यम नीच।
फल नर लहं नरेस त्यो, करि विचार मन बीच॥ —तुलसी

गोपालेन प्रजाधेनो र्वित्तदुग्ध शनैं शनैं।
पालनोत्पोषणाद् ग्राह्य न्याय्या वृत्ति समाचरेत्॥ —अज्ञात

जिस तरह ग्वाला गाय को धीरे धीरे दुहता है और उसका पालन-पोषण भी करता रहता है, उसी प्रकार राजा को भी प्रजारूपी धेनु से धीरे धीरे वित्तरूपी दूध निकालना चाहिए और उसका पालन-पोषण भी करना चाहिए। कर के रूप में प्रजा का वित्त ग्रहण कर उसके वदले उसके साथ उचित व्यवहार करना चाहिए।

करुणा

जव हमारे करुणा के नेत्र खुल जाते है तो व्यक्ति अपने को दूसरो में और दूसरो को अपने में देख सकने में समर्थ हो जाता है। —राजगोपालाचारी

मनुष्य के अन्त करण में सात्विकता की ज्योति जगानेवाली यही करुणा है।
—रामचन्द्र शुक्ल

करुणा में शीतल अग्नि होती है जो क्रूर से क्रूर व्यक्ति का हृदय भी आर्द्र कर देती है। —सुदर्शन

जो करुणा हमें साधारण जनो के वास्तविक दु ख के परिज्ञान से होती है, वही करुणा हमे प्रियजनो के सुख के अनिश्चय मात्र से होती है। —रामचन्द्र शुक्ल

सामाजिक जीवन की स्थिति और पुष्टि के लिए करुणा का प्रसार आवश्यक है।
—रामचन्द्र शुक्ल

स्त्री-हृदय मे करुणा अमृत वन कर वहा करती है। —अज्ञात

करुणा अपना वीज अपने आलम्वन या पात्र मे नही फेंकती अर्थात् जिस पर करुणा की जाती है वह वदले में करुणा करनेवाले पर भी करुणा नही करता—जैसा कि क्रोध और प्रेम मे होता है—वल्कि कृतज्ञ होता अथवा श्रद्धा या प्रीति करता है।
—रामचन्द्र शुक्ल

आँसू करुणा की वूद है। —वायरन

कर्ज (दे० 'ऋण')

कर्ज दी गयी पूजी ही सारे अनर्थो की जड है और अन्यायमूलक युद्धो की जननी है। —रस्किन

कर्ज अथाह सागर है। —कारलायल

Debt is to a man what the serpent is to the bird, its eye fascinates, its breath poisons, its coil crushes both sinew and bone

कर्ज मनुष्य के लिए वैसा ही है जैसा पक्षी के लिए सर्प। उसके नेत्र लुभाते हैं, उसकी श्वास विषमय बनाती है। उसकी लपेट मासपेशियो को चकनाचूर कर देती है। —बुलवर लिटन

कर्तव्य

जो काम अभेद-भावना की ओर ले जाता है, वह सत्कर्म है, कर्त्तव्य है, करणीय है। —डा० सम्पूर्णानन्द

आत्मज्ञान का सम्पादन करना और आत्मकेन्द्र में स्थिर रहना मनुष्य मात्र का सबसे पहला और प्रधान कर्त्तव्य है। —स्वामी रामतीर्थ

जो कार्य आपके सामने है उसे शीघ्रता एव निष्कपट भाव से करना ही कर्त्तव्य है—यही आज के अधिकार की पूर्ति है। —गेटे

ईश्वर शान्ति ही चाहता है, और ईश्वर की इच्छाके अनुसार चलना मनुष्य का परम कर्त्तव्य है। —टाल्स्टाय

वैर लेना या करना मनुष्य का कर्त्तव्य नही है—उसका कर्त्तव्य क्षमा है। —महात्मा गांधी

The reward of one duty done is the power to fulfil another.
एक कर्त्तव्य-पूर्ति का पुरस्कार है दूसरे कर्त्तव्य को पूर्ण करने की योग्यता। —जार्ज इलियट

बुराई से असहयोग करना मानव का पवित्र कर्त्तव्य है। —महात्मा गांधी

कर्त्तव्य कोई ऐसी वस्तु नही जिसको नाप-जोखकर देखा जाय। —शरत्चन्द्र (जागरण)

जिस प्रकार दूसरो के अधिकार की प्रतिष्ठा करना मनुष्य का कर्त्तव्य है, उसी प्रकार अपना मान धारण रखना भी उसका कर्त्तव्य है। —स्पेन्सर

वीर होने के लिए मनुष्य को अपने कर्त्तव्य से अधिक काम करना होता है। —रेनाल्ड्स

मानव की सेवा करना मानव का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है। —विनोबा

कर्तव्यनिष्ठा

ससार मे जो वडे लोग हो गये हैं, जिनकी कीर्ति से मनुष्यजाति का इतिहास प्रकाशित है, यह सब उनकी कर्तव्यनिष्ठा का ही फल है। —अज्ञात

जिन जातियो में सच्ची कर्तव्यनिष्ठा पायी जाती है वह ससार में सदा सपन्न अवस्था में रहती है और सव से सम्मान प्राप्त करती हैं। —अज्ञात

कर्म

जहाँ देह है वहाँ कर्म तो है ही, उससे कोई मुक्त नही है। तयापि शरीर को प्रभुमन्दिर वनाकर उसके द्वारा मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए। —महात्मा गाधी

Action may not always bring happiness, but there is no happiness without action

कर्म सदैव सुख न ला सके परन्तु कर्म के विना सुख नही मिलता।—डिजरायली

कर्म ही मनुष्य के जीवन को पवित्र और अहिंसक वनाता है। —विनोवा

मनुष्य के कर्म ही उसके विचारो की सवसे अच्छी व्याख्या है। —लाक

करम प्रधान विस्व करि राखा।
जो जस करइ सो तस फलु चाखा॥ —तुलसी (मानस)

कर्म की परिसमाप्ति ज्ञान में और कर्म का मूल भक्ति अथवा सम्पूर्ण आत्म-समर्पण में है। —अरविन्द घोष

Great actions speak of great minds

महान् कर्म महान् मस्तिष्क को सूचित करते है। —जान फ्लेचर

जीव कर्मवश दुख सुख भागी। —तुलसी (मानस)

वही कार्य सवसे अच्छा है जिससे वहुसख्यक लोगो को अधिक से अधिक आनन्द मिल सके। —फ्रासिस हचिसन

एक कर्म है वोना उपजै वीज वहूत।
एक कर्म है भूजना उदय न अकुर सूत॥ —कवीर

Action springs out of what we fundamentally desire

हम जिस वस्तु की मूलत कामना करते है उसी से कर्म की उत्पत्ति होती है। —एच० ए० ओवरस्ट्रीट

खेल में हम सदा ईमानदारी का पल्ला पकडकर चलते है, पर अफसोस है कि कर्म में हम इस ओर ध्यान तक नही देते। —रस्किन

कर्म के प्रवाह में मन की सारी विकृतियाँ दूर हो जाती है। —अज्ञात

There is nothing more tragic in life than the utter impossibility of changing what you have done

जीवन में अपने किये हुए कर्म को परिवर्तित करने की पूर्ण असम्भाव्यता से अधिक दु खमय और कुछ नही है। —गाल्संवर्दी

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥
—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

कर्म में ही तुझे अधिकार है, उससे उत्पन्न होनेवाले फलो में कदापि नही। कर्म का फल तेरा हेतु न हो। कर्म न करने का भी तुझे आग्रह न हो।

किसी कार्य को खूबसूरती से करने के लिए मनुष्य को उसे स्वय करना चाहिए। —नेपोलियन

There is a perennial nobleness and even sacredness in work
कर्म में निरतर श्रेष्ठता और पवित्रता भी होती है। —कारलाइल

Action speaks louder than words
कर्मों की ध्वनि शब्दो से ऊँची होती है। —कहावत

जब तुम जग में आये थे, जग हँसमुख तुम रोये।
ऐसी करनी कर चलो, तुम हसमुख जग रोये॥ —अज्ञात

परेषामात्मनश्चैव योऽविचार्य बलाबलम्।
कार्यायोत्तिष्ठते मोहादापद स समीहते॥

अपनी तथा शत्रुओ की शक्ति और निर्बलता का विचार किये बिना ही जो व्यक्ति पागलपन से ऊल-जलूल काम करने लगता है वह विपत्तियो को न्योता देता है।

तस्मादसक्त सतत कार्य कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुष ॥

फल की इच्छा छोडकर निरन्तर कर्तव्य-कर्म करो। जो फल की अभिलाषा छोडकर कर्म करते हैं उन्हें अवश्य मोक्ष-पद प्राप्त होना है। — श्रीकृष्ण (गीता)

I multiplied myself by my activity
मैंने कर्म से ही अपने को बहुगुणित किया है। —नेपोलियन

Action is eloquence
कर्म में वाक्शक्ति होती है। —शेक्सपियर

कर्म प्रधान सत्य कह लोगू। —तुलसी (मानस)

Deeds are fruits, words are leaves
कर्म फल हैं एव शब्द पत्तियाँ। —कहावत

Good actions are the invisible hinges of the doors of heaven
शुभ कर्म स्वर्ग के दरवाजे के अदृश्य कब्जा है। —विक्टर ह्यूगो

कर्म वह आइना है जो हमारा स्वरूप हमें दिखा देता है। अत हमें कर्म का एहसानमद होना चाहिए। —विनोबा

Only the actions of the just smell sweet and blossom in the dust
सच्चे मनुष्यो के ही कर्म मधुर सुगन्ध देते हैं, और मिट्टी मे भी खिलते हैं। —शरले

केवल दृढ-इच्छाप्रसूत कर्म ही सुन्दर हो सकता है। —रस्किन

What is done can not be undone
किये हुए कर्म को मिटाया नही जा सकता। —शेक्सपियर

करै जो कर्म पाव फल सोई।
निगम नीति अस कह सब कोई॥ —तुलसी (मानस)

कर्मभूमिरियं ब्रह्मन्।
यह धरती ही हमारे कर्मो की भूमि है। —वेदव्यास (महा०)

काम का आरभ न करो और अगर काम शुरु कर दिया है तो उसे पूरा करके छोडो। —विनोबा

Trust no future, however pleasant,
Let the dead past bury its dead,
Act-act in the living present,
Heart within and god overhead

भविष्य चाहे कितना ही सुन्दर हो विश्वास न करो—भूतकाल की भी चिन्ता न करो, जो कुछ करना हैं उसे अपने पर और ईश्वर पर विश्वास रखकर वर्तमान में करो। —लागफेलो

कर्मायत्त फल पुसा वुद्धि कर्मानुसारिणी।
तथापि सुधियश्चार्या सुविचार्येव कुर्वते॥

फल मनुष्य के कर्म के अधीन है, वुद्धि कर्म के अनुसार आगे बढनेवाली है, तथापि विद्वान् और महात्मा लोग अच्छी तरह से विचार कर ही कोई कर्म करते है।

— चाणक्य

मन कृत कृत मन्ये न शरीरकृत कृतम्।
येनैवालिंगिता कान्ता तेनैवालिंगिता सुता॥

मन से किया गया कर्म ही यथार्थ होता है, शरीर से किया गया नही। जिस शरीर से पत्नी को गले लगाया जाता है उसी शरीर से पुत्री को भी गले लगाते है, पर मन का भाव भिन्न होने के कारण दोनो में अन्तर रहता है। — अज्ञात

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच् शत समा।"

इस धरती पर कर्म करते करते सौ साल तक जीने की इच्छा रक्खो क्योकि कर्म करनेवाला ही जीने का अधिकारी है। जो कर्म-निष्ठा छोडकर भोग-वृत्ति रखता है वह मृत्यु का अधिकारी वनता है। — वेद

कर्म-फल

"फलासक्ति छोडो और कर्म करो", "आशारहित होकर कर्म करो", "निष्काम होकर कर्म करो" यह गीता की वह ध्वनि है जो भुलायी नही जा सकती। जो कर्म छोडता है वह गिरता है। कर्म करते हुए भी जो उसका फल छोड़ता है वह चढता है।

— महात्मा गाधी

करता था तो क्यो किया, अव करि क्यो पछिताय।
वोया पेड ववूल का, आम कहाँ ते खाय॥ — अज्ञात

शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी।
ईश देइ फल हृदय विचारी॥ — तुलसी (मानस)

निष्काम कर्म ईश्वर को ऋणी वना देता है, और ईश्वर उसको सूद सहित वापस करने के लिए वाध्य हो जाता है। — स्वामी रामतीर्थ

यथा तैलक्षयाद् दीप प्रह्लानमुपगच्छति।
तथा कर्मक्षयाद् दैव प्रह्लानमुपगच्छति॥

जैसे तेल समाप्त हो जाने से दीपक वुझ जाता है, उसी प्रकार कर्म के क्षीण हो जाने पर दैव भी नष्ट हो जाता है। — वेदव्यास (महा० अनु०)

शुभेन कर्मणा सौख्य दु ख पापेन कर्मणा।
कृत फलति सर्वत्र नाकृत भुज्यते क्वचित्॥

(वेदव्यास महा० अनु०)

शुभ कर्म करने से सुख और पाप कर्म करने से दु ख मिलता है। अपना किया हुआ कर्म सर्वत्र ही फल देता है। विना किये हुए कर्म का फल कही नही भोगा जाता।

सुशीघ्रमपि धावन्त विधानमनुधावति।
शेते सह शयानेन येन येन यथा कृतम्॥
उपतिष्ठति तिष्ठन्त गच्छन्तमनुगच्छति।
करोति कुर्वत कर्मच्छायेवानुविधीयते॥

वेदव्यास महा० (शान्ति०)

जिस मनुष्य ने जैसा कर्म किया है, वह उसके पीछे लगा रहता है। यदि कर्त्ता पुरुप शीघ्रतापूर्वक दौडता है तो वह भी उतनी ही तेजी के साथ उसके पीछे जाता है। जव वह सोता है तो उसका कर्मफल भी उसके साथ ही सो जाता है। जव वह खडा होता है तो वह भी पास ही खडा रहता है और जव मनुष्य चलता है तो उसके पीछे-पीछे वह भी चलने लगता है। इतना ही नही, कोई कार्य करते समय भी कर्म सस्कार उसका साथ नही छोडता। सदा छाया के समान पीछे लगा रहता है।

यथा धेनु सहस्रेपु वत्सो विन्दति मातरम्।
एव पूर्वकृत कर्म कर्त्तारमनुगच्छति॥

—वेदव्याम (महा० अनु०)

जैसे बछडा हजारो गौओ के बीच में अपनी माता को ढूंढ लेता है, उसी प्रकार पहले का किया हुआ कर्म भी कर्त्ता को पहचानकर उसका अनुसरण करता है।

स्वकर्मफलनिक्षेप विधानपरिरक्षितम्।
भूतग्राममिम काल समन्तात् परिकर्पति॥

— वेदव्यास (महा० शान्ति०)

अपने अपने कर्म का फल एक धरोहर के समान है, जो कर्मजनित अदृप्ट के द्वारा सुरक्षित रहता है। उपयुक्त अवसर आने पर यह काल इस कर्म-फल को प्राणि-समुदाय के पास खींच लाता है।

कर्मभोग

Our riches may be taken away by fortune, our reputation by malice, our spirits by calamity, our health by disease, our friends by death, but our actions must follow us beyond the grave

अभाग्य से हमारा धन, नीचता से हमारा यश, मुसीवत से हमारा जोश, रोग से हमारा स्वास्थ्य, मृत्यु से हमारे मित्र हमसे छीने जा सकते हैं, किन्तु हमारे कर्म मृत्यु के वाद भी हमारा पीछा करेंगे। —कोल्टन

अचोद्यमानानि यथा पुष्पाणि च फलानि च।
स्व काल नातिवर्तन्ते तथा कर्मपुरा कृतम्॥

—वेदव्यास (महा०)

जैसे फूल और फल किसी की प्रेरणा के विना ही अपने समय पर वृक्षो मे लग जाते हैं, उसी प्रकार पहले के किये हुए कर्म भी अपने फल-भोग के समय का उल्लघन नहीं करते।

कर्मयोग

जिस यत्न से आत्मा के शरीर के वन्धन से छूटने का योग सधे वह कर्मयोग है।

—महात्मा गाधी

सन्यास कर्मयोगश्च नि श्रेयसकरावुभौ।
तयोस्तु कर्मसन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

कर्मों का त्याग और योग दोनो मोक्ष देनेवाले है। उनमें भी कर्मसन्यास से कर्मयोग वढकर है।

धृति और उत्साह मिलकर कर्मयोग वनता है। —विनोवा

कर्मशील

कर्मशील लोग शायद ही कभी उदास रहते हो—कर्मशीलता और उदासी दोनो साथ-साथ नही रहती। —वोवी

कलंक

चन्द्रमा अपना प्रकाश सारे आकाश में फैलाता है, परन्तु अपना कलक अपने ही भीतर रखता है। —रवीन्द्र

जिस वस्तु के देखने में कलक लगता हो उसे न देखो, जिस तरह चौथ के चाद को कोई नही देखता। —अज्ञात

Done to death by slanderous tongues

कलक मृत्यु का कारण होता है। —शेक्सपियर

निर्मल से निर्मल चरित्र पर कलक लगना कोई वात नही है। वसन्त ऋतु के नये फूलो में भी घुन लग जाता है और कलिया वहुधा खिलने के पहिले ही हवा के झोको से मुरझा जाती है। —अज्ञात

कलम

There are only two powers in the world, the sword and the pen, *and in the end the former is always conquered by the latter*

दुनिया में दो ही ताकतें है, तलवार और कलम, और अन्त में तलवार हमेशा कलम से हारती है। —नैपोलियन

कलम में तलवार की सौगुनी चोट करने की शक्ति होती है। —अज्ञात

कलम तलवार से अधिक वलवान है। —वुलवर लिटन

समस्त कला अनुकरण-मात्र है। —अरस्तू

कला का सत्य जीवन की परिधि मे सौन्दर्य के माध्यम द्वारा व्यक्त अखण्ड सत्य है। —महादेवी वर्मा

The true work of art is but a shadow of the divine perfection.

सच्ची कला दैवी सिद्धि का केवल प्रतिविम्व होती है। ईश्वर की पूर्णता की छाया होती है। —माइकेल एंजिलो

जो कला आत्मा को आत्म-दर्शन करने की शिक्षा नही देती, वह कला ही नही है। —महात्मा गाधी

Art does not imitate but interpret

कला अनुकरण नहीं करती परन्तु व्याख्या करती है। —मेजिनी

कला का सबसे सुन्दर रूप छिपाव है, दिखाव नहीं। —प्रेमचन्द

Art is life seen through a temperament

कला प्रकृति द्वारा देखा हुआ जीवन है। —एमिल जोला

जीवन मे सबसे वडी कला तपस्या है। —महात्मा गाधी

प्रत्येक राष्ट्र के गुणावगुण सदा उसकी कला में अंकित रहते है। —रस्किन

कला कला के लिए है। —विक्टर कजिन

समस्त कला अन्तर के विकास का आविर्भाव ही है। —अज्ञात

All art is but a imitation of nature
सम्पूर्ण कला केवल प्रकृति का ही अनुकरण है। —सेनेका

कला का रहस्य भ्रान्ति है, पर वह भ्रान्ति जिस पर यथार्थ का आवरण पडा हो। —प्रेमचन्द

जो असुन्दर है, जो अनैतिक है, जो अकल्याण है, वह किसी तरह कला नही है, धर्म नही है। कला कला के लिए, की युक्ति भी किसी तरह सत्य नही है।
—शरत्चन्द्र (निबन्धावली साहित्य और नीति)

True art is the reverent imitation of god
सच्ची कला ईश्वर का भक्ति-पूर्ण अनुकरण है। —अज्ञात

कला की कसौटी सौन्दर्य है, जो सुन्दर है वही कला है। —अज्ञात

कला का शत्रु अज्ञान है। —बेन जानसन

कला केवल यथार्थ की नकल का नाम नही है। कला दीखती तो यथार्थ है पर यथार्थ होती नही। उसकी खूबी यही है कि वह यथार्थ मालूम हो। —प्रेमचन्द

When love and skill work together, expect a masterpiece
जब लगन और प्रवीणता परस्पर मिलकर कार्य करें तो एक अति उत्तम कला की अपेक्षा करो। —रस्किन

ज्ञान को गलाकर सांचो में ढालना और उससे प्रतिमाए रचना, यह काम कला करती है। —अज्ञात

कला विचार को मूर्ति में परिणत करती है। —एमर्सन

मानव की बहुमुखी भावनाओ का प्रबल प्रवाह जब रोके नही रुकता, तभी वह कला के रूप में फूट पडता है। —रस्किन

कला और धर्म

कला और धर्म भाई-बहन है। दोनो दृश्य के परे देखते है, दोनो सामने के परदे को हटाना चाहते है। सरलता दोनो की शक्ति और फालतू ज्ञान दोनो का बोझ है।
—अज्ञात

कलाकार

जो अतर को देखता है वाह्य को नही, वही सच्चा कलाकार है।

—महात्मा गाधी

कलाकार के निर्माण में जीवन के निर्माण का लक्ष्य छिपा रहता है।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

Every artist was first an amateur

प्रत्येक कलाकार प्रारम्भ में नौसिखिया होता है। —एमरसन

कलाकार न किसी को आदेश दे सकता है, न उपदेश और यदि देने की नासमझी करता भी है तो दूसरे उसे न मान कर समझदारी का परिचय देते है।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

कलाकार प्रकृति का प्रेमी है, अतएव वह उसका दास भी है और स्वामी भी।

— रवीन्द्र

कलाकार तो जीवन का ऐसा सगी है जो अपनी आत्म-कहानी में, हृदय-हृदय की कथा कहता है और स्वय चल कर पग-पग के लिए पथ प्रशस्त करता है काटा चुभाकर काटे का ज्ञान तो ससार दे ही देगा परन्तु कलाकार बिना काटा चुभाने की पीडा दिये हुए ही उसकी कसक की तीव्र मधुर अनुभूति दूसरे तक पहुचाने मे समर्थ है। —महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

जिसने उत्तम जीना जाना, वही कलाकार है। — महात्मा गाधी

भारतीय कलाकारो ने अपनी कला को मदिरो और गुफाओ में प्रकट करके सार्वजनिक कर दिया है। — महात्मा गाधी

कलाकार अपनी प्रवृत्तियो मे भी विशाल है। उसकी भाव-राशि अथाह एव अचिन्त्य है। — मैक्सिम गोर्की

कलाकार स्वय एक साधक है, चाहे वह कला साहित्य हो, नृत्य हो, शिल्प हो, या और कुछ। —अनन्त गोपाल शेवडे

कलाकार का आरम्भ ही शैशव के पुनरुत्थान से होता है। — अज्ञात

जब समाज कलाकार के किसी भी स्वप्न का मूल्य नही आकता, किसी भी आदर्श को जीवन की कसौटी पर परखना स्वीकार नही करता, तब साधारण कलाकार तो सब कुछ धूल मे फेंक कर रूठे बालक के समान क्षोभ प्रकट कर देता है, और महान, समाज की उपस्थिति ही भुलाने लगता है। —महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

निर्माण युग में जो कलासृष्टि अमृत की सजीवनी देकर ही सफल हो सकती थी वही पतन युग में मदिरा की उत्तेजना-मात्र बनकर विकासशील मानी गयी।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

कलियुग

कलिजुग सम जुग आन नहिं जौं नर कर बिस्वास।
गाइ राम-गुन-गन बिमल भव तर बिनहिं प्रयास॥

—तुलसी (मानस)

न देवे देवत्व कपट-पटवस्तापस-जना।
जनो मिथ्यावादी विरलतर-वृष्टि जलधर।
प्रसगो नीचानामवनि-पतयो दुष्ट-मनसो।
जना भ्रष्टा नष्टा अहह कलिकाल प्रभवति। —अज्ञात

देवताओ में दैवी-शक्ति नही रह गयी, साधु लोग प्रपच करने में चतुर हो गये, जनता झूठ बोलना ही पसन्द करने लगी, मेघ बहुत कम जल देने लगे, लोग नीचो का सग ज्यादा पसन्द करने लगे, राजा लोग दुष्ट हृदय के हो गये, लोग भ्रष्ट हो गये, नष्ट हो गये, यह कलिकाल अपना फल दिखा रहा है।

कलियुग केवल नाम अधारा। सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा॥

—तुलसी (मानस)

कल्पना

भूत या प्रेत का जामा उन्हें धारण करना पडता है जो अपनी ही कल्पनाओं के गुलाम होते हैं। —स्वामी रामतीर्थ

कल्पना विश्व पर शासन करती है। —नेपोलियन

The lunatic, the lover and the poet,
Are of imagination all compact

पागल, प्रेमी और कवि, इनकी कल्पनाऐं एक-सी होती हैं। —शेक्सपियर

कवि के अर्थ का अन्त ही नही है। जैसे मनुष्य का वैसे ही महावाक्यो के अर्थ का भी विकास होता ही रहता है। —महात्मा गाधी

कवि करोति काव्यानि स्वादु जानन्ति पण्डिता ।
सुन्दर्या अति लावण्य पतिर्जानाति नो पिता॥

कवि काव्य रचता है पर स्वाद पडित जानता है। जैसे, सुन्दरी स्त्री के लावण्य को उसका पति जानता है, पिता नही। —अज्ञात

पामर दुनिया विषय-सुख से झूमती है, कवि आत्मानद मे डोलता है। लोगो को भोजन का आनद मिलता है, कवि को आनद का भोजन मिलता है। —विनोवा

He who, in an enlightened and literary society aspires to be a great poet, must first become a little child

जो व्यक्ति जाग्रत और साहित्यिक समाज में महान कवि होने की अभिलाषा रखता है उसे पहले एक छोटा वालक वनना चाहिए। —मैंकाले

कविर्मनीषी परिभू स्वयभू।
यथातथ्यतोर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्य समाभ्य ।

—ईशावास्योपनिषद्

कवि मन का स्वामी, विश्व-प्रेम से भरा हुआ, आत्मनिष्ठ, यथार्थभाषी और शाश्वत काल पर दृष्टि रखनेवाला होता है।

कवि विश्व-सम्राट् होता है, कारण वह हृदय-सम्राट् होता है। —विनोवा

कवि जिस समय कविता करता है, वह अलौकिक पुरुष वन जाता है।

—डाक्टर हजारीप्रसाद द्विवेदी

तज्जाड्य वसुधाधिपस्य कवयो ह्यर्थं विनापीश्वरा ।
कुत्स्या स्यु कुपरीक्षका न मणयो यैरर्घत पातिता ॥ —भर्तृहरि

कवि लोग विना धन के ही श्रेष्ठ है, और वह राजा उस जौहरी के समान मूर्ख है जो मणि को न पहचान कर उसका मूल्य घटाता है।

पत्थर में ईश्वर के दर्शन करना काव्य का काम है। इसके लिए व्यापक प्रेम की आवश्यकता है। ज्ञानेश्वर महाराज भैंसे की आवाज में भी वेद श्रवण कर सके, इसलिये वह कवि है। —विनोवा

Poets are the unacknowledged legislators of the world

कवि विश्व के अस्वीकृत व्यवस्थापक है। —शेली

सत्कवि अतीत का गौरव-गायक, वर्त्तमान का चित्रकार और भविष्य का सूक्ष्म द्रष्टा होता है। —एक रूसी आलोचक

विज्ञान जहा तक घूमता-फिरता है, यदि विश्व वही तक समाप्त है तो मेरे कवि ! कविता वनाना अव छोड दे। तू विज्ञान का अनुचर नही, उसका पूरक है। —अज्ञात

कवि और चित्रकार

वाहरी सौन्दर्य सुचतुर चित्रकार के चित्र में भी देखने को मिल सकता है, पर मन का सौन्दर्य कवि की वाणी में ही मिलता है। —अज्ञात

कवि और चित्रकार में भेद है। कवि अपने स्वर में और चित्रकार अपनी रेखा में जीवन के सत्य और सौन्दर्य का राग भरता है।

कवि और तत्त्ववेत्ता

तत्त्ववेत्ता और कवि में अन्तर है। तत्त्ववेत्ता मस्तिष्क का निवासी है और कवि हृदय का। —अज्ञात

काव्य में भावनात्मक सत्य की प्रधानता रहती है तथा विज्ञान में वैज्ञानिक सत्य की। वैज्ञानिक वस्तु के शरीर को देखता है और कवि उसकी आत्मा को, हृदय को। वह एक असुन्दर एव कुरूप वस्तु को सौन्दर्य प्रदान कर उसे ग्राह्य एव नयनाभिराम वना देता है। —अज्ञात

कवि में अन्तर्जगत के सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावो को भी स्पर्श करने की शक्ति है, उसी प्रकार वैज्ञानिक सूक्ष्मातिसूक्ष्म तथ्यो का विश्लेषण करता है। कवि के जीवन का लक्ष्य है पूर्णता की प्राप्ति। कवि का सत्य विशुद्ध वैज्ञानिक नही है, वह तो उसकी अनुभूति के रस में पगा हुआ होता है। —अज्ञात

कवि और दर्शन

धन और ऐश्वर्य, रूप और वल, विद्या और वुद्धि, ये विभूतियां संसार को चाहे कितना ही मोहित कर लें, कवि के लिए यहा जरा भी आकर्षण नही है, उसके मोद और आकर्षण की वस्तु तो वुझी हुई आशाए, मिटी हुई स्मृतियां और टूटे हुए हृदय के आंसू है। जिस दिन उन विभूतियो में उसका प्रेम न रहेगा उस दिन वह कवि न रहेगा। दर्शन जीवन के इन रहस्यो से केवल विनोद करता है कवि उनमें लय हो जाता है। —प्रेमचन्द (गोदान)

कवि और शब्द

कवि और शब्द की विचित्र महिमा है। शब्द कवि को अमर बना देते हैं और कवि शब्द को भाग्यवान। —अज्ञात

कविता

कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भाव-पूर्ण संगीत गाया करता है। अंधकार का आलोक से, असत का सत् से, जड का चेतन से और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से सम्बन्ध कौन कराती है ? कविता ही न ? —जयशंकर प्रसाद (स्कन्द-गुप्त)

कविता सृष्टि का सौंदर्य है, कविता ही सृष्टि का सुख है, और कविता ही सृष्टि का जीवन-प्राण है। —पुरुषोत्तमदास टंडन

Poetry comes nearer to vital truth than history
इतिहास की अपेक्षा कविता सत्य के अधिक निकट आती है। —प्लेटो

कविता अमरावती से गिरती हुई अमृत की धारा है। —अज्ञात

कविता सच्ची भावनाओं का चित्र है, और सच्ची भावनाएँ चाहे वे दुःख की हों या सुख की, उसी समय उत्पन्न होती हैं जब हम दुख या सुख का अनुभव करते हैं।
—प्रेमचन्द (वरदान)

Poetry is the intellect coloured by feelings
कविता भावना से रंजित बुद्धि है। —प्रो० विल्सन

कविता शब्द नहीं, शान्ति है। कविता कोलाहल नहीं, मौन है। शब्दों के कलरव के परे कविता की अशब्दता का निवास है। —अज्ञात

कविता केवल वस्तुओं के ही रंगरूप में सौन्दर्य की छटा नहीं दिखाती प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के सौन्दर्य के भी अत्यन्त मार्मिक दृश्य सामने रखती है।
—रामचन्द्र शुक्ल

कविता जीवन की समालोचना है। —अज्ञात

मेरे लिए तो मनुष्य एक सजीव कविता है। कवि की कृति तो उस सजीव कविता का शब्दचित्र-मात्र है, जिससे उसका व्यक्तित्व और संसार के साथ उसकी एकता जानी जाती है। —महादेवी वर्मा (यामा)

कविता का उद्देश्य मूर्ख और साधारण लोगों को आनन्द देने का है, विद्वानों को नहीं। —अज्ञात

कविता देवलोक के मधुर संगीत की गूंज है। —अज्ञात

कविता प्रकाश और अन्धकार की वह सन्धि-रेखा है जहाँ पहुँचकर मनुष्य का मन परिचित विश्व को छोडकर अपरिचित जगत से परिचय लाभ करता है। —अज्ञात

हृदय पर नित्य प्रभाव रखनेवाले रूपों और व्यापारों को भावना के सामने लाकर कविता बाह्य प्रकृति के साथ मनुष्य की अन्त प्रकृति का सामजस्य घटित करती हुई उसकी भावात्मक सत्ता के प्रसार का प्रयास करती है। —रामचन्द्र शुक्ल

Poetry is the art of uniting pleasure with truth by calling imagination to the help of reason and its essence is in invention

कविता वह कला है जिसमें कल्पना-शक्ति विवेक की सहायक होकर सत्य और आनन्द का परस्पर सम्मिश्रण करती है। —डा० जानसन

संस्कृत साहित्य में काव्य का उद्देश्य जीवन का अनुकरण-मात्र नहीं, वरन् मनोविनोद और आनद की सृष्टि भी है। —अज्ञात

Truth shines the brighter clad in verse

कविता का बाना पहनकर सत्य और भी चमक उठता है। —पोप

Poetry is the record of the best and happiest moments of the happiest and best minds

कविता सुखी और उत्तम मनुष्यों के उत्तम और सुखमय क्षणों का उद्गार है। —शेली

कवित्व अधकार में दीपक है, कवित्व दरिद्र का धन है, कवित्व भूख में अन्न और प्यास में शीतल जल है, कवित्व दुःख में धैर्य और विरह में मिलन है। —अज्ञात

कविता वह सुरंग है, जिसके भीतर से मनुष्य एक विश्व को छोडकर दूसरे विश्व में प्रवेश करता है।

कविता अपनी मनोरंजन-शक्ति द्वारा पढ़ने या सुनने वाले का चित्त रमाये रहती है, जीवन-पट पर उक्त कर्मों की सुन्दरता या विरूपता अंकित करके हृदय के मर्मस्थलों का स्पर्श करती है। —रामचन्द्र शुक्ल

जो कविता रमणी के रूपमाधुर्य्य से हमे तृप्त करती है वही उसकी अन्तर्वृत्ति की सुन्दरता का आभास देकर हमें मुग्ध करती है। —रामचन्द्र शुक्ल

कविता मानवता की उच्चतम अनुभूति की अभिव्यक्ति है।
—डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

परमाणु में कविता है, विराट् रूप मे कविता है, विन्दु मे कविता है, सागर में कविता है, रेणु में कविता है जिधर देखो कविता ही का साम्राज्य है। प्रकृति काव्यमय है, सारा ब्रह्माण्ड एक अद्भुत महाकाव्य है।

—पुरुषोत्तमदास टडन

Poetry is the music of thought, conveyed to us through the music of language

कविता भावना का सगीत है, जो हमको शब्दो के सगीत द्वारा मिलता है।

—चैटफील्ड

कविता हृदय-कानन में खिली हुई कुसुम-माला है। —अज्ञात

गद्य जहा असमर्थ है वहा कविता जन्म लेती है। —अज्ञात

कविता गाकर रिझाने के लिए नही, समझकर खो जाने के लिए है। —अज्ञात

कविता मनोरजन नही, आत्मानुसन्धान का उन्मेष है। कविता सजावट और रगीनी नही, अपने आप को चीरने का प्रयास है और जो अपने आप को चीरता है वह मनुष्य की जडता को चीर सकता है। —अज्ञात

कष्ट

आज के कष्टो का सामना करनेवाले के पास आगामी कल के कष्ट आते हुए झिझकते है। —अज्ञात

कष्ट हृदय की कसौटी है। —जयशकर प्रसाद

कसरत

शरीर रोगी और दुर्बल रखने के समान दूसरा कोई पाप नहीं है।
—लोकमान्य तिलक

Health is the vital principle of bliss, and exercise of health
आनन्द का मुख्य सिद्धान्त तन्दुरुस्ती है और तन्दुरुस्ती का मुख्य सिद्धान्त कसरत।
—टामसन

जिस प्रकार बिजली की धारा से बिजली के तार में उत्तेजना होती है उसी प्रकार व्यायाम द्वारा खून में गर्दिश पहुचाने से शरीर की नसें-नाड़ियाँ उत्तेजित व कार्यशील हो जाती हैं।
—अज्ञात

कस्तूरी

कस्तूरी की पहिचान उसकी सुगन्धि से होती है, गन्धी के कहने से नही।
—सादी

कहानी

पढकर आनन्दातिरेक से आँखें गीली न हो जायें, तो वह कहानी कैसी?
—शरत्चन्द्र (पत्रावली)

कहावत

कहावतें दैनिक अनुभवो की बेटियाँ हैं। —डच कहावत

कान

कानो के दुरुपयोग से मन बहुत अशान्त और कलुषित हो जाता है, कान इसका अनुभव नही कर पाते। —महात्मा गाधी

कान हमारे गुरुदेव है। —अज्ञात

कान का कच्चा होना बुरा है, वह सदा अच्छी चीजे ही नहीं देता। —अज्ञात

काम

न जातु काम कामानामुपभोगेन शाम्यति। हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्द्धते।
काम की शान्ति कभी काम के उपभोग से नहीं हो सकती। वह तो इससे आग में घी डालने के समान अधिक बढता है।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्॥ —गीता

काम, क्रोध और लोभ ये तीनो नरक के द्वार है, ये ही तीनो आत्मा को नष्ट कर देते है, इन तीनो को त्यागना उचित है।

सहकामी दीपक दसा सोखै तेल निवास।
कविरा हीरा सत जन सहजै सदा प्रकाश ॥　　　　—कबीर

कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।　　—कालिदास

काम से जो पुरुष पीडित है वे जड और चेतन में भेद नही कर सकते।

तात तीन अति प्रवल खल, काम, क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञान-निधान मन, करहि निमिष महु छोभ।　　—तुलसी

कामक्रोधग्राहवती पचेन्द्रियजला नदीम्।
नाव धृतिमयी कृत्वा जन्मदुर्गाणि सन्तर ॥　　—अज्ञात

काम और क्रोध मगर के समान है, पाचो इन्द्रिया जलरूप है और जन्मो की शृखला दुर्गरूप है। इस दुस्तर नदी को पार करने के लिए धैर्यरूपी नाव ही काम दे सकती है।

जहा काम तहँ नाम नहि, जहा नाम नहि काम।
दोनो कवहू ना मिलै, रवि रजनी इक ठाम ॥　　—कबीर

The worst of slaves is he whom passion rules
वह निकृष्ट दास है जिस पर काम शासन करता है।　　—ब्रुक

काम क्रोध मद लोभ सब, प्रवल मोह की धार।
तिनमह अति दारुण दु खद, मायारूपी नार ॥
—तुलसी (मानस)

Passion, though a bad regulator, is a powerful spring
काम यद्यपि एक निकृष्ट प्रवन्धक है तथापि एक शक्तिशाली स्रोत है।
—एमर्सन

काम क्रोध मद लोभ की जव लग घट में खान।
तव लगि पंडित मूर्खहू दोनो एक समान ॥　　—कबीर

लोभ के इच्छा दभ वल, काम के केवल नारि।
क्रोध के परुष वचन वल, मुनिवर कहहि विचारि ॥　　—तुलसी

कामदेव

कामदेव बड़ा छली है, जो उसका विश्वास करता है, वह धोखा खाता है। —गेटे

कामना

कामनाएँ साँप के जहरीले दाँत के समान हैं। —स्वामी रामतीर्थ

लोभी मनुष्य की कामना कभी पूरी नहीं होती। —वेदव्यास (म० शान्तिपर्व)

आसक्ति से कामना उत्पन्न होती है। —भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

कामनाओं को इष्ट बनाना बंधन को स्वीकार करना है। —स्वामी रामतीर्थ

विषय-सुख की कामना मनुष्य को अंधा बना देती है। —वेदव्यास

कामना वाले के लिए क्रोध अनिवार्य है, क्योंकि कामना कभी तृप्त नहीं होती। —महात्मा गांधी

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओं का त्यागकर निःस्पृह हो जाता है और ममता तथा अहंकार को छोड़ देता है वही शांति पाता है।

जब तक कामना है तब तक सुख के दर्शन स्वप्न में भी नहीं होंगे। —अज्ञात

जैसे कच्ची छत में जल भरता है वैसे ही अज्ञानी के मन में कामनाएं जमा होती हैं। —गौतम बुद्ध

कामना सागर की भांति अतृप्त है, ज्यों ज्यों हम उसकी आवश्यकता पूरी करते हैं त्यों त्यों उसका कोलाहल बढ़ता है। —स्वामी विवेकानन्द

कामिनी

कामिनी के शब्द जितनी आसानी से दीन और ईमान को गारत कर सकते हैं, उतनी ही आसानी से उनका उद्धार भी कर सकते हैं। —प्रेमचन्द

कामिनी को लावण्य देने वाले यह छहो अनुपम है—हरिण, इन्दु, अरविन्द, करिणी, हिम और पिक। हरिण से नयन, इन्दु से मुख, अरविन्द से परिमल (अग-सुगन्ध), करिणी से गति, हिम से तनु-रुचि, और पिक से नव-यौवना कामिनी की सुललित वाणी की वर्णना की। —अज्ञात

माया सापणि सब डसै, कनक कामणी होई।
ब्रह्मा विष्णु महेस लौं, दादू बचै न कोई। —दादू

कामी

उल्लू को दिन मे नही दीखता, कौए को रात में नही दीखता। मगर कामी ऐसा अन्धा होता है जिसे न दिन में सूझता है और न रात में। —अज्ञात

कामी स्वता पश्यति। —कालिदास (शकुन्तला)

कामी सब वस्तुओ को अपने अनुकूल ही समझता है।

कामातुराणा न भय न लज्जा—
कामी व्यक्तियो को न भय लगता है, न लज्जा।

जे कामी लोलुप जगमाही, कुटिल काक इव सर्वाह डेराही॥ —तुलसी

कायर

Cowards die many times before their death, the valiant taste death but once
कायर अपने जीवन-काल में ही अनेक बार मरते है, वीर लोग केवल एक ही बार मरते है। —शेक्सपियर (जूलियस सीजर)

छोटी नदिया थोडा ही जल पाकर उतरा जाती है, चूहे की अजलि थोडी ही चीजो मे भर जाती है। इमी तरह कायर पुरुप भी थोडे में ही सतुप्ट हो जाते है। —पचतत्र

The world has no room for cowards, we must all be ready somehow to toil, to suffer, to die
ससार मे कायरो के लिए कही स्थान नही है। हम सबको किमी न किमी प्रकार कठोर परिश्रम करने, दुख उठाने और मरने के लिए तैयार रहना चाहिए। —स्टीवेन्सन

कायरता

मनुष्य जितना ही चाहता है, उतनी ही उसको प्राप्त करने की शक्ति बढ़ती है। अभाव पर विजय पाना ही जीवन की सफलता है। उसे स्वीकार करके उसकी गुलामी करना ही कायरपन है। —शरत्चन्द्र (तरुणों का विद्रोह)

कार्य

मनुष्य के सम्पूर्ण कार्य उसकी इच्छा के प्रतिबिम्ब होते हैं। —अज्ञात

A life spent worthily should be measured by deeds, not years

योग्यता से व्यतीत हुए जीवन को हमें वर्षों के नहीं अपितु कर्मों के पैमाने से नापना चाहिए। —शेरीडेन

विवेकपूर्ण कार्य उपयोगी होता है। उपयोगी होने पर कार्य की कठिनता की हम परवाह नहीं करते। —रस्किन

For men must work, and women must weep
And there is little to earn and many to keep

मनुष्यों को कार्य करना और स्त्रियों को रोना है। आय कम और पालन करने को बहुतेरे हैं। —सी० किंग्स्ले

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥ श्रीकृष्ण (गीता)

किसी अवस्था में कोई भी प्राणी शारीरिक, मानसिक व वाचिक कर्म किये बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता, क्योंकि प्रकृति के राग-द्वेषादि गुण के वश होकर सब प्राणियों को कर्म करना ही पड़ता है।

जो नेक काम करता है और नाम की इच्छा नहीं रखता उसकी चित्त-शुद्धि होती है और उसका काम सहज ही परमात्मा को अर्पण हो जाता है। —विनोबा

Right action cannot come out of nothing, it must be preceded by thought

उचित कार्य विचार के अभाव से उत्पन्न नहीं हो सकता, उसके पहले विचार की जरूरत है। —जवाहरलाल नेहरू

सहसा विदधीत न क्रियामविवेक परमापदा पदम् ॥
वृणते हि विमृश्यकारिण गुणलुब्धा स्वयमेव सम्पद ॥
—भारवि (किरातार्जुनीयम्)

एकाएक बिना सोचे विचारे कोई कार्य्य नही करना चाहिए। सम्यक् विचार न करना परम आपत्ति का उत्पादक होता है। गुण के ऊपर अपने आप को समर्पण करनेवाली सम्पत्तिया विचारवान् पुरुष को स्वय मनोनीत करती हैं अर्थात् जो कुछ किया जाय उसके आगे-पीछे की सब बातो का विचार कर लेना चाहिए।

कोई काम गुप्तरूप से न करो, जिसे दूसरो से छिपाने की जरूरत हो।
—जवाहरलाल नेहरू

नियत कुरु कर्म त्व कर्म ज्यायो ह्यकर्मण ।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धयेदकर्मण ॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

तू निश्चित कर्म कर, कर्म न करने से कर्म करना श्रेष्ठ है और कर्म न करने से तेरे शरीर का निर्वाह होना भी कठिन हो जायगा।

प्रत्येक कार्य समय से होता है इसलिए उतावली नही करनी चाहिए। जिस प्रकार वृक्ष में चाहे जितना पानी डाला जाय परन्तु वह समय पर ही फल देता है। —वृन्द

काहु न कोउ सुख दुख कर दाता।
निज कृत कर्म भोग सब भ्राता॥ —तुलसी

धर्म का कार्य मनुष्य के हृदय को विशाल बनाता है। —विनोबा

हे कार्य ! तुम्ही मेरी कामना हो, मेरी प्रसन्नता हो, मेरे आनन्द हो, मुझे दु खो से मुक्त करना यह तो तुम्हारे ही हाथ में है। —एलेक्जेन्डर ड्यूमास

बिना कार्य के सिद्धात दिमागी ऐय्याशी है, बिना सिद्धात के कार्य अन्धे की टटोल है। —जवाहरलाल नेहरू

कार्य उसी का सिद्ध होता है जो समय को विचार कर कार्य करता है। वह खिलाडी कभी नही हारता जो दाव विचार कर खेलता है। —वृन्द

कार्यकर्त्ता

नरपतिहितकर्त्ता द्वेष्यता याति लोके जनपदहितकर्त्ता त्यज्यते पार्थिवेन।
इति महति विरोधे विद्यमाने समाने, नृपति जनपदाना दुर्लभ कार्यकर्त्ता॥
—पचतत्र

जो शासन का साथ देता है, वह जनता का द्वेषी बन जाता है, जो जनता के हित के बारे में बोलता है वह शासन की दृष्टि में खटकता है। सर्वत्र इस विरोध के रहते शासन और जनता दोनो के लिए समान रूप से प्रिय कार्यकर्त्ता दुर्लभ है।

कार्य-सिद्धि

उपायमास्थितस्यापि नश्यन्त्यर्था प्रमाद्यत ।
हन्ति नोपशयस्थोऽपि शयालुर्मृगयुर्मृगान् ॥

— माघ (शिशुपाल वध)

कार्यसिद्धि के उपायो में लगे रहनेवाले भी असावधानी से अपने कार्य का नाश कर देते हैं, घात (मृगो के आने-जाने के मार्ग में शिकारियो द्वारा बनाये गये गड्ढे) में बैठा हुआ भी नीद में निरत शिकारी मृगो को नही मार पाता।

काल

नाकाले म्रियते जन्तुर्विद्ध शरशतैरपि।
कुशाग्रेणैव सस्पृष्ट प्राप्तकालो न जीवति ॥ — हितोपदेश

जो काल न हो तो सैकडो बाणों के विधने से भी प्राणी नही मरता और जो काल आ जाय तो कुशा की नोक छुआए से मर जाता है।

काव्य (दे० कविता)

सत्य काव्य का साध्य और सौन्दर्य साधन है। — महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

काव्य कवि के हृदय का गान है, उसकी बुद्धि का सौन्दर्य है। — अज्ञात

Poetry is the sister of sorrow, every man that suffers and weeps is a poet, every tear is a verse, and every heart a poem

काव्य दु ख की बहिन है, प्रत्येक मनुष्य जो दु ख सहता है और रुदन करता है कवि है, प्रत्येक आंसू काव्य है, और प्रत्येक हृदय एक कविता। — एड्री

जैसे योगी समाधि में ब्रह्मानन्द-सुधा के पान में तन्मय हो जाता है, और अन्य विषय-व्यापार भूल जाता है, वैसा ही आनन्द काव्य से सहृदय मनुष्य के हृदय में उत्पन्न होता है। — अज्ञात

काव्य साहित्य का उत्तम अग है। काव्य से मनुष्य को जैसा अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है वैसा और किसी प्रकार के साहित्य से नही। — अज्ञात

Poetry is the first and last of all knowledge, it is as immortal as the heart of man

काव्य सभी ज्ञान का आदि और अन्त है—यह इतना ही अमर है जितना मानव का हृदय। —वर्ड्सवर्थ

काव्य और दर्शन

दर्शन में, चेतना के प्रति नास्तिक की स्थिति भी सम्भव है, परन्तु काव्य मे अनभूति के प्रति अविश्वासी कवि की स्थिति असम्भव ही रहेगी।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

काशी

मुकुति-जनम-महि जानि, ग्यान खानि अघहानि-कर।
जहँ बस सभु-भवानि, सो कासी सेइय कस न॥ —तुलसी

जैसे दिल्ली का इतिहास भारतवर्ष का इतिहास है, वैसे यदि काशी का इतिहास कभी लिखा गया होता तो वह भारत के हिन्दू-धर्म और दर्शन का इतिहास होता।

—अज्ञात

किसान

अन्न पैदा करने में किसान ब्रह्मा के समान है। खेती उसके ईश्वरीय प्रेम का केन्द्र है। उसका सारा जीवन पत्ते-पत्ते में, फूल-फूल में, फल-फल में, बिखर रहा है।

—पूर्णसिंह

वृक्षो की तरह किसान का भी जीवन एक तरह का मौन जीवन है। किसान पत्ते में, फूल में, फल में आहुत हुआ सा दिखाई देता है। —पूर्णसिंह

कीर्ति

Fame is the perfume of heroic deeds

कीर्ति वीरोचित कार्यों की सुगन्ध है। —सुकरात

क्या नदी अपने झाग पर कुछ भी ध्यान देती है?
कीर्ति जीवन की नदी का झाग है। —रवीन्द्र

वह नाम अति भार-स्वरूप है जोकि बहुत शीघ्र प्रसिद्ध हो गया। —वालटेयर

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।। —तुलसी (मानस)

Blessed is he whose fame does not outshine his truth
धन्य है वह मानव जिसकी कीर्ति उसकी सत्यता से अधिक प्रकाशवान् नही है।
—रवीन्द्र

As the pearl ripens in the obscurity of its shell, so ripens in the tomb, all the fame that is truly precious
जिस प्रकार समुद्र की गहराई में सीपी के भीतर का मोती परिपक्व होता है, इसी प्रकार से मनुष्य की कीर्ति कब्र में परिपक्व होती है। —लान्डोर

कीर्ति का नशा शराब के नशे से भी तेज है। शराब छोडना आसान है, कीर्ति छोडना आसान नही। —अज्ञात

तुलसी निज करतूति बिनु, मुकुत जात जब कोइ।
गयो अजामिल लोक हरि, नाम सक्यो नहिं धोइ।। —तुलसी

अकृत्वा हेलया पादमुच्चैर्मूर्धसु विद्विषाम्।
कथकारमनालम्बा कीर्तिर्द्यामधिरोहति।। —माघ (शिशु०)

लीलापूर्वक शत्रुओ के ऊचे मस्तक पर पैर बिना रखे ही निरालम्ब कीर्ति कैसे स्वर्ग तक चढ सकती है।

सर्वोत्तम कीर्ति, प्रतिद्वन्द्वी द्वारा की गयी प्रशसा है। —टामस योर

कुकर्म

अपने कुकर्मों का फल चखने में कडुआ परन्तु परिणाम में मधुर होता है।
—जयशंकर प्रसाद

A few vices are sufficient to darken many virtues
कुछ कुकर्म बहुत से गुणो को दूषित करने के लिए पर्याप्त है। —प्लूटार्क

दुष्ट कार्य ईश्वर से हमें सदा अलग रखता है। —रस्किन

यदि मुझे यह विश्वास हो जाय कि ईश्वर मुझे क्षमा कर देंगे और मनुष्य मेरे कुकर्म को न जान सकेंगे तब भी मुझे कुकर्म करते हुए लज्जा आयेगी। —प्लेटो

प्रत्येक कुकृत्य उस तार को तोड देता है जो हमारे और ईश्वर के बीच में लगा हुआ है। —रस्किन

बुरे कर्मों का परिणाम कभी शुभ नही हो सकता। बुरे कर्मों के लिए पीडा और क्लेश अवश्य भोगना पडेगा। —स्वामी रामतीर्थ

कुकर्म मनुष्य के जीवन पर काला परदा डाल देता है। —अज्ञात

कुपुत्र

एकेन शुष्कवृक्षेण दह्यमानेन वह्निना।
दह्यते तद्वन सर्वं कुपुत्रेण कुल यथा॥ —चाणक्य

आग से जलते हुए एक ही सूखे वृक्ष से समस्त वन इस प्रकार जल जाता है, जैसे एक ही कुपुत्र से सम्पूर्ण कुल।

ज्यो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो लगै, बढे अंधेरो होय॥ —रहीम

जनक वचन निदरत निडर, बसत कुसगति माहिं।
मूरख सो सुत अधम है, तेहिं जनमे सुख नाहिं॥ —विदुर

कुमति

जहा कुमति तह विपति निधाना॥ —तुलसी (मानस)

कुमति कीन्ह सब विश्व दुखारी। —तुलसी (मानस)

सगति सुमति न पावही, परे कुमति के धंध।
राखेहु मेलि कपूर में, हींग न होत सुगध॥ —बिहारी

कुमारी

कुमारी! तेरी सरलता, सरोवर की श्यामता की भांति, तेरे सत्य की गहराई व्यंजित करती है। —रवीन्द्र

कुरीति

कुरीति के अधीन होना कायरता है, उसका विरोध करना पुरुषार्थ है। —महात्मा गांधी

कुरूपता

कुरूपता शीलयुता विराजते। —चाणक्य

कुरूपता सुशीलता से सुशोभित होती है।

कुरूपता विधाता का ऐसा अभिशाप है जिसे हम अपने सद्गुणो द्वारा दूर कर सकते है। —अज्ञात

विद्या रूप कुरूपाणाम्। क्षमा रूप तपस्विनाम्। —चाणक्य

कुरूप मनुष्यो का सौदर्य विद्या है। तपस्वियोका सौंदर्य क्षमा है।

कुल-मर्यादा

कुल-मर्यादा में आत्मरक्षा की वडी शक्ति होती है। —प्रेमचन्द

कुल की प्रतिष्ठा भी नम्रता और सद्व्यवहार से होती है। हेकडी और रुखाई से नही। —प्रेमचन्द

सत्पुरुष अपनी कुल-मर्यादा के लिए अपने को वलिदान कर देते है। —अज्ञात

कुलीन

छिन्नोपि चन्दनतरुर्न जहाति गन्ध।
वृद्धोपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम्॥
यन्त्रार्पितो मधुरता न जहाति चेक्षु।
क्षीणोपि न त्यजति शीलगुणान्कुलीन॥ —चाणक्य

जैसे काटा हुआ चन्दन का वृक्ष गन्ध को नही छोड देता, वूढा हो जाने पर भी गजराज अपनी मन्दगति को नही छोडता, कोल्हू में पेरी हुई ईख मधुरता नही छोड देती, उसी प्रकार दरिद्र हो जाने पर भी कुलीन व्यक्ति सुशीलता आदि गुणो को नही छोडता।

Good blood—descent from the great and good, is a high honour and privilege He that lives worthily of it is deserving of the highest esteem, he that does not, of the deeper disgrace

महान और उच्चवश से उत्पत्ति स्वय ही एक वडा सम्मान और विशेष अधिकार है। जो इन्ही के अनुसार जीवन व्यतीत करता है सर्वोच्च आदर का पात्र होता है और जो नही करता वह सवमे वडी अपकीर्ति का पात्र होता है। —कोल्टन

वरयें कुलजा प्राज्ञो विरूपामपि कन्यकाम्।
रूपशीला न नीचस्य विवाह सदृशे कुले॥ —चाणक्य

कुलीन कन्या कुरूप भी हो तो विवाह कर लो, सुन्दर किन्तु नीच संस्कारो वाली स्त्री से कभी विवाह न करो।

कुशल-क्षेम

भूताना हि क्षयिषु करणेष्वाद्यमाश्वास्यमेतत्।

—कालिदास (मेघदूत)

काल सब प्राणियो के सिर पर है, इसलिए पहले कुशल पूछना चाहिए।

कुशलता

कार्य-कुशल आदमी के लिए यश और धन की कमी नही। —अज्ञात

The ability to deal with people is as purchasable a commodity as sugar or coffee

लोगो के साथ व्यवहार करने की कुशलता वैसी ही क्रेय वस्तु है जैसी कि खाड या काफी। —जे० डी० राकफेलर

कुशल पुरुष

विरोधि वचसो मूकान् वागीशानपि कुर्वते।
जडानप्यनुलोमार्थान् प्रवाच कृतिना गिर ॥

—माघ (शि०)

कुशल पुरुषो की वाणी प्रतिकूल बोलनेवाले बडे-बडे वक्ताओ को भी बिल्कुल मूक बना देती है और अपने पक्ष में बोलनेवाले मन्दमतियो को भी निपुण वक्ता बना देती है।

आत्मोदय परज्यानिर्द्वय नीतिरितीयती।
तदूरीत्य कृतिभिर्वाचस्पत्य प्रतायते ॥ —माघ (शि०)

अपनी उन्नति और शत्रु का विनाश—यही दो नीति की बातें है। (इनके अतिरिक्त कोई तीसरी बात नीतिशास्त्र में नही है) इन्ही दोनो को अगीकार कर कुशल पुरुष अपनी वाक्चतुरता का विस्तार करते है।

कुशासक

कटक करि करि परत गिरि साखा सहस खजूरि।
मर्राहं कुनृप करि करि कुनय सो कुचालि भव भूरि ॥ —तुलसी

वह शासक अत्याचारी है, जो अपनी इच्छा के अतिरिक्त कोई नियम नही जानता।
—वाल्टेयर

कुशासक के प्रति विद्रोह करना ईश्वर की आज्ञा मानना है। —फ्रैंकलिन

कुशासन

जोर जुल्म करनेवाली वादशाहत वादल की छाँह की तरह टिकाऊ नही होती।
—अज्ञात

जासु राजु प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी॥ —तुलसी (मा०)

जहा कानून का अन्त होता है वहा कुशासन प्रारम्भ होता है। —विलियम पिट

राज करत विनु काजही, करहिं कुचालि कुसाजि।
तुलसी ते दसकन्ध ज्यो, जैहें सहित समाजि॥ —तुलसी

Bad laws are the worst sort of tyranny
वुरे नियम सवसे निकृष्ट प्रकार का कुशासन है। —वर्क

चढे वधूरे चग ज्यो, ग्यान ज्यो सोक समाज।
करम धरम सुख सपदा, त्यो जानिवे कुराज॥ —तुलसी

अत्याचार और अराजकता में कभी अधिक पृथकता नही रहती।
—जे० वेन्थम

राज करत विनु काजही, ठठहिं जे कूर कुठाट।
तुलसी ते कुरुराज ज्यो, जइहैं वारह वाट॥ —तुलसी

कुसंग

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसग।
चदन विष व्यापत नही, लपटे रहत भुजग॥ —रहीम

हानि कुसग सुसगति लाहू।
लोकहु वेद विदित सव काहू॥ —तुलसी

दाग जो लागा नीलका, सौ मन सावुन धोय।
कोटि जतन परवोधिए, कागा हस न होय॥ —कवीर

वसि कुसग चाहत कुसल यह रहीम अपसोस।
महिमा घटी समुद्र की रावन वसा परोस॥ —रहीम

को न कुसगति पाय नसाई। रहै न नीच मते चतुराई॥
—तुलसी (मानस, अयोध्या)

मारी मरै कुसग की केरा के ढिग वेर।
वह हालै वह अग चिरै विधि ने सग निवेर॥ —कबीर

रहिमन उजली प्रकृति को, नहीं नीच का सग।
करिया वासन कर गहे, करिखा लागत अग॥ —रहीम

वरु भल वास नरक कर ताता। दुष्ट सग जनि देइ विधाता॥
—तुलसी (मानस)

होत सुसगति सहज सुख, दुख कुसग के थान।
गधी और लुहार की, देखौ वैठि दुकान॥ —अज्ञात

आप अकारज आपनो, करत कुसगति साथ।
पाय कुल्हाडा देत है, मूरख अपने हाथ॥ —वृन्द

रहिमन नीचन सग वसि, लगत कलक न काहि।
दूध कलारिन हाथ लखि, मद समुझहिं सब ताहि॥ —रहीम

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुण प्राप्य भवन्ति दोषा।
आस्वाद्यतोया प्रभवन्ति नद्य
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेया॥ —अज्ञात

गुणज्ञो के पास गुण ही गुण होते है, किन्तु वे ही निर्गुणियो के पास रहकर दोष हो जाते है। नदियाँ स्वभावत मधुर जलवाली होती है, किन्तु समुद्र के साथ मिलने से खारे जलवाली हो जाती है।

कुसमय

जेहि अचल दीपक दुर्‌यो हन्यो सो ताही गात।
रहिमन कुसमय के परे मित्र शत्रु ह्वै जात॥ —रहीम

कुसमय में साहस भी साथ छोड देता है। —अज्ञात

जो रहीम दीपक दशा, तिय राखत पट ओट।
समय परे ते होत है, वाही पट की चोट॥ —रहीम

तुलसी पावस के समय, धरी कोकिला मौन।
अब तो दादुर बोलहैं, हमें पूछिहै कौन॥ —तुलसी

रहिमन असमय के परे, हित अनहित ह्वै जाय।
बधिक बधै मृग बान सो, रुधिरै देत बताय॥ —रहीम

रहिमन चुप ह्वै बैठिए देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहै बेर॥ —रहीम

कूटनीति

Diplomacy is to do and say the nastiest thing in the nicest way.
घृणिततम बात को अति-सुन्दर ढग से कहना और करना ही कूटनीति है।
—गोल्डबर्ग

कूटनीति मानवीय गुणो के विरुद्ध एक ऐसा दुर्गुण है, जिसने दुनिया के बहुत बडे भाग को गुलामी की जजीरो में जकड रखा है और जो मानवता के विकास में सबसे बडी बाधा बना हुआ है। —रोमां रोलां

कृतघ्न

How sharper than a serpent's tooth it is to have a thankless child.

कृतघ्न पुत्र का होना, सर्प के दाँतो से भी ज्यादा तेज होता है। —शेक्सपियर

दत्त देवेन यत् तुभ्य, तदर्थं स्वकृतज्ञताम्,
ब्रूहि त परमात्मान, मा भूत् तेऽत्र कृतघ्नता॥

परमात्मा ने जो कुछ तुमको दिया है, तुमको चाहिए कि उसके लिए परमात्मा के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करो। इस विषय में तुम्हें कृतघ्न नही होना चाहिए।

कृतार्था ह्यकृतार्थाना मित्राणा न भवन्ति ये।
तान्मृतानपि क्रव्यादा कृतघ्नान्नोपभुञ्जते॥

जो अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर अपने मित्रो के कार्य को पूरा करने की परवाह नही करते उन कृतघ्न पुरुषो के मरने पर मासाहारी जन्तु भी उनका मास नही खाते।
—वाल्मीकि (रा०, कि०)

कृतज्ञता

ईश्वर अपने दिये हुए पुण्यो के वदले में कृतज्ञता चाहता है, सूर्य और पृथ्वी के वदले में नही।
—रवीन्द्र

Gratitude is the memory of the heart
कृतज्ञता हृदय की स्मृति है।
—अंग्रेजी कहावत

जैसे नदिया अपने जल को समुद्र में वहाकर ले जाती है जहाँ से वह पहले आया था, इसी प्रकार कृतज्ञ मनुष्य को प्रसन्नता होती है जव वह उस लाभ को वहा ही पहुचा देता है जहा से उसने प्राप्त किया था।
—अज्ञात

कृतज्ञता निर्धन मनुष्यो का वदला चुकाना है।
—कहावत

कृतज्ञ और प्रसन्न हृदय से की गयी पूजा ईश्वर को सवसे अधिक प्रिय है।
—प्लूटार्क

A grateful thought toward heaven is of itself a prayer
स्वर्ग की ओर कृतज्ञपूर्ण भावना स्वय ही एक प्रार्थना है।
—लेसिंग

Whenever I find a great deal of gratitude in a poor man, I take it for granted there would be as much generosity if he were a rich man
जव कभी किसी निर्धन व्यक्ति में मै अधिक कृतज्ञता पाता हूँ तो मुझे विश्वास हो जाता है कि यदि वह घनी होता तो उसमें उतनी ही दानशीलता होती।
—पोप

Gratitude preserves friendship and procures new
कृतज्ञता मित्रता को चिरस्थायी रखती है और नये मित्र बनाती है।
—कहावत

If you pick up a starving dog and make him prosperous, he will not bite you This is the principal difference between a dog and a man
यदि तुम किसी भूख से पीडित कुत्ते को उठा लो और उसको देख-भाल से खुश करो, तो वह तुम्हें कभी न काटेगा। मनुष्य और कुत्ते में यही प्रधान अन्तर है।
—मार्कट्वेन

कृतज्ञता एक कर्तव्य है जिसे पूरा करना चाहिए लेकिन जिसे पाने का किसी को अधिकार नही है। —रूसो

केन्द्र

अपना केन्द्र अपने से वाहर मत वनाओ, अन्यथा ठोकरें खाते रहोगे।
—स्वामी रामतीर्थ

आत्मज्ञान का सम्पादन करना और आत्मकेन्द्र में स्थिर रहना मनुष्य-मात्र का सवसे पहला और प्रधान कर्त्तव्य है। —स्वामी रामतीर्थ

कोयल

कागा काको धन हरै, कोयल काको देय।
मीठे वचन सुनाय के, जग को वश कर लेय॥ —अज्ञात

गुन के ग्राहक सहस नर, विनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सव कोय॥
—गिरिधर कविराय

कोकिलानाम् स्वरो रूप नारी रूप पतिव्रतम्।
विद्या रूप कुरूपाणा क्षमा रूप तपस्विनाम्।

कोकिलाओ का रूप स्वर होता है, स्त्री का रूप पतिव्रत धर्म है, कुरूप मनुष्य का रूप विद्या होती है और तपस्वियो का रूप क्षमा है। —चाणक्य

आम का स्वर्गीय रस पीकर भी कोयल को गर्व नही होता, पर कीचड का पानी पीकर भी मेढक टरटराना शुरू कर देता है। —अज्ञात

क्रान्ति

क्रान्ति शान्ति नही है। उसे हिंसा में से ही चलना पडता है,—यही उसका घर है और यही उसका अभिशाप॥ —शरत्चन्द्र (अधिकार)

Revolutions are like the most noxious dung-heaps, which bring into life the noblest vegetables

क्रान्ति अति हानिकारक कूडे के ढेर के सदृश है, जिससे अति उत्तम वानस्पतिक पैदावार होती है। —नेपोलियन

When economic change goes ahead too fast and the forms of government remain more or less static, a hiatus occurs, which is usually bridged over by a sudden change called revolution

जब आर्थिक परिवर्तन की प्रगति बहुत अधिक बढ जाती है, पर शासन-तन्त्र जैसे का तैसा बना रहता है, तब दोनो के बीच बहुत बडा अन्तर पड जाता है। प्राय यह अन्तर एक आकस्मिक परिवर्तन से दूर होता है, जिसे क्रान्ति कहते हैं।

—जवाहरलाल नेहरू

Political convulsions, usher in new epochs of the world's progress

राजनीतिक विप्लव विश्व के विकास मे एक नया युग लाता है।

—वेन्डेल फिलिप्स

क्रान्ति का उदय सदा ही पीडितो के हृदय एव त्रस्त व्यक्तियो के अन्त करण में हुआ करता है। —अज्ञात

क्रान्ति कभी पीछे की ओर नही जाती। —एमर्सन

क्रान्ति सभ्यता की जननी है। —विक्टर ह्यूगो

क्रान्ति सदैव द्रुतिगामिनी होती है। —वाल्टेयर

क्रान्त बनायी नही जाती, वह स्वय आती है। —वेन्डेल फिलिप्स

क्रान्तिकारी

क्रान्तिकारी—उनकी नस नस में भगवान ने ऐसी आग जला दी है कि उन्हें चाहे जेल में ठूंस दो, चाहे सूली पर चढा दो,—कह न दिया कि पचभूतो को सौंपने के सिवा और कोई सजा ही लागू नही होती। न तो इनमे दया-माया है, न धर्म कर्म ही मानते हैं। —शरत्चन्द्र (अधिकार)

क्रूरता

Cruelty is a tyrant that is always attended with fear

क्रूरता अत्याचारिणी है जो सदैव भय के साथ रहती है। —कहावत

क्रूरता देवोपम मनुष्यो में राक्षसी प्रवृत्ति है। —अज्ञात

क्रूरता शैतान का पहला गुण है। —कहावत

क्रोध

क्रोधाद्भवति समोह समोहात्स्मृतिविभ्रम ।
स्मृतिभ्रशाद् वुद्धिनाशो वुद्धिनाशात्प्रणश्यति ।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

क्रोध से मूढता उत्पन्न होती है, मूढता से स्मृति भ्रान्त हो जाती है, स्मृति भ्रान्त होने से वुद्धि का नाश हो जाता है, और वुद्धि नष्ट होने पर प्राणी स्वय नष्ट हो जाता है ।

जव क्रोध आये तो उसके परिणाम पर विचार करो। —कनफ्यूशस

प्रणिपातप्रतीकार सरम्भो हि महात्मनाम्। —कालिदास

महात्माओ के क्रोध की शान्ति उनको प्रणाम करने से होती है।

When thou art above measure angry, bethink thee how momentary is man's life

जव तुम अत्यधिक क्रोध में हो तव यह विचार करो कि मानव-जीवन कितना क्षणिक है। —मार्क्स आरेलियस

दसो दिसा के क्रोध की, उठी अपरवल आगि।
सीतल सगत साधु की, तहाँ उवरिए भागि ।। —कवीर

क्रोध अच्छे मनुष्यो में क्षणिक होता है। —कहावत

अग्नि उसी को जलाती है जो उसके पास जाता है मगर क्रोधाग्नि सारे कुटुम्व को जला डालती है। —संत तिरुवल्लुर

अवक्रोधेन जिने क्रोध, असाधु साधुना जिने। —गौतम वुद्ध

मनुष्य को चाहिए क्रोध को दया से और वुराई को भलाई से जीते।

When angry count ten before you speak, if very angry count a hundred

जव क्रोध में हो तो दस वार मोच कर वोलो, जव अत्यधिक क्रोध में हो तो सहस्र वार सोचो। —जेफरसन

क्रोध एक प्रचण्ड अग्नि है, जो मनुष्य इस अग्नि को वश में कर सकता है वह उसको वुझा देगा। जो मनुष्य अग्नि को वश में नही कर सकता वह स्वय अपने को जला लेगा। —महात्मा गांधी

क्रोधी मनुष्य को एक वार पुन अपने ऊपर क्रोध आता है, जव उसे समझ आती है।

—पब्लियस साइरस

Anger makes a rich man hated, and a poor man scorned

क्रोध से धनी मनुष्य घृणा का पात्र होता है और निर्धन तिरस्कार का।—कहावत

जिस क्रोध से अपने कुटुम्वी, अपने इष्ट-मित्र अथवा दूसरो का आचरण सुधरे, ईश्वर में पूज्य वुद्धि उत्पन्न हो, दया, उदारता और परोपकार में प्रवृत्ति हो, वह क्रोध वुरा नही।

—अज्ञात

सञ्चितस्यापि महतो वत्स क्लेशेन मानवै ।
यशसस्तपसश्चैव क्रोधो नाशकर पर ॥ —विष्णुपुराण

वत्स! मनुष्य के द्वारा वहुत क्लेश से सञ्चित किये हुए यश और तप को भी क्रोध सर्वथा विनाश कर डालता है।

Anger begins in folly and ends in repentance

क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ होता है और पश्चात्ताप पर समाप्त होता है।—पैथागोरस

क्रोध एक प्रकार की आधी है, जव आती है तो विवेक को नष्ट कर देती है।

—अज्ञात

क्रोध ज्ञानी पुरुष के हृदय में झाक सकता है, परन्तु वह केवल मूर्खो के हृदय में ही निवास करता है।

—कहावत

कोटि परम लागे रहै, एक क्रोध की लार।
किया कराया सव गया, जव आया हकार॥ —कवीर

Beware of the fury of a patient man

सतोषी मनुष्य के तीव्र क्रोध से सावधान रहो। —ड्राइडेन

क्रोध प्राणहर शत्रु क्रोधोमितमुखो रिपु ।
क्रोधोऽसि सुमहातीक्ष्ण सर्वं क्रोधोऽपकर्षति ॥
तपते यतते चैव यच्च दान प्रयच्छति ।
क्रोधेन सर्वं हरति तस्मात् क्रोध विवर्जयेत् ॥ —वामन पुराण

क्रोध प्राणनाशक शत्रु है, क्रोध अपरिमित मुखवाला वैरी है, क्रोध वडी तेज धार तलवार है, क्रोध सव कुछ हर लेता है, मनुष्य जो तप, सयम और दान आदि करता है, उस सव को वह क्रोध के कारण नष्ट कर डालता है। अतएव क्रोध का त्याग करना चाहिये।

ईश्वर ने जिनको प्रभुता दी है, उनको क्रोध घमडी बना देता है।

—अज्ञात

जो मनुष्य क्रोधी पर क्रोध नही करता क्षमा करता है, वह अपनी और क्रोध करने वाले की महासकट से रक्षा करता है, वह दोनो का रोग दूर करनेवाला चिकित्सक है। —वेदव्यास (म० वनपर्व)

क्रोध की सर्वश्रेष्ठ औपधि विलम्ब है। —सेनेका

क्रोध भाग्यवानो को अभागा बना देता है और जो उन्नति के शिखर पर पहुचना चाहते है उन्हें गढे में ढकेल देता है। —अज्ञात

क्रोध और ग्लानि से सद्‌भावनाएँ विकृत हो जाती है, जैसे कोई मैली वस्तु निर्मल वस्तु को दूषित कर देती है। —प्रेमचन्द

किसी के प्रति मन में क्रोध लिये रहने की अपेक्षा उसको तत्काल प्रकट कर देना अधिक अच्छा है, जैसे पल भर में जल जाना देर तक सुलगने से ज्यादा अच्छा है।

—वेदव्यास (म०)

Anger blows out the lamp of the mind

क्रोध मन के दीपक को बुझा देता है। —इगरसोल

जब क्रोध नम्रता का रूप धारण कर लेता है, तो अभिमान भी सिर झुका लेता है। —अज्ञात

क्रोधो वैवस्वतो राजा। —चाणक्य

क्रोध यमराज है।

क्रोध बुरे विचारो की खिचडी है। उसमें द्वेष भी है, दुख भी है, भय भी है, तिरस्कार भी है, घमण्ड भी है और अविवेकिता भी है। —अज्ञात

क्रोध से वही मनुष्य सबसे अच्छी तरह बचा रहता है जो ध्यान रखता है कि ईश्वर उसे हर समय देख रहा है। —प्लेटो

जो मनुष्य क्षुद्र है, उन्ही को क्रोध शोभा देता है। —अज्ञात

बुद्धिमान पुरुषो ने अपनी लौकिक उन्नति, पारलौकिक सुख और मुक्ति प्राप्त करने के लिए क्रोध पर विजय प्राप्त की है। —युधिष्ठिर

अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदा।
भवन्ति वश्या स्वयमेव देहिन ।।
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना
न जात हार्देन न विद्विषादर ।। —भारवि

सफल क्रोधवाले पुरुष की आपत्ति दूर करने के लिए मनुष्य स्वय ही अनुकूल हो जाते हैं। परन्तु क्रोधरहित पुरुष को न मित्र से आदर प्राप्त होता है और न शत्रु ही डरता है।

यत् क्रोधनो यजति यच्च ददाति नित्य।
यद्वा तपस्तपति यच्च जुहोति तस्य।।
प्राप्नोति नैव किमपीह फल हि लोके।
मोघ फल भवति तस्य हि कोपनस्य।।

क्रोधी मनुष्य जो कुछ पूजन करता है, नित्य जो दान करता है, जो तप करता है और जो होम करता है, उसका उसे इस लोक मे कोई फल नही मिलता। उस क्रोधी के सभी फल वृथा होते हैं। —वामन पुराण

When passion is on the throne reason is out of doors

क्रोध के सिंहासनासीन होने पर बुद्धि वहाँ से खिसक जाती है। —एम० हेनरी

क्रोध विष है क्योकि उसके नशे में भले बुरे का ज्ञान नही रहता। —अज्ञात

जिस अग्नि को तुम शत्रु के लिए प्रज्ज्वलित करते हो वह बहुधा तुमको ही अधिक जलाती है। —चीनी कहावत

स्त्री क्रोध में हो तो बफरी हुई शेरनी बन जाती है। —अज्ञात

जो मनुष्य मन में उठे हुए क्रोध को दौडते हुए रथ के समान शीघ्र रोक लेता है, उसी को मै सारथी समझता हूँ, क्रोध के अनुसार चलने वाले को केवल लगाम रखने वाला कहा जा सकता है। —गौतम बुद्ध

Men often make up in wrath what they want in reason

मनुष्य प्राय अपने विवेक की पूर्ति क्रोध द्वारा पूर्ण कर लेता है। —एलजर

क्रोध में आदमी अपने मन की बात नही कहता, वह केवल दूसरो का दिल दुखाना चाहता है। —प्रेमचन्द

जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ही ऊपर झेल लेता है वह दूसरो के क्रोध से बच जाता है। —सुकरात

क्षमा

क्षमा धर्म क्षमा यज्ञ क्षमा वेदा क्षमा श्रुतम्।
य एतदेव जानाति स सर्वं क्षन्तुमर्हति॥

—वेदव्यास (म० वन०)

क्षमा धर्म है, क्षमा यज्ञ है, क्षमा वेद है और क्षमा शास्त्र है। जो इस प्रकार जानता है, वह सब कुछ क्षमा करने योग्य हो जाता है।

क्षमा ब्रह्म क्षमा सत्य क्षमा भूत च भावि च।
क्षमा तप क्षमा शौच क्षमयेद धृत जगत्॥

— वेदव्यास (म० वन०)

क्षमा ब्रह्म है, क्षमा सत्य है, क्षमा भूत है, क्षमा भविष्य है, क्षमा तप है और क्षमा पवित्रता है। क्षमा ने ही सम्पूर्ण जगत् को धारण कर रक्खा है।

क्षमा तेजस्विना तेज क्षमा ब्रह्म तपस्विनाम्।
क्षमा सत्य सत्यवता क्षमा यज्ञ क्षमा शमे॥

— वेदव्यास (म० वन०)

क्षमा तेजस्वी पुरुषो का तेज है, क्षमा तपस्वियो का ब्रह्म है, क्षमा सत्यवादी पुरुषो का सत्य है। क्षमा यज्ञ है और क्षमा शम (मनोविग्रह) है।

न श्रेय सतत तेजो न नित्य श्रेयसी क्षमा।

न तो तेज ही सदा श्रेष्ठ है और न क्षमा ही। — वेदव्यास (म० वन०)

पूर्वोपकारी यस्ते स्यादपराधे गरीयसी।
उपकारेण तत् तस्य क्षन्तव्यमपराधिन॥

—वेदव्यास (म० वन०)

जिसने पहले कभी तुम्हारा उपकार किया हो, उससे यदि कोई भारी अपराध हो जाय, तो भी पहले के उपकार का स्मरण करके उस अपराधी के अपराध को तुम्हें क्षमा कर देना चाहिये।

ससार में ऐसे अपराध कम ही हैं जिन्हें हम चाहें और क्षमा न कर सकें।

— शरत्चन्द्र (गृहदाह)

अबुद्धिमाश्रिताना तु क्षन्तव्यमपराधिनाम्।
न हि सर्वत्र पाण्डित्य सुलभ पुरुषेण वै॥

वेदव्यास (म० वन०)

छिमा वडेन को चाहिए छोटन को उत्पात।
कहा विष्णु को घट गयो जो भृगु मारी लात॥ —कबीर

क्षमा पर मनुष्य का अधिकार है, वह पशु के पास नही मिलती। प्रतिहिंसा पाशव धर्म है। —जयशकर प्रसाद

अजानता भवेत् कश्चिदपराध कृतो यदि॥
—वेदव्यास (म० वन०)

अच्छी तरह जाच-पडताल करने पर यदि यह सिद्ध हो जाय कि अमुक अपराध अनजान में ही हो गया है, तो उसे क्षमा के ही योग्य वताया गया है।

क्षमा दड से अधिक पुरुषोचित है—क्षमा वीरस्य भूषणम्। —महात्मा गाधी

खोद-खाद धरती सहै काट-कूट वनराय।
कुटिल वचन साधू सहै और से सहा न जाय॥ —कबीर

यदि कोई दुर्बल मनुष्य तुम्हारा अपमान करे तो उसे क्षमा कर दो, क्योकि क्षमा करना ही वीरो का काम है, परन्तु यदि अपमान करने वाला वलवान हो तो उसको अवश्य दण्ड दो। —गुरु गोविन्द सिंह

क्षमा से बढकर और किसी वात में पाप को पुण्य वनाने की शक्ति नही है।
—जयशकर प्रसाद

जहाँ दया तहँ धर्म है, जहा लोभ तह पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहा छिमा तह आप। —कबीर

क्षमाशील

क्षमा दड से बडी है। दड देता है मानव, किन्तु क्षमा प्राप्त होती है देवता से। दड में उल्लास है पर शान्ति नही और क्षमा में शान्ति भी है और आनन्द भी।
—अज्ञात

क्षमावतामय लोक परश्चैव क्षमावताम्।
इह सम्मानमृच्छन्ति परत्र च शुभा गतिम्॥
—वेदव्यास (म० वन०)

क्षमावानो के लिए ही यह लोक है। क्षमावानो के लिए ही परलोक है। क्षमाशील पुरुष इस जगत में सम्मान और परलोक में उत्तम गति पाते है।

यदि न स्युर्मानुषेषु क्षमिण पृथिवीसमा ।
न स्यात् सधिर्मनुष्याणा क्रोधमूलो हि विग्रह ॥
—वेदव्यास (म० वन०)

यदि मनुष्यो में पृथ्वी के समान क्षमाशील पुरुष न हो तो मानवो में कभी सन्धि हो ही नही सकती, क्योकि झगडे की जड तो क्रोध ही है।

क्षुद्र

रत्नै रापूरितस्यापि मदलेशोस्ति नाम्बुधे ।
मुक्ता कतिपया प्राप्य मातगा मद-विह्वला ॥ —अज्ञात

रत्नो से भरा रहने पर भी समुद्र मदविह्वल नही होता। किन्तु एक आध मुक्ता (मोती) पालने से ही हाथी मदमत्त हो जाता है। तात्पर्य यह है कि क्षुद्र व्यक्ति थोडा पाकर ही इतराने लगते हैं।

क्षुधा

जिस तरह सूखी लकडी जल्दी से जल उठती है, उसी तरह क्षुधा से वावला मनुष्य जरा जरा सी वात पर तिनक जाता है। —अज्ञात

The exploited and suffering masses carry on the struggle, for their drill-sergeant is hunger

चूसी जानेवाली पीडित प्रजा को लडाई में पिले रहने के लिए क्षुधा ही उनकी व्यायाम शिक्षक है। —जवाहरलाल नेहरू

क्षुधा पत्थर की दीवार को भी तोड डालती है। —कहावत

Hunger and cold deliver a man up to his enemy

क्षुधा और सरदी से पीडित मनुष्य अपने को दुश्मन के हवाले कर देता है।
—कहावत

खजाना

राजा की जड है खजाना और सेना, इनमें सेना की जड है खजाना, सेना सव धर्मो की रक्षा का मूल है इसलिये सव के मूलभूत खजाना को वढाना चाहिए।
—वेदव्यास (म० शा०)

खजाने के नष्ट होने से राजा के वल का नाश होता है।
—वेदव्यास (म० शा०)

खर्च

खर्च तो गंगाजी का प्रवाह है। जल तो बहता ही है इसलिए खर्च होना भी जरूरी है। हाँ बरसाती नदी की तरह खर्च नही होना चाहिए।

—डाक्टर रामकुमार वर्मा

रुपए ने कहा मेरी चिन्ता न कर पाई की चिन्ता कर। —चेस्टरफील्ड

अपार धनशाली कुबेर भी यदि आमदनी से अधिक खर्च करे तो कंगाल हो जाता है। —चाणक्य

छोटे-छोटे खर्चों से सावधान रहो। थोड़ा-थोड़ा जल रिसते रिसते बड़े बड़े जहाज डूब जाते हैं। —अज्ञात

धन पैदा करने की अपेक्षा उसके खर्च करने का काम कही कठिन है।

खतरा

खतरे में हमारी चेतना अन्तर्मुखी हो जाती है। —प्रेमचन्द (गो-दान)

खल

दामिनि दमकि रही घन माही।
खल की प्रीति यथा थिर नाही। —तुलसी (मानस)

क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई।
जस थोरे धन खल बौराई॥ —तुलसी (मानस)

टेढ जानि सब बदइ काहू।
वक्र चन्द्रमा ग्रसइ न राहू॥

—तुलसी (मानस, बाल)

कवि कोविद गावहिं अस नीती। खल सन कलहु न भल नहिं प्रीती॥
उदासीन नित रहिय गोसाईं। खल परिहरिय स्वान की नाईं॥

—तुलसी (मानस)

खातिरदारी

खातिरदारी जैसी चीज में मिठास जरूर है, पर उसका ढकोसला करने में न तो मिठास है और न स्वाद ही। —शरत्‌चन्द्र

खादी

खादी द्वारा कला की—जीवित कला की उपासना होती है। — विनोवा

खादी को छोडने के मानी होगे भारतीय जनता को वेच देना, भारतवर्ष की आत्मा को वेच देना। — महात्मा गाधी

खादी न खरीदना करोडो 'लोगो' के मुह का 'कौर' छीन लेने के वरावर है। — विनोवा

स्वराज्य के समान ही खादी भी राष्ट्रीय जीवन के लिए श्वास के जितनी ही आवश्यक है। — महात्मा गांधी

खादी पहनने से हम अपने नादान गरीव, नगे, भूखे भाइयो की झोपडियो में उम्मीदो से भरी हुई झलक चमका सकते है। — जवाहरलाल नेहरू

खादी में गुप्तदान सिद्ध होता है। — विनोवा

खामोशी

Speech is great, but silence is greater

वाचालता महान है परन्तु खामोशी उससे भी महान है। — कारलाइल

The temple of our purest thoughts is silence.

खामोशी हमारे पवित्रतम् विचारों का मदिर है। — श्रीमती एस० जे० हेल

Speech is silver, silence is golden, speech is human, silence is divine

वाचालता चादी है, खामोशी सोना है, वाचालता मनुष्योचित है, खामोशी देवोचित। — जर्मन कहावत

खिदमत

देश तथा समाज की सच्ची खिदमत वही करता है जो वदले तथा यश की आशा न रखकर निस्वार्थ भाव से खिदमत करता है। — महात्मा गाधी

जिस मनुष्य ने आत्मसयम की साधना नही की है, वह कभी सच्ची खिदमत नही कर सकता। — अज्ञात

खुदा

सारा दरिया स्याही वन जाय और सारा दरख्त कलम वन जाय तो भी खुदा का पूरा वयान नही हो सकता। —कुरान

खुद को जानना खुदा को जानना है। —अज्ञात

जो खुदा को जानता है वह खुद अपनी तारीफ नही करता। —अली

खुदा से डरने वाले को और किसी का क्या डर। —विनोवा

खुदी

It is the admirer of himself and not the admirer of virtue, that thinks himself superior to others

जो स्वय का प्रशसक है, गुणो का प्रशसक नही वही मनुष्य अपने को औरो से उच्च समझता है। —प्लूटार्क

Conceit may puff a man up, but can never prop him up

खुदी से आदमी फूल सकता है परन्तु स्वय अपने को सहारा नही दे सकता। —रस्किन

खुशबू

फूलो की खुशबू वायु के विपरीत नही जाती, परन्तु मानवी गुणो की खुशबू चारो दिशा में फैल जाती है। —धम्मपद

खुशामद

अगर वादशाह दिन को रात्रि वतलावे तो यही कहना चाहिए कि वह चन्द्रमा और रोहणी है। —सादी

खुशामदी

खुशामदी आदमी इसलिए आपकी खुशामद करता है कि वह आपको अयोग्य समझता है, लेकिन आप उसके मुह से अपनी प्रशसा सुनकर फूले नही समाते। —टाल्सटाय

रहिमन जो रहिवो चहै कहै वाहि के दाव।
जो वासर को निसि कहै तो कचपची दिखाव॥ —रहीम

खुशी

Cheerfulness is health, its opposite melancholy, is disease
प्रसन्नता स्वास्थ्य है, इसका विपरीत उदासी, रोग है। —हेलीवर्टन

Happiness is neither within us only, nor without us, it is the union of ourselves with God.

प्रसन्नता न हमारे अन्दर ही है और न वाहर है वरन् यह हमारा ईश्वर के साथ ऐक्य है। —पास्कल

खुशी का रहस्य त्याग है। —एन्ड्रयू कारनेगी

अत्यन्त प्रसन्नचित्त मनुष्य वह है जो अपने जीवन के आदि और अन्त से सम्बन्ध स्थापित करना जानता है। —गेटे

खून

Murder will out
खून सर पर चढ कर वोलता है। —कहावत

One murder makes a villain, millions, a hero, numbers sanctify the crime

एक खून अधम वनाता है तो लाखो एक वीर! सख्या पाप को पवित्र वना देती है। —पोरटियस

खूबसूरती

Beauty is often worse than wine, intoxicating both the holder and the beholder

खूवसूरती प्राय मदिरा से भी वुरी है। यह स्वय को और देखने वाले दोनो को मदमत्त कर देती है। —जमीरमन

Beauty is a witch against whose charms faith melteth into blood

खूवसूरती ऐसी जादूगरनी है कि उसके जादू से धर्म-ईमान गल कर खून हो जाते हैं। —शेक्सपियर

खूवसूरत वस्तु में सभी मनुष्यो की दृष्टि को आकर्षित करने की इतनी प्रवल शक्ति है कि कोई भी उससे प्रसन्न हुए विना नहीं रह सकता। —क्लेंडन

खोटा

यदि आप खोटे मनुष्यो को देखते और उनकी बातो को सुनते है तो यही से खोटेपन का आरम्भ हो गया, समझिए। —कन्फ्यूशस

रहिमन खोटी आदि को, सो परिनाम लखाय।
ज्यो दीपक तम को भखै, कज्जल वमन कराय। —रहीम

ख्याति

ख्याति-प्रेम वह प्यास है जो कभी नही बुझती। वह अगस्त ऋषि की भाति सागर को पीकर भी शान्त नही होती। —प्रेमचन्द

ख्याति नदी के प्रवाह के समान है। जैसे नदी के प्रवाह में हल्की तथा फूली हुई वस्तु ऊपर तैरा करती है और जड तथा गरुई नीचे डूब जाती है, उसी प्रकार प्रशसा रूपी प्रवाह में उत्तमोत्तम गुण डूबे रहते है, केवल छोटे-छोटे गुण ऊपर दिखलाई देते है। —बेकन

धन और स्त्री का छोडना सहज है परन्तु ख्याति का लोभ छोडना बहुत कठिन है। —हनुमानप्रसाद पोद्दार

Fame like the river is narrowest at its source and broadest afar off

ख्याति नदी की भाँति अपने उद्गम स्थान पर अति सकीर्ण और बहुत दूर अति-विस्तृत होती है। —डेवीनेण्ट

अपनी ख्याति और स्मृति के लिए मै दूसरो की दया और कृपा पर निर्भर रहता हूँ। —बेकन

Men's evil manners live in brass, their virtues we write in water

मनुष्य की बुराइया दीर्घजीवी होती है, उसकी अच्छाइया अल्पायु होती है। —शेक्सपियर

लोकमान्य और विचारशील मनुष्यो के द्वारा की गयी प्रशसा सुवासित तैल के समान सर्वत्र शीघ्र फैल जाती है। —बेकन

Fame is a magnifying glass

ख्याति एक आतशी शीशा है। —कहावत

Fame is but the breath of the people, and that often unwholesome

ख्याति केवल जनता की स्वाँस है और वह प्राय अस्वास्थ्यजनक है। —रूसो

Desire of glory is the last garment that even wise men put off

ख्याति की अभिलाषा वह पोशाक है जिसे ज्ञानी मनुष्य भी अन्त मे उतारते हैं। —कहावत

ख्वाहिश (दे० 'इच्छा')

Desires are nourished by delays

ख्वाहिशो का विलम्ब द्वारा पालन पोषण होता है। —कहावत

गंगा जी

अपहृत्य तमस्तीव्र यथा भात्युदये रवि ।
तथापहृत्य पाप्मान भाति गङ्गाजलोक्षित ॥ —वेदव्यास

जैसे सूर्य उदय काल में घने अन्धकार को विदीर्ण करके प्रकाशित होते है, उसी प्रकार गगाजल में स्नान करनेवाला पुरुष अपने पापो को नष्ट करके सुशोभित होता है।

विसोमा इव शर्वर्यो विपुष्पास्तरवो यथा।
तद्वद् देशा दिशश्चैव हीना गङ्गाजलैं शिवैं ॥

—वेदव्यास (महा० अनु०)

जैसे विना चादनी की रात और विना फूलो के वृक्ष शोभा नही पाते, उसी प्रकार गगा जी के कल्याणमय जल से वचित हुए देश और दिशाए भी शोभा एव सौभाग्य से हीन है।

भवन्ति निर्विपा सर्पा तथा तार्क्ष्यस्य दर्शनात्।
गङ्गाया दर्शनात् तद्वत् सर्वपापैं प्रमुच्यते ॥

—वेदव्यास (वही)

जैसे गरुड को देखते ही सारे सर्पों के विप झड जाते है, उसी प्रकार गगाजी के दर्शनमात्र से मनुष्य सब पापो मे छुटकारा पा जाता है।

'नास्ति गङ्गासम तीर्थं' —वृह० यो० याज्ञ०

गगाजी के समान कोई तीर्थ नही है।

गग सकल मुद मगल मूला,
सव सुख करनि हरनि सवशूला।।

—तुलसी (मानस अयो०)

गगा जी में जाकर अपवित्र जल भी पवित्र हो जाता है। —तुलसी

गम खाना (दे० 'क्षमा')

चार वातें सुनकर गम खा जाना इससे कही अच्छा है कि तनाजा हो।

—प्रेमचन्द

गरीब (दे० 'दरिद्र')

उस मनुष्य से अधिक गरीव कोई नही है, जिसके पास केवल पैसा है।

— एडविनपग

गरीब होना और गरीब मालूम पडना यह कभी तरक्की न करने का एक निश्चित र्ग है। — गोल्डस्मिथ

भगवान गरीव को गरीब रखकर आजमाता है कि वह हिम्मत रखता है या ही। — विनोवा

गरीव वह है जिसका व्यय आय से अधिक है। —ब्रूएयर

He is not poor that has little, but he that desires much

वह गरीब नही जिसके पास कम धन है वरन् गरीब वह है जिसकी अभिलाषाए ढी हुई हैं। — डेनियल

गरीवो के अतिरिक्त कुछ ही ऐसे व्यक्ति है जो गरीवो के वारे में सोचते है।

—एल० ई० लन्डन

मनुष्य को अपने जीवन के वाहर की कल्पना करना मुश्किल होता है। ीलिए कहा गया है कि गरीव की सेवा करने के लिए गरीव वनना चाहिए।

— विनोवा

गरीबी

Poverty is the test of civility and the touchstone of friendship
गरीबी विनम्रता की परीक्षा और मित्रता की कसौटी है। —हैजलिट

सभी महान् धार्मिक नेताओ ने गरीबी को जानबूझ कर अपने भाग्य के समान अपनाया। मुहम्मद साहब ने कहा है कि गरीबी मेरा अभिमान है। —महात्मा गाधी

गरीबी एक अपराध है और आधुनिक सम्यता की देन, जहा भाई का नाता भी 'पोजीशन' की मर्यादाओ में बँधा है, जहा श्रद्धा, भक्ति, यहा तक कि जीवन-सगिनी पत्नी के प्रेम की भी कीमत है। यह आधुनिक सम्यता है। —अज्ञात

गरीबी स्वय अपमानजनक नही है, केवल उस गरीबी के अतिरिक्त जो आलस्य व्यसन, फिजूलखर्ची और मूर्खता के कारण हुई हो। —प्लूटार्क

If poverty is the mother of crimes, want of sense is the father of them
यदि गरीबी अपराधो की जननी है तो बुद्धिराहित्य उनका पिता है। —ब्रूएयर

Poverty of any kind places us in our proper relation to God, while riches of any kind, mind or money, tend to sever us from Him
किसी प्रकार की भी गरीबी हमारा ईश्वर मे उचित मम्बन्ध जोड देती है जबकि हर प्रकार की अमीरी, मन या धन की, हमारा उससे विच्छेद करा देती है। —फ्रैंक क्रासले

He that hath pity upon the poor lendeth unto the lord
जो दरिद्रो पर दया करता है वह अपने कार्य मे ईश्वर को ऋणी बनाता है। —बाइबिल

Poverty is not a shame, but the being ashamed of it is
गरीबी लज्जा नही है परन्तु गरीबी से लज्जित होना लज्जा की बात है। —कहावत

गरीब वे लोग है जो अपने को गरीब मानते है, गरीबी गरीब समझने में ही है। —एमर्सन

गरीबी सब कलाओ के आविष्कार का कारण है। —कहावत

Poverty makes a man acquainted with strange bed-fellows.
गरीबी अनोखे मनुष्यो से घनिष्ट सम्बन्ध करा देती है। —कहावत

गर्व

जिसने गर्व किया, उसका अवश्य पतन हुआ। —महर्षि दयानन्द

Pride in prosperity turns to misery in adversity.
वैभव में गर्व विपत्ति में दु ख का रूप ग्रहण कर लेता है। —कहावत

Pride breakfasted with plenty, dined with poverty and supped with infamy
गर्व समृद्धि के साथ जलपान करता है, गरीबी के साथ दोपहर का भोजन एव बदनामी के साथ रात्रि का भोजन करता है। —फ्रैंकलिन

गर्व हमारे शत्रुओ की सख्या को बढाता है परन्तु हमारे मित्रो से सम्बन्ध-विच्छेद कर उन्हें भगा देता है। —कहावत

Pride goes before, and shame follows after
पहले गर्व चलता है उसके बाद कलक आता है। —कहावत

कबिरा गरब न कीजिए कबहु न हँसिए कोय।
अबहू नाव समुद्र में का जाने का होय॥ —कबीर

गर्व सन्तोष का घोर शत्रु है। —कहावत

धन अरु यौवन को गरब कबहू करिए नाहि।
देखत ही मिट जात है, ज्यो बादर की छाहि॥ —अज्ञात

गलती

गलतियाँ करके, उनको मजूर करके और उन्हे सुधार करके ही मैं आगे बढ सकता हूँ। पता नही क्यो, किसी के बरजने से या किसी की चेतावनी से मैं उन्नति कर ही नही सकता। ठोकर लगे और दर्द उठे तभी मैं सीख पाता हूँ।
—महात्मा गाधी

गलती ज्ञान की शिक्षा है। जब तुम गलती करो तो उसे बहुत देर तक मत देखो। उसके कारण को ले लो और आगे की ओर देखो। भूत बदला नही जा सकता, भविष्य अब भी तुम्हारे हाथ में है। —अज्ञात

No man ever became great or good except through many and great mistakes

वहुत-सी तथा वडी गलतियां किये विना कोई मनुष्य वडा और महान् नही वनता। ग्लेडस्टन

वुद्धिमान् मनुष्य दूसरे की गलतियो से अपनी गलती सुधारते हैं।

—प्यूब्लियस साइरस

Sometimes we may learn more from a man's errors than from his virtues

हम प्राय दूसरे के गुणो की अपेक्षा उसकी गलतियो से अधिक सीख लेते है।

—लागफेलो

Any man may make a mistake but none but a fool will continue in it

गलती कोई भी मनुष्य कर सकता है परन्तु मूर्ख के अतिरिक्त कोई उसको जारी नही रखेगा। —सिसरो

Error of opinion may be tolerated where reason is left free to combat it

सम्मति की त्रुटि वहा सहनीय है जहा वुद्धि उसके विरोध के लिए स्वतत्र है।

—जेफरसन

Error, though blind herself, sometimes bringeth forth children that can see

गलती यद्यपि स्वय अन्धी है तथापि वह ऐसी सतान उत्पन्न करती है जो देख सकती है। —कहावत

हमारा गौरव कभी न गिरने में नही है वल्कि प्रत्येक वार उठने में है जव कभी हम गिरें। —कन्फ्यूशस

गलती वह शक्ति है जो मनुष्यो को ठुकराकर आपस में मिलाती है, सत्य केवल सत्य कर्मो से ही मनुष्यो में पहुचाया जा सकता है। —टालस्टाय

Error is not a fault of our knowledge but a mistake of our judgment giving assent to that which is not true

गलती, हमारे ज्ञान की नही अपितु निर्णय की त्रुटि है जो असत्य के लिए अपनी स्वीकृति दे देता है। —लॉक

गल्प

गल्प का आधार अव घटना नही, मनोविज्ञान की अनुभूति है। —प्रेमचन्द

गहना (दे० 'आभूषण')

स्त्री का गहना ऊख का रस है जो पेरने ही से निकलता है। —प्रेमचन्द

धैर्य्य और विनय भारत की देवियो का आभूषण है। —प्रेमचन्द

ग्रन्थ

ग्रन्थो में आत्मा है। सद्ग्रन्थो का कभी नाश नही होता। —लिटन

Some books are to be tasted, others to be swallowed and some few to be chewed and digested.

कुछ 'पुस्तकें' चखी जाती है, कुछ 'निगली' जाती है, और कुछ चवा चवा कर खायी पचायी जाती है। —बेकन

वहते हुए झरनो में प्रासादिक ग्रथ सचित है, पत्थरो में दर्शन छिपे हुए है। —शेक्सपियर

A good book is the precious life-blood of a master-spirit, embalmed and treasured up on purpose to a life beyond life

सद्ग्रन्थ महान् आत्मा का मूल्यवान् जीवन-रक्त है जो ध्येयस्वरूप आनेवाली पीढियो के लिए स्वरक्षित और सचित रखा गया है। —मिल्टन

Books are lighthouses erected in the great sea of time

ग्रन्थ समय के महासमुद्र में प्रकाशगृह की तरह खडे हुए है। —ई० पी० विपिल

A room without books is a body without a soul

ग्रन्थरहित कमरा आत्मारहित शरीर के सदृश है। —सिसरो

Books are the masters who instruct us without rods and ferules, without hard words and anger, without clothes and money

ग्रन्थ ऐसे शिक्षक है जो विना वेंत मारे, विना कटु शब्द और क्रोध के, विना वस्त्र और धन के हमें शिक्षा देते है। —रिचार्ड डी वरी

Without books, God is silent, justice dormant, Natural science at a stand, philosophy lame, letters dumb, and all things involved in darkness

विना ग्रन्थ के ईश्वर मौन है, न्याय निद्रित है, प्राकृतिक विज्ञान स्तब्ध है, दर्शन लँगडा है, शब्द गूंगे हैं और सभी वस्तुए पूर्ण अधकार में है। —बार्योलिन

गाँठ

रहिमन खोजो ऊख में, जहाँ रसन की खानि।
जहाँ गाँठ तहँ रस नही, यही प्रीति की हानि॥ —रहीम

रहिमन धागा प्रेम को, मत तोरो चटकाय।
टूटे से फिरि ना मिलै, मिले गाँठि परिजाय॥ —रहीम

जहाँ गाँठि तहँ रस नही, यह जानत सब कोय।
मडये तर की गाँठि में, गाँठि गाँठि रस होय॥ —रहीम

गाना

जब शरीर का रोआँ रोआँ रोता हो, दिल के हरएक तार में दुख की लहर भर गयी हो, चित को हर प्रकार की तपन और जलन की झुलस सता रही हो—गाने की एक स्वर्गीय तान में अपना समूचा दुख डुबो देना कितना सरल और सुगम है।
—अज्ञात

A song will outlive all sermons in the memory

गाना, स्मृति में सभी नीति वचनो की अपेक्षा अधिक काल तक जीवित रहेगा।
—एच० गिल्स

गाय

गोभिस्तुल्य न पश्यामि धन किञ्चिदिहाच्युत॥
कीर्तन श्रवण दान दर्शन चापि पार्थिव।
गवा प्रशस्यते वीर सर्व-पाप-हर शिवम्॥—वेदव्यास (महा)

मैं इस ससार में गौवो के समान दूसरा कोई धन नही समझता। गौवो के नाम और गुणो का कीर्तन-श्रवण, गौवो का दान तथा उनका दर्शन—इनकी बडी प्रशसा की गयी है। यह समस्त कार्य सम्पूर्ण पापो को दूर करके परम कल्याण को प्रदान करने वाले हैं।

त्व माता सर्वदेवाना त्व च यज्ञस्य कारणम्।
त्व तीर्थं सर्वतीर्थाना नमस्तेऽस्तु सदानघे॥

(स्कन्द-ब्राह्म-धर्मारण्य)

हे पाप रहिते ! तुम समस्त देवो की जननी हो। तुम यज्ञ की कारण रूपा हो, तुम समस्त तीर्थो की महातीर्थ हो, तुमको सदैव नमस्कार है।

मेरे विचार के अनुसार गौ-रक्षा का सवाल स्वराज्य के प्रश्न से छोटा नही। कई बातो मे मै इसे स्वराज्य के सवाल से भी बड़ा मानता हूँ। मेरे नजदीक गोवध और मनुष्यवध एक ही चीज है। —महात्मा गाधी (२५-१-२५)

फरमाया रसूल अल्लाह ने कि 'गाय का दूध शिफा है और घी दवा और उसका मास नितान्त मर्ज (रोग) है।' —हजरत आयशा

(हजरत मोहम्मद साहब की धर्मपत्नी)

गाय के गोश्त में बीमारी है, उसके दूध में दुआ और घी में सफा है।

—अल्लामा जलालुद्दीन सियुती (अलरहमत)

गाय को मारने वाला, फलदार दरख्त काटने वाला और शराब पीनेवाला कभी नही बख्शा जायगा। —मुल्ला मोहम्मद बाकर हुसैनी (महारुल अनवर)

गवा सेवा तु कर्तव्या गृहस्थै पुण्यलिप्सुभि ।
गवा सेवापरो यस्तु तस्य श्रीर्वर्धतेऽचिरात्॥ —अज्ञात

मेरा सारा प्रयत्न गो-वध रोकने के लिए है। जो गाय को बचाने के लिए प्राण होम देने को तैयार नही, वह हिन्दू नही। —महात्मा गाधी (२४-४-२१)

गायत्री

गायत्री छन्दसा मातेति। —नारायण उप०

गायत्री समस्त वेदो की माता है।

नास्ति गङ्गासम तीर्थं न देव केशवात्पर।
गायत्र्यास्तु पर जप्य न भूत न भविष्यति॥

—वृह० यो० याज्ञ०

गगाजी के समान कोई तीर्थ नही है, श्रीकृष्ण भगवान् से बढ़कर कोई देवता नही है और गायत्री से बढकर जपने योग्य मन्त्र न कोई हुआ न आगे होगा।

सव्याहृतिका सप्रणवा गायत्री शिरसा सह।
ये जपन्ति सदा तेपा न भय विद्यते क्वचित्॥

—शख स्मृति

जो सदा गायत्री का जाप व्याहृतियो और ओकार सहित करते है उन्हे कही भी कोई भय नही सताता।

गायत्र्यास्तु पर नास्ति शोधन पापकर्मणाम्।
महाव्याहृतिसयुक्ता प्रणवेन च सजपेत्॥ —सवर्तस्मृति

गायत्री से वढकर पापकर्मों का शोधक दूसरा कुछ भी नही है। ओकार सहित तीन महाव्याहृतियो से युक्त गायत्री मन्त्र का जप करना चाहिए।

गायत्री वेद-जननी गायत्री पापनाशिनी।
गायत्र्यास्तु परन्नास्ति दिविचेह च पावनम्॥ —वशिष्ठ

गायत्री वेदो की जननी है। गायत्री पापो को नाश करनेवाली है। गायत्री से वडा और कोई पवित्र मत्र स्वर्ग तथा पृथ्वी पर नही है।

गायत्री मन्त्र द्वारा सारे विश्व को उत्पन्न करनेवाले परमात्मा का जो उत्तम तेज है उसका ध्यान करने से वुद्धि की मलिनता दूर हो जाती है और धर्माचरण मे श्रद्धा और योग्यता उत्पन्न होती है। —स्वामी दयानन्द सरस्वती

गायन्त त्रायते यस्माद् गायत्री तेन कथ्यते।

गायन (तल्लीनता से जप) करनेवाले की त्राता (रक्षक) होने से वह गायत्री कही जाती है।

गाली

गाली देनेवाला तिरस्कृत नही करता वरन् गाली के प्रति हृदय में उठी हुई भावना तिरस्कार करती है, इसलिए जव कोई मनुष्य तुमको उत्तेजित करता है तो यह तुम्हारे अन्दर की तुम्हारी ही भावना है जो तुम्हें उत्तेजित करती हैं।

—इपिक्टस

It is better a man should be abused than forgotten
में गाली खा लेना अच्छा समझता हू वजाय इसके कि कोई मुझे भुला दे।

—डा० जॉनसन

गीत

सुख दुख के भावावेशमयी अवस्था-विशेष का गिने चुने शब्दो में स्वरसाधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है। —महादेवी वर्मा

Our sweetest songs are those that tell us of saddest thought

हमारे मधुरतम गीत वही होते है, जिनमें हमारी गहन सवेदना अभिव्यजित होती है। —शेली

भावना से प्रेम, प्रेम से आनन्द और आनन्दातिरेक से गीतो की सृष्टि होती है।
—रस्किन (विजय पथ)

गीता

गीता विवेकरूपी वृक्षो का एक अपूर्व बगीचा है। यह सब सुखो की नीव है। सिद्धान्त-रत्नो का भण्डार है। नवरसरूपी अमृत से भरा हुआ समुद्र है। खुला हुआ परमधाम है। —सत ज्ञानेश्वर

गीता हमारे धर्मग्रन्थो में एक अत्यन्त तेजस्वी और निर्मल हीरा है।
—लोकमान्य तिलक

गीता विश्वधर्म की एक पुस्तक है। वह हमारे लिए सद्‌गुरु रूप है, मातारूप है। —महात्मा गाधी

गीता वह तैलजन्य दीपक है जो अनन्त काल तक हमारे ज्ञान मन्दिर में प्रकाश करता रहेगा। —महर्षि द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर

गीता को धर्म का सर्वोत्तम ग्रन्थ मानने का यही कारण है कि उसमें ज्ञान, कर्म और भक्ति—तीनो योगो की न्याययुक्त व्यास्या है, अन्य किसी भी ग्रन्थ से इसका सामजस्य नही है। —बकिमचन्द्र

गीता जबानी जमा खर्च का शास्त्र नही, किन्तु आचरण शास्त्र है। —विनोबा

गुण

पद हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते। —कालिदास (रघु०)

गुण सब स्थानो पर अपना आदर करा लेता है।

गुणा सर्वत्र पूज्यते न महत्योपि सपद ।
पूर्णेन्दु किं तथा वद्यो निष्कलको यथा कृश ॥

—चाणक्य

गुण की पूजा सर्वत्र होती है, वडी सम्पत्ति की नही, जिस प्रकार पूर्ण चन्द्रमा वैसा वदनीय नही है जैसा निर्दोष द्वितीया का क्षीण चन्द्रमा।

बौना छोटा ही रहेगा चाहे वह पर्वत पर खडा हो, देव देव ही रहेगा चाहे वह कुएँ में ही क्यो न खडा हो। —सेनेका

यत्रास्ति लक्ष्मीर्विनयो न तत्र ह्यभ्यागतो यत्र न तत्र लक्ष्मी ।
उभौ च तौ यत्र न तत्र विद्या नैकत्र सर्वो गुणसनिपात ॥ —अज्ञात

जहा लक्ष्मी रहती है वहा नम्रता नही है, और जहा अतिथि समागम है वहा लक्ष्मी नही रहती है। और जहा दोनो है वहा विद्या का ही अभाव रहता है, अत यह निश्चित है—एक जगह सव गुण समूह नही रहते।

Talent is that which is in a man's power, genius is that in whose power a man is

गुण मनुष्य के वश में है, प्रतिभा के वश में मनुष्य स्वय होता है। —लावेल

दातापन, मीठीवोली, धीरज और उचित का ज्ञान ये अभ्यास से नही मिलते, ये चार स्वाभाविक गुण है। —चाणक्य

एको हि दोषो गुणसनिपाते निमज्जतीन्दो किरणेष्विवाङ्क।

—कालिदास (कुमार सभव)

जहा वहुत से गुण हो वहा यदि एक-आध अवगुण भी आ जाय तो उसका वैसे ही पता नही चल पाता जैसे चन्द्रमा की किरणो में उसका कलक।

Genius does what it must and talent what it can

प्रतिभावान मनुष्य वह कार्य करते हैं जिसे किये विना वे रह नही सकते, गुणी मनुष्य वह कार्य करते है जो वह कर सकते है। —ओवेन मेरीडेत

गुन के ग्राहक सहस नर, विनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय॥

—गिरिधर कविराय

Contemporaries appreciate the man rather than the merit, but posterity will regard the merit rather than the man

समकालीन व्यक्ति गुण की अपेक्षा मनुष्य की प्रशसा करते हैं, आने वाली पीढिया मनुष्य की अपेक्षा उसके गुणो का सम्मान करेंगी। —कोल्टन

गुण को किसी की सिफारिश की आवश्यकता नही होती।

शूराश्च कृतविद्याश्च रूपवत्यश्च योषित ।
यत्र यत्र गमिष्यन्ति तत्र तत्र कृतादरा ॥ —अज्ञात

वीर, विद्वान् और रूपवती स्त्रियाँ जहाँ जहाँ जाती हैं वहाँ वहाँ इनका आदर ही होता है। —अज्ञात

गुणा सर्वत्र पूज्यन्ते पितृवशो निरर्थक ।
वासुदेव नमस्यन्ति वसुदेव न ते जना ॥ —चाणक्य

गुणो का ही सर्वत्र सम्मान होता है, गुणी के वश का नही। लोग वासुदेव (कृष्ण) की ही वन्दना करते हैं, उनके पिता वसुदेव की नही।

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे गुण रौशन हो तो दूसरे के गुणो को मान्यता दो।

विवेकिनमनुप्राप्ता गुणा यान्ति मनोज्ञताम्।
सुतरा रत्नमाभाति चामीकरनियोजितम् ॥ —चाणक्य

विवेकी को पाकर गुण सुन्दरता को प्राप्त होते हैं, सोने में जडा हुआ रत्न अत्यन्त शोभित होता है।

जहाँ रहै गुनवत नर ताकी शोभा होत।
जहाँ धरै दीपक तहाँ निह्चै करै उदोत। —अज्ञात

गुणैरुत्तमता यान्ति नोच्चैरासनसस्थितै ।
प्रसाद शिखरस्थोपि काक किं गरुडायते ॥ —चाणक्य

गुणो से ही मनुष्य महान् होता है, ऊचे आसन पर बैठने से नही। महल के ऊचे शिखर पर बैठने से भी कौवा गरुड नही हो सकता।

गुन गरुवो लघुता गहै, तिहि सनमानत धीर।
मद तऊ प्यारो लगै, सीतल सुरभि समीर॥ —अज्ञात

परस्तुतगुणो यस्तु निर्गुणोऽपि गुणी भवेत्।
इन्द्रोऽपि लघुता याति स्वय प्रख्यापितैर्गुणै ॥ —चाणक्य

जिस गुण का दूसरे लोग वर्णन करते है उससे निर्गुण भी गुणवान् होता है, इन्द्र भी अपने गुणो की प्रशसा करने से लघुता को प्राप्त होता है।

गुणा कुर्वन्ति दूतत्व दूरेऽपि वसता सताम्।
केतकी गन्धमाघ्राय स्वयमायान्ति षट्पदा ।

— अज्ञात

सज्जन लोग चाहे दूर भी रहें पर उनके गुण उनकी ख्याति के लिए स्वय दूत का कार्य करते हैं। केवडा पुष्प की गन्ध सूंघकर भ्रमर स्वय उसके पास चले जाते है।

गुण-गान

कौशेय कृमिज सुवर्णमुपलाद् दूर्वापि गोरोमत ।
पकात्तामरस शशाक उदधेरिन्दीवर गोमयात्॥
काष्ठादग्निरहे फणादपि मणिर्गोपित्ततो रोचना।
प्राकाश्य स्वगुणोदयेन गुणिनो गच्छन्ति किं जन्मना॥

— पंचतन्त्र

रेशम कीडे से, सोना पत्थर से, नील कमल गोवर से, लाल कमल कीचड से, चन्द्रमा समुद्र से, गोरोचन गौ के पित्त से, अग्नि लकडी से, मणि सर्प के फन से और दूव गौ के रोम से उत्पन्न होती है। इन सभी वस्तुओ का उत्पत्ति स्थान वैसा महिमामय नही जैसा इनका गुण। इससे स्पष्ट है कि कोई भी वस्तु गुण के उदय से ही प्रकाशमान होती है। उसके उत्पत्ति स्थान का कोई महत्व नहीं होता।

गुण-ग्राहक

गुणी ही गुण को परखते है जैसे हीरे की कदर जौहरी ही करते हैं। — अज्ञात

To love one that is great is almost to be great one's self

महान की उपासना करना स्वय महान होने के बराबर है। — श्रीमती नेकर

Every man I meet is my superior in some way. In that I learn of him

प्रत्येक मनुष्य जिससे मैं मिलता हूँ किसी न किसी रीति में मुझसे श्रेष्ठ होता है। इसलिए मैं उनसे कुछ शिक्षा लेता हूँ। — एमर्सन

गुण-ग्राहकता

The way to develop the best that is in a man is by appreciation and encouragement

मनुष्य के भीतर जो कुछ सर्वोत्तम है उसका विकास गुण-ग्राहकता एव प्रोत्साहन द्वारा ही किया जा सकता है। —चार्ल्स श्वेब

सफलता का रहस्य निष्कपट गुण-ग्राहकता है। —अज्ञात

The difference between appreciation and flattery? One is sincere and the other insincere One comes from the heart out, the other from the teeth out One is unselfish, the other selfish One is universally admired the other is universally condemed

गुण-ग्राहकता और चापलूसी में अन्तर? गुण-ग्राहकता सच्ची होती है और चापलूसी झूठी। गुणग्राहकता हृदय से निकलती है और चापलूसी दातो से। एक नि स्वार्थ होती है और दूसरी स्वार्थमय। एक की ससार में सर्वत्र प्रशसा होती है और दूसरे की सर्वत्र निन्दा। —डेल कारनेगी

गुणहीन

कुलहीने नृप भृत्या कुलीनमति चोन्नतम्।
सत्यज्यान्यत्र गच्छति शुष्क वृक्षमिवाण्डजा ॥ —अज्ञात

उन्नत कुल में उत्पन्न फलहीन (अपने दया दाक्षिण्यादि गुण से) राजा को छोड कर नौकर अन्यत्र चले जाते है, किस तरह? जैसे सूखे हुए पेड को छोडकर पक्षी दूसरे पेड पर चले जाते है।

गुणी

गुणी मनुष्य अपनी प्रशसा स्वय नही करते वल्कि दूसरो से अपनी प्रशसा सुनकर नम्र हो जाते है। —अज्ञात

वडे वडाई ना करैं, वडे न वोलै वोल।
रहिमन हीरा कव कहै, लाखट का मेरो मोल॥ —रहीम

प्रवला एव गुणवतामाक्रम्य धुर पुर प्रकर्षन्ति।
तृणकाष्ठमेव जलधै उपरिप्लवते न रत्नानि॥ —अज्ञात

गुणवानो को दुष्ट लोग दवाकर नीचे कर देते है और अपने आगे हो जाते है। जैसे तृण और लकडियाँ समुद्र के ऊपर तैरती है किन्तु रत्न नही, वह नीचे वैठ जाते है।

गुणवन्त क्लिश्यन्ते प्रायेण भवन्ति निर्गुणा सुखिन ।
वन्धनमायान्ति शुका भवन्ति यथेष्ट मचारिणा काका ॥ —अज्ञात

प्राय देखा जाता है कि गुणी क्लेश भोगते रहते है और निर्गुण सुखी रहते है। तोते पिजडे में वन्द किये जाते है, कौए नही। वे स्वेच्छापूर्वक निर्भय घूमते है।

गुनाह

अगर गुनाह से किसी की जान वचती हो तो ऐसा करना सवाव है। —प्रेमचन्द

गुनाह छिपा नही रहता। वह मनुष्य के मुख पर लिखा रहता है। उस शास्त्र को हम पूरे तौरपर नही जानते, लेकिन वात साफ है। —महात्मा गाधी

गुप्त-भेद

He who trusts secrets to a servant, makes him his master

जो मनुष्य अपना गुप्त-भेद नौकरो पर प्रकाशित करता है वह उनको अपना मालिक वना लेता है। —ड्राइडेन

हम कैसे विश्वास करें कि दूसरे हमारे भेद को गुप्त रखेंगे जव कि हम स्वय ही उन्हें गुप्त नही रख सकते। —ला रोशोको

दीवार के भी कान होते है, इसका ध्यान रखना चाहिए। —सादी

Trust no secrets to a friend, which if reported, would bring infamy

किसी मित्र को अपना ऐसा भेद न वताओ जिसके जाहिर हो जाने पर वदनामी हो। —येल्स

वह मनुष्य कम विश्वास पात्र है जो स्वय अपना गुप्त सलाहकार नही है। —फोर्ड

अर्थनाश मनस्ताप गृहेदुश्चरितानि च।
नीचवाक्य चापमान मतिमान्नप्रकाशयेत् ॥ —चाणक्य

धन का नाश, मन का ताप, घर का चरित्र, नीच का वचन और अपमान इनको वुद्धिमान् प्रकाशित न करें।

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाटि न लैहैं कोय॥ —रहीम

गुरु

बिन गुरु होइ न ज्ञान। —तुलसी

गुरु साहब दोनो खडे, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरुदेव की, जिन साहब दियो दिखाय॥ —कबीर

कबिरा ते नर अध हैं गुरु को कहते और।
हरि रूठैं गुरु ठौर है गुरु रूठैं नहिं ठौर॥ —कबीर

गुरोरवज्ञया सर्वं नश्यते च समुद्भवम्।

गुरु की अवहेलना करने से सारा अभ्युदय नष्ट हो जाता है।

यह तन विष की बेलरी गुरु अमृत की खान।
सीस दिये जो गुरु मिले तो भी सस्ता जान॥ —कबीर

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वर, गुररेवपरब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नम'।
—अज्ञात

जो मनुष्य परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, वह परमात्मा का ही स्वरूप बन जाता है और इस तरह सिद्ध है कि गुरु के आसन पर मनुष्य नही, किन्तु परमात्मा स्वय आसीन रहते हैं। —निराला

जो स्वय प्रकाश फैलानेवाला है यदि वही अँधेरे में ठोकर खा खाकर गिरे तो वह दूसरो के लिए उजाला क्या करेगा। —हरिऔध

गुरु को अगर हमने देह रूप से माना तो हमने गुरु से ज्ञान नही, अज्ञान पाया।
—विनोबा

गुरु कुछ नया नही देता। जो बीज रूप से रहता है, उसी को विकसित करने में सहायक होता है। मन्द सुगन्ध को बाहर निकालता है। —साने गुरुजी

एकमात्र ईश्वर ही विश्व का पथ-प्रदर्शक और गुरु है।
—रामकृष्ण परमहस

पतिरेव गुरुस्त्रीणा सर्वस्याभ्यागतो गुरु।
गुरुरग्निर्द्विजातीना वर्णाना ब्राह्मणो गुरु॥ —चाणक्य

स्त्रियो का गुरु उनका पति है, आया हुआ अतिथि सब का गुरु है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इनका गुरु अग्नि है और चारो वर्णो का गुरु ब्राह्मण है।

गुलाम (दे० 'दास')

जो मनुष्य अपने मन का गुलाम बना रहता है वह कभी नेता और प्रभावशाली पुरुष नही हो सकता। —स्वेट मार्डेन

देह से ही नही जो दिल से भी गुलाम हो गये है वे कभी आजादी हासिल नही कर सकते। —महात्मा गाधी

जिन्हें हम हीन या नीच बनाये रखते है वे भी क्रमश हमें हेय और दीन बना देते है। —रवीन्द्र

मायानदी के प्रवाह में बहे जाने वाले काम-शास्त्र के अनुयायी प्रवाह-पतित वासनाओ के गुलाम होते है। —विनोबा

जब गुलाम अपनी बेडी को आभूषण समझकर मुस्कराये, तब उसके मालिक की पूरी जीत हुई मानी जाती है। —महात्मा गाधी

गुलाम मनोवृत्ति वीर पूजा या नि शक होकर आज्ञा मानने की वृत्ति से अलग चीज है। —गाधी जी

वे गुलाम है जिनको यह साहस नही है कि वे न्याय का साथ दे चाहे वे दो तीन की ही सख्या में क्यो न हो। —लोवेल

गुलामी

Slavery is a system of the most complete injustice

गुलामी पूर्ण अन्याय की एक व्यवस्था है।

गुलामी दुनिया का सबसे बडा घृणित पाप है। —सुभाषचद्र बोस

गुलामी अत्याचार और डकैती की प्रणाली है। —सुकरात

बन्दी-दशा तो सिर्फ जेल की चहार दीवारी के अन्दर ही नही होती, मनुष्य के हक्क को हडपना ही तो बन्धन है। —रवीन्द्र

एक घटे के लिए भी गुलामी को रहने देना अन्याय है। —विलियम पिट

स्वर्ग की गुलामी की अपेक्षा तो नरक का अधिराज्य श्रेयस्कर है। —विनोबा

गुस्सा

गुस्से को शर्बत के घूंट की तरह पी जाओ क्योकि जहा तक उसके अत का सम्बन्ध है, इससे अच्छी और कोई आनन्ददायक वस्तु नही है। —अज्ञात

गुस्सा इजन है, अविवेक और अज्ञान उसके पहिये है। —अज्ञात

गुस्सा एक प्रकार का क्षणिक पागलपन है। —महात्मा गाधी

To be angry is to revenge the fault of others upon ourselves
गुस्सा होना दूसरे की गलती का अपने से बदला लेना है। —पोप

As heat conserved is transmuted into energy, so anger controlled can be transmuted into a power which can move the world

जैसे ताप स्वरचित रहकर शक्ति में परिवर्तित होता है उसी प्रकार क्रोध को अधीन रखकर ऐसी शक्ति में परिवर्तित किया जा सकता है जो विश्व को हिला दे।
—महात्मा गाधी

सज्जन मनुष्य का गुस्सा शीघ्रता से समाप्त हो जाता है। —कहावत

क्रोध के लक्षण शराब और अफीम दोनो से मिलते है। क्रोध के लक्षण क्रमश सम्मोह, स्मृति-भ्रश, और बुद्धिनाश माने गये है। —महात्मा गाधी

गूंगा

प्रकृति के समान गूंगे की भी अपनी महिमा होती है। —रवीन्द्र

गोपनीय

To keep your secret is wisdom, but to expect others to keep it is folly

अपने भेद को गोपनीय रखना बुद्धिमानी है, परन्तु दूसरो से उसे गोपनीय रखने की आशा करना मूर्खता है। —ओ० डब्लू० होम्स

दिल की ऐसी कोई गुप्त बात नही है जिसे हमारे काम प्रकट न कर देते हो।
—मोलियर

गृहस्थ

गृहस्थ का घर भी एक तपोभूमि है, सहनशीलता और सयम खोकर कोई इसमें सुखी नही रह सकता। —जनार्दनप्रसाद झा "द्विज"

जिस गृह से अतिथि निराश लौटता है उस गृहस्थ के समस्त पुण्य वह ले जाता है और अपने पाप वही छोड जाता है। —अज्ञात

जो पुरुष धर्मानुकूल धन प्राप्त करके यज्ञ करता है, अतिथियो को खिलाता है वही सच्चा गृहस्थ है।

—वेदव्यास (म० आदि०)

गृहस्थ-जीवन की सफलता यही है कि उसके द्वारा अतिथि-सेवा हो।

—अज्ञात

जो गृहस्थ यथाशक्ति अपने आश्रम-धर्म का पालन करता है, वह मरने के पश्चात् अक्षय लोक प्राप्त करता है। — (वेदव्यास म० शा०)

गृहस्थाश्रम

गृहस्त्वेव हि धर्माणा सर्वेषा मूलमुच्यते —वेदव्यास (म०)

गृहस्थाश्रम ही सब धर्मों का मूल आधार है।

घर का प्रेम भारतीय नारी का जीवन है। —रवीन्द्र

जिस भाति सब प्राणी माता के आश्रय से जीते है उसी भाति अन्य सब आश्रम गृहस्थाश्रम के आधार पर स्थित है। —अज्ञात

वह गृहस्थाश्रम धन्य है, जिसमें आनन्दमय घर, विद्वान् पुत्र, सुन्दरी स्त्री, सच्चे मित्र, सात्विक धन, स्वपत्नी में प्रीति, सेवापरायण सेवक, अतिथि-सत्कार, नित्य देवपूजा, मधुर भोजन, सत्सगति और उपासनाएं सर्वदा प्राप्त होते रहते है।

—अज्ञात

गृहस्थी

सुखी परिवार तात्कालिक स्वर्ग है। —अंग्रेजी कहावत

Woman, when you move about in your household service your limbs sing like a hill stream among its pebbles

स्त्री ! जिस समय तू अपने गृह कामो में लीन रहती है, उस समय तेरे अगो से ऐसी रागिनी निकलती है, जैसी पहाडी झरनो से निकलती है जब वे बिल्लौरो में से होकर क्रीडा करते है। —रवीन्द्र

Woman is the salvation or the destruction of the family

स्त्री परिवार की मुक्ति है या विनाश है। —एमियेल

ग्लानि

मर्द लज्जित करता है तो हमें क्रोध आता है, स्त्रिया लज्जित करती है तो ग्लानि उत्पन्न होती है। —प्रेमचन्द

घटना

कभी कभी जीवन में ऐसी घटनाएँ हो जाती है जो क्षण मात्र में मनुष्य का रूप पलट देती है। —प्रेमचन्द (वरदान)

प्रत्यक्ष घटना विचार से कही अधिक प्रभावशालिनी होती है। रणस्थल का विचार कितना कवित्वमय है। युद्धावेश का काव्य कितनी गर्मी उत्पन्न करने वाला है। परन्तु कुचले हुए शव और कटे हुए अग-प्रत्यग देखकर कौन मनुष्य है जिसे रोमाच न हो आवे। —प्रेमचन्द

जैसे तिनका हवा का रुख बताता है वैसे ही मामूली घटनाएँ भी मनुष्य के हृदय की वृत्ति को बताती हैं। —महात्मा गाधी

घड़ी

समय परिवर्तन का धन है, परतु घडी उसका उपहास करती है। उसे केवल परिवर्त्तन के रूप में दिखाती है, धन के रूप में नही। —रवीन्द्र

घमंड (दे० 'गर्व')

आदमी का सबसे बडा दुश्मन गरूर है। —प्रेमचन्द

घमडी का सिर नीचा। —प्रेमचन्द

घमडी आदमी प्राय शक्की हुआ करता है। —प्रेमचन्द (गो-दान)

घर

घर वही है जहा प्रेम और सत्कार मिले। —प्रेमचन्द

घर का भेदी लका ढावे। —कहावत

जीवन का केन्द्र घर है और घर है स्त्री का किला। घर के भीतर स्त्री का अधिकार सर्वोपरि है। स्त्री ही वास्तव मे घर की सच्ची स्वामिनी है। —अज्ञात

बिन घरनी घर भूत का डेरा। —कहावत

घर का जोगी जोगडा आन गाव का सिद्ध। —कहावत

आकाश में उडनेवाले पक्षी को भी अपने बसेरे की याद आती है।
—प्रेमचन्द (मानसरोवर)

He is the happiest, be he king or peasant, who finds peace in his home

वह मनुष्य, चाहे वह राजा हो या किसान, सब से भाग्यवान है जिसे अपने घर मे शान्ति मिलती है। —गेटे

सत्स्त्रिया रक्ष्यते गृहम्। —चाणक्य

भली स्त्री से घर की रक्षा होती है।

वास्तव में घर को घर नही कहते, गृहिणी को ही घर कहते है। जिस घर में गृहिणी न हो वह वन के ही समान है। —वेदव्यास (म० शा०)

यन्मनीषि पदाम्भोज रज कणपवित्रितम्।
तदेव भवन नो चेद् भकारस्तत्र लुप्यते॥ —अज्ञात

वही भवन है जो मनीषियो के चरण-कमल की धूलि से पवित्र हो चुका है, और यदि ऐसा नहीं है तो उसमें भकार लुप्त हो जाता है अर्थात् वह (घर) वन के समान है।

घरौंदा

मनुष्य दुश्मन का सुदृढ गढ तोड सकता है मगर अबोध बालक का मिट्टी का घरौंदा तोडने की शक्ति किसमें है। —प्रेमचन्द

घृणा

इस ससार में घृणा घृणा से कभी कम नही होती, घृणा प्रेम से ही कम होती है, यही सर्वदा उसका स्वभाव रहा है। —धम्मपद

पाप से घृणा करो, पापी से नही। —महात्मा गाधी

घायल

घायल की गति घायल जाने और न जाने कोय। —मीरा

घाव

घाव पर कपडा भी छुरी बन कर लगता है। दुखे हुए अग को हवा भी दुखा देती है। —सुदर्शन

घूस

रुपए वाले दोषी न्याय को भी रास्ता बताते है और ऐसा भी देखा गया है कि घूस कानून को भी मोल ले लेती है। —शेक्सपियर

चंद्रमा

चद्रमा अपना प्रकाश सपूर्ण आकाश में फैलाता है, परतु अपना कलक अपने ही पास रखता है। —रवीन्द्र

चक्रवर्ती

वसुन्धरा के समान चक्रवर्ती का हृदय भी उदार और सहनशील होना चाहिए।
—जयशकर प्रसाद

चक्रवर्ती राज्य का नाश उस समय तक नही होता, जब तक कि आपस में फूट न हो। —स्वामी दयानन्द सरस्वती

जिस देश को चक्रवर्ती राजा प्राप्त हो वह देश देवलोक ही हो जाता है।
—हरिभाऊ उपाध्याय

स्वर्गलोक तो पुण्य के प्रभाव से भी मिल सकता है परन्तु चक्रवर्ती-पद उससे भी श्रेष्ठ है। —हरिभाऊ उपाध्याय

जो पुरुष पवित्र होकर जगत के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देता है, वह चक्रवर्ती से भी अधिक सत्ता भोगता है। —महात्मा गाधी

चतुर

देशाटन पण्डितमित्रता च वाराङ्गना राजसभाप्रवेश ।
अनेकशास्त्रार्थ-विलोकन च चातुर्यमूलानि भवन्ति पञ्च ।। —अज्ञात

देशो का भ्रमण, पण्डितो के साथ मित्रता, वेश्याप्रसग, राजसभा में बैठना, और अनेक शास्त्रो का अनुशीलन करना ये पाच चतुर होने के प्रधान कारण हैं।

चरखा

चरखा भूखे की रोटी, अन्धे की लकडी और विधवा का सहारा है।
—महात्मा गाधी

मनुष्य की नग्नता को ढाकना यह चरखे का दावा है। —विनोवा

चरखे की पुकार दूसरी सब पुकारो से मधुर है। क्योकि वह प्रेम की पुकार है। —महात्मा गाधी

चरखे के द्वारा माता बच्चे को देश-प्रेम सिखा सकती है। —विनोवा

चरखा तो लँगडे की लाठी है—सहारा है। भूखे को दाना देने का साधन है। निर्धन स्त्रियो के सतीत्व की रक्षा करनेवाला किला है। —महात्मा गाधी

चरखा आनन्द का साधन है। —विनोवा

चरित्र

चरित्र विना सफलता के भी रह सकता है। —एमर्सन

उत्तम चरित्र ही निर्धन का धन है। —अज्ञात

Character is the governing element of life, and is above genius

चरित्र जीवन मे शासन करने वाला तत्त्व है और वह प्रतिभा से उच्च है।
—फ्रेडरिक साण्डर्स

चरित्र की शुद्धि ही सारे ज्ञान का ध्येय होना चाहिए। —महात्मा गाधी

कठिनाइयो को जीतने, वासनाओ का दमन करने और दुःखो को सहन करने से चरित्र उच्च, सुदृढ और निर्मल होता है। —अज्ञात

व्यक्तिगत चरित्र समाज की महान आशा है। —चैनिंग

चरित्र सम्पत्ति है। यह सम्पत्ति में सबसे उत्तम है। —स्माइल्स

Talents are best nurtured in solitude, character is best formed in the stormy billows of the world

गुण एकान्त में अच्छी तरह विकसित होता है, चरित्र का निर्माण ससार के भीषण कोलाहल में होता है। —गेटे

चरित्र-शुद्धि ठोस शिक्षा की बुनियाद है। —गांधी

Character is like a tree, and reputation is like its shadow The shadow is what we think of it, the tree is the real thing

चरित्र एक वृक्ष के समान है और ख्याति उसकी छाया है। छाया वही है जो हम उसके वारे में सोचते हैं, परन्तु वृक्ष वास्तविक वस्तु है। —लिंकन

दुर्वल चरित्रवाला उस सरकडे के समान है जो हवा के हर झोंके से झुक जाता है। —माघ

Character is a diamond that scratches every other stone

चरित्र एक ऐसा हीरा है जो हर किसी पत्थर को घिस सकता है। —बर्टल

चरित्र परिवर्तित नही होता, विचार परिवर्तित होते हैं, किन्तु चरित्र विकसित किया जाता है। —डिजरायली

Sow an act, and you reap a habit, sow a habit and you reap a character, sow a character and you reap a destiny

कर्म को बोओ और आदत (की फसल) को काटो, आदत को बोओ और चरित्र को काटो, चरित्र को बोओ और भाग्य को काटो। —बोर्डमैन

सुगन्धि दर्शनीय च लोकरजनतत्परम्।
दृष्ट्वा कुसुममारामे सर्वैरप्यभिनन्दितम्॥
प्रसाद सुमुख शील चारित्र्याभ्या सुवासित।
उद्युक्तो लोकसेवाया भवेयमिति भावये॥ —अज्ञात

उपवन में सुगन्धित, सुन्दर लोको के रजन में तत्पर और साथ ही सबके द्वारा अभिनदित पुष्प को देखकर मेरे मन में आता है कि मुझे भी प्रसन्न मुखशील और चरित्र की सुगन्ध से वासित तथा लोक-सेवा में तत्पर होना चाहिए।

चोरी से कोई धनवान् नही वन सकता, दान से कोई कगाल नही हो सकता। थोडा सा झूठ भी कभी छिप नही सकता। यदि तुम सच वोलोगे तो सारी प्रकृति और सब जीव तुम्हारी सहायता करेंगे। चरित्र ही मनुष्य की पूंजी है। —एमरसन

चरित्रवल

समाज के प्रचलित विधि-विधानो के उल्लघन का दुख सिर्फ चरित्रवल और विवेक-वुद्धि के वल पर ही सहन किया जा सकता है।

—शरत्चन्द्र (शेष प्रश्न)

Character must be capable of standing firm upon its feet in the world of daily work, temptation and trial, and able to bear the wear and tear of actual life

चरित्रवल पर ही मनुष्य दैनिक कार्य, प्रलोभन और परीक्षा के ससार में दृढता-पूर्वक स्थिर रहते है, और वास्तविक जीवन की क्रमिक क्षीणता को सहन करने योग्य होते है। — स्माइल्स

चले चलो

वैठनेवाले का भाग्य भी वैठ जाता है और खडे होनेवाले का भाग्य भी खडा हो जाता है। इसी प्रकार सोने वाले का भाग्य भी सो जाता है और पुरुषार्थी का भाग्य भी गतिशील हो जाता है। चले चलो, चले चलो। — वेदवाणी

चातुर्य

मनुष्य के अतरग का शृगार है चातुर्य, वस्त्र तो केवल वाहरी सजावट है।

— गुरु रामदास

चापलूस

Flatterers are the worst kind of enemies

चापलूस अत्यन्त निकृष्ट प्रकार के शत्रु है। — टैसीटस

मीठी वातें तो वह करता है जिसका कुछ स्वार्थ होता है, जो डरता है, जो प्रशसा अथवा मान का भूखा रहता है। — हरिऔध

When flatterers meet, the devil goes out to dinner

जव चापलूस मिलते है तो दानव भोजन करने चला जाता है। — डीफो

व्यक्तिगत चरित्र समाज की महान आशा है। —चैनिंग

चरित्र सम्पत्ति है। यह सम्पत्ति में सबसे उत्तम है। —स्माइल्स

Talents are best nurtured in solitude, character is best formed in the stormy billows of the world

गुण एकान्त मे अच्छी तरह विकसित होता है, चरित्र का निर्माण ससार के भीषण कोलाहल में होता है। —गेटे

चरित्र-शुद्धि ठोस शिक्षा की बुनियाद है। —गांधी

Character is like a tree, and reputation is like its shadow The shadow is what we think of it, the tree is the real thing

चरित्र एक वृक्ष के समान है और ख्याति उसकी छाया है। छाया वही है जो हम उसके बारे में सोचते है, परन्तु वृक्ष वास्तविक वस्तु है। —लिंकन

दुर्बल चरित्रवाला उस सरकडे के समान है जो हवा के हर झोंके से झुक जाता है। —माघ

Character is a diamond that scratches every other stone

चरित्र एक ऐसा हीरा है जो हर किसी पत्थर को घिस सकता है। —बर्टल

चरित्र परिवर्तित नही होता, विचार परिवर्तित होते है, किन्तु चरित्र विकसित किया जाता है। —डिजरायली

Sow an act, and you reap a habit, sow a habit and you reap a character, sow a character and you reap a destiny

कर्म को बोओ और आदत (की फसल) को काटो, आदत को बोओ और चरित्र को काटो, चरित्र को बोओ और भाग्य को काटो। —बोर्डमैन

सुगन्धि दर्शनीय च लोकरजनतत्परम्।
दृष्ट्वा कुसुममारामे सर्वैरप्यभिनन्दितम्॥
प्रसाद सुमुख शील चारित्र्याम्या सुवासित ।
उद्युक्तो लोकसेवाया भवेयमिति भावये॥ —अज्ञात

उपवन में सुगन्धित, सुन्दर लोको के रजन में तत्पर और साथ ही सबके द्वारा अभिनदित पुष्प को देखकर मेरे मन में आता है कि मुझे भी प्रसन्न मुखशील और चरित्र की सुगन्ध से वासित तथा लोक-सेवा में तत्पर होना चाहिए।

चोरी से कोई धनवान् नही वन सकता, दान से कोई कगाल नही हो सकता। थोडा सा झूठ भी कभी छिप नही सकता। यदि तुम सच वोलोगे तो सारी प्रकृति और सव जीव तुम्हारी सहायता करेंगे। चरित्र ही मनुष्य की पूंजी है। —एमरसन

चरित्रबल

समाज के प्रचलित विधि-विधानो के उल्लघन का दुख सिर्फ चरित्रवल और विवेक-वुद्धि के वल पर ही सहन किया जा सकता है।

—शरत्चन्द्र (शेप प्रश्न)

Character must be capable of standing firm upon its feet in the world of daily work, temptation and trial, and able to bear the wear and tear of actual life

चरित्रवल पर ही मनुष्य दैनिक कार्य, प्रलोभन और परीक्षा के ससार में दृढता-पूर्वक स्थिर रहते हैं, और वास्तविक जीवन की क्रमिक क्षीणता को सहन करने योग्य होते है। — स्माइल्स

चले चलो

वैठनेवाले का भाग्य भी वैठ जाता है और खडे होनेवाले का भाग्य भी खडा हो जाता है। इसी प्रकार सोने वाले का भाग्य भी सो जाता है और पुरुपार्थी का भाग्य भी गतिशील हो जाता है। चले चलो, चले चलो। — वेदवाणी

चातुर्य

मनुष्य के अतरग का शृगार है चातुर्य, वस्त्र तो केवल वाहरी सजावट है।

— गुरु रामदास

चापलूस

Flatterers are the worst kind of enemies

चापलूस अत्यन्त निकृष्ट प्रकार के शत्रु है। — टेसीटस

मीठी वातें तो वह करता है जिसका कुछ स्वार्थ होता है, जो डरता है, जो प्रशसा अथवा मान का भूखा रहता है। — हरिऔध

When flatterers meet, the devil goes out to dinner

जव चापलूस मिलते है तो दानव भोजन करने चला जाता है। — डीफो

आत्म-प्रेम चापलूसो में सबसे बड़ा चापलूस है। —ला० रोशोको

ऐसे आदमी पर कभी विश्वास न करो जो प्रशसा के पुल बाध दे। —अज्ञात

चापलूसी

चापलूसी का जहरीला प्याला आपको तब तक नुकसान नही पहुचा सकता जब तक कि आपके कान उसे अमृत समझकर पी न जाय। —प्रेमचन्द

Imitation is the sincerest form of flattery

अनुकरण करना सबसे बडी निष्कपट चापलूसी है। —कोल्टन

Don't be afraid of the enemies who attack you Be afraid of the friends who flatter you

जो शत्रु तुम पर आक्रमण करते हैं उनसे तुम मत डरो, उन मित्रो से डरो जो तुम्हारी चापलूसी करते हैं। —जनरल ओब्रगोन

Flattery is telling the other man precisely what he thinks about himself

चापलूसी दूसरे मनुष्य से ठीक वही कहाने का नाम है जो वह अपने आप को समझता है। —अज्ञात

Flattery sits in the parlour, when plain dealing is kicked out of door

जब निष्कपट व्यवहार को दरवाजे से बाहर ढकेल दिया जाता है तो चापलूसी बैठक में आ बैठती है। —कहावत

Flattery is counterfeit, and like counterfeit money, it will eventually get you into trouble if you try to pass it

चापलूसी एक नकली सिक्का है और नकली सिक्के की भाति वह अन्तत आप को कष्ट में डाल देगी यदि आप इसे चलाने का प्रयत्न करेंगे। —डेलकार नेगी

The most skilful flattery is to let a person talk on and be a listener.

सबसे बडी चापलूसी यह है कि दूसरे व्यक्ति को बोलने दे और आप स्वय सुनता रहे। —एडीसन

मुझे सिखाइए कि मैं न तो किसी की सस्ती प्रशसा करूँ और न किसी से अपनी सस्ती प्रशसा कराऊँ। —कहावत

चापलूसी दिखावटी मित्रता के समान है। —सुकरात

चिंतन

हम अपने बारे में जो दृढ चिन्तन करते हैं, जिन विचारो में सलग्न रहते है क्रमश से ही बनते जाते हैं। —अज्ञात

चिंता

चिन्ता शहद की मक्खी के समान है। इसे जितना हटाओ उतना ही और चिमटती है। —अज्ञात

चिन्ता से रूप, बल और ज्ञान का नाश हो जाता है। —अज्ञात

मेरा विश्वास है कि चिंता जीवन का शत्रु है। —शेक्सपियर

वासनाओ का त्याग करो, चिन्ताएँ स्वय पीछा छोड देंगी। —अज्ञात

Businessmen who do not know how to fight worry die young
व्यवसायी पुरुष जिनको यह ज्ञान नही कि चिन्ता से कैसे दूर रहना चाहिए, शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होते है। —डा० केरेल

त्याज्या भविष्यतश्चिन्ता नैव सा कार्यसाधिका।
क्रियते चेत् तदा कार्या, चारित्रस्य समुन्नते ॥

भविष्य की चिन्ता छोड देनी चाहिए, उससे कोई कार्य सिद्ध नही होता। यदि चिन्ता की ही जाय तो चरित्र की उन्नति की करनी चाहिए। —अज्ञात

प्राणियो के लिए चिन्ता ही ज्वर है। —स्वामी शंकराचार्य

यदि तुम्हारा स्वभाव है तो चिन्ता करके कष्टो का आह्वान कर लो परन्तु उसे अपने पड़ोसी को उधार मत दो। —रुडार्ड किप्लिग

चिन्ता चगुल ही पर्‌यो, तो न चिता को सक।
यह सोखै बूंदन जियत, मुये जात वा अक। —श्रीपति

चिंता-ग्रस्त

आलसी आदमी ही चिन्ताग्रस्त रहा करता है। वह आलस्य चाहे शारीरिक कष्ट से बचने के लिए हो या मानसिक। —अज्ञात

जो लोग अधिक सोचने-विचारने के आदी होते है वे चिन्तित भी अधिक रहते है। —अज्ञात

चिकित्सा

समुद्र इव गम्भीर नैव शक्य चिकित्सितम्।
वक्तु निर्विशेषेण श्लोकानामयुतैरपि — —सुश्रुत-सहिता

चिकित्सा-विज्ञान असीमित, अगाध जलधि सदृश है, तथा उसका विवरण हजारो श्लोको मे भी नही किया जा सकता।

चिकित्सक (दे० "डाक्टर")

The greatest mistake physicians make is that they attempt to cure the body without attempting to cure the mind, yet the mind and the body are one and should not be treated separatelv

चिकित्सको की सबसे बडी त्रुटि यह है कि वे बिना मन को आरोग्य किये शरीर को अच्छा करने का प्रयत्न करते हैं, जबकि मन और शरीर एक ही है इसलिए उनकी पृथक् पृथक् चिकित्सा नही होनी चाहिए। —प्लेटो

A good surgeon must have an eagle's eyes, a lions' heart and a lady's hand

एक निपुण शल्य-चिकित्सक (सर्जन) के पास गिद्ध की आँख, शेर का हृदय और नारी जैसा (कोमल) हाथ होना चाहिए। —कहावत

सयम और परिश्रम मनुष्य के दो सर्वोत्तम चिकित्सक हैं। परिश्रम से भूख तेज होती है और सयम अतिभोग से रोकता है। —रूसो

पापी अत करण का रोग ससार के सभी देशो के चिकित्सको की चिकित्सा के परे है। —ग्लैडस्टन

चितवन

अमिय हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत, जेहि चितवत एक बार॥ —विहारी

अनियारे दीरघ नयनि, किती न तरुनि जहान।
वह चितवन औरै कछू जेहि बस होत सुजान॥ —विहारी

मैदान में तोपो की गर्जना जिन वीरो के दल को दहला नही सकती और तलवारो की चमक आखो में चकाचौंध नही ला सकती, वे ही वीर स्त्री की चितवन के तीर खाकर अपने हथियार डाल देते है और शरणागत होने के लिए सफेद झडा उठा लेते है।
— अज्ञात

चित्र

A picture is a poem without words
चित्र एक शब्दरहित कविता है। — होरेस

A room hung with pictures is a room hung with thoughts
जिस कमरे में बहुत-सी तसवीरें लटक रही है, वह ऐसा कमरा है जिसमें बहुत से विचार लटक रहे हैं। — सर जोशिया रेनाल्ड्स

चित्र कविता के आभूषण नही, कल्पना के हृदय से चलनेवाली रक्तधारा के बिन्दु है।
— अज्ञात

Painting is silent poetry and poetry is a speaking picture
चित्रकारी मूक-कविता है और कविता बोलती हुई तस्वीर। — सिमनडीज

चुगलखोर

नेकी से विमुख हो जाना और बदी करना नि सन्देह बुरा है, मगर सामने हँसकर बोलना और पीठ-पीछे चुगलखोरी करना उससे भी बुरा है।
— संत तिरुवल्लुवर

गुणिना गुणेषु सत्स्वपि पिशुनजनो दोषमात्रमादत्ते।
पुष्पे फले विरागी क्रमेलक कण्टकौघमिव॥ — अज्ञात

जैसे ऊँट को किसी वृक्ष के फूल फल से अनुराग नही होता, उसे कांटो का ढेर ही अभीष्ट होता है, वैसे ही गुणियो में अनेकानेक गुणो के वर्तमान रहने पर भी चुगलखोर उनमें दोष ही ढूंढता है और ग्रहण करता है।

चुगलखोर कुत्ते के समान है, क्योकि दोनो ही अपनी जीभ से सत्पात्र (शुद्ध पात्र या सज्जन मनुष्य) को दूषित करते है, कलह करने में पक्के होते है और दोनो ही सदा अशुद्ध रहते है। — अज्ञात

चुनना

God offers to every mind its choice between truth and repose

ईश्वर प्रत्येक मस्तिष्क को सच और झूठ में एक को चुनने का अवसर देता है। —एमर्सन

चुनाव

चुनाव युद्ध नही, तीर्थ है, पर्व है—यह पानीपत नही, कुरुक्षेत्र नही, यह प्रयाग है,—त्रिवेणी है, सगम है, सिहस्थ है, कुम्भ है। —हरिभाऊ उपाध्याय

चुनाव जनता को राजनीतिक शिक्षा देने का विश्वविद्यालय है।

—जवाहरलाल नेहरू

चुम्बन

God kisses the finite in his love, and man the infinite

ईश्वर अपने प्रेम में सीमित को चूमता है और मनुष्य अनत को। —रवीन्द्र

A kiss from my mother made me a painter

मेरी माँ के चुम्बन ने मुझे चित्रकार बना दिया। —बेंजमिन वेस्ट

चूल्हा

चूल्हा गृहस्थ आश्रम का प्रतीक है, आत्मीयता की दीक्षा है, कुटुम्ब-परम्परा का सरक्षण है। —काका कालेलकर

चेहरा

A good face is the best letter of recommendation

सुन्दर चेहरा सबसे अच्छा प्रशसापत्र है। —रानी एलिजाबेथ

हँसमुख चेहरा रोगी के लिए लगभग उतना ही अच्छा है जितनी कि स्वस्थ ऋतु। —फ्रैंकलिन

All men's faces are true, whatsoever their hands are

सभी मनुष्यो के चेहरे वास्तविक होते है, उनके हाथ चाहे जैसे भी हो।

—शेक्सपियर

चेहरा मस्तिष्क और हृदय—दोनो का प्रतिबिम्ब है। —कहावत

चोट

जिसने तुम्हें चोट पहुँचायी है वह तुमसे प्रवल था या निर्वल ? यदि तुमसे निर्वल है तो उसे क्षमा कर दो, यदि प्रवल है तो अपने को कष्ट न दो। —सेनेका

चोर

चोर अपराधी वनकर छूट जाने से निर्दोष वनकर दड भोगना वेहतर समझता है। —प्रेमचन्द

चोरहिं चाँदनी रात न भावा। —तुलसी (मानस)

चोर केवल दड से ही नही वचना चाहता, वह अपमान से भी वचना चाहता है। वह दड से उतना नही डरता जितना अपमान से। —प्रेमचन्द

लुब्धाना याचक शत्रुर्मूर्खाणा वोधको रिपु ।
जारस्त्रीणा पति शत्रुश्चौराणा चन्द्रमा रिपु ॥ —अज्ञात

लोभियो का वैरी भिक्षुक है, मूर्खों का शत्रु समझाने वाला है, व्यभिचारिणी स्त्रियो का शत्रु पति और चोरो का शत्रु चन्द्रमा है।

चोरी

गोपिकाओ के इससे वढकर और क्या सुकर्म होगे कि कृष्ण ने उनका मक्खन चुराया। धन्य है वह जिसका सव कुछ चुराया जाय, मन और चित्त तक वाकी न रहे। —स्वामी रामतीर्थ

चोरी का माल खाने से छात्र शूरवीर नही वनते, दीन वनते हैं।

—महात्मा गाधी

चोरी का धन कच्चे पारे को खाने के समान है। जैसे कच्चा पारा शरीर में से फट निकलता है वैसे ही चोरी का धन है। —महात्मा गाधी

छल

The first and worst of all frauds is to cheat ourselves
सभी छलो में अपने साथ किया हुआ छल प्रथम और निकृष्ट होता है। —वेलो

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा, वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्म स नो यत्र न सत्यमस्ति, सत्यम् न तत्यच्छलमभ्युपैति ।।

जिस सभा में वृद्ध न हो वह सभा नही, जो वृद्ध धर्म न कहें वह वृद्ध नही, जिस धर्म में सत्य न हो वह धर्म नही और जिस सत्य में छल हो वह सत्य नही।

—व्यास

स्पष्ट कहनेवाला छली नही होता। — चाणक्य

छाया

Shadow, with her veil drawn, follows light in secret meekness, with her silent steps of love

छाया घूंघट डालकर प्रेम की मौन गति से, विनीत भाव से प्रकाश का अनुसरण करती है। — रवीन्द्र

What you are you do not see, what you see is your shadow

तुम अपने आप को नही देख सकते, जो तुम देख रहे हो वह तुम्हारी छाया है।

— रवीन्द्र

छायावाद

कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुन्दरी के वाह्य वर्णन से भिन्न जव वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तव उसे "छायावाद" के नाम से अभिहित किया गया। — जयशंकर प्रसाद

छायावाद का कवि धर्म के अध्यात्म से अधिक दर्शन के ब्रह्म का ऋणी है जो मूर्त्त और अमूर्त्त विश्व को मिला कर पूर्णता पाता है। — महादेवी वर्मा

पौराणिक रूपको या छायाओ से परे जो सत्य है वही हम रहस्यवादी या छायावादियो का लक्ष्य है। इन छायाओ के आधार से सत्य को प्राप्त करने वाले लोग छायावादी कहे जा सकते है, पर छाया उनका वाद नही,—उनका वाद सत्य है, अत वह सत्यवादी है। — अज्ञात

छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भगिमा पर अधिक निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय-प्रतीक-विधान तथा उपचार-वक्रता के साथ स्वानुभूति की निवृत्ति 'छायावाद' की विशेषताएँ है।

— जयशंकर प्रसाद

छिद्रान्वेषण

दुर्वल-जन तथा अज्ञानी लोग ही हमेशा सवसे अधिक छिद्रान्वेषण किया करते है। —स्वामी रामतीर्थ

दूसरो में दोष न निकालना, दूसरो को इतना उन दोषो से नही वचाता जितना अपने को वचाता है। —स्वामी रामतीर्थ

जंजीर

जजीरें जजीरें ही है, चाहे वे लोहे की हो या सोने की, वे समान रूप से तुम्हें गुलाम वनाती है। —स्वामी रामतीर्थ

जगत

सृष्टि की रचना करके ईश्वर स्वय अपने को ही प्रकट करता है। —रवीन्द्र

जगत के विना ईश्वर ईश्वर नही है, सृष्टि नही तो ईश्वर नही। —हेगेल

अज्ञस्य दु खौघमय ज्ञस्यानन्दमय जगत्।
अन्ध भुवनयन्धस्य प्रकाशतु सुचक्षुपाम्॥ —वराहोपनिषद

जैसे अन्धे के लिए जगत अन्धकारमय है और अच्छी आँखो वाले के लिए प्रकाशमय है वैसे ही अज्ञानी के लिए जगत दु खो का समूहमय है और ज्ञानी के लिए आनन्दमय है।

जगत का प्रतीयमान रूप मायाजनित है इसलिए असत्य है। जगत का वास्तविक रूप ब्रह्म है, इसलिए सत्य है। —सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

'ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या'।
ब्रह्म सत्य है और जगत मिथ्या है। —उपनिषद

जड़ता

जडता निर्दयता की जननी है। —रस्किन

जनता

जनता कल्प-वृक्ष है, जो भावना आप लेकर जायेंगे, वही आप उनसे पायेंगे। —विनोवा

जनता वलवान मनुष्य से प्रेम करती है। वह स्त्री की तरह होती है।

— मुसोलनी

सर्वसाधारण जनता की उपेक्षा ही एक वडा राष्ट्रीय पाप है।

— स्वामी विवेकानन्द

Individuals are occasionally guided by reason, crowds never
व्यक्ति प्राय बुद्धि से मार्ग-दर्शन करते हैं, जनता कभी नही

— डीन डब्लू० आर० इन्ज

'जवान खल्क नक्कारा खुदा' — कहावत

जनता की आवाज ईश्वर की आवाज है।

राजमहलो की चालबाजियाँ, सभा-भवनो की राजनीति, समझौते और लेन-देन का जमाना उसी दिन खत्म हो जाता है जब जनता राजनीति में प्रवेश करती है।

— जवाहरलाल नेहरू

जनता और कुछ नही कर सकती, हमदर्दी तो करती है। दु ख-कथा सुनकर, आँसू तो बहाती है। — प्रेमचन्द

जनता जो कुछ सीखती है वह घटना-क्रम की पाठशाला में सीखती है। और दु ख-दर्द ही उसका शिक्षक है। — जवाहरलाल नेहरू

जनता तो धरती माता की तरह है जिस पर कुदाली से घाव होता है लेकिन गेंद का स्पर्श यो ही ऊपर के ऊपर उड जाता है। — विनोबा

बडे-बडे आन्दोलनो से, जो व्यक्तियो और श्रेणियो के असली रूप को प्रकट कर देते हैं, जनता राजनीति का पाठ पढती है। — जवाहरलाल नेहरू

जननी

कोमलता में जिसका हृदय गुलाब की कलियो से भी अधिक कोमल दयामय है पवित्रता में जो यज्ञ की धूम के समान है, कर्त्तव्य में जो वज्र की तरह कठोर है— वही विश्व जननी है। — अज्ञात

जननी का हृदय बच्चे की पाठशाला है। — एच० डब्लू० बीचर

A mother is a mother still,
The holiest thing alive

जननी जननी ही है, जीवित वस्तुओ में जो सबसे अधिक पवित्र है। — कोलरिज

The future destiny of the child is always the work of the mother

बालक का भाग्य सदैव उसकी माँ द्वारा निर्मित होता है। —नेपोलियन

जय

विहातुमुद्यता सदा परार्थमात्मनो हितम्।
अद्याभिमान वर्जिता जयन्ति ते जना भुवि॥ —अज्ञात

दूसरो के निमित्त अपने हित को छोडने के लिए सदा उद्यत होते हुए भी जो स्वय अभिमान से रहित होते है ससार में उन्ही की जय होती है।

जय उसी की होती है जो अपने को सकट में डालकर कार्य मम्पन्न करते हैं। जय कायरो की कभी नही होती। —प० जवाहरलाल नेहरू

विराग मूर्त्तयोऽपि ये, स्वदेश-राग-शोभिता ।
अरण्यवास नि स्पृहा, जयन्ति ते जना भुवि॥ —अज्ञात

स्वय वैराग्य की मूर्ति होते हुए भी जो स्वदेश के प्रेम से शोभित है और अपने कर्तव्य से भागकर वनवास के लिए उत्सुक नही है, ससार में उन्ही की जय होती है।

The smile of God is victory

जय ईश्वर की मुस्कान है। —व्हिटटियर

अक्रोधेन जयेत्क्रुद्धमसाधु साधुना जयेत्।
जयेत्कदर्यं दानेन जयेत्सत्येन चानृतम्॥

—वेदव्यास (महाभारत)

क्रोध न करके क्रोध को, भलाई करके बुराई को, दान करके कृपण को और सत्य बोलकर असत्य को जीतना चाहिए।

जल

अमृत वै आप —तै० आ०

जल स्वय अमृत है।

जल ही औषधि है, जल रोगो का शत्रु है, यही सब रोगो का नाश करता है। इसलिए यह तुम्हारा भी रोग दूर करे। —ऋग्वेद

The water saw its master's face and flushed
जल ने अपने नियन्ता की ओर दृष्टिपात किया और वह पानी-पानी हो गया।
—बायरन

जल अत्यन्त आरोग्यप्रद एव बलदायक है। —ऋग्वेद

अप्स्वन्तरममृतमप्सु भेपजम्। —अथर्ववेद

जल में अमृत है, जल में औषधियाँ है।

अजीर्णे भेषज वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्।
भोजने चामृत वारि भोजनाते विषप्रदम्॥ —चाणक्य

अजीर्ण होने पर जल औषधि है, पच जाने पर जल बल देता है। भोजन के समय जल अमृत के समान है, और भोजन के अन्त में विष का फल देता है।

जवानी (दे० 'यौवन')

It is a truth but too well known, that rashness attends youth, as prudence does old age
यह सत्य है और अति प्रसिद्ध है कि जैसे बुढापे में बुद्धिमत्ता होती है वैसे ही जवानी में अविवेकिता होती है। —सिसरो

In the lexicon of youth, which fate reserves for a bright manhood, there is no such word as—fail
जवानी के कोष में जिसको भाग्य उज्ज्वल पराक्रम के लिए सुरक्षित रखता है, असफलता का शब्द नही है। —लिटन

राष्ट्र और व्यक्ति के लिए जवानी आशा, साहस एव शक्ति का काल है।
—डब्ल्यू० आर० विलियम्स

जवानी जोश है, बल है, साहस है, दया है, आत्मविश्वास है, गौरव है और वह सब कुछ जो जीवन को पवित्र, उज्ज्वल और पूर्ण बना देता है। —प्रेमचन्द

जवानी हिम्मत और साहस का घर है। —अज्ञात

नदी की बाढें, वृक्षो के फूल और चन्द्रमा की कलाएँ नष्ट होकर फिर से आती है, मगर देहधारियो की जवानी नही। —अज्ञात

रहती है कब, बहारे जवानी तमाम उम्र।
मानिन्द बूये गुल, इधर आई उधर गई॥ —अज्ञात

सदा न फूलै तोरई, सदा न सावन होय।
सदा न यौवन थिर रहे, सदा न जीवे कोय ।। —अज्ञात

यौवन जीवित चित्त, छाया लक्ष्मीश्च स्वामिता।
चञ्चलानि षडेतानि, ज्ञात्वा धर्मरतो भवेत्।। —अज्ञात

यौवन, जीवन, मन, शरीर की छाया, धन और स्वामिता—ये छहो चञ्चल है, यानी ये स्थिर होकर नही रहते।

मा कुरु धन-जन-यौवनगर्वं, हरति निमेषात् काल सर्वम्।
मायामयमिदमखिल हित्वा, ब्रह्मपद प्रविशाशु विदित्वा ।।

—अज्ञात

इस धन-यौवन का गर्व न कर, काल इसको पलक मारते हर लेता है। इस मायामय ससार को त्यागकर, शीघ्र ही ब्रह्मपद में प्रविष्ट हो।

जागरण

जागरण का अर्थ है कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण होना और कर्मक्षेत्र क्या है? जीवन-सग्राम। —जयशकर प्रसाद

जल्दी सोनेवाला और प्रात काल जल्द उठने वाला मनुष्य आरोग्यवान, भाग्यवान और ज्ञानवान होता है। —फ्रैंकलिन

जाति

जन्म से नही वल्कि कर्म से ही मनुष्य शूद्र या ब्राह्मण होता है। —भगवान बुद्ध

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्ट गुणकर्मविभागश ।

मैंने गुण और कर्म के अनुसार ही जाति सस्था की स्थापना की है।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

कभी किसी महात्मा से यह न पूछो कि तुम्हारी जाति क्या है, क्योंकि भगवान के दरबार में जाति का बन्धन नहीं रह जाता। —कबीर

जो जाति जब तक मरना जानती रहेगी, उसको तभी तक इस पृथ्वी पर जीने का अधिकार रहेगा। —जयशकर प्रसाद

चारो वर्ण परमात्मा के ही शरीर से उत्पन्न हुए हैं। मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय, जघा से वैश्य और पैरो से शूद्र की उत्पत्ति हुई है।

जाति से कोई पतित नही है। पतित वह है जो चोरी, व्यभिचार, ब्रह्महत्या, भ्रूण-हत्या, सुरापान इत्यादि दुष्ट कृत्यो को करता है, और उनको गुप्त रखने के लिए बार-बार असत्य भाषण करता है। —वेद

वर्तमान काल में जाति-प्रथा जिस रूप में प्रचलित है उसका एकान्त रूप से विनाश करना ही होगा। यदि भारतीय जनता को नवीन जीवन प्राप्त करना है तो उसे वर्ण-भेद के वर्तमान स्वरूप को मिटा देना होगा, क्योकि वह उन्नति के सभी विभागो में भयकर रूप से बाधा समुपस्थित कर रहा है। —डाक्टर भगवानदास

हमारी जाति-प्रथा मनुष्यो का सर्वश्रेष्ठ श्रेणी विभाग है। क्योकि हर एक जाति में शास्त्र नारायण का अश बतलाया है। जाति की निन्दा भी कही नही की गयी। जाति निन्दनीय नही। —निराला

जाति-सेवा

जाति-सेवा ऊसर की खेती हैं, वहाँ बडे से बडा उपहार जो मिल सकता है, वह है गौरव और यश, पर वह भी स्थायी नही, इतना अस्थिर कि एक क्षण में जीवन भर की कमाई पर पानी फिर जाय। —प्रेमचन्द

जाति-सेवा वही कर सकते है जिनके हृदय में भ्रातृ-भाव की भावना भरी है। —अज्ञात

जाति-सेवा में शरीर को घुलाना पडता है, रक्त को जलाना पडता है। यही जाति-सेवा का उपहार है। —प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)

जितेन्द्रिय

श्रद्धावाल्लभते ज्ञान तत्पर सयतेन्द्रिय।
ज्ञानम् लब्ध्वा परा शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥

श्रद्धावान, ज्ञान की प्राप्ति में तत्पर, जितेन्द्रिय पुरुष ज्ञान को पाता है और ज्ञान को पाकर थोडे ही काल में परम शान्ति पाता है। —भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

जिन्दगी

जिन्दगी एक कसौटी है ईश्वर उस पर हमें कस लेता है। नेक काम करके हम कसौटी पर खरे उतरते हैं तो भगवान की सच्ची भक्ति करते हैं। —विनोबा

जिन्दगी हमारे साथ किया गया एक मजाक है। —रूसो

न समझने की ये वातें है, न समझाने की।
जिन्दगी उचटी हुई नीद है दीवाने की॥ —अज्ञात

जिन्दगी इन्सा की है मानिन्दे मुर्गे खुशनवा।
शाख पर वैठा कोई दम चहचहाया, उड गया॥
—डाक्टर मुहम्मद 'इकवाल'

जिन्दगी और मौत

जिन्दगी क्या है, अनासिर में जहूरे तरतीव,
मौत क्या है, इन्ही अजजा का परेशा होना॥
फना का होश आना जिन्दगी का दर्द सरजाना,
अजल क्या है, खमारे वादए हस्ती उतर जाना॥
—प० बृजनारायण चकवस्त

जिन्दगी का मौत से उसी प्रकार का सवध है जिस प्रकार जन्म से। गति के लिए पैर उठाना उतना ही आवश्यक है जितना पैर रखना। — रवीन्द्र

मरण सोने के समान है और जन्म सोकर उठने के समान। — सत तिरुवल्लुवर

जिज्ञासा

जिज्ञासा विना ज्ञान नही होता। दुख विना सुख नही होता। धर्म मकट हृदय मन्थन सव जिज्ञासुओ को एक वार होता ही है। — महात्मा गाधी

Curiosity is one of the permanent and certain characteristic of a vigorous intellect

जिज्ञासा तीव्र वुद्धि का एक स्थायी और निश्चित गुण है। — सेमुअल जान्सन

जिज्ञासा जनानी वहादुरी का ही एक रूप है। — विक्टर ह्यूगो

प्रथम और सरलतम भावना जो हम मनुष्य के मस्तिष्क में पाते है वह जिज्ञासा की है। — वर्क

जिज्ञासु

जिन ढूंढा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ।
मैं वपुरा वूडन डरा रहा किनारे वैठ। — कवीर

The over curious are not over wise

वहुत जिज्ञासु वहुत विद्वान नही होते। — मैसिजर

जिम्मेदारी

जिन्दगी की जिम्मेदारी कोई डरावनी चीज नही है। वह आनन्द से ओत-प्रोत है। — विनोवा

मनुष्य को जिम्मेदारी के पद पर नियुक्त कर दो वह परिस्थिति के अनुसार उन्नति करेगा। — अज्ञात

जिह्वा

खट्टा मीठा चरपरा जिह्वा सव रस लेय।
चोरो कुतिया मिल गई पहरा किसका देय॥ — कबीर

A wound from a tongue is worse than a wound from a sword, for the latter affects only the body, the former the spirit

जिह्वा का घाव तलवार के घाव से अधिक बुरा होता है क्योंकि तलवार शरीर पर आघात करती है और जिह्वा आत्मा पर। — पाइथागोरस

No sword bites so fiercely as an evil tongue

कोई तलवार इतना भयानक घाव नही करती जितना कि एक वुरी जिह्वा। — पी० सिडनी

ईश्वर ने हमें दो कान दिये है और दो आँखें, पर जिह्वा केवल एक ही—इस लिये कि हम वहुत अधिक सुने और वहुत अधिक देखें, लेकिन वोले कम—वहुत कम। — सुकरात

रहिमन जिह्वा वावरी, कहि गई सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल॥ — रहीम

जिह्वा केवल तीन इच लम्बी होती है। परन्तु वह छै फुट ऊँचे आदमी को कत्ल कर सकती है। — जापानी कहावत

हे जिह्वे ! मै तुझी से एक भिक्षा माँगता हू, तू ही मुझे दे। वह यह कि जव गदापाणि यमराज इस शरीर का अत करने आवें तो बडे ही प्रेम से गद्‌गद स्वर में ‘हे गोविन्द, हे माधव, हे दामोदर, इन मजुल नामो का उच्चारण करती रहना।

— बिल्व मगल

जिह्वा कैंची-सी कतरती है। — कहावत

जीना

जीविते यस्य जीवन्ति विप्रा मित्राणि बाधवा ।
सफल जीवित तस्य, आत्मार्थे को न जीवति ॥ —हितोपदेश

जिसके जीवित रहने से विद्वान्, मित्र और वन्धु बाधव जीते है, उसी का जीना सार्थक है अपने लिए कौन नही जीता।

मुहूर्तमपि जीवेच्च नर शुक्लेन कर्मणा।
न कल्पमपि कष्टेन लोकद्वयविरोधिना ॥ —चाणक्य

उत्तम कर्म से मनुष्य दो पल भी जीवित रहे यह श्रेष्ठ है पर दोनो लोक का विरोधी दुष्ट कर्म करनेवाले का कल्प भर जीना भी अच्छा नही।

जीव

ईश्वर अश जीव अविनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी॥
सो माया बस भयउ गोसाईं। बँधेउ कीर मरकट की नाईं॥
—तुलसी (मानस, उत्तर)

माया वस्य जीव अभिमानी। —तुलसी (मानस, उत्तर)

स्वय कर्म करोत्यात्मा स्वय तत्फलमश्नुते।
स्वय भ्रमति ससारे स्वय तस्माद्विमुच्यते॥ —चाणक्य

जीव आप ही कर्म करता है, और उसका फल भी आप ही भोगता है, आप ही ससार में भ्रमता है और आप ही उससे मुक्त भी होता है।

ईश अधीन जीव गति जानी। —तुलसी (मानस)

जैसे बर्फ का टुकडा पानी में डाल देने मे वह स्वय गलकर पानी के रूप में एक ही हो जाता है, ऐसे ही अभेद उपासना करनेवाला जीवब्रह्म साक्षात्कार होने पर ब्रह्म स्वरूप ही हो जाता है। —स्वामी भजनानन्द

माया ईस न आपु कहँ जान कहिय सो जीव। —तुलसी

जीव ब्रह्म ही है, ब्रह्म से पृथक् नहीं है। —उपनिषद्

यह लोहा रूपी जीव माया रूपी चुम्बक के असर से मारा मारा घूमता है। पर जब भगवान् रूपी पारस के असर से सोना बन जाता है तब माया रूपी चुम्बक उसका कुछ नही बिगाड सकता। —अज्ञात

जीवन ('दें० जिन्दगी')

That I exist is a perpetual surprise which is life

मेरा अस्तित्व एक निरतर आश्चर्य है, और यही जीवन है। —रवीन्द्र

जीवन इस शरीर रूपी पिजडे में वन्द पक्षी के पखो की फडफडाहट मात्र है।

—स्वामी रामतीर्थ

No man enjoys the true taste of life, but he who is ready and willing to quit it

कोई भी व्यक्ति जव तक कि वह प्रसन्नता से मरने को तैयार नही रहता—जीवन का सच्चा आनन्द नही ले सकता। —सेनेका

मनुष्य का जीवन इसलिए है कि वह अत्याचार के खिलाफ लडे।

—सुभाषचन्द्र वोस

A life spent worthily should be measured by a nobler line, by deeds not years

योग्यता से व्यतीत हुए जीवन को हमें वर्ष के नही अपितु कर्म के अच्छे पैमाने से नापना चाहिए। —शेरीडन

हमारा सदा यही लक्ष्य रहता है कि हमारा जीवन सुख-आनन्द से परिपूर्ण हो।

—स्वेटमार्डेन

अच्छा जीवन, ज्ञान और भावनाओ तथा बुद्धि और सुख दोनो का सम्मिश्रण होता है। —सुकरात

अमृत जीवन की अगर इच्छा है तो आत्मा की व्यापकता का अनुभव करो, सव की सेवा करो, सवसे एक रूप हो जाओ। —विनोबा

जव मनुष्य का युद्ध अपने आप के साथ आरम्भ होता है तब उसका कुछ मूल्य होता है। —ब्राउनिंग

जीवन एक खिले हुए फूल के समान है, जो कुछ काल में आप ही आप कुम्हला कर गिर पडेगा। —अज्ञात

Life like a dome of many coloured glass, stains the white radiance of eternity

जीवन अनन्त काल के श्वेत प्रकाश को रग-विरगे शीशे के गुम्वज के सदृश रग देता है। —शेली

इस जीवन में सुख-दुःख कोई भी सत्य नही, सत्य है सिर्फ उनके चचल क्षण, सत्य है सिर्फ उनके चले जाने का छन्द-मात्र। शरत्चन्द्र (शेष प्रश्न)

Life is a quarry, out of which we are to mould and chisel and complete a character

जीवन एक खान है जिसमें से हम पूर्ण चरित्र का निर्माण करते हैं। —गेटे

मनुष्य-जीवन का उद्देश्य आत्मदर्शन है और उसकी सिद्धि का मुख्य एव एकमात्र उपाय पारमार्थिक भाव से जीवमात्र की सेवा करना है। —महात्मा गाधी

मनुष्य का सच्चा जीवन तव प्रारम्भ होता है जव वह यह अनुभव करता है कि शारीरिक जीवन अस्थिर है और वह सतोप नही दे सकता। —टालस्टाय

अपने जीवन को समय के किनारे पर पत्ती पर पडी हुई ओस की भाँति हलके हलके नाचने दो। —रवीन्द्र

जीवन के युद्ध में चोटें और आघात वरदाश्त करने से ही उसमें विजय प्राप्त होती है, उसमें आनन्द आता है। —अज्ञात

जीवन का उद्देश्य ईश्वर की भाँति होना चाहिए—ईश्वर का अनुकरण करती हुई आत्मा ईश्वर-तुल्य हो जाएगी। —सुकरात

जीवन जागरण है, सुषुप्ति नही, उत्थान है, पतन नही। पृथ्वी के तमसाच्छन्न, अन्वकारमय पथ से गुजर कर दिव्य-ज्योति से साक्षात्कार करना है। जहाँ द्वन्द्व और सघर्ष कुछ भी नहीं है। —अज्ञात

जड चेतन के विना विकास-शून्य है और चेतन जड के विना आकार-शून्य। इन दोनो की क्रिया और प्रतिक्रिया ही जीवन है। —महादेवी वर्मा

क्या तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है? तो समय को व्यर्थ मत गवाँओ, क्योंकि जीवन उसी से वना है। —फ्रैंकलिन

पथिक वनकर जीवन की धूपछाँह से घवराना क्या? जीवन की महत्ता वेदनाओं, पीडाओं को उपेक्षा के साथ हँसते हँसते सह लेने में है। —अज्ञात

Out, out, brief candle!
Life's but a walking shadow.

क्षणिक प्रकाश देनेवाले दीपक वुझो—जीवन तो केवल चलती फिरती छाया है।

—शेक्सपियर

मनुष्य का जीवन जितना सादा और स्वाभाविक होगा उसी के अनुसार उसका चित्त अधिक प्रसन्न रहेगा। —अज्ञात

A useless life is an early death
व्यर्थ जीवन शीघ्र-प्राप्त मृत्यु है। —गेटे

जीवन तो मृत्यु और पुनर्जन्म की परपरा की कहानी है। हमें पुनर्जन्म पाने के लिए पहले मरना होगा। —रोम्या रोला

One crowded hour of glorious life is worth an age without a name
गौरवपूर्ण जीवन का एक व्यस्त घण्टा कीर्ति-रहित युगो से कही अधिक महत्व-पूर्ण है। —वाल्टर स्काट

जीवन का रहस्य भोग में नही है, पर अनुभव के द्वारा शिक्षा-प्राप्ति में है। —स्वामी विवेकानन्द

जीवन एक कहानी के सदृश है—वह कितनी लम्वी है, नही वरन् कितनी अच्छी है, यह विचारणीय विषय है। —सेनेका

हमारी महात्वाकाक्षा चाहे जो हो पर हम सवको जैसा अपना जीवन प्यारा है वैसा और कोई पदार्थ नही। —स्वेट मार्डेन

Tell me not in mournful numbers "life is butan empty dream"
जीवन केवल एक निरर्थक स्वप्न है—यह वात मुझसे शोकयुक्त कविता में न कहो। —लागफेलो

जीवन एक वाजी के समान है। हारजीत तो हमारे हाथ नही है पर वाजी का खेलना हमारे हाथ में है। —जर्मी टेलर

जीवन किसी को स्थायी सम्पत्ति के रूप में नही मिला। वह तो केवल प्रयोग के लिए है। —लुक्रीटस

जीवन खोने के वजाय मानवी गुणो को सगठित करने में अपने समय का अधिक उपयोग करो। —स्वेट मार्डेन

Life is the childhood of our immortality
जीवन अमरता का शैशव काल है। —गेटे

Life is a principle of growth, not of standing still, a continuous becoming, which does not permit static condition

जीवन विकास का सिद्धांत है, स्थिर रहने का नही। निरन्तर विकसित होना स्थिर अवस्था में रहने की अनुज्ञा नही देता। —प० जवाहरलाल नेहरू

For life in general, there is but one decree, youth is a blunder, manhood a struggle, old age a regret

साधारण जीवन मे एक ही विधान है, यौवन एक भूल है, जवानी संघर्ष है और बुढापा पश्चात्ताप। —डिजरायली

जीवन एक प्रयोगशाला के समान है जिसमे मनुष्य निरन्तर प्रयोग करता रहता है। —अज्ञात

मनुष्य-जीवन अनुभव का शास्त्र है। —विनोवा

जीवन को नियम के अधीन कर देना आलस्य पर विजय पाना है। जीवन को नियम के अधीन कर देना प्रमाद को सदा के लिए विदा कर देना है। —स्वामी अखण्डानन्द

Life is nothing but a short postponement of death

जीवन और कुछ नहीं है, केवल मृत्यु का कुछ समय के लिए टालना है। —शोपेनहार

Life is a flower of which love is the honey

जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसका मधु। —विक्टर ह्यूगो

जीवन और मृत्यु (दे० "मृत्यु", "जिन्दगी और मौत")

जीवन और मृत्यु साँस भीतर लेने और साँस बाहर निकालने के समान है। —स्वामी रामतीर्थ

यह जीवन समुद्र यात्रा की भांति है जिसमे हम सभी एक ही संकुचित नौका मे परस्पर मिलते है। मृत्यु तट पर पहुँचने के समान है जहाँ हम सभी अपने अपने लोक को चले जाते हैं। —रवीन्द्र

मृत्यु जोकि शाश्वत सत्य है, शान्ति है और जन्म तथा जीवन धीरे-धीरे और स्थिर रूप से होने वाला विकास है। मनुष्य की उन्नति के लिए स्वस्थ जीवन जितना आवश्यक है उतनी ही आवश्यक शान्ति है। —महात्मा गांधी

In death the many becomes one, in life the one becomes many
मृत्यु में अनेक एक हो जाता है, जीवन मे एक अनेक रहता है। — रवीन्द्र

जीवन एक प्रश्न है और मरण है उसका अटल उत्तर।
— जयशकर प्रसाद

जीवन एक यात्रा है जिसकी समाप्ति मृत्यु है। — अज्ञात

जीवन-चरित्र

जीवन-चरित्र ही केवल सच्चा इतिहास है। — कारलाइल

There is properly no history, only biography
वास्तव में इतिहास कुछ नही, केवल जीवन चरित्र ही है। -- एमर्सन

Lives of great men all remind us,
We can make our lives sublime,
And, departing, leave behind us
Footprints on the sands of time

महापुरुषो की जीवनियाँ हमें याद दिलाती है कि हम भी अपना जीवन महान वना सकते हैं और मरते समय अपने पदचिह्न समय की वालू पर छोड सकते।
— लागफेलो

To be ignorant of the lives of the most celebrated men of antiquity is to continue in a state of childhood all our days

प्राचीन महापुरुषो के जीवन से अपरिचित रहना जीवन भर निरन्तर वाल्यावस्था में ही रहना है। — प्लूटार्क

जीविका

Absence of occupation is not rest, a mind quite vacant is a mind distressed

जीविका का अभाव विश्राम नही है, बिल्कुल शून्य मस्तिष्क एक पीडित मस्तिष्क है। — काउपर

The crowning fortune of man is to be born to some pursuit which finds him in employment and happiness

मनुष्य का महान सौभाग्य यह है कि वह कोई व्यावसायिक प्रवृत्ति लेकर जन्मे जिससे उसे जीविका और आनन्द प्राप्त हो। —एमर्सन

व्यवसाय समय का यत्र है। —नेपोलियन

व्यस्त मनुष्य को आँसू बहाने के लिए अवकाश नही। —बायरन

जुआ

Gambling is the child of avarice, the brother of iniquity and the father of mischief

जुआ लोभ का पुत्र, दुराचार का भाई और बुराइयो का पिता है। —वाशिंगटन

मनुष्य एक बाजी लगानेवाला जीव है। —लैम्ब

जुआ आपस की फूट का मूल कारण है। —वेदव्यास (महाभारत)

जुआ सुख, सम्पत्ति और समय इन तीनो का—जोकि जीवन के लिए अति मूल्यवान है—नाश करता है। —अज्ञात

जुल्म

Bad laws are the worst sort of tyranny

खराब कानून निकृष्ट प्रकार का जुल्म है। —बर्क

जुल्मी

'Tis time to fear when tyrants seem to kiss

जब जुल्मी चूमने का अभिनय करे तो डरना चाहिए। —शेक्सपियर

जालिम मर जाता है पर जुल्म रह जाता है। —अज्ञात

जेल

जेल सम्मान और भक्ति की एक रेखा है, जिसके भीतर शैतान कदम नही रख सकता। —प्रेमचन्द

जेल के बाहर भूलो की सम्भावना है, बहकने का भय है, समझौते का प्रलोभन है, स्पर्धा की चिन्ता है। —प्रेमचन्द

जेहन

वह जेहन किस काम का जो हमारे आत्मगौरव की हत्या कर डाले।

—प्रेमचन्द

If a man's eye is on the eternal, his intellect will grow

यदि मानव नेत्र शाश्वत पर होते हैं तो उसकी बुद्धि प्रतिदिन विकसित होती है।

—एमर्सन

ज्ञानी की बुद्धि दर्पण के सदृश है। वह स्वर्गीय प्रकाश को ग्रहण करती है और उसे परावर्तित कर देती है।

—हेयर

ज्ञान (दे० 'बुद्धि')

न हि ज्ञानेन सदृश पवित्रमिह विद्यते। —भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

ज्ञान के समान इस ससार में और कुछ पवित्र नही है।

आरोह तमसो ज्योति। —अथर्ववेद

अन्धकार (अविद्या) से निकलकर प्रकाश (ज्ञान) की ओर बढो।

ज्ञान केवल सत्य में ही पाया जाता है। —गेटे

ज्ञान सदा एकरस है, वह काल के बधन से बाहर है। —निराला

Man's wisdom is his best friend, folly his worst enemy

मनुष्य का ज्ञान उसका परम मित्र है, मूर्खता उसका निकृष्ट शत्रु है।

—सर डब्ल्यू० टेम्पिल

In youth and beauty wisdom is but rare

यौवन और सौंदर्य में ज्ञान प्राय दुर्लभ ही होता है। —होमर

ज्ञान भी जब सीमा के बाहर हो जाता है तो नास्तिकता के क्षेत्र में जा पहुँचता है।

—प्रेमचन्द

ज्ञान ही वास्तविक सोना अथवा हीरा है। —स्वामी शिवानन्द

जब ज्ञान इतना घमडी बन जाय कि वह रो न सके, इतना गभीर बन जाय कि हँस न सके और इतना आत्म-केन्द्रित बन जाय कि अपने सिवा और किसी की चिन्ता न करे, तो वह ज्ञान अज्ञान से भी ज्यादा खतरनाक होता है। —खलील जिब्रान

Knowledge is power

ज्ञान शक्ति है। —बेकन

ज्ञान का मूल्य वहुमूल्य से वहुमूल्य रत्न से भी अधिक है।

ज्ञान का निरादर अपने ही मस्तिष्क का अपमान है। —निराला

Knowledge is the wing wherewith we fly to heaven

ज्ञान वह पख है जिसके द्वारा हम स्वर्ग की ओर उडते हैं।

ज्ञान की अग्नि सुलगते ही कर्म भस्म हो जाते हैं। —स्वामी शकराचार्य

Knowledge is proud that he has learn'd so much, wisdom is humble that he knows no more

ज्ञान अभिमानी होता है कि उसने वहुत कुछ सीख लिया, वुद्धि विनीत होती है कि वह अधिक कुछ जानती ही नही। —काउपर

ज्ञान का अतिम लक्ष्य चरित्र-निर्माण होना चाहिए। —महात्मा गाधी

The aim of knowledge is truth, and truth is a need of soul.

ज्ञान का ध्येय सत्य है, और सत्य आत्मा की भूख है। —लेसिंग

भयउ प्रकास कतहुँ तम नाही। ज्ञान उदय जिमि ससय नाही।

—तुलसी (मानस-लका०)

To be conscious that you are ignorant is a great step to knowledge

अपने अज्ञान का आभास होना ही ज्ञान की तरफ एक वडा कदम है।

—डिजरायली

यथैधामि नमिद्धोग्निर्भस्मसात्कुरुतेर्जुन।
ज्ञानाग्नि सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा॥

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

हे अर्जुन! जैसे जलती हुई अग्नि ईंधन को भस्म कर देती है, वैसे ही ज्ञानरूपी अग्नि सपूर्ण शुभाशुभ कर्मो को जलाकर नष्ट कर देती है।

The essence of knowledge is, having it, to apply it, not having it, to confess ignorance

ज्ञान का सार यह है कि ज्ञान रहते उसका प्रयोग करना चाहिए और उसके अभाव में अपनी अज्ञानता स्वीकार कर लेनी चाहिए। —कन्फ्यूशस

Wisdom is the daughter of experience

ज्ञान अनुभव की वेटी है। —कहावत

पारमार्थिक कर्मों के आचरण से ही मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है।

—स्वामी शंकराचार्य

Wisdom is to the soul what health is to the body

जैसे शरीर के लिए स्वास्थ्य है वैसे आत्मा के लिए ज्ञान। —अज्ञात

भूली हुई चीजो की स्मृति ही ज्ञान है। —प्लेटो

Wisdom teaches us to do, as well as talk and to make our words and actions all of a colour

ज्ञान हमको करना और बोलना सिखाता है और हमारे शब्दो एव कर्मों को एक रग में रँग देता है। —सेनेका

मनुष्य जितना ज्ञान में घुल गया हो, उतना ही वह कर्म के रँग में रग जाता है।

—विनोबा

He that thinks himself the wisest is generally the greatest fool

जो अपने को सबसे बुद्धिमान् समझता है वह सामान्यत सबसे वडा मूर्ख होता है।

—कोल्टन

जैसे जल के द्वारा अग्नि को शान्त किया जाता है, वैसे ही ज्ञान के द्वारा मन को शान्त रखना चाहिए। —वेदव्यास (महाभारत)

ज्ञान धन से उत्तम है क्योकि धन की तुमको रक्षा करनी पडती है और ज्ञान तुम्हारी रक्षा करता है। —अली

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञ परतप।
सर्वं कर्माखिल पार्थ! ज्ञाने परिसमाप्यते॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

हे परतप, द्रव्ययज्ञ से ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ है, क्योकि हे पार्थ! जितने कर्म है वे सब ज्ञान में समाप्त हो जाते है।

As for me, all I know is that I know nothing

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं जानता हूँ कि मै कुछ नही जानता। —सुकरात

जो यथार्थ मुक्ति का कारण है वही वास्तविक ज्ञान है। —स्वामी शंकराचार्य

"न तेन स्थविरो भवति येनास्य पलित शिर।
बालोपि य प्रजानाति त देवा स्थविर विदु॥ —वेदव्यास

कोई सिर के बाल श्वेत होने से वृद्ध नही होता। बालक होकर भी यदि कोई ज्ञान-सम्पन्न है तो वह वृद्ध माना जाता है।

'अज्ञो भवति वै वाल, पिता भवति मन्त्रद ।' —अज्ञात

ज्ञानहीन व्यक्ति चाहे वह वृद्ध ही क्यो न हो वालक है, और शिक्षक चाहे वह अल्पवयस्क ही हो, पिता है।

पक्के ज्ञान की एकमात्र पहचान है सिखाने की शक्ति। —अरस्तू

ज्ञानी

ज्ञानी मनुष्य को ससार लुभा नही सकता, मछलियो के कूदने से समुद्र नहीं उमडता। —भर्तृहरि

वहूना जन्मनामन्ते ज्ञानवान् माम् प्रपद्यते।
—श्रीकृष्ण (गीता)

वहुत जन्मो के अन्त मे ज्ञानी मुझे पाता है।

ज्ञानी पुरुष विवेक से सीखते है, साधारण मनुष्य अनुभव से, अज्ञानी आवश्यकता से और पशु स्वभाव से। —सिसरो

सबसे अधिक ज्ञानी वह है जो अपनी हानि का सबसे अच्छा सुधार कर सकता है। —अज्ञात

One fool can ask more questions in a minute, than twelve wise men can answer in an hour —*Lenin*

वारह ज्ञानी एक घटे मे जितने प्रश्नो का उत्तर दे सकते है, उससे कही अधिक प्रश्न मूर्ख व्यक्ति एक मिनट मे पूछ सकता है। —लेनिन

ज्ञानी मनुष्य इस जगत को स्वर्ग में परिवर्तित कर सकता है।
—स्वामी शिवानन्द

जोश ("दे० उत्साह")

जोश मनुष्य से कितनी शपथें कराता है। यह वह आग है जिसमें चमक बहुत है, गरमी कम है और जो वहुत जल्दी वुझ जाती है। —शेक्सपियर (हेमलेट)

मुहब्बत के जोश में आदमी अपने आपे को भूल जाता है। —शेक्सपियर

ज्योति

वडे आदमी मरने पर ऐसी ज्योति छोड जाते है जो उनकी मृत्यु के बाद भी कई युगो तक जगमगाती रहती है। —लागफेलो

झंडा

O splendid flag of new born India ! We pav you the homage of our dedicated heart and hands and pledge ourselves to translate into glorious deeds the dreams that were our share and inspiration in the long darkness of our bondage

हे नव भारत के प्रतापी ध्वज ! हम अपने हृदय और कर की श्रद्धाजलियाँ तुम्हें अर्पण करते है और प्रतिज्ञा करते है कि हम उन स्वप्नो को प्रतिभाशाली कर्म में वदल देंगे जो हमारी दासता की लम्वी अवधि में हमारे साथी रहे हैं और हमें प्रेरणा देते रहे है।

— सरोजनी नायडू

झगडा

Beware of entrance to a quarrel, but being in, bear it that the opposer may beware of thee'

झगडे से वचना उचित है। अगर उसमें पड ही जाय तो वैरी को अपना तेज, वल और पौरुष दिखा दे।

— शेक्सपियर

झुकना

उडने की अपेक्षा जव हम झुकते है तव विवेक के अधिक निकट होते हैं।

— वर्नार्ड शा

झूठ

जहाँ सत्य का परिणाम असत् और असत्य का परिणाम सत् होता हो, वहा सत्य न वोलकर असत्य वोलना ही उचित है।

— वेदव्यास (म० कृ०)

जहाँ लुटेरो के चगुल में फँस जाने पर झूठी शपथ खाने से छुटकारा मिलता हो, वहा झूठ वोलना ही ठीक है, इसी को विना विचारे सत्य समझो।

— वेदव्यास (महाभारत, कर्णपर्व)

झूठ वोलना तलवार के घाव की तरह है, घाव तो भर जायगा परन्तु उसका चिह्न हमेशा वना रहेगा।

— सादी

ससार में झूठ पापो का सरदार है, स्वार्यपरता, निर्दयता, कुटिलता और कायरता सब उसके साथी हैं।

— अज्ञात

झूठ को इज्जत देकर जितना ऊचा उठाया जाता है, उतनी ही ग्लानि, उतना ही कीचड, उतना ही अनाचार इकट्ठा होता है। —शरत् (ब्राह्मण की बेटी)

Falsehood has an infinity of combinations, but truth has only one mode of being

झूठ के असख्य सयोग होते है परन्तु सत्य का केवल एक रूप होता है। —रूसो

झूठ कभी श्रेष्ठ पद को प्राप्त नही होता। —उपनिषद्

मिथ्या भाषण प्रजा का नाश करनेवाला होता है। —वेदव्यास

लोग झूठ बोलनेवाले मनुष्य से उसी प्रकार डरते है जैसे साँप से। ससार मे सत्य ही सबसे महान् धर्म है। वही सबका मूल कहा जाता है। —वाल्मीकि

भवेत् सत्यमवक्तव्य वक्तव्यमनृत भवेत्।
यात्रानृत भवेत् सत्य सत्य चाप्यनृत भवेत्। —वेदव्यास

जहाँ मिथ्या बोलने का परिणाम सत्य बोलने के समान मगलकारक हो अथवा जहाँ सत्य बोलने का परिणाम असत्य-भाषण के समान अनिष्टकारी हो, वहाँ सत्य नही बोलना चाहिए। वहाँ असत्य बोलना ही उचित होगा।

विवाहकाले रति-सम्प्रयोगे प्राणात्यये सर्वधनापहारे।
विप्रस्य चार्थे ह्यनृत वदेत पञ्चानृतान्याहुरपातकानि॥
—वेदव्यास (महा० कर्णपर्व)

विवाह काल में, स्त्री प्रसग के समय, किसी के प्राणो पर सकट आने पर, सर्वस्व का अपहरण होते समय तथा ब्राह्मण की भलाई के लिए आवश्यकता हो तो असत्य बोल दे। इन पाँच अवसरो पर झूठ बोलने से पाप नही होता।

टका (दे० "द्रव्य" "धन")

टका ही माता-पिता है। —कहावत

टका का प्रेम ही सब बुराइयो की जड है। —अज्ञात

पैसे की कसौटी पर आत्मिक नाते की कौन कहे, शारीरिक नाता तक नष्ट हो जाता है। पैसा एक दीवार बन जाता है। —अज्ञात

When money speaks, truth is silent

जब टका बोलता है, तो सत्य मौन रहता है। —रूसी कहावत

टका करै कुलहूल, टका मिरदग वजावै।
टका चढै सुखपाल, टका सिर छत्र धरावै।।
टका माय अरु वाप, टका भैयन को भैया।
टका सास अरु ससुर, टका सिर लाड लडैया।।　　— वैताल

ठग

ठग किसी मवध का ख्याल नही करते, वे सभी को ठग लेते है।　　— अज्ञात

ठगाना

ठगाने से ठाकुर होता है, धोखा खाने से आदमी सयाना होता है।
— कहावत

ठगाना अच्छा है किन्तु ठगना अच्छा नही।　　— अज्ञात

ठोकर

ठोकर लगे और दर्द उठे तभी मै सीख पाता हूँ।　　— महात्मा गाधी

ठोकरें पृथ्वी से केवल धूल उडा सकती है, खेती नही उगा सकती।　— रवीन्द्र

ठोकर खाकर साँप जैसा नाचीज कीडा वदला लेता है, चीटी जैसी तुच्छ हस्ती काट खाती है, मनुष्य भी स्वाभिमान की रक्षा के लिए सर्वस्व की वाजी लगा देता है।
— अज्ञात

डर (दे० 'भय')

डरते हो ? किससे ?
ईश्वर से ? मूर्ख हो !
मनुष्य से ? कायर हो।
पचभूतो से ? उनका सामना करो।
अपने से ? जानो अपने आप को।
कहो—अह ब्रह्मास्मि।　　— स्वामी रामतीर्थ

भय सदा अज्ञानता से उत्पन्न होता है।　　— एमर्सन

डरनेवाला मौके पर ऐसे बुरे काम कर जाता है कि उसको ही वाद में ताज्जुब होने लगता है।　　— विनोवा

तावद्भयेन भेतव्य यावद्भयमनागतम्।
आगत तु भय दृष्ट्वा प्रहर्तव्यमशकया॥ — चाणक्य

तव तक ही भय से डरना चाहिए जव तक वह पास नही आता परन्तु भय को अपने निकट आता हुआ देखकर प्रहार करके उसे नष्ट करना ही उचित है।

जिसे पराजित होने का भय है—उसकी हार निश्चित है। — नेपोलियन

डर हमें मनुष्य-प्रकृति का अनुभव कराता है। — डिजराइली

डर रखने से हम अपनी जिन्दगी को वढा तो नही सकते। डर रखने से इतना होता है कि हम ईश्वर को भूल जाते हैं, इन्सानियत को भूल जाते है। — विनोवा

मनुष्य जिससे डरता है उससे प्रेम नही करता। — अरस्तू

डर प्रेम से अविक शक्तिशाली है। — कहावत

Fear can keep a man out of danger, but courage only can support him in it

डर मनुष्य को खतरे से दूर रख सकता है परन्तु उसमें केवल साहस ही उसकी सहायता करता है। — अज्ञात

डरपोक (दे० "कायर")

"डरपोक प्राणियो में सत्य भी गूंगा हो जाता है। वही सीमेन्ट जो ईंट पर चढकर पत्थर हो जाता है, मिट्टी पर चढा दिया जाय तो मिट्टी हो जायगा।

— प्रेमचन्द (गोदान)

Cowards falter, but danger is often overcome by those who nobly dare

डरपोक डगमगाते है—लेकिन खतरे से वही प्राय पार होते है जो साहस से उसका सामना करते हैं। — रानी एलिजावेथ

डाँटना

गुरु की डांट-डपट पिता के प्यार से अच्छी है। — सादी

डाँवाडोल

डांवाडोल मन केवल नीच सम्पत्ति है। — यूरिपिडीज

सज्जनता की आवश्यकता औषधि के व्यापार में अन्य व्यवसाय की अपेक्षा अधिक होती है, और किसी भी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा चिकित्सक को उसकी अधिक आवश्यकता है। —सर डब्लू ओस्लर

डींग

Where boasting ends, there dignity begins

जहां डींग समाप्त होती है वहीं प्रतिष्ठा का प्रारम्भ होता है। —यंग

The empty vessel makes the greatest sound

थोथा चना बाजे घना। —शेक्सपियर

अधजल गगरी छलकत जाय। —कहावत

जो गरजते हैं वे बरसते नहीं। —कहावत

ढोंगी

जो मनुष्य के साथ तो दयालुता का बर्ताव नहीं करता किन्तु पाषाण-मूर्ति की पूजा करता रहता है, वह ढोंगी कहा जा सकता है। —विनोबा

ढोंगी बनने की अपेक्षा स्पष्ट रूप से नास्तिक बनना अच्छा है। —विवेकानन्द

तकदीर

वही कानूने फ़ितरत है जिसे तक्दीर कहते हैं।
जिसे किस्मत समझते हैं वो तदबीरों का हासिल है॥ —अकबर

We make our fortunes and we call them fate

हम अपने भाग्य का निर्माण करते हैं और उसे होनी कहते हैं। —डिजरायली

तकरीर

Speech is the index of the mind

तकरीर मस्तिष्क का प्रतिबिम्ब है। —सेनेका

In oratory, the greatest art is to conceal art.

तकरीर में सबसे बड़ी कला—कला का छिपाना है। —स्विफ्ट

Speech is silvery, silence is golden, speech is human, silence is divine

वाणी चाँदी है, मौन सोना है, वाणी मानुषिक है, मौन दिव्य।

— जर्मन कहावत

Speech is the gift of all, but the thought of few

तकरीर सभी के गुण हैं, परन्तु विचार थोडे ही के। — केटो

तजुर्बा

Experience is the father of wisdom and memory the mother

तजुर्बा ज्ञान का जनक है और स्मरणशक्ति उसकी जननी। — कहावत

Experience without learning is better than learning without experince

विना ज्ञान का तजुर्बा अनुभवरहित ज्ञान से अच्छा है। — कहावत

Experience is good if not bought too dear

तजुर्बा अच्छा है यदि उसका अधिक मूल्य न चुकाना पडे। — कहावत

अगर कोई सिर्फ तजुर्बो से ही अक्लमद हो जाता तो लदन के अजायघर के पत्थर इतने वर्षों बाद ससार के वडे से वडे वुद्धिमानो से भी ज्यादा वुद्धिमान् होते।

— बर्नार्ड शा

तत्त्व (दे० 'दार्शनिक')

कर्म से केवल मन की ही शुद्धि होती है तत्त्व वस्तु नही प्राप्त हो सकती, उसके लिए मुख्य उपाय ध्यान है। — शकराचार्य

तत्त्वज्ञ

For there was never yet a philosopher
That could endure the tooth-ache patiently

अभी तक ऐसा कोई तत्त्वज्ञ नही हुआ जो कि दाँत दर्द को धैर्यपूर्वक सहन कर सकता। — शेक्सपियर

जैसे वास के पिंजडे में सिंह वन्द नही किया जा सकता उसी प्रकार तत्त्व-वेत्ता ससार में नही फँस सकता। — अज्ञात

जो सत्य की झलक के प्रेमी है वही सच्चे तत्त्व-ज्ञानी है। — सुकरात

तत्त्व-ज्ञान (दे० 'दर्शनशास्त्र' 'फिलासफी')

Queen of arts and daughter of heaven
तत्त्वज्ञान कलाओ की रानी और स्वर्ग की वेटी है। —वर्क

तत्त्वज्ञान वह विज्ञान है जो सत्य का विचार करता है। —अरस्तू

Adversity is sweet milk of philosophy
विपत्ति तत्त्वज्ञान का मधुर दूध है। —शेक्सपियर

तप

कामना का त्याग ही उत्तम तप है। —श्रीमद्भागवत

मन-प्रसाद सौम्यत्व मौनमात्मविनिग्रह ।
भावसशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्चये ॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

मन की प्रसन्नता, शान्ति भाव, मौन, आत्म-सयम, अन्त करण का शुद्ध रखना यह सव मानसिक तप है।

अनुद्वेगकर वाक्य सत्य प्रियहित च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसन चैव वाङमय तप उच्यते ॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

दु ख न देनेवाला सत्य, प्रिय, हितकर वचन, तथा धर्मग्रन्थो का अभ्यास—यह वाणी का तप है।

सवसे श्रेष्ठ तप ब्रह्मचर्य है। —स्वामी भजनानन्द

अध्रुवे हि शरीरे यो न करोति तपोर्ज्जनम्।
सपश्चात्तप्यते मूढो मृतो गत्वात्मनो गतिम् ॥ —वाल्मीकिरा०

यह शरीर क्षण भगुर है, इसमें रहते हुए जो जीव तप का उपार्जन नही करता, वह मूर्ख मरने के वाद, जव उसे अपने दुष्कर्मों का फल मिलता है, वहुत पश्चात्ताप करता है।

तप का फल है प्रकाश और ज्ञान। —वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

देव-द्विज-गुरु-प्राज्ञ-पूजन शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीर तप उच्यते ॥—श्रीकृष्ण (गीता)

देवता, ब्राह्मण, गुरु और ज्ञानी की पूजा पवित्रता, नम्रता, ब्रह्मचर्य, अहिंसा—यह शारीरिक तप है।

धन, गौ, सोना, मणि, रत्न और पुत्र सवका मूल तप ही है। तप ही से ये सव चीजें मिल सकती हैं। —वेदव्यास (महाभारत, शान्तिपर्व)

आन्तरिक तप चैतन्यमय प्रकाश से युक्त है, उससे तीनो लोक व्याप्त हैं।
—वेदव्यास (महाभारत, शान्तिपर्व)

तपवल रचइ प्रपचु विधाता। तपवल विप्नु सकल जगत्राता॥
तपवल सभु करहिं सघारा। तपवल सेपु धरहिं महि-भारा॥
—तुलसी (मानस)

रजोगुण और तमोगुण का नाश करनेवाला निष्काम कर्म ही तप है।
—वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

विनयेन विना चीर्णम्—अभिमानेन सयुतम्।
महच्चापि तपो व्यर्थम्—इत्येतदवधार्यताम्॥ —अज्ञात

यह समझ लेना चाहिए कि विनय के विना और अभिमान के साथ किया हुआ वडा तप भी व्यर्थ ही होता है। —अज्ञात

तप की महिमा महान है। तप द्वारा ही मनुष्य अपने अभीष्ट पद को प्राप्त करता है और पाप या अपूर्णता को दूर कर अपने चरित्र को उज्ज्वल तथा पवित्र वनाता है। धीर पुरुष तप द्वारा ही ससार में उन्नति के शिखर पर विराजमान होता है। —अज्ञात

तपस्या

अपनी पीडा सह लेना और दूसरे जीवो को पीडा न पहुँचाना, यही तपस्या का स्वरूप है। —सत तिरुवल्लुवर

तपस्या धर्म का पहला और आखिरी कदम है। —महात्मा गाधी

धन सग्रह की अपेक्षा तपस्या का सग्रह श्रेष्ठ है। —वेदव्यास (महा०)

दु ख-वेदना ही मनुष्य-जीवन में कठोर तपस्या का रूप धारण कर लेती है। यह तपस्या जिसकी सार्थक होती है उसकी आत्मा तपाये हुए सोने के सदृश निर्मल, निष्कलुष, व उज्ज्वल हो जाती है। —अज्ञात

तर्क

कडे और कटु शब्द दुर्वल कारण को सूचित करते हैं। —विक्टर ह्यूगो

In argument similes are like songs in love, they describe much, but prove nothing

तर्क में उपमाएँ प्रेम में गीत के सदृश हैं। वे वर्णन तो अधिक करती है परन्तु सिद्ध कुछ भी नहीं करती। —प्रायर

Arguments out of a pretty mouth are unanswerable

सौंदर्य का तर्क लाजवाब होता है। —एडीसन

तलवार

तलवार ही सब कुछ है, उसके बिना मनुष्य न अपनी रक्षा कर सकता है और न निर्बल की। —गुरु गोविन्द सिंह

ताड़ना (दे० 'दड')

गुरु की ताडना पिता के प्यार से अच्छी है। —सादी

लालयेत् पञ्चवर्पाणि दशवर्पाणि ताडयेत्।

पाँच वर्ष तक दुलार, दस तक ताडना करनी चाहिए।

तिरस्कार

पहचाने न जाने से देवता को भी तिरस्कृत होना पडता है।

जो अपमान सहन करता है, अनिष्ट को आमत्रण देता है। —कहावत

The way to procure insult is to submit to them A man meets with no more respect than he exacts

तिरस्कृत होने का मार्ग तिरस्कार के सम्मुख सर झुका देना है। मनुष्य का उतना ही सम्मान होता है जितना कि वह दूसरो से प्राप्त करने में समर्थ होता है। —हैजलिट

तिल

"रगपाल" गाल पै रसाल तिल सोहै किधौं,
लपटो रसिक राय मन रस भीनो है।
कैधौं रूप-रतन-खजाने के महल पर,
मदन महीपति मुहर कर दीनो है।
—अज्ञात

दृष्टि लग जाय न किसी के चन्द्र आनन पै,
काला चिह्न विधि ने इसी से क्या दिया है छोड। —अज्ञात

दस गुना रूप है बढाता बन कर बिन्दु,
अक अनमोल ये कहाँ से गया मिल है। —अज्ञात

प्यारी की ठोढी बिराज रह्यौ तिल,
देखि बिचार यहै मैं कर्‌यौ है।
भौंहे बनावत मानो बिरंचि की,
लेखनी तें मसि-बिन्दु झर्‌यो है॥ —अज्ञात

तीक्ष्णबुद्धि

स्पृशन्ति शरवत्तीक्ष्णस्तोकमन्तर्विशन्ति च।
बहुस्पृशापि स्थूलेन स्थीयते बहिररमवत्॥

—*माघ (शिशु०)*

तीक्ष्ण बुद्धि वाले लोग बाण की भाँति बहुत स्वल्प (स्थल में) स्पर्श करते हैं, किन्तु अन्त प्रविष्ट हो जाते हैं और मन्द बुद्धि लोग पत्थर के टुकडे की भाँति बहुत (चौडे स्थल में) स्पर्श करने पर भी बाहर ही रह जाते हैं।

तीर्थ

सब से उत्तम तीर्थ अपना मन है जो विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ हो।

—स्वामी शकराचार्य

शरीर आत्मा के रहने की जगह होने के कारण तीर्थ जैसा पवित्र है।

—महात्मा गाधी

सत—महापुरुष ही वास्तविक तीर्थ और देवता है क्योकि इन सत महापुरुषो के दर्शन-मात्र से ही कल्याण हो जाता है। —श्रीमद्भागवत

तुलना

The superiority of some men is merely local They are great because their associates are little

कुछ व्यक्तियो की प्रधानता केवल स्थानीय होती है। वे बडे इसलिए होते हैं कि उनके सहयोगी बौने होते हैं। —जानसन

तृण

तनु तिय तनय धामु धनु धरनी।
मत्यसध कहुँ तृन सम वरनी॥

—तुलसी (मानस)

सत्यव्रती के लिए तो शरीर, स्त्री, पुत्र, घर, धन और पृथ्वी सब तिनके के बराबर कहे गये हैं।

तृण ब्रह्मविदा स्वर्गं तृण शूरस्य जीवितम्।
जिताक्षस्य तृण नारी नि स्पृहस्य तृण जगत्॥ —चाणक्य

ब्रह्मज्ञानी को स्वर्ग तृण है, शूर को जीवन तृण है, जिसने इन्द्रियो को वश में किया उसको स्त्री तृण-तुल्य जान पडती है, निस्पृह को जगत तृण है।

तृष्णा

तृष्णा चतुर को भी अन्धा बना देती है। —सादी

तृष्णा वैतरणी नदी है। —चाणक्य

की त्रिस्ना है डाकिनी की जीवन का काल।
और और निस दिन चहै जीवन करै निहाल॥ —कबीर

जीर्यन्ते जीर्यंते केशा दन्ता जीर्यन्ति जीर्यत ।
चक्षु श्रोत्राणि जीर्यन्ति तृष्णैका तरुणायते।

वृद्धावस्था में बाल बूढ़े होकर सफेद हो जाते है, दांत टूट जाते है, आख और कान जीर्ण हो जाते हैं, पर एक तृष्णा ऐसी है, जो तरुणी ही बनी रहती है। —अज्ञात

अनन्तपारा दुष्पूरा तृष्णा दोष-शता-वहा।
अधर्म-बहुला चैव तस्मात्ता परिवर्जयेत्॥

तृष्णा का कही ओर छोर नही है, उसका पेट भरना कठिन होता है, वह सैकडो दोषो को ढोये फिरती है, उसके द्वारा बहुत से अधर्म होते हैं। अत तृष्णा का परित्याग कर दे। —वेदव्यास (पद्मपुराण)

जिसकी तृष्णा का ओर छोर नही है, नैराश्य उस पर अपना प्राबल्य प्रकट कर अपने वश में कर लेता है। —अज्ञात

आसा तृस्ना ना मरी कह गये दास कबीर —कबीर

तृष्णा के समान दूसरी कोई व्याधि नही है। —चाणक्य

गात्राणि शिथिलायन्ते तृष्णैका तरुणायते॥ —भर्तृहरि

चेहरे पर झुर्रियाँ पड गयी, सिर के बाल पककर सफेद हो गये, सारे अग ढीले हो ाये,—पर तृष्णा तो तरुण होती जाती है।

कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा ।
—भर्तृहरि (वैराग्यशतक)

काल का खात्मा न हुआ, किन्तु हमारा ही खात्मा हो चला। तृष्णा का बुढापा ा आया, किन्तु हमारा ही बुढापा आ गया।

यच्च कामसुख लोके, यच्च दिव्य महत्सुखम्।
तृष्णाक्षय सुखलेशै नार्हत षोडशी कलाम्॥

ससार में जितने भी सुख काम के द्वारा मिलते हैं या बनाये गये है और जो भी सुन्दर तथा महान सुख है वे सभी तृष्णा के नाश से जो सुख मिलता है उसके सोलहवे अश की भी तुलना में नही आ सकते। —अज्ञात

तृष्णा सतोष की वैरिन है, यह जहा पाव जमाती है, सतोष को भगा देती है। —सुदर्शन

तृष्णा रहित

चन्द्रमा और हिमालय पर्वत भी इतने शीतल नही, कदली वृक्ष और चन्दन भी इतने शीतल नही, जितना तृष्णारहित चित्त शीतल रहता है। —वशिष्ठ

तेजस्वी

तेजसा हि न वय समीक्ष्यते।
—कालिदास (रघुवश)

तेजस्वियो की आयु नही देखी जाती।

तेजवत लघु गनिय न रानी। — तुलसी (मानस बाल०)

जिस मनुष्य में तेज नही रहता उसकी सब अवहेलना करते है। आग वुझ जाने पर राख को सब लोग छूते हैं। —अज्ञात

त्याग

त्याग के समान कोई सुख नही है। —महाभारत (शान्तिपर्व)

त्याग के सिवा इस ससार में कोई दूसरी शक्ति नही है। —स्वामी रामतीर्थ

जिस आदमी की त्याग की भावना अपनी जाति से आगे नही बढती, वह स्वय स्वार्थी होता है और अपनी जाति को भी स्वार्थी बनाता है। —महात्मा गाधी

कर्म से, धन से, अथवा सतान से विद्वानो ने अमृत रूप मोक्ष नही प्राप्त किया है, किन्तु एक त्याग से ही उसे प्राप्त किया है। —अज्ञात

छोटी वस्तुओ की अपेक्षा बडी वस्तुओ का त्याग सरल है। —मान्टेन

त्याग और दान

त्याग तो बिल्कुल जड पर ही आघात करने वाला है। दान ऊपर ही ऊपर से कोपलें खोटने जैसा है। —विनोबा

त्याग का स्वभाव दयालु है, दान का ममतामय। धर्म दोनो ही पूर्ण हैं। त्याग का निवास धर्म के शिखर पर है, दान का उसके ललाट में। —विनोबा

त्याग से पाप का मूलधन चुकता है, और दान से पाप का व्याज। —विनोबा

त्याग पीने की दवा है, दान सिर पर लगाने की सोठ। त्याग में अन्याय के प्रति चिढ है, दान में नाम का लिहाज है। —विनोबा

त्यागी

जिसने इच्छा का त्याग किया है, उसको घर छोडने की क्या आवश्यकता है, और जो इच्छा का बँधुआ है, उसको वन में रहने से क्या लाभ हो सकता है? सच्चा त्यागी जहा रहे वही वन और वही भवन-कदरा है। —महाभारत

त्याज्य

यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवा।
न च विद्यागमोप्यस्ति वास तत्र न कारयेत्॥ —चाणक्य

जिस देश में मान नही, जीविका नही, बन्धु नही और विद्या का भी लाभ नही है, वहा नही रहना चाहिए।

जिस स्थान में धनी, वेद का पाठ करनेवाले, राजा, नदी, और वैद्य—ये पाच न हो उस स्थान में एक दिन भी नही रहना चाहिए। —हितोपदेश

निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य, और दीर्घसूत्रता इन अवगुणो को उन्नति चाहने वाले पुरुष को अवश्य त्याग देना चाहिए। —हितोपदेश

त्योहार

त्योहार साल की गति के पडाव हैं, जहा भिन्न भिन्न मनोरजन है, भिन्न भिन्न आनद है, भिन्न भिन्न क्रीडास्थल है। —अज्ञात

त्रिया-चरित्र

स्त्रियाश्चरित्रम् पुरुषस्य भाग्य दैवो न जानाति कुतो मनुष्य ।

स्त्रियो का चरित्र और पुरुषो का भाग्य, मनुष्य क्या देवता भी नही जान सकते। —भर्तृहरि

सत्य कहहु कवि नारि स्वभाऊ। सब विधि अगम अगाध दुराऊ।
निज प्रतिबिम्ब मुकुर गहि जाई। जानि न जाय नारि-गति भाई।।
—तुलसी (मानस-अयोध्या)

त्रुटि

त्रुटि निकालना सरल है, अच्छा कार्य करना कठिन है। —प्लूटार्क

यदि तुम्हें अपने पडोसी की त्रुटियो को सहना है तो अपनी दृष्टि खुद अपनी ही त्रुटियो पर डालो। —गोलिना

थकान

Fatigue is the best pillow
थकान सबसे अच्छी तकिया है। —फ्रेंकलिन

थूकना

Spit not against heaven, it will fall back in thy face
चन्द्रमा पर थूकने वाले का थूक उसी के मुह पर पडता है। —कहावत

दंड

लालनाद् वहवो दोषा ताडनाद्वहवो गुणा ।
तस्मात्पुत्र च शिष्यञ्च ताडयेन्नतु लालयेत् ।। —चाणक्य

दुलारने से वहुत दोष होते हैं और दड देने से वहुत गुण, इसलिए पुत्र और शिष्य को दड देना उचित है, वहुत प्यार करना नही।

गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानत
उत्पथ प्रतिपन्नस्य कार्यं भवति शासनम् ।। —वाल्मीकि

यदि गुरु भी अभिमान में आकर कर्तव्य-अकर्तव्यता का ज्ञान खो वैठे और कुमार्ग पर चलने लगे तो उसे भी दण्ड देना आवश्यक हो जाता है।

एक कठोर दड वरसो के प्रेम को मिट्टी में मिला देता है। —प्रेमचन्द

दंड सम्पूर्ण जगत को नियम के अन्दर रखने वाला है, यह धर्म की सनातन आत्मा है, इसका उद्देश्य है—प्रजा को उद्दण्डता से वचाना। —वेदव्यास (शातिपर्व)

दड अन्यायी के लिए न्याय है। —आगस्टाइन

The punishment of criminals should be of use, when a man is hanged, he is good for nothing

अपराधी के दड में उपयोगिता होनी चाहिए। जव एक मनुष्य को फासी दे दी गयी तो इससे कोई लाभ नही। —वाल्टायर

राजभिर्धृतदण्डाश्च कृत्वा पापानि मानवा ।
निर्मला स्वर्गमायान्ति सन्त सुकृतिनो यथा ।।
—वाल्मीकि (रा० कि०)

मनुष्य पाप या अपराध करने के पश्चात् यदि राजा के दिये हुए दण्ड को भोग लेते हैं तो वे शुद्ध होकर पुण्यात्मा पुरुषो की भाति स्वर्गलोक में आ जाते है।

Punishment is lame, but it comes

दड लँगडा है लेकिन फिर भी वह आता है। —हर्वर्ट

यदि दण्ड न हो तो यह ससार नरक से भी वढकर दुर्गति में फँस जाय। —अज्ञात

रात में भी जव कि चराचर जगत सोता रहता है, केवल दण्ड जागता रहता है। —अज्ञात

दंभ

जिस वस्तु को मनुष्य दे नही सकता उसे ले लेने की स्पर्धा से वढकर दूसरा दभ नही। —जयशकर प्रसाद

दभ और अहकार से पूर्ण मनुष्य अदृष्टशक्ति के क्रीडा-कदुक है। —जयशकर प्रसाद

दक्ष

The winds and waves are always on the side of the ablest navigators

लहर और तूफान भी दक्ष नाविक का साथ देती है। —गिबन

अपनी योग्यता को कैसे छिपाए यह जानना वहुत वडी चातुरी है। —रोशोको

दमन

दमन और आतक की तेजी हुकूमत के डर का नाम हुआ करती है। हर एक हुकूमत आतकवाद का सहारा तब लेती है जब उसे खुद अपनी हस्ती खतरे में मालूम पडती है। —प० जवाहरलाल नेहरू

दया (दे० 'दयालुता')

दया सबसे वडा धर्म है। —महाभारत (शान्तिपर्व)

मधुर दया सज्जनता का वास्तविक चिह्न है। —शेक्सपियर

दया धर्म का मूल है, पाप-मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोडिए, जब लगि घट में प्रान॥ —तुलसी

Mercy is an attribute to God himself, and earthly power doth then show likest God's when mercy seasons justice

दया परमात्मा का निजी गुण है, और लौकिक शक्ति उस समय ईश्वर तुल्य मालूम होती है जब न्याय में दया का सम्मिश्रण होता है। —शेक्सपियर

शुद्ध न्याय में शुद्ध दया होनी चाहिए। न्याय का विरोध करनेवाली दया, दया नही वल्कि क्रूरता है। —महात्मा गाधी

Mercy and truth are met together, righteousness and peace have kissed each other

दया और सत्यता परस्पर मिलते है, धर्म और शाति एक दूसरे का साथ देते हैं। —बाइबिल

जहाँ दया तहँ धर्म है, जहा लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तह काल है, जहाँ क्षमा तह आप।। —कबीर

Nothing emboldens sin so much as mercy.
पाप को इतना कोई साहसी नही बनाता—जितना कि दया बनाती है। —शेक्सपियर

दया कौन पर कीजिये, का पर निर्दय होय।
साई के सब जीव है, कीरी कुजर दोय।। —कबीर

Mercy is twice blessed, it blesseth him that gives, and him that takes

दया दो तरफी कृपा है। इसकी कृपा दाता पर भी होती है और पात्र पर भी। —शेक्सपियर

दया वह भाषा है जिसे बहरे सुन सकते है और गूँगे समझ सकते हैं। —अज्ञात

पापी हो या पुण्यात्मा अथवा वध के योग्य अपराध करनेवाले ही क्यो न हो, उन सब के ऊपर श्रेष्ठ पुरुष को दया करनी चाहिए, क्योकि ऐसा कोई नही है जो सर्वथा अपराध न करता हो। —वाल्मीकि (रा० लंका०)

हम सभी ईश्वर से दया की प्रार्थना करते है और वही प्रार्थना हमें दूसरो पर दया करना भी सिखाती है। —शेक्सपियर

दुनिया का अस्तित्व शस्त्रबल पर नही बल्कि सत्य, दया या आत्मबल पर है। —महात्मा गाधी

दया सब वस्तुओ में सबसे अधिक सस्ती है, उसके प्रयोग में हमें सबसे कम कष्ट सहन करना और आत्मत्याग करना होता है। —एस० स्माइल्स

केवल दया दिखानेवाला परमात्मा अन्यायी परमात्मा है। —यग

नित्य अपने से पूछो कि तुमने आज कितने बुरे मनुष्यो के साथ दया का वर्ताव किया। —मार्क्स एन्टोनियस

Admiration is the foundation of all philosophy, investigation the progress and ignorance the end

आश्चर्य सारे दर्शनशास्त्र की आधारशिला है। अनुसन्धान उसका विकास एव अज्ञानता उसकी समाप्ति है। —मान्टेन

दर्शन सर्वश्रेष्ठ सगीत है। —प्लेटो

दर्शन का सम्बन्ध विचार के ऊँचे से ऊँचे स्तर और व्यवहार के नीचे से नीचे स्तर से है। —डा० सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

दर्शन का उद्देश्य, जीवन की व्याख्या करना नही, जीवन को बदलना है। —राधाकृष्णन्

दवा

दिनान्ते च पिवेद्दुग्ध
निशान्ते च पिवेत् पय ।
भोजनान्ते पिवेत्तक्र
कि वैद्यस्य प्रयोजनम् ॥ —अज्ञात

दिन के अन्त में दूध पिये, रात के अन्त में जल पिये, और भोजन के अन्त में मठा पिये, फिर वैद्य की क्या आवश्यकता ?

आराम और उपवास सर्वोत्तम दवा है। —फ्रैंकलिन

Words are of course the most powerful drug used by mankind

शब्द ही अत्यन्त शक्तिशाली दवा है, मानव जिसे प्रयोग में लाता है। —किप्लिग

जहा तक हो सके निरन्तर हँसते रहो—यह सस्ती दवा है। —अज्ञात

घर के पडे कूडे को ढक देने का और दवा का असर एक-सा होता है। —महात्मा गांधी

An apple a day keeps the doctor away.

प्रतिदिन एक सेव का प्रयोग डाक्टर को दूर रखता है। —अग्रेजी कहावत

ईश्वर अच्छा करता है पर फीस डाक्टर लेता है। —फ्रैंकलिन

The art of medicine is to be properly learned only from its practice and exercise

औषधि की कला केवल उसके अभ्यास और प्रयोग से अच्छी तरह सीखी जा सकती है। —साइडेन हावर

दस्तकारी

जिस चीज में मनुष्य के प्यारे हाथ लगते है, उसमें उसके हृदय का प्रेम और मन की पवित्रता सूक्ष्म रूप से खिल जाती है। और उसमें मुर्दे को जिन्दा करने की शक्ति आ जाती है। —पूर्णसिंह

मनुष्य के हाथ से बने हुए कामो में उसकी प्रेममय पवित्र आत्मा की सुगन्ध आती है। —पूर्णसिंह

दाता

दाता का दोष उसी तरह छिप जाता है जिस तरह चन्द्र के किरण-जाल में उसका कलक। —अज्ञात

अपनी भूख मार कर जो भिखारी को भीख दे वही तो दाता है। —अज्ञात

दान

दानेन भूतानि वशीभवन्ति
दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम्।
परोपि वन्धुत्वमुपैति दानै-
र्दानं हि सर्वव्यसनानि हन्ति॥ —अज्ञात

दान से सभी प्राणी वश में हो जाते है, दान से शत्रुता का नाश हो जाता है। दान से पराया भी अपना हो जाता है। अधिक क्या कहें, दान सभी विपत्तियो का नाश कर देता है।

तुलसी पछिन के पिये, घटै न सरिता-नीर।
दान दिये धन ना, घटै जो सहाय रघुवीर॥
—तुलसी (दोहावली)

जो जल वाढै नाव में, घर में वाढै दाम।
दोऊ हाथ उलीचिये, यही सयानो काम॥ —कवीर

दार्शनिक कौन है? जिसको प्रत्येक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने का जोश ोता है, जिसको सदा जानने की इच्छा बनी रहती है और जो (बिना जाने) कभी ातुष्ट नही होता, वही सच्चा दार्शनिक है। —सुकरात

दासता

सासारिक वस्तुओ, स्थूल पदार्थों की इच्छा करना ही दासता का कारण है।
—स्वामी रामतीर्थ

Slavery is contrary to the fundamental law of all societies
दासता सभी समाज के मौलिक नियमो के विरुद्ध है। —मान्टेस्क्यू

दासता के साचे में ढलकर मनुष्य अपना मनुष्यत्व खो बैठता है। —प्रेमचन्द

दिमाग ('दे० मन')

खाली दिमाग शैतान का कारखाना बन जाता है। —महात्मा गांधी

Strength of mind is exercise, not rest
मस्तिष्क की शक्ति अभ्यास है, आराम नही। —पोप

The mind in its own place, and in itself can make a heaven of hell and hell of heaven
मस्तिष्क स्वय अपने में ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग में बदल सकता है।
—मिल्टन

मनुष्य के मस्तिष्क की प्रगति धीमी है। —बर्क

दिल

जिसने दिल खोया उसी को कुछ मिला।
फायदा देखा इसी नुकसान में॥ —अज्ञात

Hearts are stronger than swords.
दिल तलवार से अधिक शक्तिशाली है। —वेन्डेल फिलिप्स

A good heart is worth gold.
अच्छा दिल सोने के मूल्य का होता है। —शेक्सपियर

दिल के घाव आसानी से नही भर जाया करते। —अज्ञात

दिल को दिल से राहत होती है। —अज्ञात

If a good face is a letter of recommendation a good heart is a letter of credit

अगर सुन्दर चेहरा सस्तुति है तो नेक दिल विश्वास-पत्र। —वुल्वर

A merry heart maketh a cheerful contenance

दिल की खुशी चेहरे पर भी प्रसन्नता ला देती है। —कहावत

दिवालिया

The worst bankrupt is the world is the man who has lost his enthusiasm

ससार का सबसे खराव दिवालिया वह है जिसने अपना जोश खो दिया है।

—एच० डब्ल्यू आरनाल्ड

दीक्षा

दीक्षा का अर्थ आत्म-समर्पण है। आत्म-समर्पण वाहरी आडम्वर से नही होता। यह मानसिक वस्तु है। —महात्मा गाधी (हरिजन)

दीन

अमीर गरीव सभी जरूरतें रखते है इसलिए दीन है—अमीरो की जरूरतें भी ज्यादा हैं, इसलिए वे औरो की अपेक्षा दीन भी ज्यादा है। —सादी (गुलिस्ता)

दीन सवन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहि लखे, दीनवन्धु सम होय॥ —रहीम

दीनता ('दे० नम्रता')

वाहर की दीनता भीतर भी दीनता ला देती है। —रवीन्द्र

दिव्य दीनता के रसहि, का जानै जग अन्धु।
भली विचारी दीनता, दीनवन्धु से वन्धु॥ —रहीम

ऊँचे पानी ना टिकै नीचे ही ठहराय।
नीचा होय सो भरि पिवै ऊँचा प्यासा जाय॥ — कबीर

Humility is the solid foundation of all the virtues
दीनता सभी सद्गुणो की दृढ आधार-शिला है। — कन्फ्यूशस

It was pride that changed angels into devils, it is humility that makes men as angels.

यह अभिमान था जिसने देवों को दैत्यो में बदल दिया, यह दीनता है जो मनुष्य को देवतुल्य बना देती है। — आगस्टाइन

आत्म-सम्मान की भावना ही दीन भावना की औषधि है। — अज्ञात

I believe the first test of truly great man is his humility.
मेरा विश्वास है कि वास्तविक महान् पुरुष की पहली पहचान उसकी दीनता (नम्रता) है। — रस्किन

दीपक

भगवान् भुवनभास्कर के अभाव में दीपक भी आदरणीय है। — वेद
जो दीपक को अपने पीछे रखते हैं वे अपने मार्ग में अपनी ही छाया डालते हैं। — रवीन्द्र

दीर्घसूत्रता

जो कार्य तुम आज कर सकते हो उसे कल पर कदापि मत छोडो। — फ्रैंकलिन

दुनिया

All the world's a stage
And all the men and women merely players
सम्पूर्ण विश्व एक नाट्यशाला है।
और सभी पुरुष एव नारी उसके अभिनय-कर्त्ता है। — शेक्सपियर

The only fence against the world is a thorough knowledge of it
दुनिया के विरुद्ध उसका पूर्णज्ञान ही मानव का रक्षक है। — लॉक

This world is a comedy to those who think, a tragedy to those who feel

विचारको के लिए दुनिया सुखान्त है और हृदयवालो के लिए दुखान्त।

—होरेस वालपोल

यह दुनिया दर्पण के समान है, हर एक को अपना ही मुह सामने खडा हुआ दिखाई पडता है।

दुनिया एक बुलबुला है। —बेकन

दुनिया दुनियादारो के लिए है जो अवसर और बल देखकर काम करते है।

—अज्ञात

The world is a great book, of which they that never stir from home read only a page

दुनिया एक महान् पुस्तक है, जिसमें से वे लोग, जो घर छोड कर बाहर नही जाते, केवल एक पृष्ठ पढ पाते है। —अज्ञात

दुविधा

जब चित्त में कोई द्विधा नही होती तब समस्त पदार्थ-ज्ञान विश्राम लेता है और तब दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती है। —स्वामी रामतीर्थ

सत्त नाम कडुवा लगै मीठा लागै दाम।
दुविधा में दोऊ गये माया मिली न राम॥ —कबीर

हिरदे माही आरसी मुख देखा नहिं जाय।
मुख तौ तब ही देखई दुविधा देइ बहाय॥ —कबीर

दुर्जन (दे० 'दुष्ट')

खलाना कटकाना च द्विविधैव प्रतिक्रिया।
उपानन्मुख-भगो वा दूरतो वा विसर्जनम्॥ —चाणक्य

दुर्जन और कटक को दूर करने के दो ही उपाय है—उपानह से उनका मुख भग कर देना या उनका दूर मे ही त्याग कर देना।

दुर्जनेन सम सख्य प्रीति चापि न कारयेत्।
उष्णो दहति चागार शीत कृष्णायते करम्॥ —हितोपदेश

दुर्जनो के साथ मैत्री और प्रेम कुछ भी नही करना चाहिए। कोयला यदि जलता हुआ है तो स्पर्श करने पर जला देता है और यदि ठण्डा है तो हाथ काला कर देता है।

देशत्यागेन दुर्जन ।

दुर्जन को देश-त्याग करके छोडना चाहिए। — चाणक्य

दुर्जन के ससर्ग तें, सज्जन लहत कलेस।
ज्यो दशमुख अपराध ते, वधन लह्यो जलेस॥ — वृद

तक्षकस्य विष दन्ते मक्षिकाया विष शिरे।
वृश्चिकस्य विष पुच्छे सर्वांगे दुर्जना विषम्॥ — चाणक्य

साप के दन्त में विष रहता है, मक्खी के सिर में माहुर रहता है, बिच्छू की पूंछ में विष होता है, किन्तु दुर्जन के सब शरीर में विष रहता है।

दाग जो लागा नील का सौ मन साबुन धोय।
कोटि जतन परबोधिए कागा हस न होय॥ — कबीर

लोग कहते है कि दुर्जन पर हम प्रेम करते हैं तो वह और भी दुर्जन बनता है। लेकिन यह खयाल गलत है। अगर कही अन्धकार है और हम उसमें दीपक लाते है तो क्या अन्धकार ज्यादा हो जाता है। — विनोबा

न दुर्जन साधुदशामुपैति
बहुप्रकारैरपि शिक्ष्यमाण ।
आमूलसिक्त पयसा घृतेन
ननिम्बवृक्षो मधुरत्वमेति ॥ —चाणक्य

दुर्जन को अच्छी अच्छी शिक्षा दी जाय तब भी वह साधु नही हो सकता जैसे नीम के पेड को यदि घी और दूध से सीचा जाय तो भी वह मधुर नही होगा।

सूर्य दुर्जन पर भी चमकता है। — सेनेका

कथापि खलु पापानामलमश्रेयसे यत । —माघ (शिशु०)

दुर्जनो की (दर्शन सहवास आदि तो दूर) चर्चा भी अकल्याण करनेवाली होती है।

प्रकृत्यमित्रा हि सतामसाधव । — भारवि

दुर्जन स्वभाव से ही सज्जनो के शत्रु होते है।

दुर्जन परिहर्तव्य विद्ययालकृतो पि स ।
मणिना भूषित सर्प किमसौ न भयकर ॥ — भर्तृहरि

विद्या से विभूषित होने पर भी दुर्जन का परित्याग ही उचित है, मणि धारण करनेवाला सांप क्या भयकर नही होता?

दुर्जन को देखने और उसकी बातो को सुनने से ही दुर्जनता का आरम्भ हो जाता है। —कन्फ्यूशस

दुर्दिन (दे० "दुःख" "विपत्ति")

दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहिचानि।
सोच नही वित हानि की, जो न होय हितहानि॥ — रहीम

विपत्ति से बढकर कोई शिक्षा नही। — डिजरायली

जब बुरे दिन आते है तो आँखें पहले ही बन्द हो जाती है। — सुदर्शन

जाकहँ विधि दारुण दुख देही। ताकी मति आगे हरि लेही। — तुलसी

जब मनुष्य के बुरे दिन हो, उसे अत्यधिक उपदेश देने की अपेक्षा उसकी थोडी सहायता कर देना ज्यादा अच्छा है। — बुलवर

दुरदिन परे रहीम कहि, दुरथल जैयत भागि।
ठाढे हूजत घूर पर, जब घर लागत आगि॥ — रहीम

दुर्बल

दुर्बल तथा अज्ञानी लोग ही हमेशा सबसे अधिक नुकताचीनी किया करते है। — रामतीर्थ

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की सास सो, सार भसम हो जाय॥ — कबीर

दैवोऽपि दुर्बल-घातक –कमजोरो को देवता भी मारता है। —हितोपदेश

दुर्बलता

विलासिता की ओर आकर्षण और तपस्या की ओर से विरक्ति का होना मानव-स्वभाव की दुर्बलता है। — अज्ञात

All wickedness is weakness

सारी दुर्जनता दुर्बलता है। — मिल्टन

Some of our weaknesses are born in us, others are the result of education, it is a question which of the two give us most trouble

हमारी कुछ दुर्बलताएँ पैदाइशी होती हैं, और कुछ शिक्षा का परिणाम है। यह एक प्रश्न है कि इन दोनो में से कौन हमें अधिक कष्ट देती हैं। — गेटे

दुर्भावना

दुर्भावनाओ को मै मनुष्यत्व का कलक मानता हूँ। —महात्मा गाधी

A man's venom poisons himself more than his victim

मनुष्य की दुर्भावना उसके शत्रु की अपेक्षा उसे ही अधिक दु ख देती है।

—चार्ल्स बक्सटन

दुश्मन (दे० 'शत्रु')

जब तुम अपनी आखें उस परमात्मा से बन्द कर लेते हो, तब दुश्मन आते हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

मनुष्य स्वय ही अपना सबसे बडा शत्रु है। —सिसरो

If you want enemies, excel others, if friends, let others excel you

यदि तुम शत्रु चाहते हो तो दूसरे से आगे बढो, यदि मित्र तो दूसरे को अपने से आगे बढने दो। —कोल्टन

शत्रु के साथ मृदुता का व्यवहार अपकीर्ति का कारण बनता है और पुरुषार्थ का व्यवहार यश का। —अज्ञात

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मन । —श्रीकृष्ण (गीता)

आत्मा ही आत्मा का बन्धु है और आत्मा ही आत्मा का दुश्मन है।

तात, तीनि अति प्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञान-धाम मन, करहिं निमिष महुँ छोभ॥

—तुलसी (मानस-अरण्य)

दुश्मनी

दुश्मनी दोस्ती में छिपकर आती है। —डा० रामकुमार वर्मा

दुष्ट (दे० 'दुर्जन')

शाम्येत् प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जन । —कालिदास (कुमा०)

दुष्ट उपकार से नही, अपकार से ही शान्त होता है।

दुष्टा भार्या, दुष्ट पुत्र, कुटिल राजा, दुष्ट मित्र, दूषित सम्बन्ध और दुष्ट देश को तो दूर से ही छोड देना चाहिए। —वेदव्यास (महाभारत, शान्तिपर्व)

कितनी भी सेंक—मालिश आदि करने पर भी जैसे कुत्ते की पूँछ टेढी ही रहती है वैसे ही कितनी भी सेवाशुश्रूषा की जाय, दुष्ट सीधे नही होते। —अज्ञात

अन्तर्गतमलो दुष्टस्तीर्थस्नानशतैरपि।
न शुध्यति यथा भाण्ड सुराया दाहित च तत्॥ —चाणक्य

जिसके हृदय में विकारादि है, अथवा तापादि है, ऐसा दुष्ट सौ वार भी तीर्थस्नान से शुद्ध नही होता, जैसे मदिरा का पात्र जलाया जाय तो भी वह शुद्ध नही होता। —चाणक्य

कवि कोविद गार्वाहि अस नीती। खलसन कलह न भल नहि प्रीती।
—तुलसी (मानस, उत्तर)

खल परिहरिय श्वान की नाई।
—तुलसी (मानस, उत्तर)

वसिये तहा विचार के, जहा दुष्ट डर नाहि।
होत न कवहू भँवर डर, ज्यो चपक वन माहि। —अज्ञात

दुष्ट न छाडे दुष्टता, कैसे हू सुख देत।
धोये हू सौ वेर के, काजर होत न सेत॥ —वृन्द

सन इव खल पर-वन्धन करई। खाल कढाइ विपति सहि मरई॥
खल विनु स्वारथ पर अपकारी। अहि मूषक इव सुनु उरगारी॥
—तुलसी (मानस उत्तर)

क्षमा खड्ग लीने रहैं, खल को कहा बसाय।
अगिन परी तृन रहित थल, आपहि ते वुझि जाय॥ —वृन्द

दर सम्पदा विनाशि नशाही। जिमि कृषि हति हिम उपल विलाही॥
दुष्ट उदय जग आरति हेतू। यथा प्रसिद्ध अवम ग्रह केतू।
—तुलसी (मानस-उत्तर)

वरु भल वास नरक कर ताता। दुष्ट सग जनि देइ विधाता॥ —तुलसी

जैसे उल्लू को सूर्य नही दिखाई पड़ता, इसी प्रकार दुष्ट को भगवान् नही दिखाई पडते। —स्वामी भजनानन्द

यदि दुष्ट को कोई भला कहे तो वह भला नही होगा। कहने से विष मधुर और नमक मीठा नही हो सकता। —अज्ञात

परस्वहरणे युक्त परदाराभिमर्शकम्।
त्याज्यमाहुर्दुरात्मान वेश्म प्रज्वलित यथा॥ —वाल्मीकि

जिस प्रकार जलता हुआ घर त्याग देने योग्य है, उसी प्रकार जो पराया धन हड़पने में लगा हो और पर-स्त्री के साथ भोग करता हो, उस दुष्टात्मा को भी त्याग देने योग्य बताया गया है।

अकरुणत्वमकारणविग्रह परधने परयोषिति च स्पृहा।
स्वजनबन्धुजनेष्वसहिष्णुता प्रकृतिसिद्धमिद हि दुरात्मनाम्॥

—भर्तृहरि

निर्दयता, अकारण वैर करना, दूसरे के धन और स्त्री की सर्वदा इच्छा करना, अपने परिवार और मित्रो की उन्नति न देख सकना, यह दुष्टो की स्वाभाविक आदत है।

दुःख (दे० 'विपत्ति')

दु ख को दूर करने की एक ही अमोघ औषधि है—मन से दु खो की चिन्ता न करना। —वेदव्यास (म०)

दु ख की वलिहारी जाऊ। जव यह होता है तभी तो प्रभु की याद आती है। —अज्ञात

दु ख मनुष्य के विकास का साधन है। सच्चे मनुष्य का जीवन दु ख में ही खिल उठता है। सोने का रग तपाने पर ही चमकता है। —हनुमान प्रसाद पोद्दार

धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपत काल परखियहि चारी॥

—तुलसी (मानस-अरण्य)

दु ख की उत्पत्ति पाप से होती है। —भगवान् बुद्ध

यदि काँटो पर पड जाने से परमेश्वर की याद आती हो तो प्यारे! जव देखो कि ससार के काम-धन्धो में उलझकर राम भूलने लगा है, झटपट अपने तईं नुकीले काटो पर गिरा दो। और कुछ नही तो पीडा के वहाने याद आ ही जायगी।

—स्वामी रामतीर्थ

रहिमन विपदा हू भली जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में जानि परत सब कोय ॥ — रहीम

स्वेच्छा से ग्रहण किये हुए दुख को ऐश्वर्य के समान भोगा जा सकता है।
— शरत् (शेष प्रश्न)

न ह वै सशरीरस्य सत प्रियाप्रिययोरपह्वति रस्ति। — छान्दोग्य उ०

निश्चयपूर्वक जब तक यह शरीर बना हुआ है तब तक सुख और दुख का निवारण नही हो सकता।

चिर ध्येय यही जलने का, ठढी विभूति बन जाना।
पीडा की अन्तिम सीमा, दुख का फिर सुख हो जाना ॥
— महादेवी वर्मा

दुख भोगने से सुख के मूल्य का ज्ञान होता है। — सादी

रज से खूगर हुआ इन्सा तो मिट जाता है रज।
मुशकिलें मुझ पर पडी इतनी कि आसा हो गईं ॥ — गालिब

गम राह नही कि साथ दीजै। दुख बोझ नही कि बाँट लीजै ॥ — नसीम

रहिमन निज मन की विथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहें लोग सब, बाटि न लैहे कोय ॥ — रहीम

यदि मनुष्य पाप कर भी ले तो उसे पुन न दोहराये, न उसे छुपाये और न उसमें रत हो। पाप का सचय ही सब दुखो का मूल है। — गौतम बुद्ध

सुख के बाद दुख आता है और दुख के बाद सुख। मनुष्य के दुख और सुख गाडी के पहिये की तरह घूमते रहते है। — वेदव्यास (महा०)

Men shut their doors against the setting sun
मनुष्य अपना दरवाजा डूबते हुए सूर्य को देख कर बन्द कर लेते है।
— शेक्सपियर

दुख की पिछली रजनी बीच।
विकसता सुख का नवल प्रभात ॥ — जयशकर प्रसाद

Little minds are tamed and subdued by misfortune, but great minds rise above it

दुख छोटे मनुष्यो को वशीभूत कर उन्हें निस्तेज कर देता है, परन्तु महान् पुरुष दुख से ऊपर उठ जाते है। — वाशिंगटन अर्विंग

विना दुख के सुख है निस्सार।
विना आसू के जीवन भार॥ —अज्ञात

दु ख केवल चित्त की एक वृत्ति है, सत्य है केवल आनन्द। —प्रेमचन्द

गहरे दु ख से वाणी मूक हो जाती है। —दि टालमड

वुढापा दु ख है, धनक्षय दु ख है, अप्रिय पुरुषो के साथ रहना दु ख है और प्रिय जनो का विछुडना दु ख है। वध और बधन से भी सव को दु ख होता है, तथा स्त्री के कारण और स्वाभाविक रूप से भी दु ख होता ही रहता है। —वेदव्यास

व्यस्त मनुष्य को आसू वहाने के लिए समय नही। —वायरन

दु ख रहता है तो दुखियो के प्रति हमदर्दी रहती है और भगवान् का निरतर स्मरण होता है। सुख में मनुष्य का हृदय निष्ठुर वन जाता है वह भगवान् को भूल जाते है। —वेदव्यास (महाभारत)

दुःखदायक

वृद्धकाले मृता भार्या वधुहस्तगत धनम्।
भोजन च पराधीन तिस्र पुसा विडम्वना॥ —चाणक्य

वुढापे में मरी स्त्री, वन्धु के हाथ में गया धन और दूसरे के अधीन भोजन ये तीन पुरुषो की विडम्वना हैं, अर्थात दु खदायक होते हैं।

दु खी

अन्याय सहनेवाले से ज्यादा दु खी अन्याय करनेवाला होता है। —प्लेटो

दुखियारो को हमदर्दी के आसू भी कम प्यारे नही होते। —प्रेमचन्द

लोकेषु निर्धनो दु खी ऋणग्रस्तस्ततोऽधिकम्।
ताभ्या रोगयुतो दु खी तेभ्यो दु खी कुभार्यक॥ —विदुर

ससार के दुखियो में पहला दु खी निर्धन है। उससे अधिक दु खी वह है जिसे किसी का ऋण चुकाना हो। इन दोनो से अधिक दु खी है सदा रोगी मनुष्य। सव से दु खी वह है जिसकी पत्नी दुष्टा हो।

दूत

नीति विरोध न मारिय दूता। —तुलसी

दृढ़ता

दृढ़ता बडी प्रबल शक्ति है। पुरुप के सर्व गुणो की रानी है। दृढता वीरता का एक प्रधान अग है। —प्रेमचन्द

दृढता प्रेममन्दिर की पहली सीढी है। —प्रेमचन्द

चित्त में दृढ हो जानेवाला निश्चय चूने का फर्श है, जिसको आपत्ति के थपेडे और भी पुष्ट कर देते हैं। —प्रेमचन्द

When firmness is sufficient, rashness is unnecessary

जब दृढता पर्याप्त है तो उतावलापन अनावश्यक है। —नेपोलियन

ध्येय में दृढ निश्चय कर्म के सदृश है। —यग

दृढ़-प्रतिज्ञ

दृढ-प्रतिज्ञ मनुष्य ससार को अपनी इच्छा के अनुसार झुका लेता है। —गेटे

वह दृढ-प्रतिज्ञ मानव जो प्राण देने के लिए तैयार रहता है, ब्रह्माण्ड तरु को हाथो पर उठा सकता है। —रोम्याँ रोलाँ

दृष्टान्त

दृष्टान्त मानवता की पाठशाला है। —वर्क

Example is more efficacious than precept

दृष्टान्त उपदेश से अधिक फलोत्पादक होता है। —डा० जान्सन

अच्छे दृष्टान्त हमको अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित करते है, एव महान् आत्माओ का इतिहास हमें उदार विचार के लिए प्रोत्साहित करता है। —सेनेका

देवता

जो समस्त मानव जाति को अपनेपन से ओतप्रोत देखते हैं वे देवता हैं। —अज्ञात

पथ श्रुतेर्दर्शयितार ईश्वरा मलीमसामाददते न पद्धतिम्। —कालिदास

पवित्र मार्ग के प्रदर्शक देवतागण स्वय पाप-मार्ग का अनुसरण नही करते।

अस्वाधीन कथ दैव प्रकारैरभिराध्यते।
स्वाधीन समतिक्रम्य मातर पितर गुरुम्॥ — वाल्मीकि

माता, पिता और गुरु—ये प्रत्यक्ष देवता है, इनकी अवहेलना करके अप्रत्यक्ष देवता की विविध उपचारो से आराधना करना कैसे ठीक हो सकता है ?

न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृन्मये।
भावो हि विद्यते देवस्तस्माद् भावो हि कारणम्॥ — चाणक्य

देवता न काठ में है, न पत्थर में है, न मिट्टी की मूर्ति में है, निश्चय है कि देवता भाव में विद्यमान है, इस हेतु भाव ही सव कारण है।

जिनके विचार और कार्य उदारतापूर्ण है, जो दूसरे लोगो की सुविधा का अधिक ध्यान रखते है, वास्तव में वे ही इस भूलोक के देवता है। — अज्ञात

देश

यस्मिन्देशे न सन्मानो न वृत्तिर्न च वान्धवा।
न च विद्यागमोप्यस्ति वास तत्र न कारयेत्॥ — चाणक्य

उस देश में न रहे, जहाँ न आदर है, न जीविका, न वन्धु और न नये ज्ञान की आशा।

जिस देश की शक्ति आन्तरिक शान्ति रखने में खत्म होती है वह कोई अमली काम नही कर सकता। — विनोवा

जैसे मनुष्य वाल-वृद्ध-तरुण अवस्था में परिणत हुआ करता है वैसे ही देश की दशा में भी परिवर्तन होता रहता है। — अज्ञात

देश-भक्त

देश-भक्त के चरणस्पर्श से कारागार अपने को स्वर्ग समझ लेता है, इन्द्रासन उसे देखकर कॉप उठता है, देवता नदन-कानन से उस पर पुष्प-वृष्टि कर अपने को धन्य मानते है, कलकल करती हुई सुर-सरिता और ताण्डव-नृत्य में लीन रुद्र उसका जय जयकार करते है। — अज्ञात

अपने देश से वढकर दूसरा कोई नजदीकी सम्वन्ध नही। — प्लेटो

देशभक्ति का दम भरनेवालो के लिए जनता का खून चूसना वहुत वडा अपराध है। — प्रेमचन्द

Patriotism is the last refuge of a scoundrel
दुरात्मा के लिए देशभक्ति अन्तिम शरण है। —डा० जान्सन

देश-भक्त कर्त्ता की पवित्र कृति है। —अज्ञात

देश-सेवक

जो जनता की सेवा करना चाहते हैं या जिन्हें सच्चे धार्मिक जीवन के दर्शन करने की आशा है वे विवाहित हो या कुँवारे, उन्हें ब्रह्मचारी का जीवन बिताना चाहिये।
—महात्मा गाधी

देश-हित

निज के विचारो तथा देश के हित में किसे चुना जाय यह जानना कभी कभी कठिन हो जाता है। कभी ऐसा भी अवसर आता है जब बहुजन हिताय अपने मौलिक विश्वासो को भी तिलाजलि देनी पडती है। —सरदार पटेल

देशाटन

Travel teaches toleration
देशाटन सहनशीलता की शिक्षा देता है। —डिजरायली

The use of travelling is to regulate imagination by reality
देशाटन का लाभ कल्पना की वास्तविकता में व्यवस्था करना है।
—डा० जान्सन

देशोद्धारक

देश का उद्धार विलासियो के हाथ से नही हो सकता, उसके लिए सच्चा त्याग होना चाहिए। —प्रेमचन्द

देह

इस देही का गरब न करना, माटी में मिल जाए। —मीरा

यदि ससार में कोई वस्तु पवित्र है तो वह है मनुष्य की देह। —ह्विटमैन

विश्व में केवल एक ही मन्दिर है और वह है मनुष्य-शरीर। इस स्वरूप से अधिक पवित्र कोई स्थान नही। —नावलिस

अस्वाधीन कथ दैव प्रकारैरभिराध्यते।
स्वाधीन समतिक्रम्य मातर पितर गुरुम्॥ —वाल्मीकि

माता, पिता और गुरु—ये प्रत्यक्ष देवता है, इनकी अवहेलना करके अप्रत्यक्ष देवता की विविध उपचारो से आराधना करना कैसे ठीक हो सकता है?

न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृन्मये।
भावो हि विद्यते देवस्तस्माद् भावो हि कारणम्॥ —चाणक्य

देवता न काठ में है, न पत्थर में है, न मिट्टी की मूर्ति में है, निश्चय है कि देवता भाव में विद्यमान है, इस हेतु भाव ही सब कारण है।

जिनके विचार और कार्य उदारतापूर्ण है, जो दूसरे लोगो की सुविधा का अधिक ध्यान रखते है, वास्तव में वे ही इस भूलोक के देवता है। —अज्ञात

देश

यस्मिन्देशे न सन्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवा।
न च विद्यागमोप्यस्ति वास तत्र न कारयेत्॥ —चाणक्य

उस देश में न रहे, जहाँ न आदर है, न जीविका, न बन्धु और न नये ज्ञान की आशा।

जिस देश की शक्ति आन्तरिक शान्ति रखने में खत्म होती है वह कोई अमली काम नही कर सकता। —विनोवा

जैसे मनुष्य बाल-वृद्ध-तरुण अवस्था में परिणत हुआ करता है वैसे ही देश की दशा में भी परिवर्तन होता रहता है। —अज्ञात

देश-भक्त

देश-भक्त के चरणस्पर्श से कारागार अपने को स्वर्ग समझ लेता है, इन्द्रासन उसे देखकर कॉप उठता है, देवता नदन-कानन से उस पर पुष्प-वृष्टि कर अपने को धन्य मानते है, कलकल करती हुई सुर-सरिता और ताण्डव-नृत्य में लीन रुद्र उसका जय जयकार करते है। —अज्ञात

अपने देश से बढकर दूसरा कोई नजदीकी सम्बन्ध नही। —प्लेटो

देशभक्ति का दम भरनेवालो के लिए जनता का खून चूसना बहुत बडा अपराध है। —प्रेमचन्द

Patriotism is the last refuge of a scoundrel

दुरात्मा के लिए देशभक्ति अन्तिम शरण है। —डा० जान्सन

देश-भक्त कर्त्ता की पवित्र कृति है। —अज्ञात

देश-सेवक

जो जनता की सेवा करना चाहते हैं या जिन्हें सच्चे धार्मिक जीवन के दर्शन करने की आशा है वे विवाहित हो या कुँवारे, उन्हें ब्रह्मचारी का जीवन बिताना चाहिये।
—महात्मा गाधी

देश-हित

निज के विचारो तथा देश के हित में किसे चुना जाय यह जानना कभी कभी कठिन हो जाता है। कभी ऐसा भी अवसर आता है जब बहुजन हिताय अपने मौलिक विश्वासो को भी तिलाजलि देनी पडती है। —सरदार पटेल

देशाटन

Travel teaches toleration

देशाटन सहनशीलता की शिक्षा देता है। —डिजरायली

The use of travelling is to regulate imagination by reality.

देशाटन का लाभ कल्पना की वास्तविकता में व्यवस्था करना है।
—डा० जान्सन

देशोद्धारक

देश का उद्धार विलासियो के हाथ से नही हो सकता, उसके लिए सच्चा त्याग होना चाहिए। —प्रेमचन्द

देह

इस देही का गरब न करना, माटी में मिल जाए। —मीरा

यदि ससार में कोई वस्तु पवित्र है तो वह है मनुष्य की देह। —ह्विटमैन

विश्व में केवल एक ही मन्दिर है और वह है मनुष्य-शरीर। इस स्वरूप से अधिक पवित्र कोई स्थान नही। —नावलिस

विद्या मित्र प्रवासेषु भार्या मित्र गृहेषु च।
व्याधितस्यौषध मित्र धर्मो मित्र मृतस्य च।।   — चाणक्य

विदेश में विद्या दोस्त होती है, गृह में भार्या दोस्त है, रोगी का दोस्त औषध और मरे का दोस्त धर्म है।

विवेकी मित्र ही जीवन का सबसे बडा वरदान है   — यूरीपिडीज

दोस्ती (दे० 'मित्रता')

Friendship improves happiness, and abates misery, by doubling our joy and dividing our grief

दोस्ती खुशी को दूना करके और दुख को बाँट कर प्रसन्नता बढाती है तथा मुसीबत कम करती है।   — एडीसन

दोस्ती धीरे धीरे पैदा करो, परन्तु जब कर लो तो उसमें दृढ और अचल रहो।
— सुकरात

दौलत, द्रव्य (दे० 'धन')

सारी दौलत परिश्रम की उपज है।   — लाक

दौलत राष्ट्र का जीवन-रक्त है।   — स्विफ्ट

That man is the richest whose pleasures a'e the cheapest

वही व्यक्ति सबसे अधिक दौलतमद है जिसकी प्रसन्नता सबसे सस्ती है।
— थोरो

जल्दी इकट्ठी की हुई दौलत जल्दी ही घट जाती है। थोडी-थोडी इकट्ठी की गयी बढती है।   — गेटे

Wealth consists not in having great possessions, but in having few wants.

दौलत अधिक सग्रह में नही वरन् थोडी आवश्यकताएं होने में है। — इपीक्युरस

नकद दौलत अलादीन का चिराग है।   — बायरन

दौलत की तीन तरह की गति होती है—दान, भोग और नाश, जो न देता है, न खाता है उसकी तीसरी गति होती है, अर्थात् वह नाश को प्राप्त होती है।
— हितोपदेश

Riches serve a wise man but command a fool

दौलत बुद्धिमान की सेवा करती है, और मूर्ख पर शासन। — कहावत

जिनके पास दौलत है वे यदि वृद्ध भी हो चुके हैं तो जवान हैं और दौलत से जो रहित हैं वे जवान भी बुढ्ढे हैं। — पचतंत्र

सस्कृत में पैसे को द्रव्य कहा गया है। द्रव्य माने वहने वाला। अगर वह स्थिर रहा तो रुके हुए पानी की तरह उसमें वदवू आने लगेगी — विनोवा

द्वन्द्व

द्वन्द्व को जीतनेका उपाय द्वन्द्व को मिटाना नही है, लेकिन द्वन्द्वातीत होना, अनासक्त होना है। — महात्मा गांधी

द्वेष

जिनका हृदय वैर या द्वेष की आग में जलता है उन्हें रात में नीद नही आती।
— विदुर

द्वेष-बुद्धि को हम द्वेष से नही मिटा सकते, प्रेम की शक्ति ही उसे मिटा सकती है।
— विनोवा

मानव-मन में द्वेष जैसी भयकरता उत्पन्न करता है वैसी कोई दूसरी वस्तु नही करती। — स्वेटमार्डेन

द्वेषी

द्वेषी को मृत्यु-तुल्य कष्ट भोगना पडता है। — वेदव्यास (म० सभा०)

धन (दे० 'दौलत', 'द्रव्य', 'पैसा')

धन उत्तम कर्मों से उत्पन्न होता है, प्रगल्भता (साहस, योग्यता, कीर्ति, वेग, दृढ निश्चय) से वढता है, चतुराई से फूलता-फलता है और सयम से सुरक्षित होता है। — विदुर

यथा मधुसमदत्ते रक्षन् पुष्पाणि पट्पद ।
तद्वदर्थान्मनुष्येभ्य आदद्यादविहिंसया ।। — विदुर

जैसे भौंरा पुष्प के नष्ट किये विना उसमें से मधु ग्रहण कर लेता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी धन के मूल साधन को नष्ट किये विना उसमें से धन ग्रहण करना चाहिए।

विदेशेषु धन विद्या, व्यसनेषु धन मति ।
परलोके धन धर्म , शील सर्वत्र वै धनम् ॥

विदेश में विद्या धन (सुख का साधन) है, सकट-काल में बुद्धि धन है, परलोक में धर्म धन है, किन्तु शील सर्वत्र धन है। — अज्ञात

यत्कर्म करणेनान्त सतोष लभते नर ।
वस्तुतस्तद् धन मन्ये, न धन धनमुच्यते ॥

जिस काम के करने से मनुष्य के अन्त करण को सतोष होता है मै वास्तविक धन उसी को मानता हू। लौकिक धन को धन नही कहा जाता। — अज्ञात

जो धन दया और ममता से रहित है, उसकी तुम कभी इच्छा मत करो और उसको कभी अपने हाथ से मत छुओ। — सत तिलुवल्लुवर

पूज्यते यदपूज्योऽपि, यदगम्योऽपि गम्यते ।
वन्द्यते यदवन्द्योऽपि, स प्रभावो धनस्य च ॥

धन का ही यह प्रभाव है कि अपूजनीय भी पूजनीय, अगमनीय भी गमनीय और अवन्दनीय भी वन्दनीय हो जाता है। — पचतंत्र

Money is a bottomless sea, in which, honour, conscience and truth may be drowned

धन अथाह समुद्र है जिसमें इज्जत, अन्त करण, और सत्य डूब सकते है।
— कोजले

भाग्य और धन प्राय पुरुषो की गोद में आप से आप टपक पडता है। — बेकन

धनाद्धर्मस्तत सुखम्। —हितोपदेश

धन से धर्म होता है और उससे सुख।

धन ही ससार की प्रमुख वस्तु है। — बर्नार्ड शा

अर्थार्थी जीवलोकोऽय श्मशानमपि सेवते।
जनितारमपि त्यक्त्वा नि स्व गच्छति दूरत ।

इस ससार में धन की कामना करनेवाला मनुष्य श्मशान का भी सेवन करता है, और धन से रहित होने पर अपने जन्म देनेवाले पिता को भी दूर से छोडकर चला जाता है। — पचतन्त्र

यस्यार्थस्तस्य मित्राणि यस्यार्थस्तस्य बाधवा।
यस्यार्थ स पुमाल्लोके यस्यार्थ स च जीवति। —चाणक्य

जिसको धन रहता है उसी के मित्र बहुत होते है, जिसके पास धन रहता है, उसी के बन्धु होते है, जिसके पास धन रहता है वही पुरुष गिना जाता है और जिसको अर्थ है वही जीवित है।

समय ही धन है। —कहावत

धन की प्यास कभी नही बुझती, उसकी ओर से मुह मोड लेना ही परम सुख है।
—वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

धन बढाने की अभिलाषा उन्नति का बीज है। —वेदव्यास (महा०)

पुत्र-धन सबसे श्रेष्ठ है, इसके सामने ससार के सब धन फीके है। —वेदव्यास

यदि धन अपने पास इकट्ठा हो जाय तो वह पाले हुए शत्रु के समान है। उसका छोडना भी कठिन हो जाता है। —वेदव्यास (म० वन०)

धन की सफलता दान में ही है। —वेदव्यास (म० सभा०)

कोई व्यक्ति दो आदमियो की एक साथ सेवा नही कर सकता। चाहे ईश्वर की उपासना कर लो, चाहे कुबेर की। —बाइबिल

धन मनुष्य के दु ख का कारण है। जो धन अच्छे काम में लगाया जाता है, वह भी मनुष्य को स्थायी आनन्द नही देता। —वेदव्यास

Who steals my purse steals my trash.
जो मेरा धन चुराता है, मेरी तुच्छ वस्तु ही ले जाता है। —शेक्सपियर

जो अपने धन से सतुष्ट रहकर धर्म में स्थित रहता है वही सुखी रहता है।
(वेदव्यास म० सभा०)

धर्म करने के लिए भी धन कमाने की अपेक्षा न कमाना ही अच्छा है, जब अन्त में कीचड को धोना ही पडेगा तो छुआ ही क्यो जाय। —वेदव्यास (म० वन०)

पानी बाढो नाव में, घर में बाढो दाम।
दोनो हाथ उलीचिए, यही सयानो काम॥ —कबीर

सुपात्रदानाच्च भवेद्धनाढयो धन-प्रभावेण करोति पुण्यम्।
पुण्य-प्रभावात्सुर-लोकवासी पुनर्धनाढ्य. पुनरेव भोगी।। —अज्ञात

सुपात्र को दान देने से आदमी धनाढ्य होता है, और धन के प्रभाव से पुण्य करता है, एव पुण्य के प्रभाव से सुरलोकवासी होता है और उसके वाद फिर से धनाढ्य और फिर सभी सुखो का भोगनेवाला होता है।

जव धन जरूरत से ज्यादा हो जाता है, तो अपने लिए निकास का मार्ग खोजता है। यो न निकल पायगा, तो जूए में जायगा, घुडदौड में जायगा, ईट-पत्थर में जायगा या ऐयाशी में जायगा। —प्रेमचन्द (गो-दान)

धनवान्, धनी (दें० "टका")

जो अधिक धनवान् है वही अधिक मोहताज है। —सादी

जिसे सव तरह से सतोष है वही धनवान् है। —स्वामी शकराचार्य

धनवानो के हाथ मे माप ही एक है, वह विद्या, सौन्दर्य, वल, पवित्रता और तो क्या, हृदय भी उसीसे मापते हैं। वह माप है—उनका ऐश्वर्य। —जयशकर प्रसाद

धन पाकर फूलना नही चाहिए, विद्वान् होकर अहकार नही करना चाहिए।
—वेदव्यास (म० आदि०)

जैसे प्राणियो के सिर पर मृत्यु का भय सर्वदा सवार रहता है वैसे ही धनी पुरुषो को, राजा, जल, अग्नि, चोर और कुटुम्व का भय सदा वना रहता है। —वेदव्यास

वे धनी आपसे भी अधिक अन्यायी और विचारहीन हैं जो गरीवो को आलसी और कामचोर कहकर पुकारते है। —रस्किन, विजयपथ

जैसे मास को आकाश में पक्षी, भूमि पर हिंसक जीव, और जल में मगर मच्छ खा जाते हैं वैसे ही धनी पुरुष के धन को सब कही दूसरे लोग ही भोगा करते हैं।
—वेदव्यास (म० वन०)

सुई के छेद से ऊट का निकल जाना सम्भव है किन्तु धनी मनुष्यो का स्वर्ग मे पहुचना असम्भव है। —अज्ञात

धनवानो का हृदय धन के भार से दबकर सिकुड जाता है, उसमें उदारता के लिए स्थान नही रहता। —अज्ञात

जिसके जीवन को उसके इर्द-गिर्द की जनता चाहती है, वह सच्चा धनी है। —विनोबा

धन्यवाद

'Please' and 'thank you' are the small change with which we pay our way as social beings They are the little courtesies by which we keep the machine of life oiled and running sweetly

'कृपया' और 'धन्यवाद'—ये छोटी रेजगारी हैं जिनके द्वारा हम सामाजिक प्राणी होने का मूल्य चुकाते हैं। ये ऐसे साधारण शिष्टाचार हैं जिनके द्वारा हम जीवन-यन्त्र को स्नेहयुक्त और चालित रखते हैं। —गार्डनर

धर्म

पर-हित सरिस धरम नहि भाई।
पर-पीडा सम नहि अधमाई॥ —तुलसी

धर्म की शक्ति ही जीवन की शक्ति है, धर्म की दृष्टि ही जीवन की दृष्टि है। —डा० राधाकृष्णन्

विश्वव्यापी धर्म तो एक ही है, यद्यपि उसके सैकडो रूपान्तर है। —जी० बी० शॉ०

श्रूयता धर्मसर्वस्व श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत्॥

सावधान होकर धर्म का वास्तविक रहस्य सुनो और उसे सुनकर उसी के अनुसार आचरण करो। जो कुछ तुम अपने लिए हानिप्रद और दु खदायी समझते हो वह दूसरो के साथ मत करो। —वेदव्यास (म्हा०)

धर्म सचमुच बुद्धि-ग्राह्य नही, हृदय-ग्राह्य है। —महात्मा गांधी

भारतवर्ष का धर्म उसके पुत्रो मे नही, पुत्रियो के प्रताप से ही स्थिर है। भारतीय देवियो ने यदि अपना धर्म छोड दिया होता तो देश कब का नष्ट हो चुका होता। —महर्षि दयानन्द

जो धर्म शुद्ध अर्थ का विरोधी है वह धर्म नही है। जो धर्म राजनीति का विरोधी है वह धर्म नही है। धर्म-रहित अर्थ त्याज्य है। धर्म-रहित राज्यसत्ता राक्षसी है।

—महात्मा गाधी

धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षित।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो, मा नो धर्मो हतो वधीत॥—वेदव्यास

मारा हुआ धर्म ही हमको मारता है और हमसे रक्षा किया हुआ धर्म ही हमारी रक्षा करता है, इसलिये धर्म का हनन नही करना चाहिए, जिससे तिरस्कृत धर्म हमारा विनाश न करे।

जहा दया तह धर्म है, जहा लोभ तह पाप।
जहा क्रोध तह काल है, जहा क्षमा तह आप॥ —कबीर

धर्म को रोका नही जा सकता, अन्तरात्मा या हृदय को दवाया नही जा सकता। धर्म तो हृदय की चीज है और हृदय है स्वतत्र, इसलिए पूजा और धर्म स्वतत्र है।

—स्टालिन

अन्याय सह कर वैठ रहना,
यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने वन्धु को भी,
दण्ड देना धर्म है। —मैथिलीशरण गुप्त

धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्य प्रतिष्ठितम्। —वाल्मीकि

ससार में धर्म ही सवसे श्रेष्ठ है। धर्म में ही सत्य की प्रतिष्ठा है।

धर्म तो मानव-समाज के लिए अफीम है। —कार्ल मार्क्स

धर्म की पवित्रता शरत्कालीन जल-स्रोत के सदृश हो, उसकी उज्ज्वलता शारदीय गगन के नक्षत्रालोक से भी कुछ बढकर और शीतल हो। —जयशकर प्रसाद

मानव की परिपूर्णता में धर्म बाधक है। परलोक की सुन्दर कल्पना कर धर्म अपनी आज की जिम्मेवारियो से वरी हो जाता है। धर्म आज रूढियो और स्थिर स्वार्थों का समर्थक है। —आचार्य नरेन्द्रदेव (राष्ट्रीयता और समाजवाद)

सच्चा धर्म तो पापो की जड काट कर मुक्ति का मार्ग-प्रदर्शन करता है पर मिथ्या धर्म में मुक्ति टको के वल विकती है। —रस्किन

धर्मों यो वाधते धर्मं न स धर्म्मं कुधर्म्म तत्।
धर्म्माविरोधी यो धर्म्मं स धर्म्मं सत्यविक्रम ॥ —अज्ञात

जो धर्म दूसरे धर्म को वाधा पहुँचाता है वह धर्म नही कुधर्म है। जो धर्म का अविरोधी है, सत्य पराक्रमशील धर्म वही है।

सच्चा धर्म हमें अपने आश्रितो का सम्मान करना सिखाता है और मानवता, दरिद्रता, विपत्ति, पीडा एव मृत्यु को ईश्वरीय देन जानता है। —गेटे

In death the many become one, in life the one becomes many.
Religion will be one when God is dead.
मृत्यु में अनेक एक हो जाता है, जीवन में एक अनेक रहता है।
धर्म एक हो जायगा जब ईश्वर का अत होगा। —रवीन्द्र

धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्मलक्षणम् ॥ —मनु०

धर्म के दश चिह्न है। अर्थात् जिसमें यह दश चिह्न धैर्य्य, क्षमा, दम न करना, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध पाये जावें वह मनुष्य धार्मिक है।
धर्म से केवल मोक्ष की ही नही अर्थ और काम की भी सिद्धि होती है।
—वेदव्यास (महा०)

जहा धर्म नही, वहा विद्या, लक्ष्मी, स्वास्थ्य आदि का भी अभाव होता है। धर्म-रहित स्थिति में विल्कुल शुष्कता होती है, शून्यता होती है। —महात्मा गांधी

If men are so wicked with religion, what would they be without it

धर्म होने पर जव मनुष्य इतने नीच है, तो धर्म न होने पर वे क्या होगे।
—फ्रैंकलिन

मान वडाई के मोल में धर्म को न दो, मान-वडाई को पैरो तले कुचल डालो, पर धर्म को वचाओ। —अज्ञात

धर्म सेवा का नाम है, लूट और कत्ल का नही। —प्रेमचन्द

धर्म परमेश्वर की कल्पना कर मनुष्य को दुर्वल वना देता है, उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न नही होने देता और उसकी स्वतन्त्रता का अपहरण करता है।
—आचार्य नरेन्द्रदेव (राष्ट्रीयता और समाजवाद)

धर्म-पालन

धर्म का पालन करने पर जिस धन की प्राप्ति होती है, उससे वढकर कोई धन नही है।
— वेदव्यास (म० अ०)

धर्म-बंधन

धर्म का वधन रक्त और वीर्य के वधन से सुदृढ है। — अज्ञात

धर्म-मार्ग

धर्म का मार्ग फूलो की सेज नही है। इसमें वडे-वडे कष्ट सहन करने पडते हैं।
— अज्ञात

धर्म-शिक्षा

जो चीज विकार को मिटा सके, राग-द्वेष को कम कर सके, जिस चीज के उपयोग से मन सूली पर चढते समय भी सत्य पर डटा रहे वही धर्म की शिक्षा है।
— महात्मा गांधी

धर्म-हीन

मेरा विश्वास है कि बिना धर्म का जीवन विना सिद्धात का जीवन होता है और विना सिद्धान्त का जीवन वैसा ही है जैसा कि विना पतवार का जहाज। जिस तरह विना पतवार का जहाज मारा-मारा फिरेगा, उसी तरह धर्महीन मनुष्य भी ससार सागर में इधर से उधर मारा मारा फिरेगा और अपने अभीष्ट स्थान तक नही पहुचेगा।
— महात्मा गाधी

धर्मात्मा

सत्यस्य नाव सुकृतमपीपरन्। — ऋग्वेद

धर्मात्मा को सत्य की नाव पार लगाती है।

जिमि सरिता सागर महु जाही। यद्यपि ताहि कामना नाही॥
तिमि सुख-सम्पति, विनहिं वुलाये। धर्मशील पहं जाहि सुभाये॥
— तुलसी (मानस-बाल०)

धीर

विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषा न चेतासि त एव धीरा ।

—कालिदास (कुमारसभव)

यथार्थ में धीर पुरुष तो वे ही है जिनका चित्त विकार उत्पन्न करनेवाली परिस्थिति में भी अस्थिर नही होता।

धीर मनुष्य मन प्रसाद का सहारा लेकर आपत्ति की नदियो को सुखपूर्वक पार कर जाते है। वे अपने को दु खी नही करते। —अज्ञात

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु, गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु, युगान्तरे वा।
न्यायात्पथ प्रविचलन्ति पद न धीरा ॥ —भर्तृहरि

नीतिज्ञ लोग चाहे निन्दा करें अथवा प्रशसा करें, लक्ष्मी (धन) चाहे आये अथवा बिलकुल चली जाय, मृत्यु चाहे आज ही हो जाय अथवा एक युग के बाद, पर धीर लोग न्याययुक्त मार्ग से कभी पैर नही हटाते।

धीरज

सकट के समय धीरज धारण करना ही मानो आधी लडाई जीत लेना है।

—प्लाटस

जिसे धीरज है और जो मेहनत से नही घबराता कामयाबी उसकी चेरी है।

—अज्ञात

कबिरा धीरज के धरे, हाथी मन भर खाय।
टूक एक के कारने, स्वान घरै घर जाय॥ —कबीर

धीरज धारण करनेवाले दरिद्र की धीरता के गुण को कोई भी व्यक्ति दूर नही कर सकता। जैसे नीचे मुख वाली आग की उठती शिखा को कोई भी मनुष्य नीचे की ओर कभी झुका नही सकता।

धीरज सारे आनन्दो और शक्तियो का मूल है। —जान रस्किन

घूर्त

नराणा नापितो धूर्त पक्षिणा चैव वायस ।
चतुष्पदी श्रृगालस्तु स्त्रीणा धूर्ता च मालिनी ॥ —चाणक्य

पुरुषो में नाई, पक्षियो में कौवा, पशुओ में सियार और स्त्रियो मे मालिन धूर्त होती है।

धूर्त को धोखा देने से दूना आनन्द आता है। —अज्ञात

A wolf in lamb's skin
मुख में राम बगल में छुरी। —कहावत

बुरा आदमी और भी बुरा है जब वह साधु बनने का स्वाग रचता है।
—बेकन

One may smile and smile and be a villain
हँसमुख व्यक्ति भी नीच हो सकता है। —शेक्सपियर

No man is a hypocrite in his pleasures
अपने आनन्द में कोई भी व्यक्ति पाखडी नही हो सकता। —डा० जानसन

धूर्तता

धूर्तता नीचता का आवश्यक बोझ है। —डा० जानसन

It is time to fear when tyrants seem to kiss
जब जुल्मी चूमने का अभिनय करे तो डरना चाहिए। —शेक्सपियर

धूल

धूल अपमान सह लेती है और बदले में पुष्पो का उपहार देती है। —रवीन्द्र

पादाहत यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति ।
स्वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वर रज ॥
—माघ (शिशुपालवध)

जो धूल पैर से आहत होने पर उडकर (आहत करनेवाले के) शिर पर चढ जाती है, वह अपमान होने पर भी स्वस्थ बने रहनेवाले शरीरधारी मनुष्य से श्रेष्ठ है ।

धैर्य

शत्रु का लोहा गरम भले हो जाय पर हथौडा तो ठण्डा रह कर ही काम दे सकता है।
—सरदार पटेल

निर्गलिताम्बुगर्भं शरद्धन नार्दति चातकोऽपि। —कालिदास (रघुवंश)

चातक भी शरद के सूने बादलो से पानी नही माँगता।

Adopt the pace of nature, her secret is patience

प्रकृति का अनुसरण करो—धैर्य उसका रहस्य है। —एमर्सन

Patience is bitter, but its fruit is sweet

धैर्य कडुआ होता है पर उसका फल मधुर होता है। —रूसो

धैर्य सतोप की कुजी है। —मोहम्मद साहब

व्यसने वार्थकृच्छ्रे वा भये वा जीवितान्तगे।
विमृशश्च स्वया बुद्ध्या धृतिमान्नावसीदति॥ —वाल्मीकि

शोक में, आर्थिक सकट में अथवा प्राणान्तकारी भय उपस्थित होने पर जो अपनी बुद्धि से दु खनिवारण के उपाय का विचार करते हुए धैर्य धारण करता है, उसे कष्ट नही उठाना पडता।

धैर्य वीरता का अति उत्तम, मूल्यवान् और दुष्प्राप्य अग है। —जान रस्किन

धोखा

सब धोखो में प्रथम और सबसे खराब अपने आप को धोखा देना है। इसके आगे सब पाप सरल हो जाते है।

—बेली

Deceiving of a deceiver is no knavery

धूर्त को धोखा देना धूर्तता नही है। —कहावत

We are never deceived, we deceive ourselves

दूसरे हमें धोखा नही देते, हम स्वय अपने को धोखा देते हैं। —गेटे

जो मनुष्य जानबूझ कर अपने मित्र को धोखा देता है, वह अपने ईश्वर को धोखा देगा।
—लेवेटर

ध्यान

जब बुद्धि में चचलता न हो तभी ध्यान है। मन को वशीभूत करना ही ध्यान है।
—अज्ञात

ध्यान वायुयान है जो साधक को अनन्त आनन्द और अक्षय शाति के साम्राज्य में उडा ले जाता है। —स्वामी शिवानन्द

क्या तुम्हें मालूम है कि सात्विक प्रकृति का मनुष्य कैसे ध्यान करता है? वह आधी रात को अपने बिस्तर के अन्दर ध्यान करता है, ताकि लोग उसे देख न सकें।
—रामकृष्ण परमहस

ध्यान ही मोक्ष प्राप्त करने का एकमात्र राजमार्ग है। —स्वामी शिवानन्द

ध्यान एक रहस्यमयी सीढी है जो अवनी और अम्बर को मिलाती है एव साधक को ब्रह्म के अमरलोक की ओर ले जाती है। —स्वामी शिवानन्द

ध्यान ही वह गगन है जहा मगन मानव-मन के अमित बलशाली आराध्य की तस्वीर खीचने में, दैवी चितेरे भी असफल होते आये है। —अज्ञात

ध्येय

महान् ध्येय महान् मस्तिष्क की जननी है। —इमर्सन

Not failure, but low aim is crime
असफलता नही वरन् निकृष्ट ध्येय ही अपराध है। —जे० आर० लावेल

ध्येयरहित व्यक्ति की पवन सहायता नही करता। —मानटेन

ध्येय जितना महान् होता है, उसका रास्ता उतना ही लम्बा और बीहड होता है।
—साने गुरूजी

महान् ध्येय का मौन में ही सर्जन होता है। —साने गुरूजी

हमारा ध्येय सत्य होना चाहिए, न कि सुख। —सुकरात

ध्वनि

ध्वनि ही सृष्टि का मूल है। —प्रेमचन्द

नकल

Man is an imitative creature, and whoever is foremost leads the herd

मानव नकल करनेवाला प्राणी है और जो सबसे आगे होता है वही नेतृत्व करता है। — शिलर

No man ever yet became great by imitations

केवल नकल करने से कोई मनुष्य महत्त्व नही प्राप्त कर सकता। — जानसन

A good imitation is the most perfect originality

अच्छी नकल पूर्ण मौलिकता है। — वाल्टायर

नकल चापलूसी का अकपट रूप है। —कोल्टन

नकेल

पुरुषो की नकेल स्त्रियो के हाथ में है। —प्रेमचन्द

नगर

नगर मनुष्य की दुनिया है परन्तु गाव ईश्वर की। — काउपर

Cities force growth and make men talkative and entertaining, but they make them artificial

नगर वृद्धि को प्रोत्साहन देता है और मनुष्य को बातूनी एव मनोरजक बना देता है, किन्तु वह उन्हें बनावटी बनाता है। — एमर्सन

नजर

One of the most wonderful things in nature is a glance of the eye, it transends speech, it is the bodily symbol of identity.

प्रकृति की सबसे आश्चर्यजनक वस्तु नेत्रो की एक झलक है। यह वाणी से भी श्रेष्ठ होती है, यह एकता का शारीरिक चिह्न है। — एमर्सन

The eye of the master will do more work than both his hands

स्वामी की नजर उसके दोनो हाथो की अपेक्षा अधिक कार्य करती है।

— फ्रैंकलिन

नजीर

A precedent embalms a p-inciple

नजीर सिद्धान्त को सुरक्षित रखती है। —डिजरायली

नफरत

Hatıed is the madness of the heart

नफरत हृदय का पागलपन है। —वायरन

नफरत नफरत से कभी कम नही होती, नफरत प्रेम से ही कम होती है, यही सर्वदा उसका स्वभाव रहा है। —गौतमबुद्ध

नफरत और प्रेम दोनो अन्धे है। —कहावत

शत्रुओ के प्रति हमारी नफरत उनके आनन्द की अपेक्षा हमारे आनन्द को अधिक नुकसान पहुचाती है। —अज्ञात

नमस्कार

नम इदुग्र नम आ विवासे नमो दाधार पृथिवीमुतद्याम्।
नमो देवेभ्यो नम ईश एषा कृत चिदेनो नमसा विवासे। —ऋग्वेद

नमस्कार सबसे बडी वस्तु है, इसलिए मै वेदो को नमस्कार करता हू, देवता लोग भी नमस्कार के वशीभूत है, इसलिए मै नमस्कार द्वारा किये हुए पापो का प्रायश्चित्त करता हूँ।

नमस्ते

'नमस्ते' स्वीकार करने से 'नमस्ते' करनेवाले को यह सतोष हो जाता है कि आपने उसके सन्मान को स्वीकार कर लिया है। —अज्ञात

'नमस्ते' प्रशसा का एक हलका-सा स्वरूप है अत उत्तम प्रभाव डालने के लिए यह एक सहज उपाय है। —अज्ञात

नम्रता (दे० "दीनता")

जिनमें नम्रता नही आती, वे विद्या का पूरा सदुपयोग नही कर सकते।
—महात्मा गांधी

ईश्वर के सामने दान हजार पापो को भी ढक लेता है। मनुष्य के सम्मुख नम्रता बुराइयो को छिपा लेती है। —ग्रेविली

जहाँ नम्रता से काम निकल आये वहाँ उग्रता नही दिखानी चाहिए। —प्रेमचन्द

Politeness goes far, yet costs nothing
नम्रता का प्रभाव दूर तक जाता है और उसमें कुछ व्यय भी नही होता।
—स्माइल्स

हम महानता के निकटतम होते हैं, जब हम नम्रता में महान् होते हैं। —रवीन्द्र

Humility is the solid foundation of all the virtues
नम्रता समस्त सद्‌गुणो का दृढ आधार है। —कन्फ्यूशियस

नम्रता का अर्थ है अहभाव का आत्यन्तिक क्षय। —महात्मा गाधी

भवति नम्रास्तरव फलोद्‌गमैर्नवाम्बुभिर्भूरि विलम्बिनो घना ।
अनुद्धता सत्पुरुषा समृद्धिभि स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥
—कालिदास (शाकुन्तल)

फल के आने से वृक्ष झुक जाते हैं, नव वर्षा के समय बादल झुक जाते है, सम्पत्ति के समय सज्जन भी नम्र होते हैं। परोपकारियो का स्वभाव ही ऐसा है।

यथा नवहिं बुध विद्या पाये। —तुलसी

After crosses and losses men grow humbler and wiser
दुख और हानि सहने के बाद आदमी अधिक नम्र और ज्ञानी होता है।
—फ्रैंकलिन

अभिमान की अपेक्षा नम्रता से अधिक लाभ होता है। —कहावत

Nothing is so scandalous as a man that is proud of his humility
अपनी नम्रता का घमण्ड करने से अधिक निन्दनीय और कुछ नही है।
—मारकस औरेलियस

To be humble to superiors is duty, to equals courtesy, to inferiors nobleness, and to all, safety

बडो के प्रति नम्रता कर्त्तव्य है, बराबरवालो के प्रति विनयसूचक है, छोटो के प्रति कुलीनता की द्योतक एव सबके प्रति सुरक्षा है। —सर टी० मूर

सवते लघुताई भली, लघुता ते सव होय।
जस द्वितिया को चन्द्रमा, शीश नवै सव कोय॥ — कवीर

It was pride that changed angels into devils, it is humility that makes men as angels

अभिमानवश देवता दानव बन जाते हैं और नम्रता से मानव देवता।

— आगस्टाइन

उडने की अपेक्षा जव हम झुकते है तव विवेक के अधिक निकट होते है।

— वर्ड्सवर्थ

नयन (दे० 'आँख' 'नैन', 'नेत्र')

नयनन में नय नाहिनै, याते नयना नाम।

नर-रत्न

जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी। नहिं लावहिं परतिय मनु डीठी।
मगन लहहिं न जिन्ह के नाही। ते नर-वर थोरे जग माही॥

— तुलसी (मानस-बाल)

नरक

काम क्रोध मद लोभ सव, नाथ नरक के पथ।

— तुलसी (मानस-सुन्दर)

नरक में गिरना सहल है। — वर्जिल

सासारिक वैभव और सत्ता के पीछे पागल होकर जो दूसरे का बुरा चाहता है और उसका अहित करने का प्रयत्न करता है, उसका जीवन नरक वन जाता है।

— हरिभाऊ उपाध्याय

ससार मे छल, प्रवञ्चना और हत्याओ को देखकर कभी कभी मान ही लेना पडता है कि यह जगत ही नरक है। कृतघ्नता और पाखड का साम्राज्य यही है।

— जयशकर प्रसाद

वे मनुष्य जो ज्ञान की वडी-वडी वातें वनाते हैं परन्तु जिनके हृदय में दया नही है, अवश्य नरक में जाते है। — कवीर

Hell is God's justice, heaven is his love, earth his long suffering
नरक ईश्वर का न्याय है, स्वर्ग उसका प्रेम है, पृथ्वी उसकी दीर्घकालीन यातना।
— वारोन वेसेनवर्ग

Hell is opportunity missed and truth seen too late
अवसर का हाथ से निकल जाना, और समय वीतने के वाद यथार्थता का ज्ञान होना ही नरक है। — अज्ञात

The mind in its own place, and in itself can make a heaven of hell, a hell of heaven
मन अपनी निज रुचि से अपने ही में स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग वना सकता है। — मिल्टन

The torture of a bad conscience is the hell of living soul
खराव अन्त करण की यातना जीवित आत्मा का नरक है। — काल्विन

नरक-गामी

जो मनुष्य दूसरो की जीविका नाश करते है, दूसरो का घर उजाडते है, दूसरे की स्त्री का उसके पति से वियोग कराते है और मित्रो में भेद-भाव उत्पन्न करते हैं वे अवश्य नरक में जाते हैं। — वेदव्यास (महा०)

नशा

नशे में क्रोध की भाति ग्लानि का वेग भी सहज में ही उठ आता है। — प्रेमचन्द

नसीहत

Good counsel has no price.
अच्छी नसीहत अमूल्य होती है। — मेजिनी

Never give advice unless asked
विना माँगे किसी को नसीहत न दो। — जर्मन कहावत

नसीहत वर्फ के सदृश है, जितनी धीरे-धीरे गिरती है उतनी ही अधिक स्थायी होती है और उतनी ही गहराई से मन में प्रवेश करती है। — कोलरिज

Admonish your friends privately but praise them openly

अपने मित्रो को चुपके में नसीहत दो किन्तु प्रशसा खुले आम करो। —साइरस

अच्छी नसीहत मानना अपनी ही योग्यता वढाना है। —गेटे

ऐसी नसीहत न दो जो अति सुन्दर हो वल्कि ऐसी दो जो अति लाभदायक हो। —सोलन

नहीं

रहिमन ते नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाँहि।
उनते पहिले वे मुए जिन मुख निकसत नाँहि॥ —रहीम

The man who has not learned to say 'No' will be a weak if not a wretched man as long as he lives.

वह मनुष्य जिसने 'नही' कहना नही सीखा, जब तक वह जीवित रहेगा अगर दीन नही तो दुर्बल अवश्य रहेगा। —ए० मैंकलेरन

A 'No' response is a most difficult handicap to overcome. When a person has said 'No', all his pride of personality demands that he remains consistant with himself

एक बार उत्तर में मुह से 'नही' निकल जाने पर फिर 'हा' कहलवाना बडा ही कठिन होता है। जब कोई व्यक्ति एक बार 'नही' कह देता है, तो फिर उसके व्यक्तित्व का सारा गर्व यह चाहता है कि वह 'हा' न करे। —प्रो० ओवरस्ट्रीट

He that cannot decidedly say 'No' when tempted to evil is on the highway to ruin

वह मनुष्य जो बुराई के लिए लालच देने पर भी निश्चयपूर्वक 'नही' नही कह सकता, सर्वनाश के पथ पर है। —जे० हेवीज

Get a student to say 'No' at the beginning or a customer, child, husband or wife, and it takes the wisdom and the patience of angels to transform that bristling negative into an affirmative

एक बार आरम्भ में विद्यार्थी, ग्राहक, बच्चे या पति या पत्नी के मुंह से नही निकल लेने दो, तो फिर उस दुखद 'नही' को 'हा' में बदलवाने के लिए देवताओ की बुद्धिमत्ता और धैर्य चाहिए। —डेल कारनेगी

नागरिक

कोई नागरिक इतना अमीर न हो कि दूसरे को खरीद सके या इतना गरीब न हो कि उसे अपने को बेचने के लिए बाध्य होना पड़े। —रूसो

नाटक

The drama is the book of the people

नाटक मानव की पुस्तक है। —विल्मट

A young girl must not be taken to the theatre, let us say it once for all It is not only the drama which is immoral, but the place

किसी नवयुवती को नाटकशाला में नही ले जाना चाहिए। केवल नाटक ही नही वरन् वह स्थान भी अपवित्र होता है। —एलेकजेन्डर ड्यूमा

नातेदारी

नात नेह दूरी भली, लो रहीम जिय जानि।
निकट निरादर होत है, ज्यो गडही को पानि॥ —रहीम

नाम

रूप विशेष नाम बिनु जाने।
करतलगत न परहिं पहिचाने॥
देखियहि रूप नाम आधीना।
रूपज्ञान नहिं नाम विहीना॥ —तुलसी

How vain, without the merit, is the name

गुणरहित नाम निरर्थक होता है। —होमर

आदि नाम पारस अहै, मन है मैला लोह।
परसत ही कचन भया, छूटा बधन मोह॥ —कबीर

What is in a name ? That which we call a rose, by any other name would smell as sweet

नाम में क्या है ? जिसे हम गुलाब कहते है, वह किसी और नाम से भी वैसी ही सुगन्धि देगा। —शेक्सपियर

आदि नाम निज मूल है, और मन्त्र सब डार।
कह कबीर निज नाम बिनु, बूडि मुआ ससार।। —कबीर

A good name is rather to be chosen than great riches
अधिक धन की अपेक्षा नेकनाम (सुयश) अधिक पसन्द करना चाहिए।
—कहावत

खोया हुआ सुयश कदाचित ही पुन मिलता है—जब चरित्र का पतन होता है तब सब कुछ खो जाता है और जीवन का बहुमूल्य रत्न सदैव के लिए चला जाता है।
—अज्ञात

जबहि नाम हिरदे धरा, भया पाप का नास।
मानो चिनगी आग की, परी पुरानी घास।। —कबीर

अपना नाम सदा अमर रखने के लिए मनुष्य बडे से बडा जोखिम उठाने, धन व्यय करने, हर प्रकार के कष्ट सहने, यहाँ तक कि मरने के लिए भी तैयार हो जाता है।
—सुकरात

नामो में देश-काल की सस्कृति का प्रतिबिम्ब रहता है। —धीरेन्द्र वर्मा

प्रत्येक मनुष्य अपने नाम को सर्वोच्च स्थान प्रदान करना चाहता है। अत दूसरो को प्रभावित करने के लिए उनके नाम की प्रतिष्ठा कीजिए। —अज्ञात

नाम-जप

नामजप, विषयवासना की ओर जाती हुई विचारधारा को रोकता है। यह मन को ईश्वर की ओर, अनन्त आनन्द-प्राप्ति की ओर जाने के लिए प्रेरित करता है।

नाम-जप जन्म और मृत्यु को नष्ट कर देता है। —स्वामी शिवानन्द

नायक

Every hero becomes a bore at last
प्रत्येक नायक अत में 'बोर' हो जाता है (उससे मन ऊबने लगता है)। —एमर्सन

नारायण

नारायण परम ज्योति है, नारायण परमात्मा है, नारायण परब्रह्म है, नारायण परमतत्त्व है, नारायण परम ध्याता है, और नारायण ही परम ध्यान है।
—नारायण उप०

नारी

नारी केवल मासपिंड की संज्ञा नहीं है। आदिम काल से आज तक विकास-पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापों को स्वयं झेलकर, और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर, मानवी ने जिस व्यक्तित्व, चेतना और हृदय का विकास किया है उसी का पर्याय नारी है।

—महादेवी वर्मा (दीपशिखा से)

घृतकुम्भसमा नारी तप्तांगारसमः पुमान्।
तस्माद्घृतं च वह्निं च नैकत्र स्थापयेद् बुधः॥ —अज्ञात

नारी घी का कुप्पा है और पुरुष जलता हुआ अंगार। दोनों के संयोग से ज्वाला प्रज्वलित हो उठती है। इसलिए घी और आग को कभी भी बुद्धिमान् पुरुष इकट्ठा न रखे।

सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ। सब विधि अगम अगाध दुराऊ॥
निज प्रतिबिम्ब मुकुर गहि जाई। जानि न जाय नारिगति भाई॥

—तुलसी (मानस, अयोध्या)

नारी के जीवन का संतोष ही स्वर्ण-श्री का प्रतीक है। —डा० रामकुमार वर्मा

नारी पुरुष की अंकाश्रिता है, जैसे वृक्ष के सहारे कोई बेल बढ़ रही हो वैसे ही, वह छाया है, अनुगामिनी है, अवलम्बिता है। उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व जैसे है ही नहीं, वह पुरुष की सहयात्रिणी सहचरी नहीं, अनुचरी है। —अज्ञात

A woman should be seen, not heard
नारी देखने की वस्तु है, सुनने की नहीं। —सफाक्लीज

Men have sight, women insight.
मनुष्य को दृष्टि होती है और नारी को दिव्य-दृष्टि। —विक्टर ह्यूगो

Women, in your laughter you have the music of the fountain of life
नारी! तेरे हास में जीवन-निर्झर का संगीत है। —रवीन्द्र

नारी की करुणा अंतर्जगत का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुए हैं। —जयशंकर प्रसाद (अजातशत्रु)

नारीजाति स्नेह और सौजन्य की देवी है, वह नर-पशु को मनुष्य बनाती है, वाणी से जीवन को अमृत-मय बनाती है, उसके नेत्र में आनन्द का दर्शन होता है। वह सतप्त हृदय की शीतल छाया है, उसके हास्य में निराशा मिटाने की अपूर्व शक्ति है। —अज्ञात

राष्ट्र का उदय नारीजाति के उदय से होता है। —अज्ञात

नारी तुम केवल श्रद्धा हो। —प्रसाद

साप बीछि को मत्र है, माहुर झारे जात।
विकट नारि पाले परी, काटि करेजा खात॥ —कबीर

नारी निन्दा मत करो, नारी नर की खान।
नारी तें नर होत हैं, ध्रुव प्रहलाद समान॥ —अज्ञात

नारी बडे से बडा दु ख भी होठो पर मुस्कराहट लेकर सह लेती है। —अज्ञात

पवित्र नारी का अपमान ससार में क्रान्ति का अग्रदूत है। —डा० रामकुमार वर्मा

कितने ही कठोरता के इन्जेक्शन देने पर भी नारी का हृदय कोमल ही रहता है। —अज्ञात

नारीजाति को खाली हाथ कभी बैठना नही चाहिए। —शरत्चन्द्र

न पिता नात्मजो नात्मा न माता न सखीजन ।
इह प्रेत्य च नारीणा पतिरेको गति सदा॥

—वाल्मीकि (रा० अयो०)

नारी के लिए इस लोक और परलोक में एकमात्र पति ही सदा आश्रय देनेवाला है। पिता, पुत्र, माता, सखियाँ तथा अपनी यह आत्मा भी उसकी सच्ची सहायक नही है।

यदि नारी वर्तमान के साथ भविष्य को भी अपने हाथ में ले ले तो वह अपनी शक्ति से विजली की तडप को भी लज्जित कर सकती है। —अज्ञात

पुरुष विजय का भूखा होता है, नारी समर्पण की। पुरुष लूटना चाहता है, स्त्री लुट जाना। —महादेवी वर्मा

नाश

नरपति नसत कुमत्र सो, साधु कुसगति पाय।
विनसत सुत अति प्यार सो, द्विज विन पढे नसाय॥ —विदुर

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सत । —श्रीकृष्ण (गीता)

असत् का अस्तित्व नही है और सत् का नाश नही है।

नाशवान्

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ता शरीरिण । —श्रीकृष्ण (गीता)

नित्य रहनेवाले देही की यह देह नाशवान् कही गयी है।

नास्तिक

वह नास्तिक है जो अपने आप में विश्वास नही रखता। —स्वामी विवेकानन्द

अपने अदर छिपी हुई दैवी शक्तियो में विश्वास न करनेवाला आलसी मनुष्य ही वास्तव में नास्तिक है। —अज्ञात

Virtue in distress and vice in triumph, make atheists of mankind.

सद्गुण जव विपत्ति में पड जाय और विजय में अवगुणो की जीत होने लगे तो यह स्थिति मनुष्य को नास्तिक वना देती है। —ड्राइडेन

नास्तिको वेदनिन्दक ।

नास्तिक वह है जो वेदो की निन्दा करता है। —अज्ञात

निन्दा

जो मनुष्य अपनी निंदा सह लेता है उसने मानो सारे जगत् पर विजय प्राप्त कर ली। —वेदव्यास (म० आदि०)

निंदक नियरे राखिए, आगन कुटी छवाय।
विन पानी सावुन विना, निर्मल करै सुभाय।। —कवीर

हमें धर्म का विचार हो या न हो, मगर निंदा का भय अवश्य होता है। —सुदर्शन

दोष पराये देख कर, चलत हसत हसत।
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अत।। —कवीर

Take each man's censure, but reserve thy judgment

प्रत्येक की निन्दा सुन लो, परन्तु अपना निर्णय गुप्त रखो। —शेक्सपियर

कछु कहि नीच न छेड़िये, भलो न वाको संग।
पाथर डारे कीच में, उछरि बिगारै अंग॥ —वृन्द

रहिमन ओछे नरन ते, तजौ बैर औ प्रीति।
काटे चाटे श्वान के, दुहूँ भाँति विपरीत॥ —रहीम

लातहु मारे चढ़ति सिर, नीच को धूरि समान।
—तुलसी (मा० अयो०)

दह्यमाना सुतीव्रेण नीचा परयशोऽग्निना।
अशक्ता स्तत् पदं गन्तु ततो निन्दा प्रकुर्वते॥ —चाणक्य

नीच दूसरे की यशरूपी अत्यन्त तीव्र अग्नि से जलकर और उसके पद को प्राप्त करने में असमर्थ होकर उसकी निंदा करते हैं।

रहइ न नीच-मते चतुराई। —तुलसी (मा० अयो०)

नीचता

स्वभाव की नीचता वर्षों में भी मालूम नहीं होती। —सादी

नीति

नीति न तजिय राज-पद पाये। —तुलसी (मा० अयो०)

नीति धर्म की दासी है। धर्मपालन के लिए मनुष्य को नीतिमान होना चाहिए और आजीवन नीतिपथ न छोड़ना चाहिए। —अज्ञात

सम्पत्ति रहते हुए भी उसकी वृद्धि के लिए प्रयत्न करना नीतिनिपुणता है।
—वेदव्यास (म० सभा०)

नीति-शास्त्र

नीतिशास्त्र ही इस भूमंडल का अमृत है, यही उत्तम नेत्र है और यही श्रेय-प्राप्ति का सर्वोच्च उपाय है। —वेदव्यास (म० शा०)

नीरोग

सबसे बढ़कर नीरोग वही है जो निश्चिन्त है। —अज्ञात

नृत्य

नृत्य भी शरीर की चेष्टाओ पर आश्रित होने के कारण मूर्ति के बन्धनो से सर्वथा मुक्त नही। वह एक प्रकार का अभिनीत गीत है। —महादेवी वर्मा (दीपशिखा)

समस्त कलाओ में नृत्य सबसे महान्, सबसे अधिक प्रभाव डालनेवाली और सबसे अधिक सुन्दर कला है, क्योकि यह जीवन का केवल अनुवाद या पृथक्करण ही नही है यह स्वय ही जीवन है। —हेलाफ इल्लिस

नेक

सौजन्यधन्यजनुष पुरुषा परेषा
दोषान् विहाय गुणमेव गवेषयन्ति।
त्यक्त्वा भुजङ्गमविष हि पटीरगर्भात्,
सौगन्ध्यमेव पवना परिवाहयन्ति ॥ —अज्ञात

वे भले मानुष लोग धन्य है जो दूसरे के दोषो को छोडकर गुण को ही खोजते रहते है। मलयाचल के चन्दन वृक्ष पर लिपटे हुए सर्पों के विष को न ग्रहण कर वायु चन्दन की सुगन्धि का ही वहन करती है।

नेक बनने में सारी आयु लग जाती है, बदनाम होने में तो एक दिन भी नही लगता। ऊपर चढना कैसा कठिन है ? इसमें कितना समय लगता है ? मगर गिरना कितना आसान है ? इसमें परिश्रम कुछ नही करना पडता। —अज्ञात

नेकी

जितने दिन जिन्दा हो इसको गनीमत समझो और इससे पहले कि लोग तुम्हे मुर्दा कहें नेकी कर जाओ। —सादी (गुलिस्ता)

सम्मान नेकी का उपहार है। —सिसरो

नेकी का उपहार नेकी है। —एमर्सन

बदी करने के मौके दिन में सौ बार मिलते है, लेकिन नेकी करने का मौका साल में केवल एक बार मिलता है। —वाल्टेयर

Our life is short, but to expand that span to vast eternity is virtue's work

हमारा जीवन क्षणिक है लेकिन उसे अनन्त तक फैलाना सद्गुण का काम है। —शेक्सपियर

नेता

Leaders are like ships on the ocean—they come and they go, but the people are like the ocean itself, they always remain

नेता समुद्र में जहाज के सदृश हैं, वह आते है और चले जाते है, परन्तु जनता समुद्र की भाँति है जो सदा रहती है। —मॉरिस हिड्स

Reason and judgment are the qualities of a leader

तर्क और निर्णय नेता के गुण हैं। —टेसीटस

लोगो को सही रास्ता वताना नेताओ का काम है। —विनोवा

अगर अन्धा अन्धे का नेतृत्व करे, तो दोनो खाई में गिरेंगे। —अज्ञात

नेतृत्व

भूतकाल का कष्ट और कुर्वानी भविष्य के नेतृत्व के लिए हर हालत मे पासपोर्ट नही देती। —सुभाषचन्द्र बोस

नेत्र, नैन (दे० 'आँख')

नेत्र ही ज्ञान का द्वार है। —अज्ञात

रहिमन तीर की चोट ते, चोट परे वचि जाय।
नैन बान की चोट ते, धन्वतरि न बचाय॥ —रहीम

जूठे जानि न सग्रहे, मन मुंह निकसे बैन।
याही तें मानो किये, वातन को विधि नैन॥ —बिहारी

लाज लगाम न मानही, नैना मो बस नाहिं।
ये मुंह जोर तुरग लो, ऐंचत हू चलि जाहिं॥ —बिहारी

तनक किरकिरी के परे, नैन होत बेचैन।
वे नैना कैसे जियें, जिन नैनन विच नैन॥ —बिहारी

दृगन लगत वेधत हियो, विकल करत अग आन।
ये तेरे सव तें विषम, ईछन तीछन बान॥ —बिहारी

नैना नेकु न मानही, कितो कहौं समुझाय।
तन-मन हारे हू हँसैं, तिनसो कहा बसाय॥ —बिहारी

वर जीते सर मैन के, ऐसे देखे मै न।
हरिनी के नैनान ते, हरि नीके ये नैन॥ —विहारी

नौकर

अपने सेवक से वहुत मेल-जोल मत वढाओ। प्रारम्भ में स्नेह-सा प्रतीत होता है परन्तु अन्त में यह घृणा उत्पन्न करता है। —फुलर

We become willing servants to the good by the bonds their virtues lay upon us

महान् व्यक्तियो द्वारा की गयी नेकी के वन्धनो मे बँधकर हम उनके ऐच्छिक सेवक हो जाते है। —सर पी सिडनी

नौकरी

He profits most who serves best

जो सवसे ज्यादा सेवा करता है वह सवसे अधिक लाभ उठाता है। —शेल्डन

उत्तम खेती, मध्यम वान।
निकृष्ट चाकरी, भीख निदान॥ —कहावत

They serve God well, who serve His creatures

जो मानव की सेवा करते है वे ही ईश्वर की सवसे अच्छी सेवा करते है। —कैरोलियन नारटन

Service is no inheritance सेवा पैतृक सम्पत्ति नही है। —कहावत

न्याय

हा न्याय! क्या तू भी जानवरो के हृदय में चला गया और मनुष्यो में ज्ञान नहीं रहा। (दे० 'उन्माद') —शेक्सपियर

न्याय को प्रेम कलंकित नही कर सकता। —प्रेमचन्द

Justice delayed is justice denied

न्याय में विलम्व करना, न्याय को अस्वीकार करना है। —ग्लैडस्टन

प्रथम त्यागमय दिव्य कर्म 'न्याय करना' है। —रस्किन

Delay of justice is injustice
न्याय में विलम्ब अन्याय है। —लैंडर

न्याय के पद पर बैठनेवाले मनुष्य को पक्षपात और द्वेष से मुक्त होना चाहिए।
—अज्ञात

ईश्वरीय न्याय की चक्की यद्यपि मन्द गति से चलती है, लेकिन चलती अवश्य है
—जार्ज हर्बर्ट

सत्य का कर्म में परिणत होना न्याय है। —डिजरायली

न्याय का थोडा-बहुत व्यवहार भी वर्षों की झूठ-भक्ति से लाख दर्जे अच्छा है।

आज का हमारा न्याय तो बुरी तरह बेजबान और खुले आम अन्धा है। बेकसी की दीर्घ मार से वह पीडित है। —रस्किन

न्याय के सदृश कोई गुण वास्तव में ईश्वरतुल्य और महान् नही है।
—एडीसन

बिना बुद्धिमत्ता के न्याय असम्भव है। —फ्राउड

हम प्रेम का दरिया बहा सकते हैं पर न्याय के नाम पर नानी मर जाती है।
—रस्किन

ससार में झूठी तुलाओ का आदर होता है और न्याय दीनारो के मोल बिकता है।
—अज्ञात

न्यायाधीश

Four things belong to a judge to hear courteously, to answer wisely, to consider soberly and to decide impartially

न्यायाधीश में चार बातें होनी चाहिए—शिष्टतापूर्वक सुनना, बुद्धिमत्तापूर्ण उत्तर देना, गभीर होकर विचार करना और निष्पक्ष होकर न्याय करना। —सुकरात

पंडित

लाख मूर्ख तजि राखिये, इक पडित बुधधाम।
सर शोभा इक हस सों, लाख काक केहि काम॥ —विदुर

अधिगतपरमार्थान्पण्डितान्मावमस्थास्तृणमिव लघु लक्ष्मीर्नैव तान्सरुणद्धि।
मदमिलितमिलिन्दश्यामगण्डस्थलाना न भवति विसतन्तुर्वारण वारणानाम्॥
—भर्तृहरि

जिन पडितो को परमार्थ का ज्ञान है उनका अपमान मत करो। तृण के समान लघु लक्ष्मी उनको ऐसे नही रोक सकती जैसे कि मदधाराकृष्ट भ्रमरो से शोभित श्याम मस्तकवाले हाथियो को कमल की नाल।

पोथी पढ पढ जग मुआ, पडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम के, पढ़ै सो पडित होय॥ —कबीर

पक्ष

आत्मवर्गहितमिच्छति सर्व। —भारवि

सभी लोग अपने अपने पक्ष का कल्याण चाहते है।

पछतावा

पछतावा कायरता के लिए होता है वीरता के लिए नही, वीरता कभी नही पछताती। —अज्ञात

करता था तो क्यो किया, अब करि क्यो पछिताय।
बोवे पेड बबूल का, आम कहाँ से खाय॥ —कबीर

पड़ोसी

When your neighbour's house is afire, your own property is at stake

जब तुम्हारे पडोसी के घर मे आग लगी हो तो तुम्हारी अपनी सम्पत्ति भी खतरे में है। —होरेस

अपने पडोसी के विरुद्ध कभी झूठी गवाही न दो। —बाइबिल

पडोसी से प्रेम करनेवाला विपत्ति में भी सुखी रहता है, जब कि पडोसी से वैर ठाननेवाला सम्पत्ति में भी दुखी होता है। —अज्ञात

पति

सुयोग्य पति अपनी पत्नी को सम्मान की अधिकारिणी बना देता है। —मनु

A good husband should be deaf and a good wife blind

अच्छे पति को बहरा और अच्छी पत्नी को अन्धी होना चाहिए। —कहावत

A husband is a plaster that cures all the ills of girlhood

पति वह लेप है जो लडकियो के कुँआरेपन की सभी बीमारियो को अच्छा कर देता है। —मोलिएरी

साध्वीना हि स्थिताना तु शीले सत्ये श्रुते स्थिते।
स्त्रीणा पवित्र परम पतिरेको विशिष्यते ॥ —वाल्मीकि (रा० अ०)

जो सत्य, सदाचार, शास्त्रो की आज्ञा और कुलोचित मर्यादा में स्थित रहती है, उन साध्वी स्त्रियो के लिए एकमात्र पति ही परम पवित्र एव सर्वश्रेष्ठ आश्रय है।

पतिव्रत

कोकिलाना स्वरो रूप नारीरूप पतिव्रतम्।
विद्या रूप कुरूपाणा क्षमा रूप तपस्विनाम् ॥ —चाणक्य

कोकिला का स्वर ही उसकी सुन्दरता है और स्त्रियो की सुन्दरता उनका पातिव्रत धर्म है। कुरूपो की सुन्दरता विद्या है और तपस्वियो की सुन्दरता उनकी क्षमा है।

एकै धरम एक व्रत नेमा। काय, वचन, मन पति-पद-प्रेमा ॥
—तुलसी (मानस, अरण्य)

पतिव्रता

पतिवरता पति को भजै, और न आन सुहाय।
सिह-बचा जो लघना, तो भी घास न खाय ॥ —कबीर

पतिव्रता स्त्री पति का सिरताज है। —कहावत

पतिवरता मैली भली, गले काँच की पोत।
सब सखियन में यो दिपै, ज्यो रवि-ससि की जोत ॥ —कबीर

सूरा के तो सिर नही, दाता के धन नाहि।
पतिवरता के तन नही, सुरति बसै मन माहि ॥ —कबीर

जिस प्रकार मदारी बलपूर्वक सर्प को बिल से निकाल लेता है वैसे ही पतिव्रता स्त्री पति को लेकर स्वर्गलोक में पूजित होती है। —हितोपदेश

पत्नी

For a wife, take the daughter of a good mother

पत्नी के चुनाव में किसी सुचरित्र मा की बेटी को पसन्द करो। —फुलर

In the election of a wife as in a project of war, to err but once is to be undone forever

पत्नी के चुनाव में युद्ध की योजना के सदृश केवल एक बार गलती करना सदा के लिए बरबाद हो जाना है। —मिडिलटन

कार्येषु मन्त्री, करणेषु दासी, भोज्येषु माता, रमणेषु रम्भा।
धर्मानुकूला, क्षमया धरित्री, भार्या च षाड्गुण्यवतीह दुर्लभा॥ —अज्ञात

कामकाज मे मन्त्री के समान सलाह देनेवाली, सेवादि में दासी के समान काम करनेवाली, माता के समान सुन्दर भोजन करानेवाली, शयन के समय रम्भा (वेश्या) के समान सुख देनेवाली और धर्म के अनुकूल तथा क्षमादि गुण धारण में पृथिवी के समान स्थिर रहनेवाली, ऐसे छ गुणो से युक्त स्त्री सुदुर्लभ होती है।

A woman must be a genius to create a good husband

स्त्री में प्रतिभा होनी चाहिए कि वह अच्छे पति का निर्माण कर सके।

—बालजक

पत्नी पुरुष की पूरक है। पुरुष के सभी अभाव उसे पाकर स्वयमेव भर जाते है।

पदवी

Virtue is the first title of nobility

सद्गुण कुलीनता की पहली पदवी है। —मोलिएरी

पर-घर

कौन बडाई जलधि मिलि, गग नाम भो धीम।
केहि की प्रभुता नहि घटी, पर-घर गये रहीम॥ —रहीम

अमृत का भाण्डार, ओषधियो का नायक, अमृतमय शरीर और पूर्ण शोभा से युक्त होते हुए भी यह चन्द्रमा जब (अमावस्या को) सूर्यमण्डल में पहुचता है तो उसकी सब चमक-दमक और शोभा लुप्त हो जाती है। ठीक ही है, ऐसा कौन है जो दूसरे के घर जाकर लघुता को न पहुँच जाय। —अज्ञात

परतन्त्र

मनुष्य प्रकृति का अनुचर और नियति का दास है। —जयशंकर प्रसाद

स्वभावजेन कौन्तेय निबद्ध स्वेन कर्मणा।
कर्तु नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत्॥
—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

हे कौन्तेय! अपने स्वभावजन्य कर्म से वद्ध होने के कारण तू जो मोह के वश होकर नही करना चाहता वह परवश होकर करेगा।

ईश्वर सर्वभूताना हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥ —गीता

हे अर्जुन! ईश्वर सव प्राणियो के हृदय में वास करता है और अपनी माया के वल से उन्हें चाक पर चढे हुए घडे की तरह घुमाता है।

लायी हयात आये, कजा ले चली चले।
अपनी खुशी न आये, न अपनी खुशी चले॥ —जौक़

मनुष्य अपना स्वामी नही है, वह परिस्थितियो का दास है—विवश है। वह कर्त्ता नही है, वह केवल साधन है। —भगवतीचरण वर्मा (चित्रलेखा)

पर-पीड़ा

पर-पीडा सम नहिं अधमाई। —तुलसी (मानस)

अगर तुम्हारे एक शव्द से भी किसी को पीडा पहुँचती है, तो तुम अपनी सव नेकी नष्ट हुई समझो। —सत तिरुवल्लुवर

अपनी पीडा सह लेना और दूसरे जीवो को पीडा न पहुँचाना, यही तपस्या का स्वरूप है। —सत तिरुवल्लुवर

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

अठारहो पुराणो में वेदव्यासजी ने केवल दो वातें कही है। परोपकार करके पुण्य कमाया जाता है और दूसरो को कष्ट पहुँचा कर पाप। —अज्ञात

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा एक रूप वहुधा य करोति।
—कठोपनिषद्

सब भूतो का अन्तरात्मा परमात्मा एक होते हुए भी अनेक रूपो मे प्रतीत होता है।

परमात्मा (दे० "ईश्वर" तथा "परमेश्वर")

परमात्मदेव को जानने पर सारे बन्धन कट जाते हैं, क्लेशो के क्षीण होने पर जन्म और मृत्यु से छुटकारा मिल जाता है। —श्वेताश्वतर

God kisses the finite in His love and man the infinite

परमात्मा अपने प्रेम में परिमित को ग्रहण करता है, और मनुष्य अनत को।

—रवीन्द्र

तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा। —यजुर्वेद

उस परमात्मा में ही सम्पूर्ण लोक स्थित हैं।

ईश्वर के द्वारा प्रस्तावित कोई वस्तु मनुष्य की शक्ति के परे नही होती।

—अज्ञात

नैराश्यपूर्ण अधकार में ईश्वर का नाम हममें शक्ति का सचार करता है।

—महात्मा गाधी

परमात्मा ही सबकी आँखो से दूसरो की ओर देखता है। —गुरु अर्जुन देव

God is truth and light His shadow

परमात्मा सत्य है और प्रकाश उसकी छाया। —प्लेटो

परमानन्द

जगत् में दो ही परमानन्द में रहते है—(१) मूर्ख एव उद्यम-रहित बालक और (२) भगवत्-प्राप्त गुणातीत पुरुष। —श्रीमद्भागवत

परमेश्वर (दे० "ईश्वर" तथा "परमात्मा")

न सदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम्।
ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु त पश्यते निष्कल ध्यायमान ॥

—श्वेता० उप०

परमेश्वर को कोई आँखो से नही देख सकता, किन्तु हममें से हर एक मन को पवित्र करके विमल बुद्धि से परमेश्वर को देख सकता है।

'एकमेवाद्वितीयम्' —छान्दोग्य

'एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति'　　　　— ऋग्वेद

'एक सन्त बहुधा कल्पयन्ति'

एक ही परमेश्वर है, कोई उसका जैसा दूसरा नही। एक ही को विप्र लोग वहुत से नामो से वर्णन करते हैं। वह है एक ही, किन्तु उसकी वहुत प्रकार से कल्पना करते हैं।

परम्परा

Tradition is an important help to history, but its statements should be carefully scrutinized before we rely on them.

परम्परा इतिहास को महत्वपूर्ण सहयोग देती हैं, परन्तु उसकी वातो को सूक्ष्म रूप से जाँचकर तभी हमें उस पर विश्वास करना चाहिए।　　　　— एडीसन

परहित (दे० "परोपकार")

परहित लागि तजहिं जो देही।
सतत सत प्रशसहिं तेही॥　— तुलसी (मानस-वाल)

जिसमें दया नही है वह तो जीते जी ही मुर्दे के समान है। दूसरे का भला करने से अपना ही भला होता है।　　　　— अज्ञात

कोई व्यक्ति सचाई, ईमानदारी तथा लोक-हितकारिता के राजपथ पर दृढता-पूर्वक चलता रहे तो उसे कोई भी वुराई क्षति नही पहुँचा सकती।

— हरिभाऊ उपाध्याय

परहित वस जिनके मन माँही। तिन्ह कहु जग दुर्लभ कछु नाही॥
परहित सरिस धरम नहि भाई।　　— तुलसी, मानस

प्रिय वानी जे सुनहि जे कहही, ऐसे नर निकाय जग अहही।
वचन परमहित सुनत कठोरे, सुनहिं जे कहहिं, ते नर प्रभु थोरे।

—तुलसी (मानस, लका)

परहित-निरत निरतर मन-क्रम-वचन नेम निवहौंगो।　—तुलसी

पराक्रम

No one reaches a high position without daring

विना पराक्रम के कोई उच्च पद पर नही पहुँचता।　　　　— साइरस

तदल प्रतिपक्षमुन्नतेरवलम्ब्य व्यवसायवन्ध्यताम्।
निवसन्ति पराक्रमाश्रया न विषादेन समं समृद्धय ॥ —भारवि

उन्नति-पथ के बाधक अनुत्साह का अवलम्बन करके पड़े रहना ठीक नही, क्योकि समृद्धियाँ पराक्रमशील (उत्साही) पुरुष का आश्रय लेती है और अनुत्साही का परित्याग कर देती हैं।

पराजय

पराजय से सत्याग्रही और अहिंसक को निराशा नही होती। उससे तो कार्य-क्षमता और लगन बढती है। और सत्य से मनुष्य की बुद्धि परिष्कृत होकर उसका मार्ग-दर्शन करती है। — महात्मा गांधी

What is defeat ? Nothing but education, nothing but the first step to something better

पराजय क्या है ? कुछ नही, केवल शिक्षा एवं अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति की ओर पहला कदम है। — वेन्डेल फिलिप

पराधीन

नात्मन कामकारो हि पुरुषोऽयमनीश्वर ।
इतश्चेतरतश्चैनं कृतान्त परिकर्षति ॥ — वाल्मीकि (रा०अ०)

मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार कुछ नही कर सकता, क्योकि यह पराधीन होने के कारण असमर्थ है। काल इसे इधर उधर खीचता रहता है।

एतावज्जन्मसाफल्यं यदनायत्तवृत्तिता।
ये पराधीनता यातास्ते वै जीवन्ति के मृता ॥ — हितोपदेश

स्वाधीनता का होना ही जन्म की सफलता है और जो पराधीन होने पर भी जीते हैं तो मरे हुए कौन हैं ? अर्थात् वे ही मरे के समान हैं जो पराधीन रहते हैं।

पराधीन सपनेहुँ सुख नाही। —तुलसी (मानस)

If you put a chain around the neck of a slave, the other end fastens itself around your own

अगर गुलाम के गले के चारो तरफ आप एक जंजीर बाँधते है तो उसका दूसरा किनारा स्वयं आप के ही गले में बँध जाता है। — एमर्सन

परामर्श

He that gives good advice, builds with one hand, he that gives good counsel and example, builds with both

जो मनुष्य नेक सलाह देता है, वह एक हाथ से निर्माण करता है, और जो मनुष्य उपयुक्त परामर्श के साथ दृष्टान्त भी देता है, वह दोनो हाथो से निर्माण करता है।

— बेकन

परिग्रह

परिग्रह का मतलब सञ्चय या इकट्ठा करना है। सत्य-शोधक अहिंसक परिग्रह नही कर सकता। — महात्मा गाधी

जो विचार हमे ईश्वर से विमुख रखते है, या ईश्वर की ओर नही ले जाते, वे सब परिग्रह में शुमार होते है और इसलिए वे त्याज्य है। — महात्मा गाधी

परमात्मा परिग्रह नही करता, वह अपने लिए आवश्यक वस्तु रोज-रोज पैदा करता है। — महात्मा गाधी

सच्ची सस्कृति—सुधार और सभ्यता का लक्षण परिग्रह की वृद्धि नही, बल्कि विचार और इच्छापूर्वक उसकी कमी है। जैसे-जैसे परिग्रह कम करते है वैसे-वैसे सच्चा सुख और सच्चा सन्तोप बढता है। सेवा-क्षमता बढती है।

— महात्मा गाधी

केवल सत्य की आत्मा की दृष्टि से विचारें तो शरीर भी परिग्रह है। भोगेच्छा के कारण हमने शरीर का आवरण खडा किया है, और उसे टिकाये रखते है।

— महात्मा गाधी

परिग्रही

जो मनुष्य अपने दिमाग में निरर्थक ज्ञान ठूँस रखता है वह परिग्रही है।

महात्मा गाधी

परिचय

किसी को अपना परिचय देना बुरा नही है, बुरा तभी है जब वह किसी स्वार्थ या अहकार से दिया जाता है। — अज्ञात

परिणाम

फलत्याग का यह अर्थ भी नही है कि परिणाम के सम्बन्ध में लापरवाही रहे। परिणाम और साधन का विचार और उसका ज्ञान अत्यावश्यक है।—महात्मा गाधी

परिपूर्णता

परिपूर्णता धीरे धीरे प्राप्त होती है, उसको समय की आवश्यकता होती है।
—वाल्टेयर

Trifles make perfection, and perfection is no trifle
छोटी-छोटी बातो से पूर्णता प्राप्त होती है, और पूर्णता कोई छोटी बात नही है।
—माइकेल एन्जिलो

This is the very perfection of man, to find out his own imperfection
मानव की परिपूर्णता अपनी अपूर्णता को जान लेने में है। —ऑगस्टाइन

परिवर्तन

जीवन-ऋतु में परिवर्तन स्वाभाविक है। —अज्ञात

परिवर्तन ही सृष्टि है, जीवन है। स्थिर होना मृत्यु है। निश्चेष्ट शाति मरण है। प्रकृति क्रियाशील है। —जयशकर प्रसाद

परिश्रम (दे० 'श्रम')

परिश्रम हमारा देवता है। —विनोबा

न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवा । —ऋग्वेद

विना स्वय परिश्रम किये देवो की मैत्री नही मिलती।

Without labour nothing prospers
विना परिश्रम के उन्नति नही होती। —सफोक्लीज

परिश्रम सभी पर विजय प्राप्त करता है। —होमर

परिश्रम उज्ज्वल भविष्य का पिता है। —अज्ञात

जीवन में शारीरिक और मानसिक परिश्रम के विना कोई फल नही मिलता। दृढचित्त और महान् उद्देश्यवाला मनुष्य जो करना चाहे सो कर सकता है।
—ऐरी शेफर

Genius begins great works, labour alone finishes them.

प्रतिभा महान् कार्यों का प्रारम्भ करती है किन्तु परिश्रम ही उनको समाप्त करता है। — जोवरी

परिश्रम की निज की प्रतिष्ठा इतनी है कि उसने महात्मा को प्रतिष्ठा दी। — विनोबा

जो अपने हिस्से का काम किये विना ही भोजन पाते हैं वे चोर हैं। —महात्मा गांधी

परिश्रम से भागनेवाला किसी न किसी प्रकार की चोरी अवश्य करता है। यदि नही करता तो भविष्य में करेगा। — अज्ञात

परिश्रमी

परिश्रमी के घर के द्वार को भूख दूर से ताकती है पर भीतर नही घुस सकती। — अज्ञात

परिस्थिति

मनुष्य विगडता है या तो परिस्थितियो से या पूर्व सस्कारो से। परिस्थितियो से गिरनेवाला मनुष्य उन परिस्थितियो का त्याग करने से ही वच सकता है। — प्रेमचन्द

पुरुषार्थ परिस्थितियो को अपने अनुकूल वनाने में है। —महात्मा गांधी

Men are the sport of circumstances, when the circumstances seem the sport of men

मनुष्य परिस्थितियो की क्रीडा है जब कि परिस्थितियाँ ही मनुष्य को क्रीड़ा मालूम पडती हैं। — वायरन

In all our reasoning concerning men we must lay it down as a maxim that the great part are moulded by circumstances.

मनुष्य के वारे में, हमें अपनी सारी युक्तियो में यह सिद्धान्त के रूप में मान लेना होगा कि जीवन का अधिकाश भाग परिस्थितियो द्वारा निर्मित होता है। — रावर्ट हाल

Deep tragedy is the school of great men.

गम्भीर परिस्थिति ही महापुरुषो का विद्यालय है। — महात्मा गांधी

मनुष्य परिस्थितियो का दास नही है, परिस्थितियाँ मनुष्य की दास हैं। — डिजरायली

स्वतन्त्र वुद्धि के लोग भी एक हद तक यदि परिस्थिति के गुलाम नही होते तो कम से कम परिस्थिति द्वारा गढे जाते है। — विनोबा

मनुष्य परतन्त्र है, परिस्थितियो का दास है। — भगवतीचरण वर्मा

परीक्षा

दातुश्चैव परीक्षा वै दुर्भिक्षे जायते नृभि।
शूरस्यैव तु सग्रामे मित्रस्य च तथापदि॥
अशक्तौ च तया स्त्रीणा विपत्तौ सुकुलस्य च।
स्नेहस्य च परोक्षेण सत्यस्य सकटे गते॥

— वेदव्यास (शिवपुराण)

दाता की परीक्षा दुर्भिक्ष में, वीर की युद्ध में, मित्र की आपत्काल में, स्त्री की निर्धनावस्था में, अच्छे कुल की विपत्ति में, प्रेम की परोक्ष में और सत्य की परीक्षा सकट के समय होती है।

हेम्न सलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धि श्यामिकापि वा। — रघुवंश

सुवर्ण की विशुद्धता की परीक्षा अग्नि में होती है और उसके खोटेपन की भी।

जिस प्रकार सोने को काटकर, तपाकर, घिसकर और पीटकर उसकी जाँच की जाती है, उसी प्रकार त्याग, शील, गुण और कर्म इन चार प्रकारो से पुरुष की भी परीक्षा की जाती है। — चाणक्य

परोपकार

पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहि सुसपति पाइ।

— तुलसी (मानस-अरण्य)

जिस शरीर से धर्म न हुआ, यज्ञ न हुआ और परोपकार न हो सका, उस शरीर को धिक्कार है, ऐसे शरीर को पशु-पक्षी भी नही छूते। — अज्ञात

भवन्ति नम्रास्तरव फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घना।
अनुद्धता सत्पुरुषा समृद्धिभि स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्॥

— कालिदास (शकुन्तला)

फल आने से वृक्ष झुक जाते है, नये वरसाती जल से भरे हुए बादल खूब फैलकर झुक जाते है, समृद्धियो के आने से सज्जन पुरुष नम्र हो जाते है —परोपकारियो का यह स्वभाव ही है।

किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा यत्राश्रिता हि तरवस्तरवस्त एव।
मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण ककोलनिम्बकुटजान्यपि चन्दनानि ॥

— भर्तृहरि

उस सोने अथवा चादी के पहाड से क्या फल जहाँ पैदा होनेवाले वृक्ष यदि वैसे ही वृक्ष रह गये। हम तो मलयाचल को ही विशिष्ट मानते हैं जिस पर पैदा होनेवाले ककोल, नीम और कुरैया के वृक्ष भी चन्दन के समान सुगन्धित हो जाते हैं।

पाखण्डी

अनार्यस्त्वार्यसस्थान शौचाद्धीनस्तथा शुचि ।
लक्षण्यवदलक्षण्यो दु शील शीलवनिव ॥

—वाल्मीकि (रा० अयो०)

पाखण्डी मनुष्य अनार्य होकर भी आर्य के समान मालूम हो सकता है, शौचाचार से हीन होकर भी अपने को परम शुद्ध रूप में प्रकट कर सकता है, उत्तम लक्षणो से शून्य होकर भी सुलक्षण-सा दिखाई दे सकता है और बुरे स्वभाव का होकर भी दिखाने के लिए सुशील-सा आचरण कर सकता है।

पागलपन

No excellent soul is exempt from mixture of madness
कोई भी महान् आत्मा पागलपन के मिश्रण से वरी नही है। — अरस्तू

Insanity in individual is something rare, but in groups, parties, nations and epochs it is the rule
व्यक्तियो का पागलपन असाधारण वात है, किन्तु गिरोहो, दलो, राष्ट्रो और युगो का पागलपन नियम है। — नीत्शे

पाठशाला

जो मनुष्य एक पाठशाला खोलता है वह ससार का एक जेलखाना बन्द कर देता है। — ह्यूगो

School houses are the republican line of fortification
विद्यालय ही लोकतन्त्र की किलेवन्दी है। — होरेसमैन

आजीविका का साधन शरीर है और पाठशाला चरित्रनिर्माण की जगह है। उसे शरीर की जरूरतें पूरी करने का साधन समझना, चमड़े की जरा सी रस्सी के लिए भैंस को मारने के बराबर है। — महात्मा गांधी

पान

ताम्बूल मुखरोगनाशनिपुण संवर्धन तेजसो।
नित्य जाठरवह्नि वृद्धिजनन दुर्गन्धदोषापहम् ॥
वक्त्रालंकरण प्रहर्षजनन विद्वन्नृपाग्रे रणे।
कामस्यायतन समुद्भवकर लक्ष्म्या सुखस्यास्पदम् ॥ — अज्ञात

ताम्बूल (पान) मुख के रोगो का नाशक है, तेज को बढानेवाला है, उदराग्नि को नित्य प्रदीप्त करनेवाला है, दुर्गन्धि आदि दोषो का नाशक है, मुख का आभूषण है, हर्ष को बढानेवाला है, विद्वान्, राजा और रणभूमि के लिए मंगलदायी है, कामदेव का मंदिर है, अभ्युदयकारक है तथा लक्ष्मी का निवासस्थल है।

पाप

कोई भी कर्म अपने आप पाप अथवा पुण्य नही हो सकता, ठीक जिस प्रकार बिन्दु या शून्य का स्वत. कोई मूल्य नहीं होता। — स्वामी रामतीर्थ

किसी कर्म को पाप नहीं कहा जा सकता, वह अपने नग्न-रूप में पूर्ण है, पवित्र है। युद्ध में हत्या करना धर्म है, परन्तु दूसरे स्थल पर अधर्म। — जयशंकर प्रसाद

कायेन कुरुते पाप मनसा संप्रधार्य तत्।
अनृत जिह्वया चाह त्रिविध कर्म पातकम् ॥
— वाल्मीकि (रा० अयो०)

असत्यरूप पाप को मनुष्य पहले मन में विचारता है, फिर उसे शरीर द्वारा करता है, तब जिह्वा से कहता है, अत मानसिक, वाचिक और कायिक—तीन प्रकार के पातक होते हैं।

शरीर को रोगी और दुर्बल रखने के समान दूसरा कोई पाप नही है।
— लोकमान्य तिलक

Not failure but low aim is crime
असफलता नही वरन् निकृष्ट ध्येय ही पाप है। — टेनीसन

ससार में दुर्बल और दरिद्र होना पाप है। —प्रेमचन्द

अनजान में जो पाप होता है उसका प्रायश्चित्त है—देवता उसे क्षमा कर देते हैं। किन्तु जान-बूझकर जो पाप किया जाता है, उससे कैसे वचा जा सकता है?
—शरत्चन्द्र (काशीनाथ)

पाप का पुरस्कार मृत्यु है। —स्वामी रामतीर्थ

पाप छिपाने से बढता है। —शरत्चन्द्र (विराजवहू)

यदि मुझे विश्वास होता कि ईश्वर मुझे क्षमा कर देगा और मनुष्य मेरे पाप को न जान सकेंगे, तो भी पाप की अनिवार्य तुच्छता के कारण मुझे उसके करने में लज्जा आयेगी। —प्लेटो

आँके व मुसीबते गिरफ्तारम न वमासीयते। —सादी (गुलिस्ता)

पापो में लिप्त होने की अपेक्षा दु खो में फँसा रहना अच्छा है।

पापो की स्मृति पापो से अधिक भयानक होती है। —अज्ञात

जिस प्रकार अग्नि अग्नि का शमन नही कर सकती उसी प्रकार पाप पाप का शमन नही कर सकता। —टालस्टाय

Poverty and wealth are comparative sins

दरिद्रता और धन दोनो तुलनात्मक पाप हैं। —विक्टर ह्यूगो

पाप एक प्रकार का अँधेरा है जो ज्ञान का प्रकाश होते ही मिट जाता है। —अज्ञात

जहाँ मिथ्याभिमान है वही पाप है। —महात्मा गाधी

अपना कर्त्तव्य करने के पहले दूसरे के कर्त्तव्य की आलोचना करने से पाप होता है। —शरत्चन्द्र (पण्डितजी)

ससार में सब प्राणी स्वतन्त्र और स्वाभाविक जीवन व्यतीत करने के लिए आये हैं, उनको स्वार्थ के लिए कष्ट पहुँचाना महान् पाप है। —लोकमान्य तिलक

मनुष्य जब एक बार पाप के नागपाश में फँसता है, तब वह उसी में और भी लिपटता जाता है, उसी के गाढ आलिंगन में सुखी होने लगता है। पापो की शृंखला बन जाती है। उसी के नये नये रूपो पर आसक्त होना पडता है। —जयशंकर प्रसाद

पाप से घृणा करो, किन्तु पापी से नही। —महात्मा गांधी

मानवो के सम्पूर्ण पापो को मैं उनके स्वभाव की अपेक्षा उनकी बीमारी समझता हूँ। —रस्किन

The recognition of sin is the beginning of salvation

पाप की स्वीकृति मुक्ति का श्रीगणेश है। —ल्यूथर

जहाँ किसी प्रलोभन से प्रेरित होकर तुम कोई पाप करने को उतारू हो, वही ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करो। —स्वामी रामतीर्थ

ससार में जितने पाप हैं उन सबसे बढकर पाप है मनुष्य की दया के ऊपर अत्याचार करना। —शरत्चन्द्र (रमा)

पाप का फल दु ख नही, किन्तु एक दूसरा पाप है। —जयशकर प्रसाद

शरीर से तभी पाप होते हैं, जब कि पाप मन में होते हैं। छोटे बच्चे के मन में काम नही होता, वह युवतियो के वक्षस्थल पर खेलता है, उसके शरीर में कोई विकार नही होता। —अज्ञात

Man-like it is to fall into sin, fiendlike it is to dwell therein, Christ-like it is, for sin to grieve, God-like it is, all sin to leave

पाप में पडना मानवस्वभाव है, उसमें डूबे रहना शैतान-स्वभाव है, उस पर दु खित होना सत-स्वभाव है और सब पापो से मुक्त होना ईश्वरस्वभाव है। —लागफैलो

पाप सदैव पाप है चाहे वह किसी आवरण में मडित हो। —प्रेमचन्द

पाप ईमानदारी को इस तरह निगल लेता है जैसे नदियो की उछलती हुई लहरें किनारे की हरियाली को। —अज्ञात

एक पाप दूसरे पाप के लिए दरवाजा खोल देता है। —अज्ञात

माता, गौ और ब्राह्मण का वध करनेवाले को जो पाप लगता है वही पाप शरणागत की हिंसा करनेवाले को भी लगता है। —वेदव्यास (महाभारत शातिपर्व)

अवश्यमेव लभते फल पापस्य कर्मण ।
भर्त पर्यागते काले कर्त्ता नास्त्यत्र सशय ॥
—वाल्मीकि (रा० सु०)

इसमें तनिक भी सदेह नही कि समय आने पर कर्त्ता को उसके पाप का फल अवश्य मिलता है।

जिस कार्य में आत्मा का पतन हो वही पाप है। —महात्मा गाधी

When we think of death, a thousand sins, which we have trodden as worms beneath our feet, rise up against us as fanning serpents

जब हम मृत्यु का स्मरण करते हैं तो हजारो पाप, जिन्हें हमने कीडे मकोडो की तरह पैरो के नीचे मसल डाला है, हमारे विरुद्ध फणदार सर्प की तरह खडे होते हैं।

—वाल्टर स्काट

पाप कमजोर के रूप और धन पर इस तरह लपकता है जैसे बकरी पर चीता।

—अज्ञात

प्राणघात, चोरी और व्यभिचार ये तीन शारीरिक पाप हैं। झूठ बोलना, निन्दा करना, कटु वचन एव व्यर्थ भाषण ये चार वाणी के पाप हैं। पर-धन की इच्छा, दूसरे की बुराई की इच्छा, असत्य, हिंसा, दया-दान में अश्रद्धा—ये मानसिक पाप हैं।

—भगवान् बुद्ध

The wages of sin is death

पाप की उजरत मृत्यु है। —बाइबिल

पाप की कल्पना आरभ में अफीम के फूल की तरह सुन्दर और मनोहारिणी होती है, किन्तु अन्त में नागिन के आलिगन की तरह विनाशमयी है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

पाप में पडनेवाला मनुष्य होता है, जो पाप पर पश्चात्ताप करता है वह साधु है, जो पाप पर अभिमान करता है वह शैतान है। —फुलर

भुजते ते त्वघ पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्। —श्रीकृष्ण (गीता)

जो अपने लिए ही भोजन पकाते है वे पापी हैं, वे पाप खाते हैं।

जैसे पुण्य का हृदय से ही सम्बन्ध है उसी प्रकार पाप का भी हृदय से ही सम्बन्ध है। पाप और पुण्य दोनो तुम्हारी मानसिक अवस्था से सम्बन्धित हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

पाप एक करुणाजनक वस्तु है—मानवीय विवशता की द्योतक। उसे देखकर दया आती है, लेकिन पाप के साथ निर्लज्जता और मदान्धता एक पैशाचिक लीला है—दया व धर्म की क्षमा के बाहर। —प्रेमचन्द

पुत्रेषु वा नप्तृषु वा न चेदात्मनि पश्यति।
फलत्येव ध्रुव पाप गुरुभुक्तमिवोदरे॥

—वेदव्यास (महा० आदि०)

जिस प्रकार गरिष्ठ भोजन पेट में जाकर अवश्य दुःख देता है, उसी प्रकार पाप अपने लिए अनिष्टकर न प्रतीत होने पर भी बेटे पोतो तक पहुँच कर अपना प्रभाव दिखाता है।

पाप करने का अर्थ यह नही कि जब वह आचरण में आ जाय तब ही उसकी गिनती पाप में हुई। पाप तो जब हमारी दृष्टि मे आ गया, विचार में आ गया वह हमसे हो गया। —महात्मा गांधी

पापी

पापी अगर मर जाय तो प्रायश्चित्त कौन भोगेगा? —शरत्चन्द्र (बोंझ)

जो पापियो से जान बूझकर कडे शब्द कहता है वह मानो उनके पाप रूपी घाव पर नमक छिडकता है। —भगवान बुद्ध

पापी को पुण्यात्मा बनाने का यह भी एक उपाय है कि बार बार उसके पुण्य की प्रशसा की जाय। अपने सम्बन्ध मे ऊँची ऊँची बातें सुनकर मनुष्य सदैव ऊपर ही उठने की कोशिश करता है। —जनार्दनप्रसाद झा "द्विज"

सोने की चोरी करनेवाला, शराबी, गुरुपत्नी-गामी, ब्रह्महत्यारा—ये चारो महापापी होते हैं और जो इनके साथ सम्पर्क रखता है, वह पाँचवाँ भी महापापी है। —अज्ञात

पापी का पैसा पुण्य कार्य में लगाने से उसके पाप का भी छेदन हो जायगा। —विनोबा

पापियो में भी आत्मा का प्रकाश रहता है और कष्ट पाकर जाग्रत हो जाता है। यह समझना कि जिसने एक बार पाप किया वह पुण्य कर ही नही सकता, मानव-चरित्र के एक तत्त्व का अपवाद करना है। —प्रेमचन्द

जैसे सूखी लकडियो के साथ गीली लकडी भी जल जाती है, उसी प्रकार पापियो के सम्पर्क में रहने से धर्मात्माओ को भी उनके समान दड भोगना पडता है।

—वेदव्यास (महा० शा०)

पापवत कर सहज सुभाऊ। भजन मोर तेहि भाव न काऊ॥

—तुलसी (मानस, सुन्दर)

पाषाण

पाषाण के भीतर भी कितने मधुर स्रोत बहते रहते हैं, उनमें मदिरा नही, शीतल जल की धारा बहती है। —जयशंकर प्रसाद

पारखी

हंसा बगुला एक सा, मानसरोवर माहिं।
बगा ढढोरे माछरी, हंसा मोती खांहि॥ —कबीर

ज्ञान रतन की कोठरी, चुप करि दीन्हो ताल।
पारखि आगे खोलिए, कुंजी वचन रसाल॥ —कबीर

पाहुना (दे० 'अतिथि')

पिता

न सत्य दानमानौ वा न यज्ञाश्चाप्तदक्षिणा।
तथा बलकरा सीते! यथा सेवा पितुर्हिता॥
—वाल्मीकि (रा० अयो०)

हे सीता! पिता की सेवा करना जिस प्रकार कल्याणकारी माना गया है, वैसा प्रबल साधन न सत्य है, न दान-सम्मान है और न प्रचुर दक्षिणावाले यज्ञ ही हैं।

प्रत्येक कुटुम्ब के पिता को अपने मितव्ययी पड़ोसी का अनुकरण करना चाहिए और उन पुरुषो के जीवन से लाभ उठाना चाहिए जो अपनी आमदनी उत्तम रीति से खर्च करते हैं। —सुकरात

A father is a banker provided by nature
पिता प्रकृति का दिया हुआ महाजन है। —फ्रेंच कहावत

न ह्यतो धर्मचरणं किंचिदस्ति महत्तरम्।
यथा पितरि शुश्रूषा तस्य वा वचनक्रिया॥
—वाल्मीकि (रा० अयो०)

पिता की सेवा अथवा उनकी आज्ञा का पालन जैसा धर्म दूसरा कोई भी नहीं है।

पिपासा

पिपासा तृप्त होने की चीज नही। आग को पानी की आवश्यकता नहीं होती, उसे घृत की आवश्यकता होती है जिससे वह और भडके। —भगवतीचरण वर्मा

पीड़ा

चु अजवे वदर्द आवुरद रोजगार।
दिगर अजवहारा न मानद करार॥ —सादी

जव शरीर के किसी अग में पीडा होती है तो सारा शरीर व्याकुल हो जाता है।

The pain of the mind is worse than the pain of the body
मानसिक पीडा शारीरिक पीडा की अपेक्षा अधिक कष्टदायक होती है।

—साइरस

पीडा पाप का परिणाम है। —भगवान् वुद्ध

Pain and pleasure, like light and darkness, succeed each other.
पीडा और प्रसन्नता, प्रकाश और अन्धकार की भाँति एक दूसरे के पीछे चलते हैं।

इस मीठी-सी पीडा में, डूवा जीवन का प्याला।
लिपटी-सी उतराती है, केवल आँसू की माला॥ —महादेवी वर्मा

पीडा से दृष्टि मिलती है, इसलिए आत्मपीडन ही आत्मदर्शन का माध्यम है।
—अज्ञात

पुण्य

किसी मनुष्य के निन्दा करने पर भी जो उसकी निन्दा नही करता और उसकी निन्दा को सह लेता है, वह पुरुष निन्दा करनेवाले पुरुष को भस्म कर डालता है और उसके पुण्य को अपने आप ग्रहण कर लेता है। —वेदव्यास (म० शा०)

जैसे धन का नाश होने पर सगे सम्वन्धी छोड देते हैं वैसे ही पुण्य क्षीण हो जाने पर देवता भी मनुष्य को स्वर्ग से गिरा देते हैं। —वेदव्यास (म० आदि०)

पुत्र

पुत्र का मोह प्रकृति का सवसे वडा आकर्षण है। —प० लक्ष्मीनारायण मिश्र

किं तया क्रियते धेन्वा
या न दोग्ध्री न गर्भिणी।
कोऽर्थ पुत्रेण जातेन
यो न विद्वान् न धार्मिक ॥

उस गाय से क्या फायदा जो न दूध देती हो न गर्भ धारण करती हो, उस पुत्र के उत्पन्न होने से क्या लाभ, जो न विद्वान् ही हुआ न धार्मिक। —पंचतंत्र से

पुन्नाम्नो नरकाद् यस्मात्पितर त्रायते सुत ।
तस्मात्पुत्र इति प्रोक्त पितॄन् य पाति सर्वत ॥

—वाल्मीकि (रा० अयो०)

क्योकि बेटा 'पुम्' नामक नरक से पिता का त्राण (उद्धार) करता है, इसलिये 'पुत्र' कहा गया है। वास्तव में जो पितरो का सब ओर से परित्राण करता है, वही पुत्र है।

लालयेत् पञ्च वर्षाणि दश वर्षाणि ताडयेत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्र मित्रवदाचरेत्॥ —चाणक्य

पाँच वर्ष की अवस्था तक पुत्र का लालन (दुलार) करे और उसके अनन्तर दस वर्ष अर्थात् १५ वर्ष की अवस्था तक ताडन करता हुआ शिक्षा दे। परन्तु जब वह १६ वर्ष की अवस्था में पहुँचे तब से मित्र के समान उसके साथ व्यवहार करे।

पुत्र के प्रति पिता का कर्तव्य यही है कि वह उसे सभा में पहली पक्ति में बैठने लायक बना दे। —तिरुवल्लुवर

पुत्रवती

पुत्रवती युवती जग सोई। रघुपति भक्त जासु सुत होई॥

—तुलसी (मानस, अयो०)

पुनर्जन्म

आत्मा एक चेतन तत्त्व है, जो अपने रहने के लिए उपयुक्त शरीर का आश्रय लेता है और एक देह से दूसरी देह में जाता रहता है। भौतिक शरीर आत्मा को धारण करने के लिए विवश होता है। —गेटे

जन्म और मृत्यु ससार के दो निर्विवाद सत्य हैं। पुनर्जन्म की समस्या इन्ही दो सत्यो का स्पर्श करती है। —अज्ञात

पुरस्कार

He who wishes to secure the good of others has already secured his own.

जो व्यक्ति दूसरे की भलाई चाहता है उसने अपना भला पहले ही कर लिया।

— कन्फ्यूशियस

पुराना

पुराना होना ही सच्चाई का कोई सबूत नही है। — स्वामी रामतीर्थ

पुराणमित्येव न साधु सर्वम्। — कालिदास

कोई वस्तु केवल इस कारण ग्राह्य और उत्तम नही है कि वह पुरानी है।

पुरुष

स्वाभिमानी और पवित्रहृदय पुरुष निर्धन होने पर भी श्रेष्ठ गिना जाता है।

— लोकमान्य तिलक

उद्यान ते पुरुष नावयानम्। — अथर्ववेद

पुरुष ! तेरे लिए ऊपर उठना है न कि नीचे गिरना।

जो वीरता से भरा हुआ है, जिसका नाम लोग बडे गौरव से लेते हैं, शत्रु भी जिसके गुणो की प्रशसा करते हैं, वही पुरुष वास्तव में पुरुष है।

— गणेशशंकर विद्यार्थी

नारी से पुरुष अधिक कार्यकुशल होता है परन्तु स्मरणशक्ति में व सामाजिक कला में स्त्री पुरुष से आगे रहती है। — अज्ञात

पुरुष और स्त्री

पुरुष है—कुतूहल और प्रश्न; और स्त्री है विश्लेषण, उत्तर और सब बातो का समाधान। — जयशकर प्रसाद

पुरुषार्थ

ईश्वररूप हुए बिना मनुष्य का समाधान नही होता, उसे शान्ति नही मिलती। ईश्वररूप होने का प्रयत्न ही सच्चा और एकमात्र पुरुषार्थ है।

—महात्मा गाधी

कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीनो का जिस जगह ऐक्य होता है वही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है।
— अरविन्द घोष

पुरुषार्थ का अर्थ है पुरुष को प्रवृत्त करनेवाला हेतु। यह आवश्यक नही कि यह हेतु 'सद्धेतु' ही हो।
— विनोबा

पुरुषार्थहीन

पुरुषार्थहीन मनुष्य (वास्तव में) जीते जी मरा हुआ है। — स्वामी शकराचार्य

विपदोऽभिभवन्त्यविक्रम रहयत्यापदुपेतमायति ।
नियता लघुता निरायतेरगरीयान्न पद नृपश्रिय ॥
— भारवि (किरातार्जुनीय)

पुरुषार्थहीन पुरुष को विपत्तियाँ आक्रान्त कर लेती हैं। विपत्तियो से आक्रान्त होने पर उसकी भावी उन्नति रुक जाती है। जिससे उसका गौरव नष्ट हो जाता है। गौरव नष्ट होने पर राज्यश्री के लिए कोई स्थान नही रह जाता, जिसका वह आश्रय ले सके।

पुरुषोत्तम

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसशया ।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥ — उपनिषद्

कार्य-कारणस्वरूप उस परात्पर पुरुषोत्तम को तत्त्व से जान लेने पर इस (जीवात्मा) के हृदय की गाँठ खुल जाती है, सम्पूर्ण सशय कट जाते हैं और समस्त शुभाशुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं।

पुष्प (दे० 'फूल')

पुण्यसवर्द्धनाच्चापि पापौघपरिहारत ।
पुष्कलार्थं प्रदानाच्च पुष्पमित्यभिधीयते ॥ — अज्ञात

फूल पापसमूह को दूर करते हुए पुण्य की अभिवृद्धि करता है तथा प्रचुर अर्थ को प्रदान करता है, इसलिए वह पुष्प नाम से पुकारा जाता है।

न रत्नैर्न सुवर्णेन न वित्तेन च भूरिणा।
तथा प्रसादमायाति यथा पुष्पैर्जनार्दन ॥ — अज्ञात

भक्तजनो के ऊपर कृपा रखनेवाले भगवान प्रचुर रत्नराशि अथवा सुवर्ण के खजाने से भी उतने प्रसन्न नही होते जितने भक्तो के दिये हुए पुष्पो के समूह से।

ईश्वर बडे-बडे साम्राज्यो से ऊब उठता है परन्तु छोटे छोटे पुष्पो से कभी खिन्न नही होता। — रवीन्द्र

अहिंसा प्रथम पुष्प द्वितीय करणग्रह ।
तृतीयक भूतदया चतुर्थं शान्तिरेव च॥
शमस्तु पञ्चम पुष्प ध्यान चैव तु सप्तमम्।
सत्य चैवाष्टम पुष्पमेतैस्तुष्यति केशव ॥
एतैरेवाष्टभि पुष्पैस्तुष्यते चार्चितो हरि ।
पुष्पान्तराणि सन्त्येव वाह्यानि नृपसत्तम॥

— वेदव्यास (पद्मपुराण)

अहिंसा पहला, इन्द्रियसयम दूसरा, जीवो पर दया करना तीसरा, क्षमा चौथा शम पाँचवाँ, दम छठाँ, ध्यान सातवाँ और सत्य अठवाँ पुष्प है। इन पुष्पो के द्वारा भगवान् सतुष्ट होते हैं। नृपश्रेष्ठ! अन्य पुष्प तो पूजा के वाह्य अग है, भगवान् उपर्युक्त आठ पुष्पो से ही पूजित होने पर प्रसन्न होते हैं।

पुस्तक

मैं नरक मे भी उत्तम पुस्तको का स्वागत करूँगा, क्योकि इनमे वह शक्ति है कि जहा ये होंगी वहाँ आप ही स्वर्ग वन जायगा। — लोकमान्य तिलक

अच्छी पुस्तको के पास होने से हमें अपने भले मित्रो के साथ न रहने की कमी नही खटकती। जितना ही मैं पुस्तको का अध्ययन करता गया उतना ही अधिक मुझे उनकी विशेषताएँ (उपयोगिताएँ) मालूम होती गयी।

— महात्मा गाधी

ग्रन्थो में आत्मा है। सद्ग्रन्थो का कभी नाश नही होता। —लिटन

विचारो के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं। —वर्नाडशा

A good book is the precious life-blood of a master spirit
अच्छी पुस्तक एक महान् आत्मा का अमूल्य जीवन-रक्त है। — मिल्टन

पुराने कपडे पहनकर नयी पुस्तकें खरीदिए। — प्रस्टिन फिल्प्स

Books are lighthouses erected in the great sea of time.
पुस्तकें प्रकाश-गृह हैं जो समय के विशाल समुद्र में खडी की गयी हैं। — विपिल

Money is a handmaiden if thou knowest how to use it, a mistress, if thou knowest not

पैसा आपका दास है अगर आप उसका उपयोग जानते है, वह आपका स्वामी है अगर आप उसका उपयोग नही जानते। —होरेस

पैसे को अपना ईश्वर मानिए, वह शैतान की तरह आपको भ्रष्ट कर देगा। —फीर्ल्डिग

पैसा आदमी को रक बना देता है। —महात्मा गाधी

पोशाक

सादी पोशाक ब्रह्मचर्य पालन में मददगार होती है। —महात्मा गाधी

Costly thy habit as purse can buy, rich, not gaudy

तुम्हारी पोशाक उतनी कीमती होनी चाहिए जितनी बनवाने की तुम्हारी योग्यता हो। वह बहुमूल्य तो हो पर भडकीली न हो। —शेक्सपियर

साफ-सुथरी पोशाक में एक प्रकार का यौवन होता है जिसमे अधिक उम्र छिप जाती है। —अज्ञात

Good clothes open all doors

अच्छी पोशाक के लिए सभी दरवाजे खुले रहते हैं। —टामस फुलर

प्यार (दे० "प्रेम", "मुहब्बत")

बल और शक्ति की आज्ञा टालना आसान है, मगर प्यार की आज्ञा टालना आसान नही। —सुदर्शन

हम सब प्रेम के लिए जन्म लेते है। यह जीवन का सिद्धान्त है। —डिजरायली

Man's love is of man's life a thing apart, it is woman's whole existence

मनुष्य का प्यार उसके जीवन की एक भिन्न वस्तु है, परन्तु नारी के लिए उसका प्यार उसका सारा जीवन है। —बायरन

जिसे हम प्यार करते हैं उसी के अनुसार हमारा रूप और आकार निर्मित होता है। —गेटे

प्रेम ही प्रेम का पुरस्कार है। —ड्राइडेन

प्यार और खाँसी छिपाये नही छिपती। —हर्बर्ट

खैर, खून, खाँसी, खुसी, बैर, प्रीति, मदपान।
रहिमन दावे ना दवैं, जानत सकल जहान।। —रहीम

जीवन एक पुष्प है, प्यार उसका मधु। —विक्टर ह्यूगो

प्यार आदमी की सबसे बडी निर्बलता है। —अज्ञात

प्यार और बुद्धि दोनो एक साथ एक ही रगभूमि में अभिनय नही कर सकते—प्यार की वेदी पर बुद्धि का वलिदान कर दिया जाता है। —अज्ञात

प्रकाश

प्रकाश की अति भी मानव-नेत्रो के लिए अधकार है और प्रकाश का अभाव या कमी भी मनुष्यनेत्रो के लिए अधकार है। —रामतीर्थ

प्रकाश ईश्वर की छाया है। —प्लेटो

असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृत गमय।।
—बृहदारण्यक उ०

असत्य से मुझे सत्य की ओर ले चलो, अधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से मुझे अमरता की ओर ले चलो।

प्रकाश जब काले बादलो का चुबन करता है तो वे स्वर्ग के फूल बन जाते हैं।
—रवीन्द्र

Light is the symbol of truth
प्रकाश सत्य का प्रतीक है। —जे० आर० लोवेल

प्रकृति

पहले मनुष्य प्रकृति का खिलौना था, आज उसका अधीश्वर है। —अज्ञात

प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भडार है, पत्ते पत्ते में शिक्षापूर्ण पाठ है, परन्तु उनसे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है। —हरिऔध

Nature is a volume of which God is the author.
प्रकृति एक ग्रन्थ है, जिसका रचयिता ईश्वर है। —हारवे

प्रकृति अपनी उन्नति और विकास में रुकना नही जानती और अपना अभिशाप प्रत्येक अकर्मण्यता पर लगाती है। —गेटे

प्रकृति शून्य से घृणा करती है। —अज्ञात

Nature is commanded by obeying her
प्रकृति की आज्ञा मानकर ही हम उसका नेतृत्व करते हैं। —बेकन

प्रगति

Intercourse is the soul of progress
पारस्परिक व्यवहार प्रगति का सार है। —वस्स्टन

All that is human must retrograde if it do not advance
सारी मानवीय वस्तुएँ यदि प्रगति पर नही हैं तो उन्हें पीछे हटना होगा।
—गिबन

प्रगति जीवन की निशानी है, जिसमें प्रगति नही वह मुर्दे के समान है।
—अज्ञात

प्रजा

प्रजा के साथ मेल करके शत्रु के साथ लडना चाहिए। प्रजा-पालक राजा की प्रजा सेना के वरावर ही हैं। —सादी (गुलिस्तां)

प्रजा बहुत वुद्धिमान् आलोचक से भी अधिक वुद्धिमान् होती है। —बेनक्राफ्ट

प्रजा और राजा में पुत्र और पिता का नाता है। —अज्ञात

प्रजा का असतोष राजनीति का अभिशाप है। —डा० रामकुमार वर्मा

जो व्यक्ति प्रजा के पैर वनकर चलता है, उसे कभी काँटे नही चुभ सकते।
—डा० रामकुमार वर्मा

प्रजातंत्र

प्रजातत्र का अर्थ मैं यह समझता हूँ कि इसमें नीचे से नीचे और ऊँचे से ऊँचे आदमी को आगे वढने का समान अवसर मिले। —महात्मा गाधी

Democracy means government of the people, by the people and for the people
प्रजातत्र का अर्थ है जनता के हेतु ही जनता द्वारा जनता का शासन।
—अब्राहम लिंकन

The first condition precedent for the working of democracy or free parliamentary institutions in a free country is that laws must be obeyed, whether one likes them or not

एक स्वतन्त्र राष्ट्र में प्रजातन्त्र को कार्यरूप में परिणत करने के लिए पहली शर्त यह है कि उसके कानूनो का पालन हो, चाहे हम उन्हें पसन्द करें या न करें।

—डा० कैलाशनाथ काटजू

Democracy means not, 'I am as good as you are,' but "You are as good as I am"

प्रजातन्त्र का यह अर्थ नही है कि जितने अच्छे तुम हो उतना ही अच्छा मैं हूँ, वरन् तुम उतने ही अच्छे हो जितना अच्छा मैं हूँ। —थेडोर पार्कर

कोई भी गुप्त वात प्रजातन्त्र के वास्तविक अर्थ को वाधा पहुँचाती है।

—महात्मा गांधी

प्रजातन्त्र ने सावारण मजदूर को पहले से कहीं अविक गौरव प्रदान किया है।

—सिनक्लेयर ल्यूई

The love of democracy is that of equality

प्रजातन्त्र का प्रेम समानता का प्रेम है। —मान्टेस्क्यू

While democracy must have its organization and control, its vital breath is individual liberty

प्रजातन्त्र का अपना सगठन और शासन होना चाहिए, परन्तु व्यक्तिगत स्वतन्त्रता ही उसका प्राण है। —सी० ई० ह्यूजेज

प्रत्येक व्यक्ति की अच्छाई ही प्रजातन्त्रीय शासन की सफलता का मूल सिद्धान्त है। —राजगोपालाचारी

The difference between democracy and totalitarian states lies, not in the absence of leaders, but in the power of democracy to change its leaders without shooting To have the power of peaceful change of government is the essential condition of democracy

प्रजातन्त्रीय और तानाशाही शासन में अन्तर नेताओ के अभाव में नही है वरन् नेताओ को, विना उनकी हत्या किये हुए वदल देने में है। शातिपूर्वक सरकार वदल देने की शक्ति प्रजातन्त्र की आवश्यक शर्त है। —लार्ड विवरेज

मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि प्रजातंत्र का अर्थ है कि कांग्रेसजन वही कार्य करें जो जनता का बहुमत उनसे कराना चाहता है। —जवाहरलाल नेहरू

प्रजातंत्र का रहस्य यान्त्रिक विधि से किसी रीति को बदल देने में नहीं है। इसमें हृदय-परिवर्तन की आवश्यकता है। —महात्मा गांधी

प्रज्ञा (दें० "बुद्धि", "प्रतिभा")

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति॥ —हितोपदेश

जिस मनुष्य को अपनी बुद्धि नहीं हो, उसके लिए शास्त्र बेकार है, जैसे दोनों आँखों से रहित अन्धे मनुष्यको दर्पण क्या करेगा।

प्रण (दें० "प्रतिज्ञा")

शिवि दधीचि बलि जो कछु भाखा।
तन धन तजेउ वचन प्रण राखा॥ —तुलसी (मानस)

प्रणय-स्मृति

One sad voice has its nest among the ruins of the years It sings to me in the night—"I loved you"

काल-रूपी खंडहरों में एक विषादमयी वाणी निवास करती है। रात्रि में वह मुझसे गा-गाकर कहती है—"मैं तुम्हें प्यार करती थी।" —रवीन्द्र

प्रतिभा

Genius is one percent inspiration, and ninty percent perspiration

प्रतिभा एक प्रति सैकड़ा प्रेरणा और निन्नानबे प्रति सैकड़ा श्रम है।

—टामस ए० एडिसन

The first and last thing required of genius is the love of truth

सत्य के प्रति प्रेम ही प्रतिभा की प्रथम और अंतिम माँग है। —गेटे

Genius finds its own road and carries its own lamp

प्रतिभा अपना मार्ग स्वयं निर्धारित कर लेती है और अपना दीपक स्वयं ले चलती है। —विल्मट

प्रतिभा के माने हैं बुद्धि मे नयी-नयी कोपलें फूटते रहना। नयी कल्पना, नया उत्साह, नयी खोज, नयी स्फूर्ति ये सब प्रतिभा के लक्षण है। —विनोबा

Genius is infinite pains-taking
प्रतिभा निरन्तर कष्ट सहने में है। —लागफेलो

प्रतिभा के साथ जब शुभ्र निष्ठा एव लगन का सामजस्य हो जाता है तो व्यक्ति के गुण कस्तूरी की गध में बोलने लगते है। —अज्ञात

प्रतिभा के बल पर स्वतत्र वातावरण में स्वतन्त्रतापूर्वक सास ली जा सकती है। —जे० एस० मिल

Patience is a necessary ingredient of genius
धैर्य प्रतिभा का आवश्यक अग है। —डिजरायली

Genius does what it must, and talent what it can
प्रतिभा वही कार्य करती है जो वह करने के लिए बाध्य है एव गुणी वही कार्य करता है जो वह कर सकता है। —ओवेन मेरीडेथ

Genius, that power which dazzles mortal eyes, is oft but perseverence in disguise
प्रतिभा अर्थात् वह शक्ति जो मानवीय नेत्र में चकाचौंध उत्पन्न कर देती है, गुप्त रूप से केवल कठिन परिश्रम का नाम है। —आस्टिन

Genius always gives its best at first, prudence, at last
प्रतिभा में जो सबसे अच्छी बात होती है उसे वह सबसे पहले दे देती है और दूरदर्शिता सबसे बाद में देती है। —लेवोटर

लबी-चौडी पढाई के नीचे प्रतिभा दबकर मर जाती है। —विनोबा

There is no great genius without a mixture of madness
ऐसी कोई महान् प्रतिभा नही है जिसमें लगन का समिश्रण न हो। —अरस्तू

A man of genius has been seldom ruined, but by himself
प्रतिभाशाली व्यक्ति यदि नष्ट होता है तो प्राय अपने ही द्वारा नष्ट होता है। —जानसन

होनहार बिरवान के होत चीकने पात। —कहावत

Genius must be born, and never can be taught
प्रतिभा जन्मजात होती है, वह सिखायी नही जाती। —ड्राइडेन

प्रतिरोध

प्रतिरोध से वडी शक्तियाँ रुकती नही, प्रत्युत उनका वेग और भी भयानक हो जाता है। —जयशकर प्रसाद (विशाख)

प्रतिष्ठा

प्रतिष्ठा बनाने में कई वर्ष लग जाते है, कलक एक पल में लग जाता है।—अज्ञात

The way to gain a good reputation is, to endeavour to be what you desire to appear

अच्छी प्रतिष्ठा पाने का मार्ग अपने को उस योग्य बनाने का प्रयत्न करना है जैसा कि तुम दूसरो की दृष्टि में दीखना चाहते हो। —सुकरात

The reputation of a man is like his shadow, gigantic when it precedes him, and pigmy in its proportions when it follows

मनुष्य की प्रतिष्ठा उसकी छाया की भाँति है। जब वह मनुष्य के आगे चलती है तो बहुत वडी हो जाती है और जब उसके पीछे चलती है तो उसकी तुलना में बहुत छोटी हो जाती है। —टालरेन्ड

विपक्षमखिलीकृत्य प्रतिष्ठा खलु दुर्लभा।
अनीत्वा पकता धूलिमुदक नावतिष्ठते॥

—माघ (शिशुपालवध)

शत्रु का समूल नाश किये विना प्रतिष्ठा की प्राप्ति दुर्लभ है, (क्योकि) जल धूल को कीचड बनाये विना नही ठहरता।

प्रतिज्ञा (दे० "प्रण")

दृढ प्रतिज्ञा एक गढ के सदृश है जो भयानक प्रलोभनो से हमारी रक्षा करता है और दुर्वलता एव अस्थिरता से हमे बचाता है। —महात्मा गांधी

रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाय वरु वचन न जाई॥ —तुलसी

प्रतीज्ञाहीन जीवन विना नीव का घर है, अथवा यो कहिए कि कागज का जहाज है। प्रतिज्ञा के वल पर ही ससार टिका हुआ है। प्रतिज्ञा न लेने का अर्थ अनिश्चित या डाँवाडोल रहना है। —महात्मा गाधी

प्रतीक्षा

प्रतीक्षा का एक-एक क्षण एक-एक युग के समान होता है। —अज्ञात

प्रतीक्षा में जो आनन्द है वह प्राप्ति में नही। —अज्ञात

वह मजा वस्लेयार में नही जो मजा इतजार में है। —अज्ञात

प्रधानमंत्री

प्रधानमत्री के लिए सबसे आवश्यक गुण धैर्य है। —पिट

अच्छी तरह से राष्ट्र-शासन करनेवाले प्रधानमत्री के लिए अधिक सुनना और कम बोलना नितान्त आवश्यक है। —रिचलू

Coolness is the most important quality for a man destined to rule

शान्त स्वभाव का होना शासक का सबसे आवश्यक गुण है। —एन्ड्री मारिस

प्रभुता

नहि कोउ अस जनमा जग माही। प्रभुता पाइ जाहि मद नाही॥ —तुलसी

Power, like a desolating pestilence
Pollutes whatever it touches

प्रभुता विनाशकारी प्लेग के समान है, यह जिसे छूती है उसे ही भ्रष्ट करती है। —शेली

The appetite for unrestrained power grows with use

निरकुश शक्ति की क्षुधा उपयोग से बढती है। —जवाहरलाल नेहरू

प्रभुता भ्रष्ट करती है और पूर्ण प्रभुता पूर्ण रूप से भ्रष्ट करती है। —लार्ड आक्टन

Unlimited power corrupts the possessor

असीम शक्ति धारणकर्त्ता को ही भ्रष्ट करती है। —विलियम पिट

प्रभुता को सब कोई भजै, प्रभु को भजै न कोय।
कह कबीर प्रभु को भजै, प्रभुता चेरी होय॥ —कबीर

प्रभुता ऐसी मदिरा है जिसे पीनेवाला ही उन्मत्त नही होता प्रत्युत उसके परिवार, सबधी और पडोसी भी उन्मत्त हो जाते हैं। —अज्ञात

प्रयत्न तथा प्रयास

महान् ध्येय के प्रयत्न में ही आनन्द है, उल्लास है और किसी अश तक प्राप्ति की मात्रा भी है। —जवाहरलाल नेहरू

आनन्द की दृष्टि से देखें तो साक्षात् स्वराज्य की अपेक्षा स्वराज्यप्राप्ति के प्रयत्न का आनन्द कुछ और ही है। —विनोबा

जलकणो का अविच्छिन्न प्रपात पत्थर में भी छेद कर देता है। —अज्ञात

के वा न स्यु परिभवपद निष्फलारम्भयत्ना । —कालिदास
निष्फल प्रयत्न करने से दुनिया में किसकी पराजय नही होती।

सच्चा प्रयास कभी निष्फल नही होता --विल्सन

निरन्तर जल की बूंदो के गिरने से पत्थर में गड्ढा हो जाता है और धीरे धीरे चोट मारने से बडे बडे वृक्ष भी काट डाले जाते हैं। —अज्ञात

प्रलोभन

शुरू के झगडो और प्रलोभन को यदि मनुष्य जीत ले तो समग्र प्रकृति को चेरी वनना पडेगा। —स्वामी रामतीर्थ

The absence of temptation is the absence of virtue
प्रलोभन का अभाव सद्गुण का अभाव है। —गेटे

Every moment of resistance to temptation is a victory
प्रलोभन के अवरोध का प्रत्येक क्षण विजय है। —फेवर

Some temptations come to the industrious, but all temptations attack the idle

कुछ प्रलोभन परिश्रमी व्यक्ति को हो सकता है, किन्तु सारे प्रलोभन आलसी व्यक्ति पर ही आक्रमण करते हैं। —स्पर्जन

प्रशंसा

प्रत्येक व्यक्ति प्रशसा चाहता है। —लिंकन

You can tell the character of every man when you see how he receives praise.

आप प्रत्येक व्यक्ति का चरित्र बता सकते हैं, यदि आप देखें कि वह प्रशसा से कैसा प्रभावित होता है। —सेनेका

मानव-प्रकृति में सब से गहरा नियम कद्र किये जाने की लालसा है।

—विलियम जेम्स

There is nothing I need so much as nourishment for my self-esteem

मुझे दूसरी किसी वस्तु की उतनी आवश्यकता नही है जितनी कि आत्मपूजा की भूख के पोषण की। —अज्ञात

अयोग्य मनुष्यो की प्रशसा छिपे हुए व्यग्य के समान होती है। —ब्राडहस्ट

Praise is more divine than prayer, prayer points over ready path to heaven, praise is already there

प्रशसा, प्रार्थना से अधिक दिव्य है, प्रार्थना स्वर्ग का तैयार रास्ता हमें दिखाती है, प्रशसा वहाँ पहले से ही उपस्थित रहती है। —यग

True praise takes root and spreads

सच्ची प्रशसा जड थाम लेती है और पनपती है। —कहावत

We live by admiration, hope and love

हम प्रशसा, आशा और प्रेम से जीते हैं। —वर्ड्सवर्थ

Admiration begins when acquaintance ceases

प्रशसा वहाँ आरम्भ होती है जहाँ परिचय समाप्त होता है। —एस० जानसन

प्रतिद्वन्द्वी द्वारा की गयी प्रशसा सर्वोत्तम कीर्त्ति है। —टामस मूर

प्रशसा अज्ञान की बेटी है। —कहावत

किसी के गुणो की प्रशसा करने में अपना समय व्यर्थ नष्ट न करो, उसके गुणो को अपनाने का प्रयत्न करो। —कार्ल मार्क्स

प्रशसा अच्छे गुणो की छाया है, परन्तु जिन गुणो की वह छाया है उन्ही के अनुसार उसकी योग्यता भी होती है। —बेकन

मनुष्य के भीतर जो कुछ सर्वोत्तम है उसका विकास प्रशसा एव प्रोत्साहन द्वारा ही किया जा सकता है। —चार्ल्स श्वेब

Praise like gold and diamonds owes its value only to its scarcity
स्वर्ण और हीरे के समान, प्रशसा का मूल्य केवल उसके दुर्लभत्व में ही होता है।
—एस० जानसन

The greatest efforts of the race have always been traceable to the love of praise as its greatest catastrophes to the love of pleasure
प्रशसा के प्रति अनुराग पर ही सदैव किसी जाति का महान् प्रयास आधारित रहा है, जैसे उसका पतन विलासिता के प्रति अनुराग में रहा है। —रस्किन

प्रशसा के वचन साहस बढाने में अचूक औषधि का काम देते हैं। —अज्ञात

प्रशसा की भूख जिसे लग जाती है, वह कभी तृप्त नही होता। —अज्ञात

प्रशासक

नरपतिहितकर्त्ता द्वेष्यता याति लोके
जनपद हितकर्त्ता त्यज्यने पार्थिवेन्द्रै
इति महति विरोधे वर्त्तमाने समाने
नृपति जनपदाना दुर्लभ कार्यकर्ता ॥

अर्थ देखो 'कार्यकर्त्ता' में —पचतत्र

प्रशासन-कार्य

प्रशासन-कार्य अत्यन्त दु साध्य है क्योकि इसमें मनुष्य को आतरिक एव बाह्य दोनो सघर्षों में सदैव निरत रहना पडता है। —अज्ञात

प्रसन्नता (दे० "सुख")

मन की प्रसन्नता ही व्यवहार में उदारता बन जाती है। —प्रेमचन्द

प्रसादे सर्वदु खाना हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धि पर्यवतिष्ठते॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

चित्त प्रसन्न रहने से सब दु ख दूर हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है उसकी बुद्धि तुरन्त ही स्थिर हो जाती है।

Cheerfulness gives elasticity of the spirit
प्रसन्नता आत्मा को बल देती है। —सेमुएल स्माइल्स

प्रसन्नहृदय मनुष्य वह सूर्य है जिसकी किरणें अनेको हृदयो के शोकरूपी अन्धकार को दूर भगा देती हैं। —अज्ञात

प्रसन्नता और शोक वास्तव में मन की स्थितिया है और मन को वश में रखना अपने हाथ मे है। —मार्कस ओरेलियस

मनुष्य अपनी प्रसन्नता के लिए स्वय ही उत्तरदायी है। —थोरो

Happiness lies, first of all, in health
प्रसन्नता (सुख) सर्वप्रथम स्वास्थ्य में है। —जी० डब्लू० कर्टिस

प्रसन्नता तो चन्दन है, दूसरे के माथे पर लगाइये तो आपकी उँगलिया अपने आप ने। —अज्ञात

happy you must forget yourself—learn benevolence, cure of a morbid temper
के लिए तुम स्वय अपने को भूल जाओ, परोपकारी वनो, दूषित विचार केवल यही एक उपाय है। —बुल्वर

..ness renders men kind and sensible, and that happi- ..ays shared with others
सच्चे सुख से मनुष्य दयालु और वुद्धिमान् होता है, और ऐसे सौख्य म दूसरे भी भाग लेते हैं। —मोनटेसक्वी

प्रसन्न रहना हमारा कर्तव्य है। यदि हम प्रसन्न रहेंगे तो अज्ञात रूप से ससार की वहुत भलाई करेंगे। —स्टीवेंसन

यदि कोई मनुष्य अप्रसन्न है तो यह उसी का दोप है क्योकि ईश्वर ने सभी को प्रसन्न वनाया है। —इपिक्टस

हँसमुख और प्रसन्न रहने में कुछ प्रयास की आवश्यकता है। अपने को प्रसन्न रखना भी एक कला है। —लार्ड एवेवरी

मुस्कराते हुए चेहरे से दिया हुआ जलपान पूरा भोजन हो जाता है—हर्बर्ट

Cheerfulness is contagious. Nothing is so catching in this world as a full warm spontaneous smile
प्रसन्नता छूत की वीमारी है। एक पूर्ण स्वाभाविक मुस्कान से वढकर इस ससार में कोई अन्य प्रभावित करने वाली वस्तु नही है। —अज्ञात

A good laugh is sunshine in a house

अच्छी हसी घर में सूर्य के प्रकाश के सदृश होती है। —थैकरे

Cheerfulness is health, its opposite melancholy is disease

प्रसन्नता स्वास्थ्य है, इसके विपरीत उदासी रोग है। —हालीबर्टन

I had rather have a fool make me merry, than experience make me sad

मैं पसन्द करूगा कि एक मूर्ख मुझे प्रसन्न बनाये, अपेक्षा इसके कि अनुभव मुझे दुखी बनावे। —शेक्सपियर

Burdens become light when cheerfully borne

बोझ हल्का हो जाता है यदि प्रसन्नतापूर्वक उठाया जाय। —ओविड

प्रसन्न-चित्त व्यक्ति अधिक जीते हैं। —शेक्सपियर

If there is a virtue in the world at which we should always aim, it is cheerfulness

यदि ससार में एक गुण है जो हम सब का सदैव ध्येय होना चाहिए तो वह प्रसन्नता है। —लार्ड लिटन

I must die, but must I then die sorrowing ? I must be put in chains must I then also lament ? I must go into exile Can I be prevented from going with cheerfulness and contentment ?

मुझे मरना है तो क्या मैं दुखी होकर मरू ? मुझे कारागार में वन्द होना पडे तो क्या मुझे वहाँ दुखी रहना चाहिए ? मुझे निर्वासित होना पडे तो क्या मुझे प्रसन्नतापूर्वक और सतोष के साथ जाने से रोका जा सकता है। —इपिक्टस

घमण्ड बिजली की क्षणिक चमक के समान है। जवकि प्रसन्नता मन में सूर्य के समान प्रकाश करती है। —जोजफ एडीसन

प्रसन्नता हृदय की वह निर्मलता है, जो अनायास देखी जा सकती है। —अज्ञात

यदि प्रसन्नता स्वभाव में बस गयी है तो रोग शोक दूर से ही भाग जायेंगे। —अज्ञात

प्रसिद्ध

It is the penalty of fame that a man must ever keep rising

प्रसिद्ध होने का यह एक दड है कि मनुष्य को निरन्तर उन्नतिशील बने रहना पडता है। —चैपिन

प्रांतीयता

प्रातीयता का भाव पृथक् करनेवाला है। परस्पर सयुक्त करनेवाला नही

—अज्ञात

प्रातीयता, वर्गवाद तथा पृथकतावादी प्रवृत्तिया देश के स्वस्थ विकास में वाधक हैं।

—अज्ञात

प्रान्तीयता हमारी राष्ट्रीयता के कल्पवृक्ष को काटनेवाली कुल्हाडी है।

—अज्ञात

प्रातीयता में राष्ट्रीय एकता का अभाव होता है, और एकता के अभाव में राष्ट्र अपने विकासोन्मुख ध्येय से गिर जाता है।

—अज्ञात

प्राणायाम

प्राणायाम रहस्यमयी गुप्त कुडलिनी शक्ति को जाग्रत करता है।

—स्वामी शिवानन्द

इच्छानुसार साँस लेने और छोडने की क्रिया को रोकने पर अधिकार प्राप्त करने का नाम प्राणायाम है, जो कि आसन-विजय के वाद ही प्राप्त होता है।

—पातञ्जलि (योगसूत्र)

प्रायश्चित्त

जो मनुष्य अधिकारी व्यक्ति के सामने स्वेच्छापूर्वक अपने दोष शुद्ध हृदय से कह देता है और फिर कभी न करने की प्रतिज्ञा करता है वह मानो शुद्धतम प्रायश्चित्त करता है।

—महात्मा गांधी (आत्मकथा)

जो पुरुष अपनी जाति, आश्रम या कुल के धर्म को त्याग देते हैं उनकी शुद्धि किसी प्रायश्चित्त से नही हो सकती।

—वेदव्यास (महा० शाति०)

मदिरापान, ब्रह्महत्या तथा गुरुपत्नी गमन—इन महापापो के लिए कोई प्रायश्चित्त ही नही वताया गया है। किसी भी उपाय से अपने प्राणो का अन्त कर देने पर ही इनसे छुटकारा मिलता है। यही शास्त्रो का निर्णय है।

—वेदव्यास (महा० शांति०)

पापी मनुष्य धर्माचरण और तप करके ही अपने पाप को नष्ट कर सकता है।

—वेदव्यास (महा० शाति)

प्रार्थना

असत्य से मुझे सत्य की ओर ले चलो। अधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मृत्यु से मुझे अमरता को ओर ले चलो। (दे० 'प्रकाश') —बृहदारण्यक

प्रार्थना अर्थात् ईश्वर के पास पहुचने की इच्छा। हम भगवान की शरण में आये है, यह भावना प्रार्थना में होनी चाहिए। —विनोबा

प्रार्थना वही कर सकता है जिसकी आत्मा ऊची उठी हुई हो।
—सन्त मैकेरियस

असहाय अवस्था में प्रार्थना के अतिरिक्त और कोई उपाय नही।
—जयशकर प्रसाद

प्रार्थना अगर रक्षण के अन्दर होती है तो वह प्रार्थना ही मिट जाती है।
—महात्मा गाधी

केषा न स्यादभिमतफला प्रार्थना ह्युत्तमेषु। —कालिदास (मेघदूत)

सज्जन से की हुई प्रार्थना कभी निष्फल नही होती।

सच्ची करुण प्रार्थना का उत्तर तत्काल ही मिला करता है। —अज्ञात

प्रार्थना के सयोग से हमें बल मिलता है। अपने पास का सम्पूर्ण बल काम में लाकर और बल की ईश्वर से माग करना यही प्रार्थना का मतलब है। —विनोबा

प्रार्थना धर्म का निचोड है। प्रार्थना याचना नही है, यह तो आत्मा की पुकार है। प्रार्थना दैनिक दुर्बलताओ की स्वीकृति है, यह हृदय के भीतर चलने वाले अनुसधानो का नाम है। —महात्मा गाधी

Our prayers should be for blessings in general, for God knows best what is good for us

हमारी प्रार्थना सर्व-सामान्य भलाई के लिए होनी चाहिए, क्योकि ईश्वर जानता है कि हमारे लिए अच्छा क्या है। —सुकरात

अहकार को शून्य करने में प्रार्थना मदद दे सकती है। —विनोबा

Prayer is the most powerful forms of energy one can generate
प्रार्थना एक अभूतपूर्व शक्ति है, जिसे कोई व्यक्ति उत्पन्न कर सकता है।
—एक वैज्ञानिक

प्रार्थना के विना मैं कव का पागल हो गया होता। —महात्मा गाधी

हमारी मानसिक वृत्तिया, हमारी अभिलाषाएँ हमारी नित्य की प्रार्थनाए हैं।
—स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

Whatever a man prays for, he prays for a miracle
मनुष्य की प्रार्थनाए किसी आश्चर्य की प्राप्ति के हेतु होती हैं। —तुर्गेनिव

In prayer it is better to have a heart without words, than words without a heart.
शब्द-रहित सहृदय प्रार्थना, हृदयहीन मुखर प्रार्थना से उत्तम है। —जान वनयन

प्रार्थना में दैववाद और प्रयत्नवाद का समन्वय है। दैववाद में नम्रता है वह जरूरी है, प्रयत्नवाद में जो पराक्रम है वह भी आवश्यक है, प्रार्थना इसका मेल साधनी है। —विनोबा

He prayeth best who loveth best
उसकी प्रार्थना सर्वोत्तम है, जिसका प्यार सर्वोत्तम है। —कोलरिज

प्रार्थना लाजिमी हो ही नही सकती, प्रार्थना तभी प्रार्थना है जव वह अपने आप हृदय से निकलती है। —महात्मा गाधी

मनुष्य के अतर में शुभ और अशुभ दोनो तरह की वृत्तिया हैं। लेकिन अतरतर में तो शुभ ही भरा है। प्रार्थना से उस अतरतर मे प्रवेश होता है। —विनोबा

जो देवताओ की वात सुनते हैं, देवता उनकी सुनते हैं। —होमर

प्रार्थना कोई यात्रिक वस्तु नही, वह हृदय की क्रिया है। —विनोवा

मैं भगवान से अष्टसिद्धि या मोक्ष तक की कामना नही करता। मेरी यही एक प्रार्थना है कि समस्त प्राणियो के अत करण में स्थित होकर मैं ही उनके समस्त दु खो को सहूँ। —श्रीमद्भागवत

मैं कोई काम विना प्रार्थना के नही करता। मेरी आत्मा के लिए प्रार्थना उतनी ही अनिवार्य है जितना शरीर के लिए भोजन। —महात्मा गाधी

More things are wrought by prayer than the world thinks of
जितना ससार समझता है, प्रार्थना से उससे कही अधिक कार्य होता है।
—टेनीसन

वारिश का परिणाम शरीर पर और उसके द्वारा मन पर होता है तो प्रार्थना का परिणाम हृदय के द्वारा आत्मा पर होता है। —विनोवा

हम जब अपनी असमर्थता खूब समझ लेते हैं और सब कुछ छोडकर ईश्वर पर भरोसा करते हैं तो उसी भावना का फल प्रार्थना है। — महात्मा गांधी

अपने दुर्गुणो का चिन्तन और परमात्मा के उपकारो का स्मरण यही सच्ची प्रार्थना है। अज्ञात

धैर्य सर्वश्रेष्ठ प्रार्थना है। — भगवान् बुद्ध

I pray thee, o God, that I may be beautiful within
मेरी प्रार्थना है कि, हे ईश्वर, मैं अन्दर से सुन्दर बनूं। — सुकरात

प्रार्थना आत्मशुद्धि का आह्वान है, यह विनम्रता को निमत्रण देना है, यह मनुष्यो के दु खो मे भागीदार बनने की तैयारी है। — महात्मा गांधी

प्रार्थना का आमत्रण निश्चय ही आत्मा की व्याकुलता का द्योतक है। प्रार्थना पश्चात्ताप का एक चिन्ह है। प्रार्थना हमारे अधिक अच्छे, अधिक शुद्ध होने की आतुरता को सूचित करती है। — महात्मा गांधी

परमात्मा की प्रार्थना के लिए एकत्र होनेवाले हृदय से एक हो जाते हैं।
— विनोबा

Prayer is the voice of faith
प्रार्थना विश्वास की ध्वनि है।

सर्वोत्तम प्रार्थना वह है जिसमें कम से कम शब्द हो। — ल्यूथर

शरीर की शक्ति कायम रखने के लिए हमको रोज खाना पडता है। आत्मा के लिए तो चौवीस घटे प्रार्थना की जरूरत है। — विनोबा

भगवान् की प्रार्थना में सारे भेदो को भूल जाने का अभ्यास हो जाता है।
— विनोवा

सभी सकुशल रहें, सभी निरोगी और स्वस्थ हो। सबका पूर्ण कल्याण हो, कोई दु ख-भागी न हो। — उपनिषद्

प्रीति प्रेम (दे० "प्यार", "मुहब्बत")

सुरनर मुनि सब की यह रीती।
स्वारथ लागि करैं सब प्रीती॥

— तुलसी (मानस-किष्कि...

रीति-प्रीति सब सो भली, वैर न हित मित गोत।
रहिमन याही जनम की, बहुरि न सगति होत। — रहीम

जल पय सरिस विकाइ, देखहु प्रीति की रीति भलि।
विलग होइ रस जाइ, कपट खटाई परत ही॥
— तुलसी (मानस-बाल)

व्यतिपजति पदार्थानान्तर कोपि हेतु।
नं खलु वहिरुपाधीन् प्रीतय सश्रयन्ते॥ — भवभूति उ०

कोई भीतरी कारण ही पदार्थों को परस्पर मिलाता है, वाहरी गुणो पर प्रीति आश्रित नहीं होती।

सच्चे प्रेम मे मनुष्य अपने आप को भूल जाता है। — स्वामी रामतीर्थ

अगुन अलेप अमान एकरस। राम सगुन भये भगत प्रेम वस॥
— तुलसी (मानस-अयोध्या)

प्रेम व्यथा तन में वसे, सब तन जर्जर होय।
राम वियोगी ना जियें, जिये तो वौरा होय॥

— कवीर

मदिरा के प्याले की भाति परिपूर्ण जीवन ही प्रेम है। — रवीन्द्र

प्रेम वसन्त समीर है, द्वेष ग्रीष्म की लू। — प्रेमचन्द (सेवासदन)

Love is like the moon, when it does not increase it decreases
प्रेम चन्द्रमा के समान है अगर वह वढेगा नही तो घटना शुरू हो जायगा।
— सीगर

त्याग प्रेम की परीक्षा है, वलिदान प्यार की कसौटी है। — अज्ञात

पोथी पढि पढि जग मुआ, पडित हुआ न कोय।
ढाई अच्छर प्रेम का, पढै सो पडित होय॥ — कवीर

जहाँ प्रेम और भक्ति नही, वहा परमात्मा नही। — गुरु रामदास

रहिमन गली है साकरी, दूजो ना ठहराहि।
आपु अहै तो हरि नही, हरि तो आपुन नाहि॥ — रहीम

Love looks not with the eyes, but with the mind
प्रेम आखो से नही वरन् मन से देखता है। — शेक्सपियर

प्रेम बलिदान सिखाता है, हिसाब नही सिखाता। प्रेम मस्तिष्क को नही हृदय को छूता है। —अज्ञात

धन और वैभव हृदय की प्यास नही बुझा सकते, उसके लिए आवश्यकता है निर्धन प्रेम की। —डा० रामकुमार वर्मा

प्रेम हृदय के समस्त सद्भावो का शान्त, स्थिर, उद्गारहीन समावेश है। —प्रेमचन्द

Mutual love, the crown of all our bliss
पारस्परिक प्रेम हमारे सभी आनन्दो का शिरोमणि है। —मिल्टन

प्रेम से ही सृष्टि का जन्म होता है, प्रेम से ही उसकी व्यवस्था होती है और अन्त में प्रेम में ही वह विलीन हो जाती है। —रवीन्द्र

Love reasons without reason
प्रेम विना तर्क का तर्क है। —शेक्सपियर

प्रेम इस लोक का अमृत है। —अज्ञात

प्रेम आत्मा से होता है, शरीर से नही। —भगवतीचरण वर्मा

यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
सीस उतारै भुईं धरै, तब पैठे घर माहिं॥ —कबीर

प्रेम टेबिल लैम्प नही है कि प्लग जोडा, स्विच दवाया और रोशनी जल गयी। अपनी दोनो हथेलियो से रगड कर आग पैदा करनी पडती है तब जाकर प्रेम की खीर पकती है। —अज्ञात

प्रेम थकान को मिटाता है, दु ख को सुख बनाता है। जीवन की वाटिका में प्रेम का गुलाव खिलकर अपने चारो ओर सुगन्ध विखेर देता है। प्रेम भगवान् का सर्वश्रेष्ठ वरदान है। —वालटेयर

प्रेम भाग्य के वश में है। —शेक्सपियर (हैमलेट)

दया के सामने जैसे दुष्टता का नाश हो जाता है, वैसे ही प्रेम और उदार सहानुभूति के सामने वुरे मनोविकारो का नाश हो जाता है। —स्वेट मार्डेन

जीवन का सवसे वडा आनद प्रेम है।

प्रेम दुःख और वेदना का वन्धु है। इस ससार में जहा दु ख और वेदना का अथाह सागर है, वहा प्रेम की अधिक आवश्यकता है। —डा० रामकुमार वर्मा

Love all God's creation, the whole and every grain of sand in it

ईश्वर की समस्त सृष्टि से, इसके कण कण से प्रेम करो। —डास्टाएवस्की

प्रेम और वासना में उतना ही अतर है, जितना कचन और कॉच में।

—प्रेमचन्द

स्तुति से प्रकट नही होता, सेवा से प्रकट होता है। —महात्मा गांधी

है,—आत्म-त्याग है, ममत्व का विस्मरण है।

—भगवतीचरण वर्मा (चित्रलेखा)

प्रेम पियाला जो पियै, सीस दच्छिना देय।
लोभी सीस न दे सकै, नाम प्रेम का लेय॥ —कबीर

it is good, but given unsought is better

म है, परन्तु विना याचना के दिया हुआ प्यार बेहतर है।

—शेक्सपियर

र्गीय आनन्द और मृत्यु की सी यन्त्रणा है, किन्तु जो प्रेम करता है सुखी और भाग्यवान् है। —गेटे

क्रोध जैसे तलवार को बाहर खीच लेता है, विज्ञान जैसे जलशक्ति का उद्घाटन कर लेता है, वैसे ही प्रेम रमणी के साहस और धैर्य को प्रदीप्त कर देता है। —प्रेमचन्द

प्रेम हमें अपने पडोसी या मित्र पर ही नही बल्कि जो हमारे शत्रु हो उन पर भी रखना है। —महात्मा गाधी

Love gives itself, it is not bought

प्रेम खरीदा नही जाता, वह स्वय को अर्पित करता है। —लागफेलो

प्रेम ही आरोग्य के मूल कारण—परमात्मा से हमारा मेल कराता है।

—स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

नारी की आत्मा प्रेम में बसती है। —श्रीमती सिगोरने

प्रेम बिना तलवार के शासन करता है। —कहावत

प्रेमी प्रीति न छाडही, होत न प्रेम तें हीन।
मरे परेहू उदर में, जल चाहत है मीन॥ —अज्ञात

पीया चाहै प्रेम रस, राखा चाहै मान।
एक म्यान में दो खड्ग, देखा सुना न कान॥ —कबीर

प्रेम ही असन्तोष-रूपी महान् व्याधि की रामबाण औषधि है। प्रेम ही द्वेष, ईर्ष्या आदि दुर्गुणो का उपशामक है। —स्वेट मार्डेन

प्रेम आरम्भ नही है—वह तो उत्तम कार्य का अन्तिम फल है। —रस्किन

प्रेम ही शान्ति है, प्रेम ही सुख और आनन्द है।
—स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

प्रेम दहकती हुई आग है तो वियोग उसके लिए घृत है। —प्रेमचन्द

प्रेम सरीर प्रपच रुज, उपजी अधिक उपाधि।
तुलसी भली सुबैदई, बेगि बाधिए व्याधि॥
—तुलसी (दोहावली)

प्रेम ही सबसे बडा शिक्षक है, प्रेम ही सर्वोत्कृष्ट शान्ति-कर्त्ता है।
—स्वेट मार्डेन

Love is blind, and lovers cannot see the pretty follies that they themselves commit

प्रेम अधा है और प्रेमी उन सुन्दर मूर्खताओ को जिन्हें वे करते है, नही देख सकते।
—शेक्सपियर

प्रेम कभी दावा नही करता, वह तो हमेशा देता है। प्रेम हमेशा कष्ट सहता है। न कभी झुझलाता है, न बदला लेता है। —महात्मा गाँधी

प्रेम नगरो मे नही वरन् देहाती झोपडियो में बसता है। —गेटे

प्रेम सीधी-सादी गौ नही, खूंख्वार शेर है, जो अपने शिकार पर किसी की आँख भी नही पडने देता। —प्रेमचन्द (गो-दान)

जब मैं था तब गुरु नही, अब गुरु हैं हम नाहिं।
प्रेम-गली अति साकरी, ता में दो न समाहिं॥ —कबीर

सच्चा प्रेम सयोग में भी वियोग की मधुर वेदना का अनुभव करता है।
—प्रेमचन्द

मनुष्य का कर्तव्य है कि कष्ट देनेवाले से भी प्रेम करे।
—मारकस आटोनियस

Love is never lost If not reciprocated it will flow back and soften and purify the heart

प्रेम कभी नष्ट नही होता। यदि प्यार का उत्तर प्यार से न मिला तो वह प्रेमी के पास लौट आता है और उसके हृदय को कोमल और पवित्र वना देता है

जहा प्रेम जितना उग्र होता है वहा वैसी ही तीखी घृणा भी होती है।

— वाशिगटन इर्विन

Happiness is the only good, reason the only torch, justice the only worship, humanity the only religion, and love the only priest.

प्रसन्नता ही केवल सदगुण है, (वुद्धि) तर्क ही केवल दीप है, न्याय ही केवल पूजनीय है, मानवता ही केवल धर्म है और प्रेम ही केवल पुजारी है।

— आर० जी० इगरसोल

प्रेम हृदयो को मिलाता है, देह पर उसका वश नही चलता। — प्रेमचन्द

प्रेम स्वर्गीय शक्ति का जादू है। इसमे पडकर राक्षस भी देवता वन जाते हैं।

— सुदर्शन

प्रेम असाध्य रोग है। — प्रेमचन्द

प्रेम मृत्यु से अधिक वलवान है, मृत्यु जीवन से अधिक वलवान है। यह जानते हुए भी मनुष्य मनुष्य के वीच कितनी सकुचित मीमा खिची है। — खलील जिब्रान

अपने प्रेम को पर्वत के विषम शिखर पर स्थापित न करो, ऐसा करने से उसमे पतन का भय है। — रवीन्द्र

परमात्मा पूजा का नही, प्रेम का भूखा है। — स्वामी दयानन्द

जो उपकार जताने का इच्छुक है, वह द्वार खटखटाता है। जो प्रेम करता है, उसके लिए द्वार खुला है। — रवीन्द्र

प्रेम और द्वेष

प्रेम का स्वभाव है अनेक को एक करना और द्वेष का स्वभाव है एक को अनेक करना। — अज्ञात

प्रेम द्वेप को परास्त करता है। ईश्वर निरतर शैतान के दाँट खट्टे करता है।

—महात्मा गांधी

प्रेम और सौन्दर्य

प्रेम ही सर्वोच्च कानून है और सौन्दर्य भी। दोनो ही पूर्णता को प्राप्त करते है। एक तो स्त्री-पुरुष के अविभाज्य ऐक्य में, दूसरा अनन्त आनन्द में। —क० मा० मुशी

प्रेमहीन

प्रेम-विहीन हृदय के लिए ससार काल-कोठरी है, जो नैराश्य और अधकार से भरी है। — प्रेमचन्द

जिसने कभी प्रेम नही किया उसने स्वर्ग में रहकर भी नरक का अनुभव किया। प्रेमहीन जीवन नरक की दहकती ज्वाला है, जिसकी आँच में दूसरे भी जलने लगते है। —अज्ञात

प्रेमी

प्रेमी हृदय उदार होता है, वह दया और क्षमा का सागर है, ईर्ष्या और दभ के नाले उसमें मिलकर उसे विशाल बना देते हैं। — प्रेमचन्द

सच्चा प्रेमी अपने सुखो की तनिक भी इच्छा नही करता, वरन् जिस पर प्रेम करता है उसके सुख पर अपने सुख को उत्सर्ग कर देता है। — अज्ञात

The lunatic, the lover, and the poet
Are of imagination all compact

पागल हो, प्रेमी हो या कवि, इन सबकी कल्पना-शक्ति बडी तीव्र होती है।
—शेक्सपियर

प्रेरणा

प्रेरणा ईश्वर-ज्योति है जो सात्विक प्रकृति के महापुरुषो को अपना जीवन-कार्य करने का आदेश तथा उत्साह देती है। — अज्ञात

प्रेरणा मनुष्य के अन्त स्थित अगाध सामर्थ्य को बाहर प्रकट करने की चेतावनी है। — अज्ञात

फल

जो कर्म छोडता है वह गिरता है। कर्म करते हुए भी जो उसका फल छोडता है वह चढता है। — महात्मा गाधी

फलेन परिचीयते। — कहावत

फल (परिणाम) से ही उद्योग की पहिचान होती है।

फलत्याग से मतलब है फल के सम्बन्ध में आसक्ति का अभाव। वास्तव में फलत्यागी को हजारगुना फल मिलता है। — महात्मा गांधी

अविज्ञाय फल यो हि कर्मत्वे चानुधावति।
स शोचेत्फलवेलाया यथा किंशुकसेचक ॥ — वाल्मीकि

जो फल को जाने विना ही कर्म की ओर दौडता है, वह फल-प्राप्ति के अवसर पर केवल शोक का भागी होता है—जैसे कि पलाश को सींचनेवाला पुरुष उसका फल न पाने पर खिन्न होता है।

फलहीन

फलहीन नृप भृत्या कुलीनमपि चोन्नतम्।
सत्यज्यान्यत्र गच्छन्ति शुष्क वृक्षमिवाण्डजा ॥ — पचतन्त्र

उन्नत कुल में उत्पन्न किन्तु फलहीन (अपने दया, दाक्षिण्यादि गुणो से रहित) राजा को छोडकर नौकर अन्यत्र चले जाते है, जैसे कि सूखे पेड को छोडकर पक्षी दूसरे पेड पर चले जाते है।

फायदा

जब तक तकलीफ सहने की तैयारी नही होती तब तक फायदा दिखाई दे ही नही सकता। फायदे की इमारत नुकसान की धूप में बनी है। — विनोबा

फजूल-खर्ची

जो मूर्ख दिन दहाडे कपूर की बत्ती जलाता है, एक दिन ऐसा आयेगा कि उसको रात को जलाने के लिए तेल भी न मिलेगा। उसकी फजूलखर्ची एक दिन विषम फल लायेगी ही। — सादी (गुलिस्ताँ)

मनुष्य धन के अभाव से उतना कष्ट नही पाता जितना वह अपनी फजूल-खर्ची के कारण पाता है। — अज्ञात

Waste of time is the most extravagant and costly of all expenses

समय गँवाना सभी खर्चो से कीमती और व्यर्थ होता है। — अज्ञात

फिलॉसफर (दें० "दार्शनिक")

दार्शनिक का सर्वप्रथम कर्त्तव्य अपने अहकार को तिलाजलि देना है।

— इपिक्टस

To be a philosopher is not merely to have subtle thoughts, but so to love wisdom as to live according to its dictates

दार्शनिक होना केवल सूक्ष्म विचार रखना ही नही है किन्तु ज्ञान की इस तरह आराधना करना है कि यह जीवन उसी के नियमानुसार व्यतीत होने लगे। — थोरो

फिलॉसफी (दें० "दर्शन", "तत्त्वज्ञान")

फलसफी की बहस के अन्दर खुदा मिलता नही।
डोर को सुलझा रहे हैं और सिरा मिलता नही॥ — अकबर

Queen of arts and daughter of heavan
दर्शन कलाओ की रानी और स्वर्ग की बेटी है। — बर्क

Philosophy if rightly defined is nothing but the love of wisdom
दर्शन को यदि स्पष्ट किया जाय तो वह केवल ज्ञान से प्रेम के अतिरिक्त और कुछ नही। — सिसरो

फूल

फूल केवल देव-मन्दिरो की अथवा राज-महलो की ही वस्तु नही है, निर्धनो के झोपडो में अथवा वीतराग सन्यासियो के मन में भी उनके प्रति आदर के भाव हैं।

— अज्ञात

Lovely flowers are the smiles of God's goodness
लुभावने फूल ईश्वर की अच्छाई की मुस्कान हैं। — विबरफोर्स

नैसर्गिकी सुरभिण कुसुमस्य सिद्धा।
मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि॥ — कालिदास

सुगन्धित पुष्प की स्वाभाविक स्थिति यह है कि वह मस्तक पर धारण किया जाय, चरणो से न रौंदा जाय।

फूल की पखडियो को तोड कर तुम उसका सौंदर्य नही ग्रहण कर सकते।

— रवीन्द्र

प्रकाश जब काले बादलो का चुबन करता है तो वे स्वर्ग के फूल बन जाते हैं।
—रवीन्द्र

फूल प्रकृति की उदारता का दान है। उसके सूँघने से हृदय पवित्र होता है, मेधा-शक्ति बढती है और मस्तिष्क प्रफुल्ल होता है। —जयशकर प्रसाद

फूल प्रेम की सच्ची भाषा है। —पी० बेन्जामिन

फुलवारी

To cultivate a garden is to walk with God
फुलवारी लगाना ईश्वर के साथ टहलना है। —बोवी

बधन

Man burricades against himself
मनुष्य अपने को स्वय बधन में डालता है। —रवीन्द्र

बद्धो हि को यो विषयानुरागी।
का वा विमुक्तिर्विषये विरक्ति ॥ —शकराचार्य

वास्तव में बधन में कौन है? विषयो में आसक्त। विमुक्ति क्या है? विषयो से वैराग्य।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽय कर्मबन्धन। —गीता

जो कर्म यज्ञ के लिए (परोपकारार्थ) किये जाते हैं उनके अतिरिक्त कर्मों से इस लोक में बधन पैदा होता है।

यदृच्छालाभसतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सर।
सम सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबद्धयते॥ —गीता

जो यथालाभ से सन्तुष्ट रहता है, जो सुख-दु खादि द्वन्द्वो से मुक्त हो गया है, जो द्वेषरहित हो गया है, जो सफलता निष्फलता में तटस्थ है, वह कर्म करते हुए भी बन्धन में नही पडता।

बधु

आवत काम रहीम हैं, बधु विरल गहि मोह।
जीरन पेडहि के भये, राखत बरहि बरोह॥ —रहीम

बदनामी

हम इतना बुराई से नही डरते जितना बदनामी से डरते हैं। बदनामी का डर न हो तो ससार में पापो की सख्या कई गुनी बढ जाय। —अज्ञात

There are calumnies against which even innocence loses courage

बहुत सी ऐसी बदनामिया हैं जिनके समक्ष भोलापन भी साहस छोड देता है। —नेपोलियन

To persevere in one's duty and to be silent is the best answer to calumny

अपने कर्तव्य में प्रयत्नशील रहना और चुप रहना बदनामी का सबसे अच्छा जवाब है। —वाशिंगटन

बदला

बदला अमानुषिक शब्द है। —सेनेका

He that studieth revenge keepeth his own wounds green, which otherwise would heal and do well

जो बदला लेने की बात सोचता है, वह अपने ही घाव को हरा रखता है जो कि अब तक कभी का अच्छा हो गया होता। —बेकन

बदला मधुर होता है। —कहावत

In taking revenge, a man is but equal to his enemy, but in passing it over he is his superior

बदला लेने से मनुष्य अपने शत्रु के समान हो जाता है, परन्तु न लेने से वह उससे श्रेष्ठ बनता है। —बेकन

बदला साहस नही है, परन्तु उसका सहना साहस है। —शेक्सपियर

हत्या के रूप में बदला लेना शैतान का काम है। —कहावत

शत्रुओ को क्षमा करना बदले का सबसे अच्छा साधन है। —अज्ञात

बल

दुष्टो का बल हिंसा है, राजाओ का बल दण्ड-विधि है, स्त्रियो का बल सेवा है और गुणवालो का बल क्षमा है। —विदुर

वालानाम् रोदन वल

रोना ही वालकों का वल है।

सेवा के लिए अर्पण किया हुआ वल टिकेगा, अमर होगा। —वाल्मीकि

Force is all-conquering but its victories are short-lived

वल सव पर विजय प्राप्त करता है, परन्तु वह विजय क्षणिक होती है। —लिंकन

भोग को अर्पण किया हुआ वल अपने और ससार के नाश का कारण होगा।

—वाल्मीकि

Who overcomes by force, hath overcome but half his foe

वल से जो शत्रु को जीतता है, वह केवल उसको आधा ही जीत पाता है।

—मिल्टन

वलवान

अधिक वलवान तो वे ही होते हैं जिनके पास वुद्धि-वल होता है। जिनमें केवल शारीरिक वल होता है, उन्हें वास्तविक वलवान नही माना जाता।

—वेदव्यास (महाभारत, शाति)

सच्चा वलवान वही है जिसने अपने मन पर काबू पा लिया है। —अज्ञात

वलिदान

It is easier to sacrifice great than little things

छोटी छोटी वस्तुओ की अपेक्षा वडी वस्तुओ का वलिदान करना सरल है।

—मानटेन

वहादुर (दे० "वीर")

वहादुर रोगशय्या पर मरने की अपेक्षा रणक्षेत्र में मरना पसन्द करता है।

—महात्मा गाधी

No man can be brave who considers pain the greatest evil of life

कोई मनुष्य वहादुर नही हो सकता जो दुःख को जीवन का सवसे वडा अभिशाप समझता है। —सिसरो

Gold is tried by fire, brave man by adversity
अग्नि सोने को परखती है और आपत्ति बहादुरो को। —सेनेका

बहादुरी

Strength of numbers is the delight of the timid The valiant of spirit glory in fighting alone
कायर बहुसख्यक होने में प्रसन्न होते हैं। बहादुर अकेले ही लडने में अपना गौरव समझते हैं। —महात्मा गांधी

Physical bravery is an animal instinct, moral bravery is a much higher and truer courage
शारीरिक वीरता पशुता का द्योतक है, नैतिक वीरता अपेक्षाकृत ऊची और सच्ची है। —वेन्डेल फिलिप्स

The better part of valour is discretion
विवेक बहादुरी का उत्तम भाग है। —शेक्सपियर

Valour would cease to be a virtue if there were no injustice
अगर अन्याय न रहे तो बहादुरी का गुण समाप्त हो जाय। —एजिसलस

बहुमत

One, on God's side, is a majority
जिसके साथ ईश्वर है वह बहुमत में है। —वेन्डेल फिलिप्स

It is my principle that the will of the majority should always prevail.
यह मेरा सिद्धान्त है कि बहुमत का निर्णय मान्य हो। —जेफरसन

The voice of the majority is no proof of justice
बहुमत की आवाज न्याय की द्योतक नही है। —शिलर

अतःकरण के मामले में बहुमत के सिद्धान्त को कोई स्थान नही है।
—महात्मा गाधी

बातचीत

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय॥ —कबीर

अवाक् रहकर अपने आप वातचीत करने का साधन यावत् साधनो का मूल्य है, शाति का परम पूज्य मदिर है, परमार्थ का एकमात्र सोपान है। —बालकृष्ण भट्ट

ता गर्दे सुखन न गफ्ता बाशद।
ऐबो हुनरश न हुफ्ता बाशद॥ —सादी (गुलिस्तां)

किसी आदमी की बुराई-भलाई उस समय तक मालूम नही होती जब तक कि वह वातचीत न करे।

हमारी जिह्वा कतरनी के समान सदा स्वच्छन्द चला करती है, उसे यदि हमने दवाकर काबू में कर लिया तो क्रोधादिक बडे-बडे अजेय शत्रुओ को बिना प्रयास ही जीतकर अपने वश में कर डाला। —बालकृष्ण भट्ट

मधुर बचन है औषधी, कटुक वचन है तीर।
स्रवन द्वार ह्वै सचरै, सालै सकल शरीर॥ —कबीर

सत्सग या वातचीत से मनुष्य उद्यत बुद्धि का होता है, क्योकि उसके लिए मनुष्य को अपनी जानकारी इस प्रकार उपस्थित रखनी पडती है, जिसमें जब सुअवसर आ पडे तब वह उसे काम में ला सके। —बेकन

वातचीत प्रिय हो पर ओछी न हो, चुहल हो पर बनावट लिए न हो, स्वच्छन्द हो पर अश्लील न हो, विद्वत्तापूर्ण हो पर दम्भयुक्त न हो, अनोखी हो पर असत्य न हो। —शेक्सपियर

अगर किसी की कडवी वात न सुनना चाहे तो उसका मुंह मीठा करे। —सादी

Silence is one great art of conversation
मौन बातचीत की एक महान कला है। —हैज़लिट

वोली एक अमोल है, जो कोई वोलै जानि।
हिए तराजू तौलि के, तव मुख वाहर आनि॥ —कबीर

Know how to listen, and you will profit even from those who talk badly
सुनना सीखो। तुम्हें उन लोगो से भी लाभ होगा जिन्हें ठीक तरह से वातचीत करना नही आता। —प्लूटार्क

वातचीत का अच्छा ढग यह है कि प्राप्त प्रसग के साथ कुछ तर्क भी मिला रहे, दृष्टान्तो और कथाओ के साथ युक्ति भी रहे, प्रश्नो के साथ सम्मति भी प्रकाशित की जाय और हँसी-दिल्लगी के साथ कुछ काम की वात भी रहें। —बेकन

जो मनुष्य तौलकर बात नही करता उसे कठोर बातें सुननी पडती हैं। — सादी

The first ingredient in conversation is truth, the next, good sense, the third, good humour, and the fourth, wit

बातचीत का पहला अश है सत्य, द्वितीय सुन्दर समझ-बूझ, तृतीय सुन्दर विनोद और चतुर्थ वाक्चातुर्य। — सर डब्लू० टेम्पिल

बाधा

जिस आदमी को चारो ओर विघ्न-बाधाएँ ही दीख पडती हैं उसका आत्मबल क्षीण हो जाता है, वह कोई महान् कार्य नही कर सकता। — स्वेट मार्डेन

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्या
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमाना
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति ॥ — भर्तृहरि

निकृष्ट व्यक्ति बाधाओ के डर से काम शुरू ही नही करते, मध्यम प्रकृतिवाले कार्य का प्रारभ तो कर देते हैं किन्तु विघ्न उपस्थित होने पर उसे छोड देते हैं, (इसके विपरीत) उत्तम व्यक्ति बार बार विघ्नो के आने पर भी काम को एक बार शुरू कर देने के बाद फिर उसे नही छोडते।

बालक

बालक शुद्ध और ब्रह्मरूप है। — अज्ञात

प्रत्येक बालक यह सदेश लेकर ससार में आता है कि ईश्वर अभी मनुष्यो से निराश नही हुआ है। — रवीन्द्र

बालक निर्धन का धन है। — कहावत

In praising or loving a child, we love and praise not that which is, but that which we hope for

बालक की प्रशसा या प्यार करने में हम उस वस्तु की प्रशसा और प्यार नही करते जो वह है अपितु उस वस्तु की, जिसकी हम उससे आशा करते हैं। — गेटे

बालक देवलोक से आया है, वह छल-कपट और दुराव नही जानता। — अज्ञात

Children increase the cares of life, but mitigate the remembrance of death

बालक जीवन की चिन्ता को बढा देते हैं परन्तु मृत्यु की स्मृति को कम कर देते हैं। —कहावत

बालक वे चमकते हुए तारे हैं जो ईश्वर के हाथ से छूटकर धरती पर गिर पडे हैं। —अज्ञात

जीवन की महत्वाकाक्षाएँ बालको के रूप में आती हैं। —रवीन्द्र

बालक राष्ट्र की मुस्कुराहट है। —चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

सत्य, अहिंसा का पाठ मैंने बालक से सीखा है। —महात्मा गांधी

यदि स्वर्ग में पहुँचने की इच्छा है तो पहले बालक बनो। —ईसा

राजनीतिक सम्मेलनो से हमारी उलझने कभी न सुलझेंगी। यदि इन गुत्थियो को सुलझाना है तो इसके लिए हमें बालक की शरण लेनी होगी। —प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट

बच्चे देश के दर्पण हैं। —अज्ञात

बालक भगवान के जीते-जागते खिलौने हैं। बालको में भगवान् का दर्शन जितनी जल्दी हो सकता है, उतना शायद ही किसी में हो। —हरिभाऊ उपाध्याय

बालक प्रकृति की अनमोल देन है, सुन्दरतम कृति है, सबसे निर्दोष वस्तु है। बालक मनोविज्ञान का मूल है, शिक्षक की प्रयोगशाला है। बालक मानव-जगत् का निर्माता है। बालक के विकास पर दुनियाँ का विकास निर्भर है। बालक की सेवा ही विश्व की सेवा है। —अज्ञात

बच्चे राष्ट्र की आत्मा है, क्योकि यही है जिनको लेकर राष्ट्र पल्लवित हो सकता है, यही हैं जिनमें अतीत सोया हुआ है, वर्तमान करवटे ले रहा है और भविष्य के अदृश्य बीज बोये जा रहे हैं। —अज्ञात

क्या तुम जानते हो कि बालक होना क्या है? इससे तात्पर्य है प्रेम मे विश्वास करना, सौन्दर्य मे विश्वास करना तथा विश्वास में विश्वास करना।

—फ्रान्सिस टामसन

The child is father of the man

बालक मानव का जनक है। —वर्ड्सवर्थ

बालको की कर्त्तव्यशीलता ही सब गुणो की नीव है। —सिसरो

वालक और मूर्ख सत्य वोलते हैं। —कहावत

वालविधवा

वालविधवाओ का अस्तित्व हिन्दू धर्म के ऊपर एक कलक है। —महात्मा गाधी

The child widow is the unique product of the Indian soil unknown in other parts of the world

वालविधवा भारत की अनोखी उपज है जिससे ससार के अन्य भाग अपरिचित हैं। —अज्ञात

बिगड़ी बात

विगरी वात वनै नही, लाख करो किन कोय।
रहिमन विगरे दूध को, मथे न माखन होय॥ —रहीम

सुधरी विगरै वेगि ही, विगरी फिर सुधरै न।
दूध फटै कांजी परे, सो फिर दूध बनै न॥ —अज्ञात

बिन्दी

भाल लाल विंदी दिये, छुटे वार छवि देत।
गह्यो राहु अति आह करि, मनु ससि सूर समेत॥ —विहारी

भाल लाल विंदी ललन, आखत रहे विराज।
इदुकला कुज में वसी, मनो राहु-भय भाजि॥ —विहारी

सवै कहें विन्दी दिये, आँक दसगुनो होत।
तिय ललाट वेंदी दिये, अगनित वढत उदोत॥ —विहारी

वीमारी (दे० 'रोग')

वीमारी प्रकृति के साथ किये हुए अत्याचार का प्रतिकार है। —होसिया वैलू

कठिन वीमारी के लिए तीव्र चिकित्सा की आवश्यकता है। —कहावत

जो आदमी दुनिया में वीमार वनकर आया है उसकी मौत कभी शानदार नही हो सकती। उसकी मौत पर दुनिया आराम की साँस लेगी और शाति की नीद सोयेगी। कहेगी, चलो अच्छा हुआ, वीमारी टल गयी। —अज्ञात

वुजदिली

घर की मोहब्वत वुजदिली का दूसरा नाम है। —अज्ञात

Cowardice is not synonymous with prudence It often happens that the better part of discretion is valour

वुजदिली दूरदर्शिता का पर्यायवाची नही है। प्राय ऐसा होता है कि वहादुरी विवेक का उत्तम भाग है। —हैजलिट

वुढापा

वुढापा तृष्णारोग का अन्तिम समय है, जव सम्पूर्ण इच्छाएँ एक ही केन्द्र पर आ लगती हैं। —प्रेमचन्द

मनुष्य की उम्र चाहे कम ही क्यो न हो पर यौवन के विचार यदि उसके मन से निकल गये हैं, उसका उत्साह ढीला पड गया है, उसका कार्यवल कमजोर हो गया है, तो उसे वूढा ही समझना चाहिए। —स्वेट मार्डेन

Old age is a tyrant who forbids, at the penalty of life, all the pleasures of youth

वुढापा जुल्मी है जो मृत्यु का भय दिखाकर यौवन के समस्त उल्लासो का निषेध कर देता है। —रोशोको

आदौ चित्ते पुन काये सता सम्पद्यते जरा।
असतान्तु पुन काये नैव चित्ते कदाचन्॥ —पंचतंत्र

सत्पुरुषो को पहले चित्त में और वाद में शरीर में वुढापा आता है। असत्पुरुषो को शरीर में ही वुढापा आता है, चित्त में कभी नही।

नयी चीज सीखने की जिसने आशा छोड दी वह वूढा है। —विनोवा

मनुष्य तव तक वूढा नही होता जव तक उसके जीवन मे मधुरता और उत्साह वना रहता है, जव तक उसके हृदय में महत्त्वाकाक्षा वनी रहती है, जव तक उसके मन में कार्यशक्ति का प्रवाह वहता रहता है।

—स्वेट मार्डेन

वृढापा वहुधा वचपन का पुनरागमन हुआ करता है। —प्रेमचन्द

बुढापा-जवानी

बुढापा बरफ से भी ठडा है, जवानी अगारे से भी गरम। बुढापा अक्लमद और समझदार है। जवानी दीवानी और नातजुर्बेकार है। बुढापा देखता है और सोचता है, जवानी देखती है और बेचैन हो जाती है। —अज्ञात

बुद्धि (दे० 'ज्ञान', 'प्रज्ञा', 'विवेक')

मनुष्य के पास बुद्धि और बल से बढकर श्रेष्ठ कोई दूसरी चीज नही।
—वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

बुद्धि आत्मा के इस प्रकार अधीन है जिस प्रकार कोई भोला पुरुष किसी चालाक स्त्री के वश में हो। —सादी (गुलिस्ता)

जिसको बुद्धि नही है उसको बिना सीग का पशु समझना चाहिए। —प्रेमचन्द

'बुद्धिर्यस्य बल तस्य' —पचतंत्र

जिसको बुद्धि है, वही बलवान् है।

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान्विपरीताश्च बुद्धि सा पार्थ तामसी॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

जो बुद्धि धर्म को अधर्म मानकर सब बातो में विपरीत निर्णय करती है उसको तामसी बुद्धि (दुर्बुद्धि) कहते हैं।

ईश्वर ने बुद्धि की कोई सीमा निश्चित नही की। —बेकन

बुद्धि की स्थिरता के बिना कोई भी आदर्श पूरा नही होता। —विनोबा

बुद्धि-विकास के लिए सच्चा क्षेत्र गाँव ही है, शहर नही। —महात्मा गाधी

यस्य नास्ति स्वय प्रज्ञा शास्त्र तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्या विहीनस्य दर्पण किं करिष्यति॥ —चाणक्य

जिसको बुद्धि नही है उसको शास्त्र से क्या लाभ? जैसे नेत्रहीन मनुष्य के लिए दर्पण बेकार है।

केवल बुद्धि के द्वारा ही मनुष्य का मनुष्यत्व प्रकट होता है। —प्रेमचन्द

बुद्धि के सिवा विचार-प्रचार का दूसरा कोई शस्त्र नही है, क्योकि अन्याय को ज्ञान ही मिटा सकता है। —स्वामी शकराचार्य

बुद्धि माया की माँ है, जहाँ जाती है बेटी को साथ ले जाती है। —अज्ञात

जिस मनुष्य की बुद्धि का विकास नही होता अथवा जो बुद्धिद्रोही या अविवेकी होता है वह मनुष्यता से गिर जाता है। —कौटिल्य

यथा धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च।
अयथावत् प्रजानाति बुद्धि सा पार्थ राजसी॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

धर्म-अधर्म, कार्य-अकार्य का ठीक ठीक निरूपण जो बुद्धि न कर सके उसको राजसी कहते है।

बुद्धितत्त्व दैवी विभूतियो में एक उच्च कोटि का वरदान है। इसका उपयोग अधिक से अधिक ईमानदारी से होना चाहिए। —अज्ञात

बुद्धि की शुद्धि के लिए भगवान् की भक्ति से बढकर कोई भी साधन आज तक अनुभव मे नही आया। —विनोबा

बुद्धिश्रेष्ठानि कर्माणि बाहुमध्यानि भारत।
तानि जङ्घाजघन्यानि भारप्रत्यवराणि च॥

—वेदव्यास (महाभारत)

बुद्धि से विचार कर किये जानेवाले कार्य श्रेष्ठ होते है, केवल बाहुबल के सहारे होनेवाले मध्यम श्रेणी के। विचार और उत्साहरहित केवल पैरो के भरोसे होनेवाले कार्य निकृष्ट होते है जो केवल भाररूप है।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये।
बन्ध मोक्ष च या वेत्ति बुद्धि सा पार्थ सात्त्विकी॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

प्रवृत्ति निवृत्ति, कार्य अकार्य, भय अभय तथा बन्ध मोक्ष का भेद जो बुद्धि उचित रीति से जानती है, वह सात्विक है।

(दे० "ज्ञान", "प्रज्ञा", "विवेक")

बुद्धिमान्

बुद्धिमान् विवेक से, साधारण मनुष्य अनुभव से, अज्ञानी आवश्यकता से और पशु स्वभाव से सीखते है —सिसरो

आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञा काम व्यग्रा भवन्ति च।
महारम्भा कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुला ॥ — माघ

मूर्ख लोग छोटा-सा कार्य आरम्भ करते हैं और उसी में अत्यन्त व्याकुल हो जाते हैं, बुद्धिमान लोग बड़े से बडा कार्य आरम्भ करते हैं और निश्चिन्त वने रहते हैं। (अर्थात् सफलता प्राप्त कर ही लेते हैं।)

बुद्धेर्बुद्धिमता लोके नास्त्यगम्य हि किंचन।
बुद्ध्या यतो हता नन्दाश्चाणक्येनासिपाणय ॥ — पंचतंत्र

बुद्धिमानो की बुद्धि के सम्मुख ससार में कुछ भी असाध्य नही है। बुद्धि से ही शस्त्रहीन चाणक्य ने सशस्त्र नदवश का नाश कर डाला।

बुध नहिं करहिं अधम कर सगा ॥ — तुलसी (मानस-उत्तर)

बुद्धिमान् के पास थोडा-सा घन हो तो वह भी बढता रहता है। वह दक्षतापूर्वक काम करते हुए सयम के द्वारा सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है।

— वेदव्यास (महाभारत)

दीर्घौ बुद्धिमतो वाहू याभ्या दूरे हिनस्ति स । — पचतंत्र

बुद्धिमान् की भुजाएँ वडी लम्बी होती हैं, जिनसे वह दूर तक वार करता है।

A wise man's day is worth a fool's life

बुद्धिमान् मनुष्य का एक दिन मूर्ख के जीवन भर के बराबर होता है। — कहावत

खाली पेट कोई भी आदमी बुद्धिमान् नही हो सकता। — जार्ज इलियट

The intellect of the wise is like glass, it admits the light of heaven and reflects it

बुद्धिमान की बुद्धि दर्पण के सदृश है। वह स्वर्ग का प्रकाश लेकर उसे परावर्तित कर देती है। — हेयर

इह तुरगशतै प्रयान्ति मूढा धनरहितास्तु बुधा प्रयान्ति पदभ्याम्।
गिरिशिखरगतापि काकपक्ति पुलिनगतैर्न समत्वमेति हसै ॥

सैंकडो घोडो पर चलनेवाले मूर्ख लोग पैदल चलनेवाले घनरहित बुद्धिमानो की वरावरी नही कर सकते, क्योकि पर्वत के शिखर पर निवास करनेवाले कौए नदी के तट पर विहार करनेवाले हसो की वरावरी नही कर सकते। — अज्ञात

बुद्धिमान् अपना विचार वदल देते हैं, मूर्ख कभी नही वदलते। — कहावत

Wise men learn by other men's mistakes, fools by their own

वुद्धिमान् दूसरो की त्रुटियो से शिक्षा लेते हैं, मूर्ख अपनी त्रुटियो से। —कहावत

वुद्धिमत्ता

अच्छी तरह सोचना वुद्धिमत्ता है, अच्छी योजना वनाना उत्तम है और अच्छी तरह काम को पूरा करना सव से अच्छी वुद्धिमत्ता है। —फारसी कहावत

वुराई

इस विश्व में वुराई भी अपना अस्तित्व चाहती है। —जयशकर प्रसाद

जव तक मनुष्य रहेगे तव तक वुराई रहेगी। —टेसीटस

One sin doth provoke another

एक वुराई दूसरी वुराई को जन्म देती है। —शेक्सपियर

Let thy vices die before thee

अपनी वुराई को अपने पहले ही मर जाने दो। —फ्रेंकलिन

The evil that men do lives after them, the good is oft interred with their bones

मनुष्य की वुराइयाँ उसके मरने के पीछे तक कलकित रहती है। भलाइयो को तो लोग मरते ही भूल जाते हैं। —शेक्सपियर

वुराई आदमी को पहले अज्ञानी व्यक्ति के समान मिलती है और हाथ वांधकर नौकर की तरह उसके सामने खडी हो जाती है। फिर मित्र वन जाती है और निकट आ जाती है, फिर मालिक वनती है और आदमी के सिर पर सवार हो जाती है एव उसको सदा के लिए अपना दास वना लेती है। —अज्ञात

वुराई के वीज चाहे गुप्त से गुप्त स्थान में वोओ, वह स्थान किले की तरह चाहे सुरक्षित ही क्यो न हो, पर प्रकृति के अत्यन्त कठोर, निर्दय, अमोघ, अपरिहार्य कानून के अनुसार तुम्हे व्याजसहित कर्मों का मूल्य चुकाना होगा। —स्वामी रामतीर्थ

वुरा जो देखन मैं चला, वुरा न दीखा कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझ सा वुरा न कोय॥ —कवीर

Vice lives and thrives best by concealment

वुराइयाँ गुप्त रहकर जीवित रहती हैं और अच्छी तरह पनपती हैं। —वर्जिल

बुरी बातो को भूल जाना चाहिए, बुरी बातो को ही देखते रहेंगे तो इन्सान हैवान बन जायगा। —विनोबा

बेईमानी

बेईमानी का प्रत्येक व्यवहार डडी मारने से कम नही है। —रस्किन

बेवकूफ

जो अपने को बुद्धिमान समझता है वह बडा बेवकूफ है। —वालटेयर

Fools rush in where angels fear to tread
जहाँ देवता भी पैर रखते हुए भय खाते हैं वहा बेवकूफ झपट पडते हैं। —पोप

A learned fool is more foolish than an ignorant fool
शिक्षित मूर्ख, अशिक्षित की अपेक्षा अधिक बेवकूफ होता है। —मोलियर

दुनिया में बेवकूफो की कमी नही गालिब, एक ढूंढो हजार मिलते हैं।
—गालिब

A fool always finds some greater fool to admire him
बेवकूफ को उससे बडा बेवकूफ उसकी प्रशसा करनेवाला मिल जाता है।
—बाइलो

बैर

बैर के कारण उत्पन्न होनेवाली आग एक पक्ष को स्वाहा किये बिना कभी शान्त नही होती। —वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

जब किसी से बैर बंध जाय तो उसकी चिकनी चुपडी बातो मे आकर विश्वास नही करना चाहिए। ऐसा करने से बैर दूर नही होता बल्कि विश्वास करनेवाला ही मारा जाता है। —वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

जैसे मिट्टी का घडा एक बार फूट जाने पर फिर नही जुडता वैसे ही जब किसी कुल मे दु खदायी बैर बंध जाता है तो वह शान्त नही होता। उसे याद दिलानेवाले बने ही रहते हैं, इसलिए जब तक कुल में एक भी व्यक्ति बना रहता है खुन्स नही मिटती। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

बैर का अन्त बैरी के जीवन के साथ हो जाता है। —प्रेमचन्द

ब्रह्म (दे० "ईश्वर", "परमेश्वर")

सत्य ज्ञानमनन्त ब्रह्म। —तैत्तिरीय उपनिषद्

ब्रह्म सत्यस्वरूप, ज्ञानस्वरूप एव अनत है।

ब्रह्मैवेद सर्वम्। ब्रह्म ही यह सब है। —नृसिंह ता० उपनिषद्

आकाशो वै नाम नामरूपयोर्निर्वहिता ते यदन्तरा तद् ब्रह्म।

—छान्दोग्य उपनिषद्

निश्चयपूर्वक आकाश ही नाम और रूप का निर्वाह करनेवाला अर्थात् उनका आधार है, वे दोनो जिसके भीतर है, वह ब्रह्म है।

क ब्रह्म ख ब्रह्म। सुख ब्रह्म है, आकाश ब्रह्म है। —छान्दोग्य उपनिषद्

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व। —तैत्तिरीय उपनिषद्

जिससे ये सम्पूर्ण प्राणी जन्म लेते, जन्म लेकर जिससे जीवन धारण करते तथा प्रलय के समय जिसमें पूर्णत प्रवेश कर जाते है वह ब्रह्म है, उसको जानने की इच्छा करो।

जिसका मन के द्वारा मनन नही होता, किंतु जिसकी शक्ति से ही मन मनन व्यापार में सफल होता है, उसी को तुम ब्रह्म जानो। —केनोपनिषद्

ब्रह्म ही सत्य है, वह एक, अद्वय, अपरिणामी, चिद्घन है ब्रह्म ही ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय है। —सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

यह सब कुछ अमृतमय ब्रह्म ही है। आगे ब्रह्म है, पीछे ब्रह्म है तथा दायें और बायें भी ब्रह्म है। —मुण्डकोपनिषद्

यथा सुदीप्तात् पावकाद् विस्फुल्लिगा सहस्रश प्रभवन्ते सरूपा।
तथा क्षराद् विविधा सोम्य भावा प्रजायन्ते यत्र चैवापि यन्ति॥

—मुण्डकोपनिषद्

जैसे जलती हुई आग से उसी के समान रूपवाली सहस्रो चिनगारियाँ निकलती है, उसी प्रकार अविनाशी ब्रह्म से नाना प्रकार के भाव (जीव) उत्पन्न होते और उसी में लीन होते रहते हैं।

यह सारी प्रजा सत्रूपी कारण से उत्पन्न हुई है, सत् में ही निवास करती है और अत में भी सत् में ही प्रतिष्ठित होती है। —छान्दोग्य उपनिषद्

जिसका नेत्रो द्वारा दर्शन तथा हाथो द्वारा ग्रहण नही हो सकता, जिसमें कोई रग नही है, जो आँख-कान और हाथ-पैर आदि से रहित है, उस नित्य, सर्वगत, अत्यन्त सूक्ष्म एव अविनाशी ब्रह्म को धीर पुरुष ही सब ओर देखते है। —मुण्डकोपनिषद्

जिसके मन में कभी क्रोध नही होता और जिसके हृदय में रात-दिन राम वसते हैं वह भक्त भगवान् के समान ही है। — रैदास

राम तें अधिक राम कर दासा। — तुलसी

सच्चे ईश्वरभक्त की भक्ति किसी भी लोक परलोक की कामना के लिए नही होती, वह तो अहैतुकी हुआ करती है। — रबिया

जहाँ भगवान् हैं और जहाँ भक्त हैं वहाँ सब कुछ है, लेकिन भगवान् को तो हमने देखा नही, भक्त को हम देख सकते हैं इसलिए हमारी निगाह मे भक्त की महिमा बढ जाती है। — विनोबा

अनपेक्ष शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्त स मे प्रिय ॥ — गीता

जो इच्छारहित है, पवित्र है, दक्ष (सावधान) है, तटस्थ है, चिन्तारहित है, सकल्प-मात्र का जिसने त्याग किया है ऐसा जो मेरा भक्त है वह मुझे प्रिय है।

जल ज्यो प्यारा माछरी, लोभी प्यारा दाम।
माता प्यारा बालका, भक्त पियारा नाम॥ — कबीर

भक्ति

ईश्वर के प्रति सम्पूर्ण अनुराग ही भक्ति है। — भक्तिदर्शन

जब लग नाता जगत का, तब लग भक्ति न होय।
नाता तोडै हरि भजै, भक्त कहावै सोय॥ — कबीर

मानव-मात्र को एक करने के लिए भगवान् की भक्ति से बढकर कोई साधन नही। — विनोबा

कामी क्रोधी लालची, इनतें भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई सूरमा, जाति वरन कुल खोय॥ — कबीर

अधिकार के कारण जो श्रद्धा-भक्ति होती है वह सच्ची श्रद्धा-भक्ति नही है। — एमर्सन

जैसे समुद्र मे आकर सारी नदियां एक हो जाती हैं, सब काष्ठ अग्नि में जलकर एक हो जाते हैं, वैसे ही सब हृदय भगवान् की भक्ति में विलीन होकर एकरूप हो जाते हैं। — विनोबा

परमात्मा की भक्ति के सिवा कोई दूसरी पावन वस्तु नही जो हृदयो को धो सकती और सबको एक बना सकती है। — विनोबा

भजन

भजन का फल अनत है, महान् है, उसे वाणी द्वारा व्यक्त नही किया जा सकता।
— वेदव्यास (महाभारत)

भय (दे० "डर")

भय ही पतन और पाप का निश्चित कारण है। —स्वामी विवेकानन्द

मनुष्य का भय और आशा खरगोश के सीग के समान है। —अज्ञात

भय ते भक्ति सबै करै, भय ते पूजा होय।
भय पारस है जीव को, निर्भय होय न कोय॥ —कबीर

यथा फलाना पक्वाना नान्यत्र पतनाद् भयम्।
एव नरस्य जातस्य नान्यत्र मरणाद् भयम्॥ — वाल्मीकि

जैसे पके हुए फलो को गिरने के अतिरिक्त दूसरा कोई भय नही है, उसी प्रकार पैदा हुए मनुष्य को मृत्यु के सिवा अन्यत्र भय नही है।

भय बिनु भाव न ऊपजै, भय बिनु होय न प्रीति।
जब हिरदे तें भय गया, मिटी सकल रस रीति॥ — कबीर

भय से ही दु ख आते है, भय से ही मृत्यु होती है और भय से ही बुराइयाँ उत्पन्न होती है। — स्वामी विवेकानन्द

Fear is the tax that conscience pays to guilt
भय वह कर है जिसे अन्त करण अपराध को देता है। — सिवेल

भोगे रोगभय कुले च्युतिभय वित्ते नृपालाद् भय
माने दैन्यभय बले रिपुभय रूपे जराया भयम्।
शास्त्रे वादभय गुणे खलभय काये कृतान्ताद् भय
सर्व वस्तु भयावह भुवि नृणा वैराग्यमेवाभयम्॥ — भर्तृहरि

भोगो मे रोग का भय है, ऊँचे कुल में पतन का भय है, धन मे राजा का, मान में दीनता का, बल मे शत्रु का तथा रूप मे वृद्धावस्था का भय है और शास्त्र में वाद-

विवाद का, गुण में दुष्ट जनो का तथा शरीर में काल का भय है। इस प्रकार ससार में मनुष्यो के लिए सभी वस्तुएँ भयपूर्ण हैं, भय से रहित तो केवल वैराग्य ही है।

जिस मनुष्य को अपने मनुष्यत्व का भान है वह ईश्वर के सिवा और किसी से भय नही करता। **—महात्मा गाधी**

मूर्ख मनुष्य भय से पहले ही डर जाता है, कायर भय के समय ही डरता है और साहसी भय के बाद डरता है। **—रिशर**

सचिव, वैद, गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहि भय आस।
राज, धर्म, तन तीनि कर, होइ बेगि ही नास।।

—तुलसी (मानस-सुन्दर)

Fear is more painful to cowardice than death to true courage

सच्ची वीरता को मृत्यु से जितना कष्ट नही होता उससे कही अधिक कष्ट बुजदिली को भय से होता है। **—सर पी० सिडनी**

भय से उत्पन्न दुर्वृत्तियाँ सब प्रकार के पुरुषार्थ को नष्ट कर देती हैं। **—अज्ञात**

Fear is the mother of foresight

भय दूरदर्शिता की जननी है। **—एच० टेलर**

जीवन मे होकर, शून्य घ्यान द्वारा, परमात्मा की साधना करो, मौत का भय छूट जायगा। **—अज्ञात**

भीतवत्सविधातव्य यावद् भयमनागतम्।
आगत तु भय दृष्ट्वा प्रहर्तव्यमभीतवत्।।

जब तक भय का कारण आ न पहुँचे तब तक उससे डरते रहकर बचने का उपाय करते रहना चाहिए, किन्तु जब वह सिर पर आ ही पहुँचे तो उसे निडर होकर मार भगाना चाहिए।

भलाई

He that does good to another, does also good to himself, not only in the consequence, but in the very act of doing it, for the consciousness of well doing is an ample reward

जो दूसरो की भलाई करता है वह अपनी भलाई स्वय कर लेता है। परिणाम में नही वरन् कर्म करने में ही, क्योकि अच्छा कर्म करने का भाव ही अच्छा इनाम है। **—सेनेका**

निकोई वा वदा करदन चुनानस्त।
कि वद करदन वजाए नेक मरदा॥ —सादी

दुर्जनो के साथ भलाई करना सज्जनो के साथ वुराई करने के समान है।

He who loves goodness harbors angels, reveres reverence, and lives with god

जो भलाई से प्रेम करता है वह देवताओ की पूजा करता है, आदरणीयो का सम्मान करता है और ईश्वर के समीप रहता है। —एमर्सन

भलाई का मार्ग भय से पूर्ण है, परन्तु परिणाम अत्युत्तम है। —अज्ञात

In nothing do man approach so nearlv to the gods as in doing good to men

मानव की भलाई करने के अतिरिक्त और अन्य किसी कर्म द्वारा मनुष्य ईश्वर के इतने निकट नही पहुँच सकता। —सिसरो

जैसे एक छोटे दीपक का प्रकाश वहुत दूर तक फैलता है, उसी प्रकार इस वुरे ससार में भलाई वहुत दूर तक चमकती है। —शेक्सपियर

जो भलाई करने में अति लीन है, उसको भला होने का समय नही मिलता। —रवीन्द्र

To be doing good is man's most glorious task

भलाई करना मानव का सवसे शानदार कर्तव्य है। —सफोक्लीज

जो तोको काँटा वुवै, ताहि वोव तू फूल।
तोहि फूल को फूल है, वाको है तिरसूल॥ —कवीर

पुष्प की सुगन्ध वायु के विपरीत कभी नही जाती परन्तु मानव के सद्गुण की महक सव तरफ फैल जाती है। —अज्ञात

Good, the more communicated, more abundant grows

भलाई जितनी अधिक की जाती है उतनी ही अधिक फैलती है। —मिल्टन

भलाई रह जाती है, इसके अतिरिक्त सव वस्तुएँ नष्ट हो जाती हैं।—कहावत

भलाई वुराई का अभाव नही वरन् उस पर विजय है।

—सर अर्नेस्ट वोर्न

भवितव्यता

तुलसी जस भवितव्यता, तैसी मिलै सहाय।
आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहाँ लै जाय।। —तुलसी

भविष्य

Trust no future however pleasant,
Let the dead past bury its dead

भविष्य कैसा ही सुखमय हो उस पर विश्वास न करो और भूतकाल की बीती बातो को भूल जाओ। —लागफेलो

Age and sorrow have the gift of reading the future by the past.
भूतकाल के ज्ञान और कष्ट के आधार पर भविष्य जाना जा सकता है।
—फरार

भाग्य ("दे० तकदीर")

मनुष्य अपने भाग्य का स्वय ही विधाता है। —स्वामी रामतीर्थ

भाग्य फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्।
समुद्रमथनाल्लेभे हरिर्लक्ष्मी हरो विषम्।। —अज्ञात

भाग्य ही सर्वत्र फलता है, विद्या और पौरुष नही। तभी तो समुद्र का मन्थन होने पर विष्णु ने लक्ष्मी को प्राप्त किया और शकर ने विष को।

The wheel of fortune turns round incessantly and who can say to himself, I shall to-day be uppermost

भाग्यचक्र निरन्तर घूमा करता है, कौन कह सकता है कि आज मै उच्च शिखर पर पहुँच जाऊँगा। —कन्फ्यूशियस

भाग्य बालू के कण को सूर्य और बूँद को नदी बना देता है। —अज्ञात

भाग्य बिगडने पर सगे भी पराये हो जाते है। अन्धकार में छाया भी साथ छोड देती है। —अज्ञात

भाग्य साहसी मनुष्य की सहायता करता है। —वर्जिल

We make our fortune, and call that fate
हम अपना ऐश्वर्य स्वय बनाते हैं और उसको भाग्य कहते है। —डिजरायली

सहस्र वार डुबकी दई, मुक्ता लगी न हाथ।
सागर को क्या दोष है, बुरे हमारे भाग॥ —अज्ञात

Fortune makes him fool, whom she makes her darling
किस्मत जिसे दुलार करती है उसे मूर्ख बना देती है। —बेकन

Human life is more governed by fortune than by reason
मानवजीवन बुद्धि की अपेक्षा भाग्य से अधिक शासित होता है। —ह्यूम

दाता के द्वार पर सभी भिक्षुक जाते हैं, अपना अपना भाग्य है, किसी को एक चुटकी मिलती है किसी को पूरा थाल। —प्रेमचन्द

भाग्य पर नहीं चरित्र पर निर्भर रहो। —प्यूब्लियस साइरस

भाग्य के भरोसे बैठे रहने पर भाग्य सोया रहता है और हिम्मत बाँधकर खडे होने पर भाग्य भी उठ खडा होता है। —अज्ञात

पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम्
नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्।
वर्षा नैव पतन्ति चातकमुखे मेघस्य किं दूषणम्
यत्पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः॥ —भर्तृहरि

करील वृक्ष में यदि पत्ते नही है तो वसन्त का क्या दोष? उल्लू यदि दिन में नही देख पाता तो सूर्य का क्या दोष? वर्षा का जल यदि पपीहा के मुख में नही पडता तो मेघ का क्या दोष? विधाता ने जो पहले ही भाग्य में लिख दिया है उसे कौन मिटा सकता है?

सीमन्तिनी यस्य गृहेऽन्नपूर्णा त्रिलोकरक्षां कुरुतेऽन्नदानैः।
भिक्षाचरः सोऽपि कपालपाणिर्ललाटलेखो न पुनः प्रयाति॥ —अज्ञात

जिनके घर मे गृहिणी अन्नपूर्णा है जो कि अन्न दान से तीनो लोको की रक्षा करती है, वे शंकरजी भी हाथ में कपाल लेकर भिक्षा माँगते फिरते हैं। वस्तुतः भाग्य में लिखा हुआ नही मिटता।

मा धाव मा धाव विनैव दैवं नो धावनं साधनमस्ति लक्ष्म्याः।
चेद्धावनं साधनमस्ति लक्ष्म्याः श्वा धावमानोऽपि लभेत लक्ष्मीम्॥ —अज्ञात

भाग्य यदि साथ नही दे रहा है तो धन के लिए बहुत दौड-धूप मचाना व्यर्थ है। भाग्य के बिना केवल दौड-धूप से ही यदि लक्ष्मी की प्राप्ति होती तो बराबर दौडता रहनेवाला कुत्ता भी धनी हो जाता।

कर्तव्योऽप्याश्रय श्रेयान् फल भाग्यानुसारत ।
नीलकण्ठस्य कण्ठेऽपि वासुकिर्वायुभक्षक ॥ —अज्ञात

महान् आश्रय लेने पर भी फल भाग्यानुसार ही मिलता है। तभी तो शकरजी के कठ में लिपटे रहने पर भी वासुकि को वायु पीकर ही जीवन-यापन करना पडता है।

भाग्य वेश्या ही तो है। —शेक्सपियर (हैमलेट)

It is fortune, not wisdom, that rules man's life
यह भाग्य है ज्ञान नही जो मानवजीवन पर शासन करता है। —सिसरो

भाग्य-रेखा

सम्भव है कि सूर्य पश्चिम से उदय होने लगे, सम्भव है कि पर्वत चलने लगें, सम्भव है कि अग्नि का गुण उष्णता से शीतलता में परिवर्तित हो जाय, सम्भव है कमल पर्वतो पर खिलने लगें, परन्तु मनुष्य के भाग्य की रेखाओ में लेश मात्र भी परिवर्तन हो जाना असम्भव है। —अज्ञात

हँसि बोले रघुवशकुमारा। विधि का लिखा को मेटनहारा॥ —तुलसी

भाग्यवान्

वेदान्तवाक्येषु सदा रमन्तो भिक्षान्नमात्रेण च तुष्टिमन्त ।
विशोकमन्त करणे रमन्त कौपीनवन्त खलु भाग्यवन्त ॥

वस्तुत वेदान्तवाक्यो में रमनेवाले, भिक्षान्न मात्र से सतोष लाभ करनेवाले, कौपीन धारण करनेवाले, निरुद्विग्नचित्त आत्माराम सत ही भाग्यवान् है।

वह मनुष्य वडा भाग्यवान् है जिसकी कीर्ति उसकी सत्यता से अधिक प्रकाशमान नही है। —रवीन्द्र

भारतवर्ष

यदि हम सपूर्ण विश्व की खोज करें, ऐसे देश का पता लगाने के लिए जिसे प्रकृति ने सर्वसम्पन्न, शक्तिशाली और सुन्दर वनाया है, तो मैं भारतवर्ष की ओर सकेत करूँगा।

यदि मुझसे पूछा जाय कि किस आकाश के नीचे मानव-मस्तिष्क ने अपने मुख्यतम गुणो का विकास किया, जीवन की सवसे महत्त्वपूर्ण समस्या पर सवसे अधिक गहराई के

साथ सोच-विचार किया और उनमें से कुछ ऐसे समाचार ढूंढ निकाले, जिनकी ओर उन्हें भी ध्यान देना चाहिए जिन्हो ने प्लेटो और कान्ट का अध्ययन किया है, तो मैं भारतवर्ष की ओर सकेत करूँगा। और यदि मैं अपने आपसे पूछूं कि किस साहित्य का आश्रय लेकर हम यूरोपीय, जो कि बहुत कुछ केवल यूनानियो, रोमनो और एक सेमेटिक जाति के यानी यहूदियो के विचार के साथ साथ पले हो, वह सुधारक वस्तु प्राप्त कर सकते हैं, जिसकी कि हमें अपने जीवन को अविक पूर्ण, अधिक विस्तृत और अधिक व्यापक बनाने के लिए आवश्यकता है, न केवल इस जीवन के लिए अपितु एकदम वदले हुए और अनत जीवन के लिए, तो मैं फिर भारतवर्ष की ओर सकेत करूँगा। —मैक्समूलर

भारतवर्ष केवल हिन्दू धर्म का ही घर नही है, वरन् वह ससार की सभ्यता का आदि भडार है। —काउट जोन्स जेनी

ससार, रेखागणित के लिए भारत का ऋणी है, यूनान का नही। —डा० थीवो

अरव में ज्योतिष विद्या का विकास भारतवर्ष से हुआ।

—प्रो० वेवर (इतिहासज्ञ)

भारतवर्ष ने चीन और अरव को ज्योतिष और अकगणित सिखाया।

—कोलब्रुक

गोलो का आविष्कार सवसे पहले भारत में हुआ। यूरोप के सपर्क में आने से वहुत पहले ही उनका प्रयोग भारत में होता था। —प्रोफेसर विलसन

सीसे की गोलियो और वन्दूको के प्रयोग का हाल विस्तार से यजुर्वेद में मिलता है। भारत में वैदिक काल में ही वन्दूक और तोपो का प्रचलन हो गया था।

—कर्नल रशब्रुक विलियम

भारतीय विज्ञान इतना विस्तृत है कि यूरोपीय विज्ञान के सब अग वहाँ मिलते हैं।

—डफ

पश्चिमी ससार को जिन वातो पर अभिमान है, वे असल में भारतवर्ष मे ही वहाँ गयी हैं। और तो और तरह तरह के फल-फूल, पेड-पौधे जो इस समय यूरोप में पैदा होते हैं, हिन्दुस्तान से ही लाकर वहाँ लगाये गये थे। मलमल, रेशम, घोडे, टीन इनके साथ-साथ लोहा और सीसे का प्रचार भी यूरोप में भारत से ही हुआ। केवल इतना ही नही, ज्योतिष, वैद्यक, अकगणित, चित्रकारी और कानून भी भारतवासियो ने ही यूरोपवालो को सिखलाया। —मि० डेलभार, न्यूयार्क (इडियन रिव्यू)

दर्शन, विज्ञान और सभ्यता सबधी सारी बातें यूनान ने भारत से सीखी और यहाँ (यूनान) से वे सारे ससार में फैली। अरब और यूरोप में जो ज्ञान का प्रकाश फैला वह भी भारत से ही। वर्तमान भूगोल, इतिहास और पुराने चिह्नो की खोज स्पष्टतया प्रकट करते हैं कि हिन्दुओ ने कला-कौशल और ज्ञान-विज्ञान का प्रचार पश्चिम के देशो में जाकर किया। **—यूरोप का प्राचीन इतिहास**

भारत के निवासी यहाँ (यूनान में) आकर वसे। वे बडे बुद्धिमान्, विद्वान् और कला-कुशल थे। उन्होने यहाँ विद्या और वैद्यक का प्रचार किया। यहाँ के निवासियो को सभ्य और अपना विश्वासपात्र बनाया।

— यूनान का प्राचीन इतिहास

जो लोग पूर्व (भारत) से आकर यूनान में बसे थे और जिन्होने वहाँ के असभ्य निवासियो को अधीन किया था, वे कैसे थे ? वे देवताओ के वशज थे, अपना निज का सोना उनके पास विपुल था। वे रेशम के कामदार ऊनी दुशाले ओढते थे, हाथीदाँत की वस्तुएँ व्यवहार में लाते थे और बहुमूल्य रत्नो के हार पहनते थे।

— प्रसिद्ध यूनानी विद्वान् एरियन

गायन्ति देवा किल गीतकानि धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदहेतुभूते भवन्ति भूय पुरुषा सुरत्वात॥

— श्रीमद्भागवत

स्वर्ग के देवता भी यह गीत गाते हैं कि वे लोग धन्य हैं जो स्वर्ग और अपवर्ग को देनेवाली भारतभूमि में देवताओ से फिर मनुष्य होकर निवास करते हैं।

भारत समग्र विश्व का है और सम्पूर्ण वसुन्धरा इसके प्रेम-पाश में आवद्ध है, अनादि काल से ज्ञान की, मानवता की, ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है, वसुन्धरा का हार भारत किस मूर्ख को प्यारा न होगा। **— जयशकर प्रसाद**

हे प्राचीन भारतभूमि ! हे मानव-जाति की पालन करनेवाली ! हे पूजनीया ! हे पोपणदात्री ! तुझे नमस्कार है। शताव्दियो से लगातार चलनेवाले पाशविक अत्याचार आज तक तुझे नष्ट नही कर सके। तेरा स्वागत है ! हे श्रद्धा, प्रेम, कला और विज्ञान की जन्मदात्री ! तुझे नमस्कार है। **— एम० लुई जेकोलियट**

ससार में भारतवर्प के प्रति लोगो का प्रेम और आदर उसकी वौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक सम्पत्ति के कारण है। **— प्रो० लुई रिनाउ**

अगर ससार में कोई एक देश है जहाँ जीवित मनुष्य के सभी सपनो को, उस प्राचीन काल से जगह मिली है जबसे कि मनुष्य ने अस्तित्व का सपना प्रारम्भ किया, तो वह भारत है।

— रोम्यां रोलां

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें है इसकी यह गुलिस्ताँ हमारा॥
मजहब नही सिखाता आपस में बैर रखना।
हिन्दी है हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा॥
कुछ बात है जो हस्ती मिटती नही हमारी।
सदियो रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा॥ — डा० इकबाल

भारतीय संस्कृति

जब हम पूर्व की ओर उसमे भी शिरोमणिस्वरूप भारत की साहित्यिक एव दार्शनिक कृतियो का अवलोकन करते है, तब हमें ऐसे अनेक गभीर सत्यो का पता चलता है, जिनकी उन निष्कर्षों से तुलना करने पर, जहाँ पहुँचकर यूरोपीय प्रतिभा कभी-कभी रुक गयी है, हमें पूर्व के तत्त्वज्ञान के आगे घुटना टेक देना पडता है।

— विक्टर कोसिन

Even the loftiest philosophy of the Europeans appears in comparison with the abundant light of oriental idealism like a feeble promethean spark in full flood of the heavenly glory of the noonday sun—faltering and feeble and ever ready to be extinguished

पूर्वीय अध्यात्मवाद के प्रचुर प्रकाशपुज की तुलना में यूरोपवासियो का उच्चतम तत्त्वज्ञान ऐसा ही लगता है, जैसे मध्याह्न सूर्य के व्योमव्यापी प्रताप की पूर्ण प्रखरता में टिमटिमाती हुई अनलशिखा की कोई आदि किरण, जिसकी अस्थिर और निस्तेज ज्योति ऐसी हो रही हो मानो अब बुझी कि तब बुझी। — फ्रेडरिक शेलिंग

भारतीय सस्कृति के प्रवाह का उद्गम वे चिरतन, शाश्वत और सनातन सत्य रहे है जिनकी अनुभूति प्रतिभासम्पन्न आर्य जाति के ऋषियो ने अपने तप के द्वारा की थी। — अज्ञात

भारतीय सस्कृति की चमक आज के ऐटम युग में भी हम गान्धीजी के व्यक्तित्व मे देख सकते है। यह वही चमक है जिसने शताब्दियो पूर्व 'भगवान् बुद्ध के व्यक्तित्व में विकास पाकर समूचे ससार को प्रतिभासित किया था। — अज्ञात

भार्या (दे० "स्त्री", "सुभार्या")

पुरुष की सर्वोत्तम सम्पत्ति उसकी भार्या है। —वेदव्यास (शांतिपर्व)

माता यस्य गृहे नास्ति भार्या चाप्रियवादिनी।
अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम्॥ —पंचतंत्र

जिसके घर में माता न हो और भार्या अप्रियभाषिणी हो उसे वनवासी हो जाना चाहिए, क्योंकि उसके लिए वन और घर बराबर हैं।

'यत्र भार्या गृहं तत्र।' जहाँ स्त्री है, वही घर है। —अज्ञात

भाव

मित्रता और शत्रुता के भाव तो बादलों के समान क्षण क्षण पर बदलते रहते हैं।

—वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

भावी

भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र। —कालिदास

भावी को सर्वत्र द्वार खुला मिलता है।

भावना

कोई वस्तु भली या बुरी स्वयं नहीं होती, समझने से हो जाती है।

—शेक्सपियर (हैमलेट)

जहाँ भावों का सम्बन्ध है वहाँ तर्क और न्याय से काम नहीं चलता।

—प्रेमचन्द

काम से ज्यादा काम के पीछे की भावना का महत्त्व होता है। जो काम शुद्ध हृदय से होता है, देखने में छोटा भले ही हो परन्तु उसका फल बड़ा ही महत्त्वपूर्ण होता है। बड़े से बड़ा काम अगर हीन आदर्श लेकर किया जाय तो उसकी कोई बड़ी कीमत नहीं हो सकती।

—राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

भावना से कर्तव्य ऊँचा है। —अज्ञात

मत्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी॥ —पंचतंत्र

मत्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, औषध और गुरु मे जैमी भावना होती है वैसी ही सिद्धि मिलती है।

भावना ही मनुष्य का जीवन है, भावना ही प्राकृतिक है, भावना ही सत्य है और नित्य है। भावनाओ के मामले में मनुष्य विवश है। —अज्ञात

जहाँ जैसी हमारी मानसिक भावना रहती है वहाँ परमेश्वर हमारे लिए उसी रूप में प्रकट हो जाते हैं। —विनोबा

Fancy rules over two-thirds of the universe, the past and future, while reality is confined to the present

भावना दो-तिहाई विश्व पर शासन करती है—भूत और भविष्य पर, जव कि यथार्थता वर्तमान पर सीमित है। —रिचर

भावना सौंदर्य से भी वढकर है। —कहावत

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी॥ —तुलसी

Fancy may kill or cure

भावना मार भी सकती है, जिला भी सकती है। —कहावत

भाषण (दे० "तकरीर", "व्याख्यान")

भाषण शक्ति है, भाषण कायल करने के लिए, मत वदलने के लिए और वाध्य करने के लिए दो। —एमर्सन

भाषण मानव के मस्तिष्क पर शासन करने की कला है। —प्लेटो

देखना तकरीर की लज्जत कि उसने जो कहा।
मैंने यह जाना कि गोया यह भी मेरे दिल में है॥ —गालिब

भाषण चाँदी है, मौन सोना है, भाषण मानवीय एव मौन दैविक है। —जर्मन कहावत

भाषण मस्तिष्क का दर्पण है। —सेनेका

भाषा

हमारी भाषा हमारा अपना प्रतिविम्ब है। —महात्मा गाधी

विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने की पद्धति से अपार हानि होती है।

— महात्मा गांधी

भाषा विचार की पोशाक है। — डा० जानसन

देशी भाषा का अनादर राष्ट्रीय आत्महत्या है। — महात्मा गांधी

किसी भी भाषा का शुद्ध रूप देश, काल तथा बहुमत से सीमित है। — अज्ञात

परायी भाषा के साहित्य से ही आनन्द लेने की आदत चोरी के माल से आनन्द लूटने की चोर आदत जैसी है। — महात्मा गांधी

जब भाषा का शरीर दुरुस्त, उसकी सूक्ष्मातिसूक्ष्म नाडियाँ तैयार हो जाती हैं, नसो में रक्त का प्रवाह और हृदय में जीवन स्पन्द पैदा हो जाता है, तब वह जीवन यौवन के पुष्प-पत्रसकुल बसन्त में नवीन कल्पनाएँ करता हुआ नयी-नयी सृष्टि करता है।

— निराला

माँ के दूध के साथ जो सस्कार मिलते हैं और जो मीठे शब्द सुनाई देते हैं, उनके और पाठशाला के बीच जो मेल होना चाहिए वह विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा लेने से टूट जाता है। जिसे तोडने का हेतु पवित्र हो तो भी वे जनता के दुश्मन हैं।

— महात्मा गांधी

जिस भाषा में वहादुरी, सचाई, दया वगैरह के लक्षण नही होते, उस भाषा के वोलनेवाले वहादुर, सच्चे और दयावान् नही होते। — महात्मा गांधी

Language is a city to the building of which every human being brought a stone

भाषा एक नगर है जिसके निर्माण में प्रत्येक मानव एक पत्थर लाया है।

— एमर्सन

भाषा मनुष्य की वुद्धि के सहारे चलती है, इसलिए जव किसी विषय तक बुद्धि नही पहुँचती, तव भाषा अधूरी होती है। — महात्मा गांधी

भिक्षा (दे० "माँगना")

माँगन मरन समान है, मति कोई माँगो भीख।
माँगन से मरना भला, यह सतगुरु की सीख॥ — कबीर

तगडे और तन्दुरुस्त आदमी को भीख देना, दान करना, अन्याय है। कर्महीन मनुष्य भिक्षा के दान का अधिकारी नही हो सकता। — विनोबा

भिखारी

भिक्षुक को दुत्कारा जा सकता है, द्वार पर आने से रोका नही जा सकता।

—प्रेमचन्द

आप भिखारियों को नही चाहते, परमात्मा भी भिखारियो को नही चाहता। परमात्मा तो सच्चे सेवको का प्रेमी है। —रस्किन (विजयपथ)

माँगने पर भिक्षुक को देना श्रेष्ठ है, किन्तु विना माँगे स्वय भिक्षुक की खोज करके देना श्रेष्ठतर है। —विनोवा

काक आह्वयते काकान् याचको न तु याचकान्।
काकयाचकयोर्मध्ये वर काको न याचक ॥ —अज्ञात

कही कोई खाद्य वस्तु देखकर कौआ कौओ को वुलाने लगता है, किन्तु कोई भिक्षुक कही कुछ मिलता देखकर दूसरे भिक्षुको को नही वुलाता। इससे सिद्ध होता है कि कौआ और भिक्षुक में कौआ ही श्रेष्ठ है, भिक्षुक नही।

भीरुता (दें० "कायरता")

पुरुषो में भीरुता भयकर दुर्गुण है। —अज्ञात

त्यजेत् क्षुधार्ता महिला स्वपुत्र, खादेत् क्षुधार्ता भुजगी स्वमण्डम्।
वुभुक्षित किं न करोति पाप? क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति ॥

—हितोपदेश

भूखी स्त्री अपने पुत्र को छोड देती है, भूखी नागिन अपने अडे को खा लेती है। भूखा व्यक्ति क्या-क्या पाप नही करता है? क्योकि क्षीण मनुष्य करुणाहीन होते हैं।

भूख

भोजन के लिए सवसे अच्छी चटनी भूख है। —सुकरात

A well-governed appetite is a great part of liberty.

भूख पर अच्छा नियन्त्रण स्वतत्रता का एक वडा भाग है। —सिनेका

भूख लगना जिन्दा मनुष्य का धर्म है। भूख तो भगवान् का सदेश है। भूख न होती तो दुनिया विल्कुल अनीतिमय और अधार्मिक वन जाती। फिर नैतिक प्रेरणा ही हमारे अन्दर न होती। —विनोवा

सम्पन्नतरमेवान्न दरिद्रा भुञ्जते सदा।
क्षुत्स्वादुता जनयति सा चाढ्येषु सुदुर्लभा॥ —अज्ञात

दरिद्र व्यक्ति जो भी खायें, सदा अच्छा ही भोजन करते है क्योंकि वह भूख से खाते हैं। स्वाद को उत्पन्न करनेवाली वह भूख धनियो को दुर्लभ है।

बीमारियो की अधिकता पर यदि आपको आश्चर्य हो तो अपनी थाली गिनिए।
—सिनेका

आगि वडवागि ते बडी है आग पेट की। —तुलसी (कवितावली)

Reason should direct, and appetite obey
बुद्धि के आदेश, भूख को मानना चाहिए। —सिसरो

भूख की ज्वाला उच्च से उच्च और कोमल से कोमल हृदय के व्यक्तियो को भी नीच से नीच और कठोर से कठोर कार्य करने के लिए विवश कर देती है।
—अज्ञात

All philosophy in two words—sustain and abstain
सारा दर्शन दो शब्दो में है—जीवित रहने के लिए खाओ और अनावश्यक वस्तु से बचो। —इपिक्टेटस

अपनी भूख सहनेवाले तपस्वी की शक्ति उतनी नही, जितनी कि दूसरो की भूख मिटानेवाले दानी की शक्ति। —सत तिरुवल्लुवर

खट्टा मीठा चरपरा, जिह्वा सब रस लेय।
चारो कुतिया मिलि गयी, पहरा किसका देय॥
—कबीर

ससार में असम्भव से असम्भव कार्य हो सकता है किन्तु क्षुधा की ज्वाला से जलते हुए हृदयो मे उच्च विचारो के अकुर शेष नही रह सकते और न बिना उस ज्वाला को मिटाये पुन जमाये जा सकते हैं। —अज्ञात

यदि भूख न हो तो भोजन की शिकायत न करो। —रवीन्द्र

भूल

यदि तुम भूलो को रोकने के लिए द्वार बद कर दोगे तो सत्य भी बाहर रह जायगा।
—रवीन्द्र

यदि मनुष्य सीखना चाहे तो उसकी प्रत्येक भूल उसे कुछ न कुछ शिक्षा दे सकती है। — डिकेन्स

जान-बूझकर की गयी भूल हमारी इच्छा पर निर्भर करती है, पर अनजाने की गयी भूल की भी कोई सीमा है। — रस्किन (विजयपथ)

दूसरो की भूलो से बुद्धिमान् लोग अपनी भूले सुधारते हैं।

— पब्लियस साइरस

The stream of truth flows through its channels of mistakes

सत्य का स्रोत भूलो के बीच से होकर बहता है। — रवीन्द्र

भूषण (दे० "गहना")

सरसिज मनुविद्ध शैवलेनापि रम्य
मलिनमपि हिमाशोर्लक्ष्म लक्ष्मी तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणा मण्डन नाकृतीनाम्। — कालिदास

सेवार लिपटी रहने पर भी कमल सुन्दर लगता है, मलिन होने पर भी चन्द्रमा शोभा बढाता है, यह मुनिकन्या वल्कल पहनने से भी अधिक शोभित है। स्वभावत सुन्दरतावालो के लिए भूषण व्यर्थ ही होते हैं।

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुष हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नान न विलेपन न कुसुम नालकृता मूर्धजा।
वाण्येका समलकरोति पुरुष या सस्कृता धार्यते
क्षीयन्तेऽखिलभूषणानि सतत वाग्भूषण भूषणम्॥ — भर्तृहरि

बाजूबन्द अथवा चन्द्रमा के समान उज्ज्वल हार मनुष्य को विभूषित नही करते, न स्नान से, न अगराग से, न फूलो से और न सँवारे हुए केशो से ही उसकी शोभावृद्धि होती है। एकमात्र वाणी ही उसे समलकृत करती है जो सस्कारपूर्वक भली-भाँति धारण की गयी हो।

मानहु विधि तन अच्छ छवि, स्वच्छ राखिवे काज।
दृग-पग पोछन को किये, भूषण पायदाज॥ — बिहारी

उत्तम चरित्र ही भूषणो में उत्तम भूषण है। — स्वामी शकराचार्य

स्त्रियो का सबसे बडा भूषण पति-सेवा है। —अज्ञात

मनुष्य का सबसे मूल्यवान् भूषण उसका चरित्र है। —अज्ञात

ऐश्वर्यस्य विभूषण सुजनता शौर्यस्य वाक्सयमो
ज्ञानस्योपशम कुलस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्यय ।
अक्रोधस्तपस क्षमा बलवता धर्मस्य निर्व्याजिता
सर्वेषामपि सर्वकारणमिद शील पर भूषणम् ।। —भर्तृहरि

ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता, शूरता का मित-भाषण, ज्ञान का शान्ति, कुल का भूषण विनय, धन का उचित व्यय, तप का अक्रोध, समर्थ का क्षमा और धर्म का भूषण निश्छलता है। यह तो सबका पृथक् पृथक् हुआ, परन्तु सबसे बढकर सबका भूषण शील है।

हस्तस्य भूषण दान सत्य कण्ठस्य भूषणम्।
श्रोत्रस्य भूषण शास्त्र भूषणै कि प्रयोजनम्।। —अज्ञात

हाथ का भूषण दान है, सच बोलना कण्ठ का भूषण है, शास्त्रवचन कान का भूषण है, फिर दूसरे भूषणो की क्या आवश्यकता है।

भेद

रहिमन अँसुवा नयन ढरि, जिय दुख प्रगट करेय।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देय।। —रहीम

जो मनुष्य नौकर से अपना भेद कहता है, वह उसे अपना स्वामी बना लेता है।
—ड्राइडेन

भोगलिप्सा

भोगलिप्सा मनुष्य को स्वार्थान्ध बना देती है। —प्रेमचन्द

भोजन

जैसा अन-जल खाइए, तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिए, तैसी बानी सोय।। —कबीर

भोजन के पूर्व सदा हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारी कमाई बिलकुल खरी है। —रस्किन

जिस प्रकार दीपक अंधकार की कालिमा का भक्षण करके कज्जल की कालिमा ही पैदा करता है, उसी प्रकार मनुष्य भी जैसा खाता है वैसे ही अपने ज्ञान को प्रकट करता है। —अज्ञात

रहिमन रहिला की भली, जो परसै चित लाय।
परसत मन मैला करै, सो मैदा जरि जाय॥ —रहीम

इष्ट मित्रो के संग भोजन करने से मनुष्य का चित्त प्रसन्न रहता है और आयु बढ़ती है। —अज्ञात

अस्वाद-वृत्ति और परिमित आहार का क्या ही अधिक महत्त्व है।
विनोबा

भ्रमण (दे० "देशाटन")

The world is a great book, of which they who never stir from home read only a page

संसार एक बड़ी पुस्तक है जिसमें वे लोग, जो घर से बाहर नही जाते, केवल एक पृष्ठ ही पढ़ पाते हैं। —आगस्टाइन

भाव-संसार का भ्रमण अतीव सुखमय होता है। —प्रेमचन्द

मंत्र

मंत्र तोप के गोले से भी बलवान् होता है। —विनोबा

मंत्र परम लघु जासु बस, बिधि हरि हर सुर सर्व।
महामत्त गजराज कहँ, बस कर अंकुश खर्व॥
—तुलसी (मानस-बाल)

मंत्र के प्रभाव व प्रेरणा से मनुष्य का जीवन तदनुरूप अपने आप बनता है।
—विनोबा

मंदिर

मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोच्च साक्षात् मन्दिर है। —विवेकानन्द

भगवान् के पास जाने के लिए दूर जाने की जरूरत नही। अपने हृदय के भीतर ही टटोलो। इस हृदय को गंदा मत करो। यह भगवान् का मंदिर है। —अज्ञात

प्रेम की ईंट से अपने सुख का मंदिर बनाओ। —अज्ञात

मजहब (दे० "धर्म")

मजहब किसी की टाँग पकड़कर नीचे नही घसीटता, वह ऊपर उठाता है।

— अज्ञात

मज़हब नही सिखाता आपस में बैर करना। — डा० इकबाल

मजाक (दे० "हसी", "हास्य")

A joker loses every thing when the joker laughs himself
जब मजाकिया स्वय हँस पडता है तो मजाक का सभी लुत्फ चला जाता है।

— शिलर

Joking often loses a friend and never gains an enemy
मजाक प्राय मित्र को अलग कर देता है और एक भी शत्रु पर विजय नही पाता।

— सी० सिमन्स

Humour is the harmony of the heart
मजाक हृदय की शान्ति है। — डी० जेरोल्ड

जो मजाक करता है वह दुश्मनी मोल लेता है। — फ्रेंकलिन

Good humour is one of the best articles of dress one can bear in society
अच्छा मजाक एक उत्तम पोशाक है जिसे समाज में पहना जा सकता है।

— थैकरे

Good humour is the health of the soul, sadness is its poison
अच्छा मजाक आत्मा का स्वास्थ्य है, चिन्ता उसका जहर है। — स्टैनिलस

मदिरा

मदिरा का उपयोग तो स्वय को भुलाने के लिए है, स्मरण करने के लिए नही और जीवन का सर्जनात्मक विकास अपनेपन की चेतना में ही सम्भव है।

— महादेवी वर्मा

जहाँ शैतान स्वय नही पहुँच सकता वहाँ मदिरा को भेज देता है। — अज्ञात

Wine has drowned more men than the sea
सागर की अपेक्षा मदिरा ने अधिक मनुष्यो को डुबाया है। — कहावत

युद्ध, दुर्भिक्ष तथा महामारी इन तीनो ने मिलकर मनुष्य जाति को इतनी हानि नही पहुँचायी जितनी कि अकेली मदिरा ने पहुँचायी है। —ग्लैडस्टन

मदिरा और यौवन आग पर आग है। —फीर्लिडग

मन

मन एव मनुष्याणा कारण वन्धमोक्षयो ।
वन्धाय विषयासक्त मुक्त निर्विषय स्मृतम् ॥ —ब्रह्मविन्दु उप०

मन ही मनुष्य के वन्धन और मोक्ष का कारण है, विषयासक्त मन वन्धन के लिए है और निर्विषय मन मुक्त माना जाता है ।

जिसने मन को जीत लिया उसने जगत को जीत लिया। —स्वामी शकराचार्य

मन का दुख मिट जाने पर शरीर का दुख भी मिट जाता है।
—वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

चञ्चल हि मन कृष्ण प्रमाथि वलवद् दृढम् ।
तस्याह निग्रह मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥ —गीता

मन वडा चचल है, मनुष्य को मथ डालता है अत वहुत वलवान् है। जैसे वायु को दवाना वहुत कठिन है वैसे ही मन का वश करना भी मैं कठिन मानता हूँ।

असशय महावाहो मनो दुर्निग्रह चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

हे महावाहो! निस्सदेह मन वडा चचल है, यह रुक नहीं सकता, परन्तु हे कौन्तेय! अभ्यास और वैराग्य मे यह वश में किया जा सकता है।

तुलसी मन महराज के, दृग से नहीं दिवान।
जाहि देखि रीझैं नयन, मन तेहि हाथ विकान ॥ —तुलसी

मन ही मनुष्य को स्वर्ग या नरक में विठा देता है। स्वर्ग या नरक मे जाने की कुजी भगवान् ने हमारे ही हाथ में दे रखी है। —स्वामी शिवानन्द

मन का पूर्ण निरोध करने मे विषयविहीन मन ही समर्थ होता है।
—उपनिषद्

न्हाये धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोये बास न जाय॥ —कबीर

जिन्हे तृष्णारूपी ग्राह ने पकड रखा है, जो ससारसमुद्र में गिरे हुए हैं, भँवरो के जाल में पडकर लक्ष्य से दूर भटक रहे हैं, उनको बचाने के लिए अपना विषयविहीन मन ही नौका का रूप है। —उपनिषद्

मन बडा जादूगर, महान् चित्रकार है। मन है ब्रह्मसृष्टि का तत्त्व। सकल्प के बिना सृष्टि नही होती और मन के बिना सकल्प नही होता। —साने गुरु

मन बडा चचल है, यदि काम न हो तो इधर-उधर भटकने लगता है और अपने स्वामी को विनाशमार्ग में फँसाकर मार डालता है। इसे भक्ति की जजीरो से जकड देना चाहिए, नही तो सर्प बनकर डस लेता है, बिच्छू बनकर काट खाता है। —अज्ञात

मनसैव कृत पाप न वाण्या न च कर्मणा।
येनैवालिगिता कान्ता तेनैवालिगिता सुता॥ —अज्ञात

मन के भाव से ही पाप माना जाता है, वचन या कर्म से नही। पत्नी और पुत्री के आलिगन मे भाव की ही भिन्नता है।

जब तक मन नही जीता जाता, राग-द्वेष शान्त नही होते, तब तक मनुष्य इन्द्रियो का गुलाम बना रहता है। —विनोबा

मन ही अपने लिए जीवन का रास्ता बनाता है और मृत्यु का रास्ता भी मन ही में तैयार होता है, विचार उस रास्ते की सीमा निश्चित कर देते हैं। —स्वेट मार्डन

दुखते हुए फोडे मे कितना मवाद भरा है यह उस समय मालूम होता है जब नश्तर लगाया जाता है। मन का विष उस समय मालूम होता है जब कोई उसे खोलकर हमारे सामने रख देता है। —प्रेमचन्द

Strength of mind is exercise, not rest
मन की शक्ति अभ्यास है, विश्राम नही। —पोप

मन एक भीरु शत्रु है, जो सदैव पीठ के पीछे से वार करता है। —प्रेमचन्द

यथा सूर्योदये प्रातर् ध्वान्त धावति दूरत।
तथा मन प्रसादेन सर्वा बाधा प्रशाम्यति॥ —अज्ञात

जैसे प्रात काल सूर्योदय के होते ही अन्धकार दूर भाग जाता है, वैसे ही मन की प्रसन्नता से सारी बाधाएँ शान्त हो जाती है।

पतित पशुरपि कूपे निःसर्तुं चरणचालनं कुरुते।
धिक् त्वां चित्त, भवाब्धेरिच्छामपि नो बिभर्षि निःसर्तुम् ॥ —अज्ञात

कुएँ में गिरा हुआ पशु भी उसमें से निकलने के लिए पैर चलाता, कोशिश करता है, किन्तु हे मन, तुझे धिक्कार है कि तू भवसागर से निकलने की इच्छा भी नही करता।

जब तक मन अस्थिर और चचल है तब तक किसी को अच्छा गुरु और साधु लोगो की सगति मिल जाने पर भी कोई लाभ नही होता। —रामकृष्ण परमहस

मनो यस्य वशे तस्य भवेत्सर्वं जगद्वशे।
मनसस्तु वशे योऽस्ति स सर्वजगतो वशे॥ —अज्ञात

जिसने अपने मन को वश में कर लिया उसने ससार भर को वश मे कर लिया, किन्तु जो मनुष्य मन को न जीतकर स्वय उसके वश में हो जाता है, उसने सारे ससार की अधीनता स्वीकार कर ली।

तमेव विषय प्राप्य सुखदु खे ततो नृणाम्।
मनोऽवस्थितिभेदेन जायेते इति दृश्यते॥ —अज्ञात

मन ही सुख-दु ख का कारण है, इसी लिए ऐसा देखा जाता है कि एक ही विषय को पाकर मन की अवस्था के भेद से मनुष्यो को सुख और दु ख हुआ करते हैं।

मनन

आत्मा का अपने साथ बातचीत करना ही मनन है। —प्लेटो

जिन पदार्थों पर हम अपनी स्थिति कायम करते हैं, जिनका हम मनन करते हैं वे ही हमारी मानसिक माला में गुँथ जाते हैं। —स्वेट मार्डेन

Meditation is the nurse of thought, and thought the food for meditation

मनन विचार की परिचारिका है और विचार मनन का भोजन।
—सी० सिमन्स

मनस्वी

तुङ्गत्वमितरा नाद्रौ नेदं सिन्धावगाधता।
अलङ्घनीयताहेतुरुभयं तन् मनस्विनि॥
—माघ (शिशु०)

पर्वत मे ऊँचाई है, अगाध गहराई नही है और समुद्र में अगाध गहराई है, ऊँचाई नही है, किन्तु अलघनीय होने के ये दोनो ही कारण मनस्वी पुरुष में विद्यमान रहते हैं। अर्थात् मनस्वी पुरुष पर्वत के समान ऊँचे तथा समुद्र के समान गभीर होते हैं, उनका पार पाना सरल काम नही।

मनस्वी म्रियते काम कार्पण्य न तु गच्छति।
अपि निर्वाणमायाति नानलो याति शीतताम्॥ —हितोपदेश

मनस्वी पुरुष मर भले ही जाय पर कृपणता नही करता, जैसे अग्नि भले वुझ जाय, पर ठडी नही होती।

कुसुमस्तवकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विन।
सर्वेषा मूर्ध्नि वा तिष्ठेद्विशीर्येत वनेऽथवा॥ —हितोपदेश

फूलो के गुच्छे के समान मनस्वी पुरुष की दो तरह की प्रकृति होती है, या तो वह सबके सिर पर रहे या वन में कुम्हला जाय।

मनाना

टूटे सुजन मनाइए, जो रूठें सौ बार।
रहिमन फिरि फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार॥ —रहीम

मनाना उन्ही को चाहिए जो मानना जानते हो। —अज्ञात

मनुष्य

मनुष्य नवजात शिशु के तुल्य है, विकास ही उसका बल है। —रवीन्द्र

विश्व वडा है, जीवन विश्व से वडा है, मनुष्य जीवन से वडा है। —अज्ञात

मनुष्य इसीलिए है कि वह पशु को भी मनुष्य वनाये।
—जयशकर प्रसाद

An honest man is the noblest work of god
ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। —पोप

यथागार दृढस्थूण जीर्ण भूत्वोपसीदति।
तथावसीदन्ति नरा जरामृत्युवशगता॥ —वाल्मीकि

जिस प्रकार मजवूत खम्भेवाला मकान भी पुराना होने पर गिर जाता है, उसी प्रकार मनुष्य जरा और मृत्यु के वश में पडकर नष्ट हो जाते हैं।

मनुष्य तो दुर्बलताओ की प्रतिमा है जिसमें देवत्व और दानवत्व दोनो का ही समावेश है। — अज्ञात

Man thou pendulum betwixt a smile and tear
मुसकान और आँसू के मध्य मानव! तू एक गतिशील यन्त्र है। —वायरन

मनुष्य इस ससार में आत्मा, विवेक और बुद्धि लेकर आया है। — अज्ञात

Every man is a volume, if you know how to read him
प्रत्येक व्यक्ति एक महान् ग्रथ है, यदि आप उसे पढना जानते हैं।

— चैनिंग

Man that is made in the image of the creator is made for God-like deeds
मनुष्य सृष्टिकर्त्ता के प्रतिविम्ब में ईश्वरतुल्य कार्य के लिए वनाया गया है।
— डिजरायली

मनुष्य की दशा उस घडी के समान है जो ठीक तरह से रखी जाय तो सौ वर्ष तक काम दे सकती है और लापरवाही से वरती जाय तो जल्दी विगड जाती है।
— स्वेट मार्डेन

मनुष्य वे हैं जो मन की शक्तियो के वादशाह हैं, ससार की समस्त शक्तियाँ जिनके आगे नतमस्तक हैं। — अज्ञात

परोपकारशून्यस्य धिङ्‌ मनुष्यस्य जीवितम्।
जीवन्तु पशवो येषा चर्माप्युपकरिष्यति॥ — अज्ञात

मनुष्य होकर भी जो दूसरो का उपकार करना नही जानता उसके जीवन को धिक्कार है। उससे धन्य तो पशु ही हैं जिनका चमडा तक (मरने पर) दूसरों के काम आता है।

दुर्लभ मानुप जन्मामूल्य एकोऽपि तत्क्षण।
तथापि काकिणीतुल्य तद्‌व्यय कुर्वते जना॥ — अज्ञात

मनुष्य का जन्म दुर्लभ है, उसका एक क्षण भी अमूल्य है। तो भी वडा आश्चर्य है कि मनुष्य कौडियों के समान उसका व्यय करते हैं।

मनुष्य प्रकृति का अनुचर और नियति का दास है। — जयशकर प्रसाद

प्रत्येक मनुष्य वास्तव मे ईश्वर है, परन्तु मूर्खों जैसा अभिनय कर रहा है।
— एमर्सन

Man is a visible mystery walking between two eternities and two infinities

मनुष्य एक दृष्टिगोचर रहस्य है जो दो अनन्तो और दो अपरिमितियो के बीच घूमता है। — कार्लसन

जल में मीन मौन है, पृथ्वी पर पशु कोलाहल कर रहे हैं, आकाश में चिड़िया गा रही हैं, परन्तु मनुष्य में समुद्र का मौन है, पृथ्वी का कोलाहल है एव आकाश का सगीत है। — रवीन्द्र

अपने आपको वश में रखने से ही पूर्ण मनुष्यत्व प्राप्त होता है। — हर्बर्ट स्पेन्सर

मनोरथ (दे० 'अभिलाषा', 'इच्छा', 'महत्त्वाकांक्षा')

हाय रे मनुष्य के मनोरथ ! तेरी भित्ति कितनी अस्थिर है। बालू पर की दीवार तो वर्षा में गिरती है, पर तेरी दीवार विना पानी बूंद के ढह जाती है। आँधी में दीपक का कुछ भरोसा किया जा सकता है, पर तेरा नही ! तेरी अस्थिरता के आगे वालको का घरौंदा अचल पर्वत है। — प्रेमचन्द

मनोरथानामगतिर्न विद्यते। —कुमार०

ऐसा कोई स्थान नही जहाँ मनोरथ की पहुँच न हो।

ससार में सफलमनोरथ होना अपनी शक्ति, अपने पराक्रम, अपने मानसिक वल पर ही अवलम्बित है। — अज्ञात

मनोरंजन

मनोरजन नवीनता का दास है और समानता का शत्रु। — प्रेमचन्द

जिस समय तुम्हें अपना मनोरजन करना हो उस समय अपने सहवास में रहने-वालो के साथ सद्‌गुणो का चिन्तन करो। — मार्कस अरेलियस

मनोवृत्ति

मनोवृत्तियाँ सुगन्ध के समान हैं जो छिपाने से नही छिपती। — प्रेमचन्द

पाप-पुण्य सब मनोवृत्तियो के लक्षणो पर निर्भर है। यदि मनोवृत्ति शुद्ध हो और कोई व्यक्ति पाप कर बैठे तो पाप नही। यदि मनोवृत्ति दूषित हो और ऐसे समय मे कोई पुण्य भी बन जाय तो उसका कोई फल नही। — वृन्दावनलाल वर्मा

मस्तिष्क (दे० "मन")

A feeble body weakens the mind
दुर्वल शरीर मस्तिष्क को दुर्वल वना देता है। —रूसो

मस्तिष्क की शक्तियाँ वडी अद्भुत हैं। यह केवल शरीर पर ही नही किन्तु सारे ससार पर शासन करता है। —अज्ञात

मनुष्य का मस्तिष्क वजर खेत की तरह है, जव तक इसमें वाहर से मसाला नही डाला जायगा इसमें कुछ भी पैदा नही हो सकता। —रैनाल्ड्स

The mind grows narrow in proportion as the soul grows corrupt.
ज्यो ज्यो आत्मा कलुपित होती जाती है त्यो त्यो उसी अनुपात में मन सकीर्ण होता जाता है। —रूसो

An empty mind is the devil's workshop
शून्य मस्तिष्क शैतान की कर्मशाला है। —कहावत

मनुष्य के मस्तिष्क की तरह लचीली चीज और कोई नही है। वन्द की हुई भाप की तरह जितना ही दवाव इस पर पडता है उतनी ही शक्ति से यह दवाव के साथ लडती है, जितना अधिक काम इस पर आ पडता है उतना ही अधिक यह उसे पूरा कर लेती है। —अज्ञात

मानवमस्तिष्क ठीक एक पैराशूट की तरह है— जव तक वह खुला रहता है तभी तक कार्यशील रहता है। —लार्ड डेवन (साउथ विन्ड)

मनुष्य सतत प्रयत्नशील है। एवरेस्ट को उसके आगे झुकना ही पडेगा क्योकि उसके दुर्वल पतले शरीर में मस्तिष्क एक ऐसी चीज है जो किसी वधन को नहीं मानती और उसमें ऐसी भावना है जो पराजय को कभी स्वीकार नही करती।
—जवाहरलाल नेहरू

महत्त्वाकांक्षा

The noblest spirit is most strongly attracted by the love of glory
महान् व्यक्ति महत्त्वाकाक्षा के प्रेम से वहुत अधिक आकर्पित होते हैं।
—सिसरो

Be ambitious, and let there be no limits to your ambition It is better to live gloriously and die gloriously than live a life of inactivity

महत्त्वाकाक्षी बनो और उसकी कोई सीमा न होने दो। अकर्मण्यता के जीवन से यशस्वी जीवन और यशस्वी मृत्यु अधिक अच्छी है। —सर सी० वी० रमन

जो छोटे-छोटे कामो के पीछे बहुत ज्यादा पडे रहते है वे अक्सर बडे कामो के लिए नाकाबिल बन जाते है। —रौशे

Ambition is but the evil shadow of apiration

महत्त्वाकाक्षा लालसा का केवल निकृष्ट प्रतिबिम्ब है। —मेक्डानेल्ड

Ambition is so powerful a passion in the human breast that however high we reach we are never satisfied

महत्त्वाकाक्षा मानवहृदय की इतनी शक्तिशाली अभिलाषा है कि हम कितने ही ऊँचे पद पर पहुँचे, सन्तुष्ट नही होते। —मेकियावेली

सौन्दर्य और विलास के आवरण में महत्त्वाकाक्षा उसी प्रकार पोषित होती है जैसे मखमली म्यान में तलवार शयन करती है। —डा० रामकुमार वर्मा

ससार में जितने बडे काम हुए है, उन सबको करानेवाली महत्त्वाकाक्षा ही है। —अज्ञात

महात्मा

सम्पूर्ण ससार से जिनकी आसक्ति नष्ट हो गयी है, जिनका अज्ञान नष्ट हो चुका है और जो कल्याणरूप परमात्मतत्त्व में स्थिर है वही महात्मा है।

—स्वामी शकराचार्य

महात्माओ का चरित्र विचित्र होता है। वे धन-वैभव को तिनके के समान समझते है, किन्तु इसके प्राप्त होने पर बोझ से झुक जाते है। —चाणक्य

महान् (दे० "सत", "सज्जन", "सत्पुरुष")

मनुष्य उतना ही महान् होगा जितना वह अपनी आत्मा में सत्य, त्याग, दया, प्रेम और शक्ति का विकास करेगा। —स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

क्षुद्रेऽपि नून शरण प्रपन्ने ममत्वमुच्चै शिरसा सतीव।

—कालिदास

जो महान् होते है वे अपनी शरण में आये हुए नीच लोगो से भी वैसा ही अपनापन वनाये रहते है जैसा सज्जनो के साथ।

कोई कितना ही महान् हो, लेने के लिए तो उसे झुकना ही पडता है। इतना वडा समुद्र भी क्षुद्र नदी नालो से पानी लेने के लिए उनसे नीचे ही रहता है।

— अज्ञात

Nothing can be truly great which is not right

विना सत्य के कोई भी चीज वास्तव मे महान् नही हो सकती। — डा० जानसन

सभी महान् वस्तुएँ सदैव अच्छी नही हो सकती, किन्तु सभी अच्छी वस्तुएँ महान् होती है। — डिमास्थेनीज

महात्मानोऽनुगृह्णन्ति भजमानान् रिपूनपि।
सपत्नी प्रापयन्त्यब्धि सिन्धवो नगनिम्नगा ॥

— माघ (शिशुपालवध)

महान् पुरुष तो शरणागत शत्रुओ पर भी अनुग्रह करते है। वडी नदियाँ अपनी सपत्नी (छोटी मोटी) पहाडी नदियो को भी समुद्र तक (अपने पति तक स्वय) पहुचाती है।

Count no man great till he is dead

किसी महापुरुष को तव तक महान नही समझना चाहिए, जव तक कि उसकी मृत्यु नही हो जाती। — कहावत

वह मनुष्य कभी नही महान् हो सकता जो केवल अपनी वर्तमान शक्ति पर ही अवलम्बित रहता है और दैवी तत्त्व का ज्ञान नही प्राप्त करता। — स्वेट मार्डेन

अभी तक कोई भी व्यक्ति वास्तव में महान् नही हुआ जो साथ ही साथ गुणवान् न रहा हो। — फ्रैंकलिन

He is not great who is not greatly good

वह महान् नही है जो वहुत भला नही है। — शेक्सपियर

महानता (दे० "वडप्पन")

महानता की आकाक्षा करने मे हमारी आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियो का विकास होता है, वे जाग्रत हो जाती है। — स्वेट मार्डेन

मनुष्य की सवसे वडी महानता विपत्तियो को सह लेने मे है। — अज्ञात

लोभ की अपेक्षा अपनी महत्ता सिद्ध करने की मनुष्य की इच्छा अधिक प्रबल होती है। — अज्ञात

महापुरुष (दे० "संत", "सज्जन")

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणा चेतासि को हि विज्ञातुमर्हति॥ — भवभूति

उत्तम पुरुषो का हृदय वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल होता है। उसे जानने में समर्थ कौन है?

न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्। — कालिदास

ससार ही महापुरुष को ढूँढता है न कि महापुरुष ससार को।

जैसे सूर्य आकाश में छिपकर नही विचर सकता वैसे ही महापुरुष भी ससार में छिपकर नही रह सकते। — वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

All great men come out of the middle classes

सभी महापुरुष मध्यम वर्ग से आते हैं। — एमर्सन

जो श्रेष्ठ महापुरुष हैं, वे सभी धर्म, सभी इतिहास और सभी नीतियो से ससार का श्रेष्ठ ज्ञान ग्रहण करते हैं। — रवीन्द्र

जहाँ चक्रवर्ती नृपाल की शस्त्रधारा कुंठित हो जाती है, वहाँ महापुरुष का एक मधुर वचन ही काम कर जाता है। — हरिऔध

A really great man is known by three signs—generosity in the design, humanity in the execution, moderation in success

वास्तविक महान् व्यक्ति तीन चिह्नो द्वारा जाना जाता है—योजना में उदारता, उसे पूरा करने में मनुष्यता और सफलता में सयम। — बिस्मार्क

जो महापुरुष हैं वे ससार के ज्ञान को अपने माहात्म्य से ही ग्रहण करते है, और ग्रहण करने के बाद अपने जीवन मे उतारकर जगत् में उसकी सचाई का प्रकाश चमका देते हैं। — रवीन्द्र

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रम ।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसन श्रुतौ
प्रकृतिसिद्धमिद हि महात्मनाम् ।। — हितोपदेश

महान् पुरुषो में यह गुण स्वभावत पाये जाते हैं—विपत्ति में धैर्य, अभ्युदय, उन्नति में क्षमा, सभा में भाषण-कुशलता, युद्ध में विक्रम, यश में रुचि और वेदशास्त्र के अध्ययन का व्यसन।

The world can not do without great men, but great men are very troublesome to the world

ससार महान् व्यक्तियो के बिना नही रह सकता, लेकिन महान् व्यक्ति ससार के लिए बहुत दुखदायी होते हैं। — गेटे

धर्म को परिष्कृत करने एव लोगो के नैतिक स्तर को ऊँचा करने के लिए महापुरुषो की सब युगो में बडी आवश्यकता होती है। — हरिभाऊ

माँ (दे० "माता")

माँ के बलिदानो का प्रतिशोध कोई बेटा नही कर सकता, चाहे वह भूमडल का स्वामी ही क्यो न हो। — प्रेमचन्द

माँ के ममत्व की एक बूँद अमृत के समुद्र से ज्यादा मीठी है। — अज्ञात

The future destiny of the child is always the work of the mother
बच्चे का भाग्य सदैव उसकी माँ की कृति है। — नेपोलियन

माँगना

केवल अपने लिए माँगनेवाला भिखारी कहा जा सकता है, परन्तु सबके लिए माँगनेवाला देनेवाले का स्वामी ही रहेगा। — महादेवी वर्मा

मान बडाई प्रेमरस, गुरुआपन औ नेहु।
ये पाँचो तब ही गये, जबै कही कछु देहु ।। —नरोत्तमदास

जो कुछ माँगना हो खुदा से माँग ऐ अकबर।
यही वह दर है कि जिल्लत नही सवाल के बाद ।। — अकबर

रहिमन वै नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाँहि।
उनते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाँहि ।। — रहीम

आव गयी आदर गया, नैनन गया सनेहु।
ये तीनो तब ही गये, जब हि कहा कुछ देहु॥ —कबीर

माँगे घटत रहीम पद, कितो करो बढि काम।
तीन पैग बसुधा करी, तऊ बावने नाम॥ —रहीम

माता (दे० "जननी", "माँ")

शिशो शुश्रूषणाच्छक्तिर्माता स्यान्माननाच्च सा। —स्कंदपुराण

शिशु की शुश्रूषा करने से माता को शक्ति और सदा सम्मान देने के कारण उसे माता कहते हैं।

Men are what their mothers made them
मनुष्य वही होते हैं जो उनकी माताएँ उन्हें बनाती ह। —एमर्सन

माता का हृदय बच्चे की पाठशाला है। —बीचर

माता का कोमल क्रोड ही शान्ति का निकेतन है। —अज्ञात

ऐसी माताओ से देश का मुख उज्ज्वल होता है जो देशहित के सामने मातृ-स्नेह की धूल-बराबर भी परवाह नही करती। उनके पुत्र देश के लिए होते हैं, देश पुत्र के लिए नही होता। —प्रेमचन्द

मात्रा सम नास्ति शरीरपोषण, चिन्तासम नास्ति शरीरशोषणम्।
भार्यासम नास्ति शरीरतोषण, विद्यासम नास्ति शरीरभूषणम्॥—अज्ञात

माता के समान शरीर का पालन-पोषण करनेवाली, चिन्ता के समान देह को सुखानेवाली, स्त्री के समान शरीर को सुख देनेवाली और विद्या के समान शरीर को अलकृत करनेवाली दूसरी कोई वस्तु नही है।

मातृत्व

मातृत्व दीर्घ तपस्या है। —प्रेमचन्द

मातृत्व में ही नारीत्व की पूर्णता है। —अज्ञात

मातृ-प्रेम

भाई-बहिनो को एक करनेवाली कोई शक्ति है तो मातृप्रेम है, पितृप्रेम है। —विनोबा

मातृभाषा

मातृभाषा का अनादर माँ के अनादर के बराबर है। जो मातृभाषा का अपमान करता है, वह स्वदेशभक्त कहलाने लायक नहीं। —महात्मा गांधी

इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुव । बर्हि सीदन्त्वस्रिध । —वेदमन्त्र

मातृभाषा, मातृसभ्यता और मातृभूमि तीनों सुखकारिणी स्थिर रूप देवियाँ हमारे हृदयासन पर विराजती रहें।

मातृभूमि

उदीराणा उतासीनास्तिष्ठन्त प्रक्रामन्त ।
पद्भ्या दक्षिणसव्याभ्या मा व्यथिष्महि भूम्याम् ॥ —यजुः

हम लोग चलते हुए या बैठे हुए, ठहरे हुए या आगे बढते हुए, दायें या बायें पैर से भूमि को कष्ट न दें तथा कोई ऐसा काम न करें जिससे मातृभूमि का अहित हो।

हे मातृभूमि ! धन और कीर्ति तुझसे ही मिलती है, और यह तेरे ही वश में है कि तू उन्हें दे या अपने पास रखे। लेकिन मेरा गम (शोक) बिल्कुल मेरा अपना है और जब मैं इसे भेंट करने के लिए तेरे पास लाता हूँ तो तू मुझे आशीर्वाद देती है। —रवीन्द्र

माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या । —अथर्ववेद

भूमि मेरी माता है और मैं इस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी मातृभाषा को अनुकरण के द्वारा सीखता है, व्याकरण के सहारे नहीं। —धीरेन्द्र वर्मा

मातृभाषा मे माता की ममता और जन्मभूमि का प्यार बसता है, जब हम उसका प्रयोग करते हैं तो ऐसा लगता है जैसे हमारा बचपन हमें वापस मिल गया है। —अज्ञात

मातृ-हृदय

माता का हृदय दया का आगार है। उसे जलाओ तो उसमें से दया की ही सुगन्ध निकलती है। पीसो तो दया का ही रस निकलता है। वह देवी है। विपत्ति की क्रूर लीलाएँ भी उस निर्मल और स्वच्छ स्रोत को मलिन नहीं कर सकतीं। —प्रेमचन्द

मादकता

यौवन, सुन्दरता और ऐश्वर्य इनमें से प्रत्येक में मनुष्य को मदान्ध बना देने की शक्ति है। —कालिदास

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
वह खाये बौरात है, यह पाये बौराय॥ —बिहारी

मान

जिस आदमी का मान उसके अपने ख्याल से मर चुका है वह जितनी हानि अपने को पहुँचा सकता है उतनी दूसरा कोई और नही पहुँचा सकता। —महात्मा गाधी

घटने न देना मान, करना मोह मत धन-धाम का।
यदि मान ही जाता रहा तो धन रहा किस काम का॥ —अज्ञात

मान गुण से ही मिलता है, जैसे तोते को सब पालते हैं परन्तु कौए को कोई नही। —अज्ञात

मान चाहनेवाले ही अपमान से डरा करते हैं। मान का बोझा मन से उतरते ही मन हलका और निडर बन जाता है। —अज्ञात

अमी पियावत मान विन, रहिमन मोहि न सुहाय।
प्रेम सहित मरिवो भलो, जो विष देइ बुलाय॥ —रहीम

मान सहित विष खाइके, सभु भए जगदीस।
विना मान अमृत पिये, राहु कटायो सीस॥ —रहीम

ज्वलित न हिरण्यरेतस चयमास्कन्दति भस्मना जन।
अभिभूतिभयादसूनत सुखमुज्झन्ति न धाम मानिन॥
—भारवि (किरातार्जुनीय)

लोग राख के ढेर को पदाक्रान्त करते हैं, परन्तु जाज्वल्यमान अग्नि को पदाक्रान्त नही करते। अत मानी मानहानि की आशका से सुखपूर्वक प्राण विसर्जित कर देते हैं, पर अपनी मान-मर्य्यादा तथा तेज को धक्का नही लगने देते।

मानव

मानव का दानव होना उसकी हार है। मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है और मनुष्य का मानव होना उसकी जीत है। —डा० राधाकृष्णन

मनुष्य को पापी कहना ही पाप है, यह कथन मानवसमाज पर एक लाछन है।
—स्वामी विवेकानन्द

ससार भर में दो ही व्यक्ति ऐसे हैं जो सही शब्दो मे मानव हैं। एक जो मर चुका है, दूसरा जिसका अभी तक जन्म नही हुआ है। —चीनी कहावत

मानवता

मानवता का खेल प्रातकालीन सूर्य की तरह सुन्दर है। —रस्किन

कोई मनुष्य मानवता से वडा नही है। —थेडोर पार्कर

मानवता का उचित अध्ययन मानव है। —पोप

ध्रुव सत्य है कि सर्वोच्च जाति का मानवता-परिपूर्ण प्राणी सदा उदार और मत्यप्रिय होता है। —रस्किन

मानवप्रकृति

जहाँ तक मानवप्रकृति से सम्वन्ध है, यह नही कहा जा सकता कि वह कव वदल जाय। यहाँ तक कि मरते समय जो मति हो वैसी ही गति वतलायी जाती है। पुराने दिनो का स्मरण करके भविष्य में भी विश्वास खो वैठने का अर्थ है मानवप्रकृति में निहित शिवत्व की भावना मे अविश्वास। —सरदार पटेल

Men are cruel but man is kind
मनुष्य निर्दयी होते हैं परन्तु मानवस्वभाव दयालु है। —रवीन्द्र

मानस-तीर्थ

सत्य तीर्थ क्षमा तीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रह ।
सर्वभूतदया तीर्थ तीर्थमार्जवमेव च ॥
दान तीर्थ दमस्तीर्थ मतोपस्तीर्थमुच्यते।
ब्रह्मचर्य पर तीर्थ तीर्थ च प्रियवादिता ॥
ज्ञान तीर्थ घृतिस्तीर्थ तपस्तीर्थमुदाहृतम्।
तीर्थानामपि तत्तीर्थ विशुद्धिर्मनन परा ॥ —महर्षि अगस्त्य

सत्य तीर्थ है, क्षमा तीर्थ है, इन्द्रियो पर नियन्त्रण रखना भी तीर्थ है, मव प्राणियो पर दया करना तीर्थ है और सरलता भी तीर्थ है। दान तीर्थ है, मन का

सयम तीर्थ है, सतोष भी तीर्थ कहा जाता है। ब्रह्मचर्य का पालन उत्तम तीर्थ है। प्रिय वचन बोलना भी तीर्थ ही है। ज्ञान तीर्थ है, धैर्य तीर्थ है, तप को भी तीर्थ कहा गया है। तीर्थों में भी सबसे वडा तीर्थ है अत करण की आत्यन्तिक शुद्धि।

दानमिज्या तप शौच तीर्थसेवा श्रुत तथा।
सर्वाण्येतान्यतीर्थानि यदि भावो न निर्मल ॥
निगृहीतेन्द्रियग्रामो यत्रैव च वसेन्नर।
तत्र तस्य कुरुक्षेत्र नैमिष पुष्कराणि च॥ **— महर्षि अगस्त्य**

भीतर का भाव शुद्ध न हो तो दान, यज्ञ, तप, शौच, तीर्थसेवन, शास्त्रो का श्रवण एव स्वाध्याय—ये सभी अतीर्थ हो जाते हैं। इसलिए जिसने अपने इन्द्रियसमुदाय को वश में कर लिया है, वह मनुष्य जहाँ भी निवास करता है, वही उसके लिए कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य और पुष्कर आदि तीर्थ हैं।

ध्यानपूते ज्ञानजले रागद्वेषमलापहे।
य स्नाति मानसे तीर्थे स याति परमा गतिम् ॥ **— महर्षि अगस्त्य**

ध्यान के द्वारा पवित्र तथा ज्ञानरूपी जल से भरे हुए, राग-द्वेषरूप मल को दूर करनेवाले मानस-तीर्थ में जो मनुष्य स्नान करता है, वह परम गति—मोक्ष को प्राप्त होता है।

मानसिक पीड़ा

लोहे का गरम गोला यदि घड़े के जल में डाल दिया जाय तो वह जल भी गरम हो जाता है, वैसे ही मानसिक पीडा से शरीर भी व्यथित हो जाता है।

— वेदव्यास (महाभारत वनपर्व)

मानसिक वृत्तियाँ

हमारी मानसिक वृत्तियाँ हमारी सेविकाएँ हैं। जो कुछ हम उनसे चाहते हैं वे हमें वही देती हैं। **— स्वेट मार्डेन**

माप

धनवानो के हाथ में माप ही एक है। वह विद्या, सौन्दर्य, वल, पवित्रता, और तो क्या, हृदय भी उसी से मापते हैं। वह माप है—उनका ऐश्वर्य।

— जयशकर प्रसाद

माया

गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो माया सब जानेहु भाई॥

—तुलसी (मानस-अरण्य)

मैं जानूं हरि से मिलूं, मो मन मोटी आस।
हरि बिच डारै अंतरा, माया बडी पिचास॥ —कबीर

माया ईश्वर की शक्ति होने पर भी अनिर्वचनीय पदार्थ है।

—स्वामी शंकराचार्य

अति प्रचंड रघुपति कै माया। जेहि न मोह अस को जग जाया॥

—तुलसी (मानस-बाल)

जब माया आती है बुद्धि चली जाती है। —अज्ञात

माया छाया एक सी, बिरला जानै कोय।
भगतो के पीछे फिरै, मनमुख भागै सोय॥ —कबीर

सुर नर मुनि कोउ नाहि, जेहि न मोह माया प्रबल।
अस बिचारि मन माँहि, भजिअ महा मायापतिहि॥ —तुलसी

माया-मोह का स्थान मन है, घर नही। —प्रेमचन्द

वेदान्त के अनुसार यह निद्रा-अवस्था और जाग्रत-अवस्था भी माया या भ्रम के सिवा और कुछ नही है। —स्वामी रामतीर्थ

मायावी

मायावी मनुष्य संसार को धोखा दे सकता है, परन्तु अपने आपको धोखा नही दे सकता। —अज्ञात

व्रजन्ति ते मूढधिय पराभव भवन्ति मायाविषु ये न मायिन ।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृताङ्गान्निशिता इवेषव ॥

—भारवि (किरातार्जुनीय)

वे अविवेकी पुरुष (सर्वदा) पराजित होते हैं जो मायावियो के समक्ष मायावी नही बनते अर्थात् 'शठे शाठ्य समाचरेत्' नीति का अवलम्बन नही करते। वे मायावी सरलचित्त व्यक्तियो के अन्त करण की बाते जानकर इस प्रकार गला घोटते हैं जैसे तीक्ष्ण धारवाले बाण कवचरहित शरीर में प्रवेश कर घातक बन जाते हैं।

मार्क्सवाद

मार्क्सवाद तो भौतिकवाद है इसी लिए वह बेमुरव्वती के साथ धर्म का विरोध करता है। —लेनिन

माली

अनार के फूल और फल में बाग के माली के रुधिर की याद आती है। उसकी मेहनत के कण जमीन में गिरकर उगते हैं और हवा तथा प्रकाश की सहायता से मीठे फलो के रूप में नजर आते हैं।

—अध्यापक पूर्णसिंह

मित्र (दे० "दोस्त")

न स सखा यो न ददाति सख्ये। —ऋग्वेद

वह मित्र ही क्या, जो अपने मित्र को सहायता नही देता।

सब लोग घोडे, कुत्ते, सम्पत्ति, मान, सम्मान इत्यादि की हवस करके उसके पाने के लिए परिश्रम करते हैं, परन्तु मुझे किसी मित्र के समागम का लाभ होने से जितना सतोष होगा, उतना उन सब चीजो के मिलकर प्राप्त होने पर भी नही होगा।

—सुकरात

Life has no blessing like a prudent friend
ज्ञानी मित्र के सदृश जीवन में कोई वरदान नही है। —यूरीपिडीज

मथत मथत माखन रहे, दही मही बिलगाय।
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय॥ —रहीम

There are three faithful friends, an old wife, an old dog, and ready money

तीन विश्वासी मित्र होते हैं—वृद्धा पत्नी, बूढा कुत्ता और नकद धन।

—फ्रैंकलिन

विद्या, शूरवीरता, दक्षता, बल और धैर्य ये पाँच मनुष्य के स्वाभाविक मित्र हैं। बुद्धिमान् लोग सर्वदा इनके सहवास में रहते हैं।

—वेदव्यास (शातिपर्व)

The worst friend is he who frequents you in prosperity and deserts you in misfortune.

सबसे निकृष्ट मित्र वह है जो अच्छे दिनो में पास आता है और मुसीबत के दिनो में त्याग देता है। —अज्ञात

परोक्षे कार्यहन्तार प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्ज्जयेत्तादृश मित्र विपकुम्भ पयोमुखम्॥ —हितोपदेश

मुंह सामने मीठी बातें करने और पीठ पीछे छुरी चलानेवाले मित्र को दुधमुहे विषभरे घडे की तरह छोड दे।

रजत वा सुवर्णं वा शुभान्याभरणानि च।
अविभक्तानि साधूनामवगच्छन्ति साधव॥

—वाल्मीकि (रा० कि०)

अच्छे स्वभाववाले मित्र अपने घर के सोने-चाँदी अथवा उत्तम आभूषणो को अपने सन्मित्रो से अलग नही समझते।

हमारा यदि कोई सच्चा मित्र न हो तो जगत् निर्जन वन के समान प्रतीत होगा। —बेकन

Friends though absent, are still present, though in poverty they are rich, though weak, yet in the enjoyment of health and what is still more difficult to assert, though dead they are alive

मित्र चाहे अनुपस्थित हो वे उपस्थित रहने के ही समान है, चाहे वे दरिद्र हो, धनवान् होने के समान है, चाहे वे दुर्बल हो, स्वस्थ होने के समान है और यह बात मानना और भी अधिक कठिन मालूम पडता है कि वे जीवित होने के समान हैं यद्यपि वे मर गये है। —सिसरो

सबसे निकृष्ट मित्र वह है जो तुम्हारी चापलूसी करता है और तुम्हारे अवगुणो पर परदा डालता है। —अज्ञात

मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्या। —कालिदास (मेघ०)

जिसने मित्रकार्य सम्पन्न करने का वचन दिया है, वह उसके समाप्त होने तक ढीला नही पडता।

सच्चा मित्र आनद को दुगना तथा दुख को आधा कर देता है। —बेकन

विमल कलुषीभवच्च चेत कथयत्येव हितैषिण रिपु वा। —भारवि

चित्त का प्रसन्न होना तथा मलिन होना मित्र और शत्रु की सूचना देता है। अर्थात् जिसके प्रति मन प्रसन्न होता है वह मित्र है और जिसके प्रति मन में क्षोभ उत्पन्न होता है वह शत्रु है।

आढ्यो वापि दरिद्रो वा दु खित सुखितोऽपि वा।
निर्दोषश्च सदोषश्च वयस्य परमा गति ॥

— वाल्मीकि (रा० कि०)

मित्र धनी हो या गरीब, सुखी हो या दुखी अथवा निर्दोष हो या सदोष, वह हमारे लिए सबसे बडा सहायक होता है।

Be more prompt to go to a friend in adversity than in prosperity

अच्छे दिनो की अपेक्षा मुसीबत के दिनो में मित्र के पास जाने के लिए अधिक उद्यत रहो। — चिलो

मिलने पर मित्र का आदर करो, पीठ पीछे उसकी प्रशसा करो तथा आवश्यकता के समय उसकी मदद करो। — अरस्तू

घर, सोना, पृथ्वी, चाँदी, स्त्री और सुहृदगण ये मध्यम कोटि के मित्र हैं, ये मनुष्य को सभी जगह मिल सकते हैं। — वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

विश्वासपात्र मित्र से बडी भारी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाय उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया। — अज्ञात

जो गुण हममें नही है, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले जिसमें वह गुण हो। चिन्ताशील मनुष्य प्रफुल्लचित्त मनुष्य का साथ ढूँढता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का। उच्च आकाक्षावाला चन्द्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए चाणक्य का मुंह ताकता था। नीतिविशारद अकबर मन बहलाने के लिए बीरबल की ओर देखता था।

— रामचन्द्र शुक्ल

कुदिन हितू सो हित सुदिन, हित अनहित किन होइ।
ससि छवि हर रवि सदन तउ, मित्र कहत सब कोइ॥ — तुलसी

मित्रता

केवल सज्जनो में ही सच्ची मैत्री हो सकती है। — सिसरो

सच्ची मित्रता मे उत्तम से उत्तम वैद्य की सी निपुणता और परख होती है, अच्छी से अच्छी माता का सा धैर्य और कोमलता होती है। — रामचन्द्र शुक्ल

वहुत लोगो से मित्रता मत करो। — पाइथेगोरस

Never contract friendship with a man that is not better than thyself

ऐसे मनुष्य से मित्रता मत करो जो तुमसे श्रेष्ठ न हो। — कन्फ्यूशियस

मित्रता दैवी देन है और मनुष्य के लिए अत्यन्त वहुमूल्य वरदान।
— डिजरायली

मित्रता करने में शीघ्रता मत करो, परन्तु करो तो अन्त तक निभाओ।
— सुकरात

मनुष्य जो स्वय करे उसे भूल जाय और जो दूसरे से ले उसे सर्वदा याद रक्खे। मित्रता की यही जड है। — ड्यूमाज

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्॥
— पचतत्र

दुष्ट की मित्रता सूर्य-उदय के पीछे की छाया के सदृश पहले तो लम्बी चौडी होती है, फिर क्रम से घटती जाती है और सज्जनो की मित्रता तीसरे पहर की छाया के सदृश पहले छोटी और फिर क्रमश वढती जाती है। —पचतत्र

इस ससार में मित्रता से अधिक मूल्यवान् अन्य कोई वस्तु नही है।
—- सिसरो

सहापकृष्टैर्महता न सगत भवन्ति गोमायुसखा न दन्तिन। — भारवि

नीचो के साथ उच्च व्यक्तियो की मित्रता नही होती क्योकि हाथी शृगालो के साथ मैत्री नही करते।

किसी व्यक्ति की मित्रता पूर्ण नही है जव तक कि वह अपने मित्र की, अनुपस्थिति, गरीवी और आपत्ति में सहायता नही करता एव मृत्यु के उपरान्त भी उसके अधिकार की रक्षा नही करता। — अज्ञात

इच्छेच्चेद् विपुला मैत्री त्रीणि तत्र न कारयेत्।
वाग्वादमर्थ-सम्वन्ध तत्पत्नीपरिभाषणम्॥ — चाणक्य

यदि दृढ मित्रता चाहते हो तो मित्र से वहस करना, उधार लेना-देना और उसकी स्त्री से वातचीत करना छोड दो। यही तीन वाते विगाड पैदा करती हैं।

मित्रघात

मित्रघात पाप नही महापाप है। —सुदर्शन

मिथ्या

मिथ्या का स्थान यदि कही है तो मनुष्य के मन को छोडकर और कही नही।
—शरत्चन्द्र (श्रीकान्त)

मिथ्याचारी

कर्मेन्द्रियाणि सयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचार स उच्यते॥ —श्रीकृष्ण (गीता)

जो मनुष्य कर्म करनेवाली इन्द्रियो को रोकता है, परन्तु उन इन्द्रियो के विषयो का चिन्तन मन से करता है, वह मूढात्मा मिथ्याचारी कहलाता है।

मिथ्याभिमान

मिथ्याभिमान हमारी निष्क्रियता और पतन का कारण है। —अज्ञात

मिथ्यावादी

जहाँ वुद्धि और तर्क का कुछ वश नही चलता, मनुष्य मिथ्यावादी हो जाता है।
—प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)

मुक्ति

जब तक ससार में कीट पतग आदि की मुक्ति न हो जायगी तब तक मै अपनी मुक्ति की आकाक्षा नही करता। —भगवान् वुद्ध

मुक्ति शब्द का अर्थ छूटना है। यहा प्रश्न होता है, किससे छूटना ? उत्तर स्पष्ट है कि दुख अर्थात् वन्धन से छूटना मुक्ति है। जहाँ बन्धन नही, वहाँ मुक्ति भी नही। जीवात्मा वद्ध है, इसलिए इसको मुक्ति की आवश्यकता है। —स्वामी दयानन्द

मुक्तिमिच्छसि चेत्तात विषयान् विषवत् त्यज।
क्षमार्जवदयाशौचसत्य पीयूषवत् पिव॥ —अज्ञात

भाई! यदि तुझे मुक्ति की इच्छा है तो विषयो को विष के समान त्याग दे तथा क्षमा, सरलता, दया, पवित्रता और सत्य को अमृत के समान ग्रहण कर।

परमेश्वर के ज्ञान बिना मुक्ति पाने का कोई दूसरा मार्ग नही है।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

मुक्त पुरुष के जीवन का चिन्तन करने से हमें अपनी मुक्ति के दर्शन होते हैं।

—ज्ञानदेव

मुख

मानव का मुख तो उसका अपना जीवनग्रथ है। —साने गुरुजी

छिप्यो छबीलो मुख लसै, नीले अचल चीर।
मनो कलानिधि झलमलै, कालिन्दी के नीर॥ —विहारी

मुसीबत (दे० "दुख", "विपत्ति")

जेहि अचल दीपक दुरो, हन्यो सो ताही वात।
रहिमन असमय के परे, मित्र शत्रु ह्वै जात॥ —रहीम

इशरते कतरा है दरिया में फना हो जाना।
दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना॥ —गालिब

Misery acquaints a man with strange bedfellows
मुसीवत के दिनो में अजीव अजीब लोगो से जान-पहचान हो जाती है।

—शेक्सपियर

Fire tries gold, misery tries brave men
अग्नि सोने को परखती है, मुसीवत वीर पुरुषो को। —सेनेका

मुरली

अधर धरत हरि के परत, ओठ दीठि पट ज्योति।
हरित बाँस की बाँसुरी इन्द्र-धनुष रग होति॥ —विहारी

किती न गोकुल कुलवधू, काहि न किन सिख दीन।
कौनें तजी न कुल-गली, ह्वै मुरली-सुर लीन॥ —विहारी

मुसकान (दे० "प्रसन्नता", "हँसी")

जिस मनुष्य का मुखमण्डल मुसकराता हुआ न हो, उसे दूकान नही खोलनी चाहिए। —चीनी कहावत

जिस मुख पर मुसकान नही आती वह अच्छा नही होता। —मार्शल

A beautiful smile is to the female countenance what sunbeam is to the landscapes, it embellishes an inferior face, redeems an ugly one

नारी के चेहरे पर सुन्दर मुसकान वैसी ही है जैसे प्राकृतिक दृश्य पर सूर्यकिरणें। साधारण चेहरे को यह शोभावान् वना देती हैं और कुरूप को दीप्तिमान्।

—लेवेटर

Smile enriches those who receive, without impoverishing those who give

मुसकान पानेवाला मालामाल हो जाता है, परन्तु देनेवाला दरिद्र नही होता।

Smile is rest to the weary, daylight to the discouraged, sunshine to the sad and Nature's best antidote for trouble

मुसकान थके हुए के लिए विश्राम है, हतोत्साह के लिए दिन का प्रकाश है, उदास के लिए धूप तथा कष्ट के लिए प्रकृति का सर्वोत्तम प्रतिकार है। —अज्ञात

मुसकान, जो शिशु के अधरो पर क्रीडा कर रही है, ऐसा प्रतीत होता है मानो शरद् के विलीन होनेवाले वादलो की कोर को छूनेवाली द्वितीया के चन्द्र की किरणो तथा ओसो से स्नात प्रभात के स्वप्न से उत्पन्न हुई है। —रवीन्द्र

Smile is love's language

मुस्कान प्रेम की भाषा है। —हेमर

The odour is to the rose, the smile to the woman

जैसे गुलाव के लिए सुगन्ध वैसे ही स्त्री के लिए मुसकान। —जानसन

A good laugh is sunshine in a house

मधुर हास्य मकान मे सूर्य प्रकाश के तुल्य है। —थैकरे

मुहब्बत (दे० 'प्रीति', 'प्रेम')

मुहव्वत त्याग की माँ है, जहाँ जाती है, वेटे को साथ ले जाती है। —सुदर्शन

यह इश्क नही आसा इतना ही समझ लीजे।
एक आग का दरिया है और डूबके जाना है॥ —जिगर

इलाही तर्क मुहव्वत भी क्या मुहव्वत है,
भुलाते हैं उन्हें वह याद आये जाते हैं। —जिगर

ये दर्द सर ऐसा है कि सर जाये तो जाये।
उल्फत का नशा जब कोई मर जाये तो जाये॥ —जौक

मूर्ख

वह मूर्खों में भारी मूर्ख है जो जानता है कि इस ससार में सुख है।

—गुरु रामदास

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नत पीडयन्
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिल पिपासार्दित ।
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेद्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥ —भर्तृहरि

यत्नपूर्वक पेरने से रेत मे से तेल निकालना सम्भव है, मृगतृष्णा से प्यासे की प्यास बुझाना सम्भव है, ढूढने से खरगोश का सीग भी मिल सकता है परन्तु मर्ख का मन जिस वस्तु की ओर झुक गया है उससे हटाना सम्भव नही है।

विचार-हीन मनुष्य ही मूर्ख है। —शकराचार्य

अजातमृतमूर्खाणा वरमाद्यौ न चान्तिम ।
सकृद्दु खकरावाद्यौ अन्तिमस्तु पदे पदे —हितोपदेश

जो पुत्र पैदा ही न हुआ हो वा पैदा होकर मृत हो गया हो अथवा मूर्ख हो, इन तीनो में पहले दो ही बेहतर है, न कि तीसरा। कारण यह है कि प्रथम दोनो तो एक बार ही दु ख देते है, जब कि तीसरा पद पद पर दु खकारक होता है।

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्ख शतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमोहन्ति न च तारागणैरपि —चाणक्य

एक गुणवान् पुत्र ही बेहतर है, सौ मूर्ख पुत्र नही। एक चन्द्रमा सारा अन्धकार दूर कर देता है जो झुण्ड के झुण्ड तारे नही कर पाते।

मूरख को समझावते ज्ञान गाठि को जाय।
कोयला होय न ऊजरो नौ मन साबुन लाय॥ —कबीर

मूर्खों की मूर्खता से लाभ उठाना पाप ही है। —आचार्य चतुरसेन

फूलै फलै न बेंत, यदपि सुधा बरषहि जलद।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलै विरचि सम॥ —तुलसी

A fool mav have his coat embroidered with gold, but it is a fool's coat still

मूर्ख मनुष्य चाहे सुनहले काम के कपडे पहन ले फिर भी वे मूर्ख के ही कपडे रहेंगे। —रीवारोल

पय पान भुजङ्गाना केवल विषवर्धनम्।
उपदेशो हि मूर्खाणा प्रकोपाय न शान्तये॥ —हितोपदेश

जैसे साँपो को दूध पिलाना केवल जहर को बढाना है, वैसे ही मूर्खों को उपदेश करना भी क्रोध को बढानेवाला है, शाति करनेवाला नही।

मूर्ख यदि नही समझता तो सद्ग्रन्थो का क्या दोष? यदि अन्धा नही देखता तो दर्पण का क्या दोष? —अज्ञात

मूर्खस्तु परिहर्तव्य प्रत्यक्षो द्विपद पशु।
भिनत्ति वाक्यशल्येन निर्दृश कण्टको यथा॥ —चाणक्य

मूर्ख को दूर करना उचित है, क्योकि देखने में वह मनुष्य यथार्थ में दो पाव का पशु है, और वाक्यरूपी शल्य से वेधता है जैसे अन्धे को काटा।

मूर्ख का हृदय उसके मुख मे रहता है, जब कि ज्ञानी की जिह्वा उसके हृदय में। —अज्ञात

Fools may ask more questions in an hour than wise man can answer in seven years

जितने प्रश्नो का उत्तर बुद्धिमान् सात वर्षों में दे सकता है उससे कही अधिक प्रश्न मूर्ख एक घण्टे मे पूछता है। —कहावत

वर पर्वतदुर्गेषु भ्रान्त वनचरै सह।
न मूर्खजनसपर्क सुरेन्द्रभवनेष्वपि॥ —भर्तृहरि

पर्वतो और वनो में वनचरो के सग विचरना श्रेष्ठ है, परन्तु मूर्खो के सग स्वर्ग में भी रहना बुरा है।

अज्ञ सुखमाराध्य सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञ।
ज्ञानलवदुर्विदग्ध ब्रह्मापि त नर न रजयति॥ —भर्तृहरि

अनजान मनुष्य को ज्ञानी मे सुधार सकते हैं, ज्ञानियो को अति सुख से वशीभूत कर सकते है, परन्तु अल्पज्ञ मूर्ख को ब्रह्मा भी नही सुधार सकता।

मूर्ख छ बातो से जाना जा सकता है—अकारण क्रोध, बिना लाभ के वार्त्तालाप, बिना विकास के बदलना, बिना आधार पूछताछ, अपरिचित व्यक्ति का विश्वास करना और शत्रु को मित्र समझना। —अज्ञात

Fools make feasts, and wise men eat them

मूर्ख दावत देते हैं और बुद्धिमान उसे खाते हैं। —कहावत

प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्राकुरात्
समुद्रमपि सतरेत् प्रचलदूर्मिमालाकुलम्।
भुजगमपि कोपित शिरसि पुष्पवद्धारयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥ —भर्तृहरि

मनुष्य घडियाल के मुख से बलपूर्वक मणि निकाल सकता है और भयकर लहरें उठती हो ऐसे दुस्तर समुद्र को भी तैरकर पार कर सकता है, क्रोधित सर्प को पुष्प की भाँति सिर पर धारण कर सकता है, परन्तु हठी मूर्खों के चित्त को नही मना सकता।

शक्यो वारयितु जलेन हुतभुक्छत्रेण सूर्यातपो
नागेन्द्रो निशिताकुशेन समदो दण्डेन गोगर्दभौ।
व्याधिर्भेषजसग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विष
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहित मूर्खस्य नास्त्यौषधम्॥ —भर्तृहरि

जल से अग्नि को रोकना सम्भव है, छतरी से धूप का निवारण करना सम्भव है, मतवाला हाथी भी अकुश से वश में हो सकता है, गौ, गर्दभ आदि चौपायो को डडे से वश में कर सकते हैं, रोग को विविध प्रकार की औषधियो से दूर करना सम्भव है और मत्र द्वारा विष भी उतर जाता है, इस प्रकार पृथ्वी पर सब वस्तुओ की शास्त्रोक्त औषध है परन्तु मूर्ख की कोई औषध नही है। —भर्तृहरि

शत दद्यान्न विवदेदिति विज्ञस्य समतम्।
विना हेतुमपि द्वन्द्वमेतन्मूर्खस्य लक्षणम्॥ —हितोपदेश

अपनी सैकडो की हानि सह ले परन्तु विवाद न करे यह बुद्धिमान् का मत है, और बिना कारण ही कलह कर बैठना यह मूर्ख का लक्षण है।

मूर्खता

To stumble twice against the same stone is a proverbial disgrace

उसी पत्थर से दुबारा टकराना मूर्खता है। —सिसरो

साधु के मस्तिष्क में भी मूर्खता का कोना होता है। —कहावत

जिसके साथ प्रेम किया जाय उसके चरित्र पर शका करना भारी मूर्खता है।—अज्ञात

कठोर सत्य की दुहाई देकर जीवन की मेल-जोलवाली चाल मे लडखडाहट उत्पन्न कर देना मूर्खता है। —अज्ञात

The folly of one man is the fortune of another

एक की मूर्खता से दूसरे का भाग्य वनता है। —वेकन

मूर्च्छा

मूर्छा निद्रा की सहोदरा है। जिस प्रकार निद्रा श्रमित विश्व को अपने विशाल वक्ष स्थल पर सुलाकर शान्ति प्रदान करती है, उसी प्रकार मूर्छा भी व्यथित प्राणी को अपनी गोद मे लेकर उसे शान्ति प्रदान करके फिर तुमुल सग्राम के लिए प्रस्तुत करती है। —अज्ञात

मूर्ति-पूजा

मूर्ति में जिनकी इष्ट-भावना होती है वे ही विश्वासपूर्वक उसकी पूजा करते हैं इस सत्य को हृदय में उतारने के लिए विश्वास चाहिए। —स्वामी विवेकानन्द

मूर्ति में भावना का मौन दर्शन होता है। —साने गुरूजी

मूर्तिपूजा सर्वव्यापी परमात्मा के दर्शन की पहली सीढी है। —अज्ञात

मूल्य

Worth begets in base minds, envy, in great souls, emulation

गुण नीच पुरुषो में द्वेष और महान् व्यक्तियो में स्पर्धा पैदा करता है।

—फील्डिंग

मेरे विचार से मनुष्य का मूल्य उसके काम या उसके कथन से नही, वल्कि वह जीवन में स्वय क्या वन रहा है इसे देखकर आँकना चाहिए। —अरविन्द

मृत्यु

That which ends in exhaustion is death but the perfect ending is in the endless

मृत्यु थकावट के सदृश है, परन्तु सच्चा अत तो अनत की गोद में है। —रवीन्द्र

मृत्यो न किंचिच्छक्यस्त्वमेको मारयितु वलात्।
मारणीयस्य कर्माणि तत्कर्तृणीति नेतरत्।। —योगवाशिष्ठ

हे मृत्यु, तू स्वय अपनी शक्ति से किसी मनुष्य को नही मार सकती। मनुष्य किसी दूसरे कारण से नही स्वय अपने ही कर्मो से मारा जाता है।

मृत्यु सच्चा मित्र है। हमारा अहभाव हमको दु ख देता है। —महात्मा गाधी

सभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते। —गीता

सम्मानित पुरुष के लिए अपकीर्ति मृत्यु से भी वुरी है।

शरीर का नाश होना मृत्यु नही है। मृत्यु है वास्तव में पापो की वासना।
—अज्ञात

मृत्यु से नया जीवन मिलता है। जो व्यक्ति और राष्ट्र मरना नही जानते, वे जीना भी नही जानते। केवल वहीं जहाँ कब्र है, पुनरुत्थान होता है।
—जवाहरलाल नेहरू

जीने की एक राह है, मरने की सौ। —कहावत

Death is the golden key that opens the palace of eternity

मृत्यु वह सोने की चाभी है जो अमरता के महल को खोल देती है। —मिल्टन

जो मरना जानते हैं उनके लिए मौत भयकर नही है। —अज्ञात

मृत्यु भी धर्मनिष्ठ प्राणी की रक्षा करती है। —कौटिल्य

Hunger and thirst scarcely kill any but gluttony and drink kill a great many

क्षुधा और प्यास से जितनो की मृत्यु होती है उनसे कही अविक लोगो की मृत्यु अविक भोजन और मदिरा-सेवन से होती है। —कहावत

मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति वहुत साफ हो जाती है। जन्म भर की घटनाएँ एक एक कर सामने आती हैं। समय की धुध विल्कुल उन पर से हट जाती है।
—चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

जीवन की चलती हुई तसवीर के लिए मृत्यु ही एक समुचित चौखट है।—
—यक जर्मन दार्शनिक

वृद्ध मनुष्य मृत्यु के पास जाते हैं लेकिन युवको के पास मृत्यु स्वय आती है।
—अज्ञात

Be of a good cheer about death, and know this of a truth, that no evil can happen to a good man, either in life or after death

मृत्यु के बारे में सदैव प्रसन्न रहो, और इसे सत्य मानो कि भले आदमी पर जीवन में या मृत्यु के पश्चात् कोई बुराई नही आ सकती। —सुकरात

आह ! मृत्यु कितनी भयानक वस्तु है। नही प्यारे, यह सब इस कारण है कि हमने इससे अपनी जान-पहचान बढाने का उद्योग नही किया। —मेरीवेल

अपकीर्ति ही मृत्यु है। —स्वामी शंकराचार्य

दुष्टा भार्या शठ मित्र भृत्यश्चोत्तरदायक।
ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न सशय ॥ —चाणक्य

दुष्ट स्त्री, कपटी दोस्त, जवाब देनेवाला नौकर और सर्प वाले घर मे रहना मौत ही है, सन्देह नही।

मृत्यु तो प्रभु का आमत्रण है। जब वह आये तो द्वार खोलकर उसका स्वागत करो और चरणो में हृदयधन सौंप अभिवादन करो। —रवीन्द्र

Death is the liberator of him whom freedom cannot release, the physician of him whom medicine cannot cure, the comforter of him whom time cannot console

मृत्यु उसकी मुक्तदायिनी है जिसे स्वतत्रता मुक्त नही कर सकती, यह उसकी चिकित्सक है जिसे औषध निरोग नही कर सकती, यह उसकी आनन्ददायिनी है जिसे समय सात्वना प्रदान नही कर सकता। —कोल्टन

मृत्यु का दूत अधा और बहरा है। यदि उसके नेत्र और कान होते तो जगत् में बहुत से विनाश के हृदयवेधक दृश्य न देख पडते। —सुदर्शन

He whom the gods love dies young

जिसे देवता प्यार करते हैं वह जल्दी मरता है। —अज्ञात

सहैव मृत्युर्व्रजति सह मृत्युर्निषीदति।
गत्वा सुदीर्घमध्वान सह मृत्युर्निवर्तते ॥ —वाल्मीकि (रा०)

मृत्यु साथ ही चलती है, वह साथ ही बैठती है और सुदूरवर्ती पथ पर भी साथ-साथ जाकर साथ ही लौट आती है।

The fountain of death makes the still water of life play

मृत्यु का फव्वारा जीवन के स्थिर जल को नर्त्तन कराता है। —रवीन्द्र

मृदुता

तुल्येऽपरावे स्वर्भानुर्भानुमन्त चिरेण यत्।
हिमांशुमाशु ग्रसते तन्म्रदिम्न स्फुट फलम्॥ —माघ

अपराध के समान होने पर भी राहु सूर्य को चिरकाल बाद और चन्द्रमा को शीघ्र ही जो ग्रसता है, सो (चन्द्रमा की) मृदुता का ही स्पष्ट परिणाम है।

मेहमान (दे० "अतिथि")

मेहमान नारायण का साक्षात् स्वरूप होता है। उसकी सेवा बडे सौभाग्य से प्राप्त होती है। —स्वामी श्रद्धानन्द

मेहरबानी (दे० "दया")

किसी की मेहरबानी मागना अपनी आजादी बेचना है। —महात्मा गांधी

मैं

जब "मैं" है तब हरि नही, हरि है तब मैं नाहिं।
प्रेम गली अति साँकरी, ता में द्वै न समाहिं॥ —कबीर

अहं ब्रह्मास्मि। —बृहदारण्यकोपनिषद्

मैं ब्रह्म हूँ।

मैं और मेरे पिता दोनो एक है। —महात्मा ईसा

I am the master of my fate, I am the captain of my soul

मैं ही अपने भाग्य का मालिक हूँ और मैं ही अपनी आत्मा का सेनाध्यक्ष हू। —हेनले

हर एक को ये दावा है कि हम भी हैं कोई चीज।
और हमको है ये नाज कि हम कुछ भी नही हैं॥ —अकबर

जब मैं अपने गुण और दूसरे के दोषो को देखता हू तो मुझे मालूम होता है कि मैं कोई महात्मा नही तो साधु पुरुष अवश्य हू। पर मैं जब अपने दोष और दूसरे के गुणो पर विचार करता हू तो सहसा कह उठता हू—"मो सम कौन कुटिल खल कामी" —हरिभाऊ उपाध्याय

मोक्ष

मोक्षस्य न हि वासोऽस्ति न ग्रामान्तरमेव वा।
अज्ञान-हृदय-ग्रन्थि-नाशो मोक्ष इति स्मृत ॥ — शिवगीता

मोक्ष किसी स्थान पर रखा हुआ नही मिलता और न उसको ढूढने के लिए किसी दूसरे गाव को ही जाना पडता है। हृदय की अज्ञानग्रन्थि का नष्ट होना ही मोक्ष कहा जाता है।

द्वे पदे बन्धमोक्षाय निर्ममेति ममेति च।
ममेति वध्यते जन्तुर्निर्ममेति विमुच्यते॥
— वेदव्यास (महाभारत)

वन्धन और मोक्ष के दो ही आश्रय है—ममता और ममता-शून्यता, ममता से प्राणी वन्धन में पडता है और ममतारहित होने पर मुक्त हो जाता है।

तद्वुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणा ।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषा ॥ —गीता

ज्ञान द्वारा जिनके पाप धुल गये हैं, वे ईश्वर का ध्यान धरनेवाले, तन्मय हुए, उसमे स्थिर रहनेवाले, उसी को सर्वस्व माननेवाले लोग मोक्ष पाते हैं।

असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुष । —गीता

फल की अभिलाषा छोड कर कर्म करनेवाला पुरुष मोक्ष पाता है।

मोह

मोह ही भय का कारण है। — अज्ञात

वुद्धि का नाश ही मोह है, वह धर्म और अर्थ दोनो को नष्ट करता है। इससे मनुष्य मे नास्तिकता आती है और वह दुराचार में प्रवृत्त हो जाता है।
— वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

जहँ लग सव ससार है मिरग सवन को मोह।
सुर नर नाग पाताल अरु ऋषि मुनिवर सव मोह। — कवीर

काम क्रोव लोभादि मद प्रवल मोह कै धारि।
तिन्ह महँ अति दारुन दुखद मायारूपी नारि॥ — तुलसी (दो०)

मोहताज

सर्वदा दूसरो की सगति का मोहताज रहना ही अज्ञान की अवस्था का दर्शक है।

—अज्ञात

मौत (दे० 'मृत्यु')

मृत्यु नही वरन् बीमारी हमें कष्ट पहुचाती है, क्योकि बीमारी हमे निरन्तर तन्दुरुस्ती की याद दिलाती है और फिर भी हमें उससे वचित रखती है।

—रवीन्द्र

Death's stamp gives value to the coin of life, making it possible to buy with life what is truly precious

मौत की छाप जीवन के सिक्के को मूल्यवान् बना देती है। इसलिए जीवन देकर वास्तव में मूल्यवान् वस्तु का खरीदना सम्भव हो जाता है। —रवीन्द्र

मौन

मौन उस अवस्था को कहते हैं जो वाक्य और विचार से परे है, शून्य ध्यान-अवस्था है। मौन में ही अनत वाणी की ध्वनि है।

—अज्ञात

मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही चाहिए तो कम से कम बोलो। एक शब्द से काम चले तो दो नही।

—महात्मा गांधी

नापृष्ट कस्यचिद् ब्रूयान्नाप्यन्यायेन पृच्छत ।
ज्ञानवानपि मेधावी जडवत्समुपाविशेत् ॥

—वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

किसी के प्रश्न किये बिना न बोले, तथा कोई अन्याय से कोई प्रश्न करता हो तब भी न बोले। मेधावी विद्वान् पुरुष (जानने पर भी नियमानुसार प्रश्न किये बिना) मूर्ख पुरुष की तरह व्यवहार करे।

None preaches better than the ant, and she says nothing

चीटी से अच्छा कोई उपदेश नही देता, और वह मौन रहती है।

—फ्रैंकलिन

"What language is thine, O sea"
"The language of eternal question"
"What language is thy answer, O sky"
"The language of eternal silence"

"हे सागर, तेरी भाषा क्या है?"
"अनत प्रश्न की भापा"
"हे आकाश, तेरे उत्तर की भाषा क्या है?"
"अनत मौन की भाषा।"　　　　　　　　　　　　　　— रवीन्द्र

Silence is more eloquent than words
मौन में शब्दो की अपेक्षा अधिक वाक्शक्ति होती है।　　　　— कारलाइल

भय से उत्पन्न मौन पशुता और सयम से उत्पन्न मौन साधुता है।
— हरिभाऊ उपाध्याय

मौन अवस्था में "मैं" का लोप हो जाता है। फिर कौन सोचे और वोले।
— अज्ञात

The rest is silence
विश्राम मौन है।　　　　　　　　　　　　　　　　— शेक्सपियर

Silence in women is like speech in men, deny it who can
स्त्री का मौन पुरुष की वाणी के सदृश होता है। इससे कौन इन्कार कर सकता है।　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　— बेनजान्सन

अप्रिय शब्द वोलने से मौन रहना अच्छा है।　　　　　　　— अज्ञात

विधाता ने मौन अर्थात् चुप रहना ही अज्ञानता का ढकना वनाया है, यह मनुष्य के अधीन है तथा इसमे और भी अनेक गुण हैं। यही ज्ञानियो की सभा में अज्ञानियो का आभूषण है।　　　　　　　　　　　　　　　　— भर्तृहरि

मौन सम्मति लक्षणम्। मौन सम्मति का चिह्न है।　　　　— कहावत

मौन अवस्था मे भगवद्भक्ति वेग से मनुष्य की ओर बढती है। मनुष्य फिर देव स्वरूप होकर भगवद् रूप को प्राप्त होता है।　　　　　— अज्ञात

Still waters run deep
स्थिर जल वहुत गहरा होता है।　　　　　　　　　　— अग्रेजी कहावत

वाद विवादे विष घना, वोले वहुत उपाध।
मौन गहे सवकी सहै, सुमिरै नाम अगाव॥ —कबीर

आओ हम मौन रहें ताकि फरिश्तो की काना-फूसिया सुन सकें। —एमर्सन

मौन एक वहुत शक्तिशाली अस्त्र है जिसे हममें से वहुत कम लोग व्यवहार में ला सकते हैं। —अज्ञात

Rapture is born dumb
अत्यन्त हर्ष गूगा उत्पन्न हुआ है। —अज्ञात

मौन निद्रा के सदृश है। यह ज्ञान में नयी स्फूर्ति उत्पन्न करता है। —वेकन

जैसे घोसला सोती हुई चिडियो को आश्रय देता है वैसे ही मौन तुम्हारी वाणी को आश्रय देगा। —रवीन्द्र

Silence is wisdom and gets friends
मौन वुद्धिमानी है और मित्र वनाती है। —कहावत

स्त्री मे मौन सर्वोत्तम आभूषण है। —कहावत

विपत्ति में मौन रहना अति उत्तम है। —ड्राइडेन

यज्ञ

यज्ञ अर्थात् परोपकारार्थ किये हुए कर्म, भूत-मात्र ईश्वर की सृष्टि है। उसकी सेवा देश-सेवा है। और वह यज्ञ है। —महात्मा गाधी

यज्ञशिष्टाशिन सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषै। —गीता

जो मनुष्य यज्ञ से वचा हुआ खानेवाले हैं, वे सव पापो से छूट जाते हैं।

यज्ञ का अर्थ है मुख्यत परोपकारार्थ शरीर का उपयोग। —महात्मा गाधी

यश (दे० "कीर्त्ति")

सर्वे नन्दन्ति यशसागते न सभासाहेन सख्या सखाय।
किल्विषस्पृत् पितुषणिर्ह्येषामर हितो भवति वाजिनाय॥ —ऋग्वेद

यश मित्र का काम करता है, वह सभा-समाज में प्रधानता प्राप्त कराता है। इसको प्राप्त कर सभी प्रसन्न होते हैं, क्योकि यश के द्वारा दुर्नाम दूर होता है, अन्न प्राप्त होता है, शक्ति मिलती है और सव तरह से लाभ होता है।

The temple of fame stands upon the grave, the flame upon its altars is kindled from the ashes of the dead

कब्र पर यश का मदिर खडा होता है और मृतक की राख से उस पर चिराग जलता है। —हैजलिट

यश त्याग से मिलता है, धोखे-धडी से नही। —प्रेमचन्द

जो विचारशील हैं उनका सिद्धान्त है कि यश और सत्कर्म का वही सम्बन्ध है जो धुआ और अग्नि का। —अज्ञात

Only the actions of the just smell sweet and blossom in the dust

केवल निष्पक्षपाती के कर्म ही मधुर सुगन्ध देते है और धूल मे खिलते हैं।

—शर्ले

धन तो काल पाकर क्षय हो जाता है, पर यशरूपी धन अक्षय है, इसको काल भी नष्ट नही कर सकता। —अज्ञात

The way to fame is like the way to heaven, through much tribulation

यश का मार्ग स्वर्ग के मार्ग के तुल्य बडा कष्टमय है। —स्टर्न

यश-प्राप्ति की मधुर आशा, मनुष्य को जन्म भर सुपथ पर चलाया करती है।

—अज्ञात

यशस्वी

देवतुल्य विद्वानो, घर के बूढो, सन्यासियो, अतिथियो और मानवता की सहानुभूति के पात्र मनुष्यो की जो ठीक प्रकार से सेवा करता है वही पुरुष ससार में यशस्वी होता है। —अज्ञात

याचक

तृण लघु तृणात्तूल तूलादपि च याचक ।
वायुना कि न नीतोऽसौ मामय याचयिष्यति ॥

—चाणक्य

तृण हलका होता है, तृण से हलकी रुई होती है, रुई से भी हलका याचक होता है, वायु उसको इसी कारण से नही उडाती कि कही यह मुझसे भी कुछ माँगने लगेगा।

याचना (दे० 'भिक्षा', 'मांगना')

सेवेव मानमखिल ज्योत्स्नेव तमो जरेव लावण्यम्।
हरिहरकथेव दुरित गुणशतमप्यर्थिता हरति॥ —हितोपदेश

जैसे सेवा सब मान को, चादनी अधकार को, बुढापा खूबसूरती को, और विष्णु तथा महादेव की कथा पापो को हरती है वैसे ही याचना सैकडो गुणो को हर लेती है।

निर्गलिताम्वुगर्भं शरद्धन नार्दति चातकोऽपि। —कालिदास

पपीहा भी बिना जलवाले बादलो से पानी नही माँगता।

वर विभवहीनेन प्राणै सतर्पितोनल।
नोपचारपरिभ्रष्ट कृपण प्रार्थितो जन॥ —हितोपदेश

धनहीन मनुष्य प्राणो को अग्नि में झोक दे तो अच्छा, परन्तु अपने मान को छोड कर कृपण मनुष्य से याचना करना अच्छा नही है।

याञ्चा मोघा वरमधिगुणो नाधमे लब्धकामा। —कालिदास

सज्जन से निष्फल याचना भी अच्छी है पर दुर्जन से सफल याचना भी अच्छी नही।

मागे मुकुरि न को गयो, केहि न त्यागियो साथ।
मागत आगे सुख लह्यो, ते रहीम रघुनाथ॥ —रहीम

यात्रा

यात्रा में सत्सगति रास्ते को छोटा बना देती है। —अज्ञात

यात्री

अनुभवहीन यात्री पख रहित पक्षी के सदृश है। —सादी

याद (दे० "स्मृति")

याद हमारे जीवन को हरा भरा रखने के लिए हमारे साथ प्रभु का पक्षपात है।
—अज्ञात

Sorrows remembered sweeten present joy
दुख की याद वर्त्तमान प्रसन्नता को मधुर बना देती है। —पोलक

The temple of fame stands upon the grave, the flame upon its altars is kindled from the ashes of the dead

कब्र पर यश का मदिर खडा होता है और मृतक की राख से उस पर चिराग जलता है। — हैजलिट

यश त्याग से मिलता है, धोखे-धडी से नही। — प्रेमचन्द

जो विचारशील है उनका सिद्धान्त है कि यश और सत्कर्म का वही सम्बन्ध है जो धुआ और अग्नि का। — अज्ञात

Only the actions of the just smell sweet and blossom in the dust

केवल निष्पक्षपाती के कर्म ही मधुर सुगन्ध देते है और धूल में खिलते है। — शर्ले

धन तो काल पाकर क्षय हो जाता है, पर यशरूपी धन अक्षय है, इसको काल भी नष्ट नही कर सकता। — अज्ञात

The way to fame is like the way to heaven, through much tribulation

यश का मार्ग स्वर्ग के मार्ग के तुल्य बडा कष्टमय है। — स्टर्न

यश-प्राप्ति की मधुर आशा, मनुष्य को जन्म भर सुपथ पर चलाया करती है। — अज्ञात

यशस्वी

देवतुल्य विद्वानो, घर के बूढो, सन्यासियो, अतिथियो और मानवता की सहानुभूति के पात्र मनुष्यो की जो ठीक प्रकार से सेवा करता है वही पुरुष ससार में यशस्वी होता है। — अज्ञात

याचक

तृण लघु तृणात्तूल तूलादपि च याचक ।
वायुना किं न नीतोऽसौ मामय याचयिष्यति ॥

— चाणक्य

तृण हलका होता है, तृण से हलकी रुई होती है, रुई से भी हलका याचक होता है, वायु उसको इसी कारण से नही उडाती कि कही यह मुझसे भी कुछ माँगने लगेगा।

याचना (दे० 'भिक्षा', 'मांगना')

सेवेव मानमखिल ज्योत्स्नेव तमो जरेव लावण्यम्।
हरिहरकथेव दुरित गुणशतमप्यर्थिता हरति ॥ —हितोपदेश

जैसे सेवा सब मान को, चादनी अधकार को, बुढापा खूबसूरती को, और विष्णु तथा महादेव की कथा पापो को हरती है वैसे ही याचना सैकडो गुणो को हर लेती है।

निर्गलिताम्बुगर्भं शरद्धन नार्दति चातकोऽपि। —कालिदास

पपीहा भी बिना जलवाले बादलो से पानी नही माँगता।

वर विभवहीनेन प्राणै सतर्पितोनल ।
नोपचारपरिभ्रष्ट कृपण प्रार्थितो जन ॥ —हितोपदेश

घनहीन मनुष्य प्राणो को अग्नि में झोक दे तो अच्छा, परन्तु अपने मान को छोड कर कृपण मनुष्य से याचना करना अच्छा नही है।

याञ्चा मोघा वरमधिगुणो नाधमे लब्धकामा। —कालिदास

सज्जन से निष्फल याचना भी अच्छी है पर दुर्जन से सफल याचना भी अच्छी नही।

मागे मुकुरि न को गयो, केहि न त्यागियो साथ।
मागत आगे सुख लह्यो, ते रहीम रघुनाथ॥ —रहीम

यात्रा

यात्रा में सत्सगति रास्ते को छोटा बना देती है। —अज्ञात

यात्री

अनुभवहीन यात्री पख रहित पक्षी के सदृश है। —सादी

याद (दे० "स्मृति")

याद हमारे जीवन को हरा भरा रखने के लिए हमारे साथ प्रभु का पक्षपात है।
—अज्ञात

Sorrows remembered sweeten present joy
दुख की याद वर्त्तमान प्रसन्नता को मधुर बना देती है। —पोलक

याद पख है, जो प्राण के परिन्दे को जीवन के उन्चतर आकाश में उडने का पुरुषार्थ देती है। —अज्ञात

Pleasure is flower that fades, remembrance is the lasting perfume

आनद पुष्प है जो मुरझा जाता है, किन्तु उसकी याद शाश्वत सुगन्ध है।

याद ही केवल ऐसा स्वर्ग है जहा से हम कभी भगाये नही जा सकते। —रिचर

युग

कलियुग में रहना है या सतयुग में। यह तो स्वय चुनो, तुम्हारा युग तुम्हारे पास है। —विनोबा

युद्ध

When a man's fight begins within himself he is worth something

जब मनुष्य का युद्ध अपने आप के साथ आरम्भ होता है तब उसका कुछ मूल्य होता है। —ब्राउनिंग

धर्म-युद्ध में मरने के बाद भी बहुत कुछ बाकी रह जाता है, हार को पार करके मिलती है जीत, और मृत्यु को पार करके मिलता है अमृत। —रवीन्द्र

War is business of barbarians

युद्ध असभ्य लोगो का व्यापार है। —नेपोलियन

अधर्म-युद्ध में 'मरना' मरना कहलाता है। —रवीन्द्र

युद्ध की विधि भी विजय का आधार है। —अज्ञात

War is a profession by which a man cannot live honourably, an employment by which the soldier, if he would reap any profit, is obliged to be false, rapacious and cruel

युद्ध ऐसा पेशा है, जिसमें मनुष्य सम्मानपूर्वक नही रह सकता। यह ऐसी नौकरी है, जिसमें लाभ कमाने के लिए सैनिक को छली, लुटेरा और क्रूर बनना पडता है। —मेकियावेली

धर्म-युद्ध बाहरी जीत जीतने के लिए नही होता, वह तो हार कर भी जीतने के लिए होता है। —रवीन्द्र

युवक

The youth who does not look up will look down, and the spirit that does not sour is destined perhaps to grovel

युवक जो ऊपर नही देखता नीचे देखेगा, आत्मा जो आकाश में नही उडती विनीत हो जाती है। —डिजरायली

योग

योगश्चित्तवृत्तिनिरोध । —पतजलि

चित्त की वृत्तियो को वश में रखना ही योग है।

सभी चिन्ताओ का परित्याग कर निश्चिन्त हो जाना ही योग है।

—योगशास्त्र

योग कर्मसु कौशलम—कार्य में कुशलता को योग कहते है।

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

आत्मसाक्षात्कार का एकमात्र उपाय योग है। —सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नत ।
न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥
युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नाववोवस्य योगो भवति दु खहा ॥

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

जो वहुत भोजन करता है उसका योग सिद्ध नही होता, जो निराहार रहता है उसका भी योग सिद्ध नही होता, जो वहुत सोता है उसका भी योग सिद्ध नही होता, और जो वहुत जागता है उसका भी योग सिद्ध नही होता।

जो मनुष्य आहार-विहार में, दूसरे कर्मों में, सोने-जागने मे परिमित रहता है, उसका योग दु खभजन हो जाता है ।

योगी

सर्वभूतस्थमात्मान सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शन ॥ —गीता

सर्वत्र समभाव रखनेवाला योगी अपने को सव भूतो में और सव भूतो को अपने में देखता है।

न तस्य रोगो न जरा न मृत्यु प्राप्तस्य योगाग्निमय शरीरम। —उपनिषद्

जिसने योगाभ्यास की अग्नि से अपने शरीर को खूब तपा लिया, उसे फिर न रोग सताता है न बुढापा। मृत्यु भी उसके पास आते डरती है।

यो मा पश्यति सर्वत्र सर्व च मयि पश्यति।
तस्याह न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

जो मुझे सर्वत्र देखता है और सबको मुझमे देखता है, वह मेरी दृष्टि से ओझल नही होता और मैं उसकी दृष्टि से ओझल नही होता।

आत्मौपम्येन सर्वत्र सम पश्यति योऽर्जुन।
सुख वा यदि वा दु ख स योगी परमो मत ॥ —गीता

जो मनुष्य अपने जैसा सबको देखता है और सुख हो या दु ख दोनो को समान समझता है वह योगी श्रेष्ठ गिना जाता है।

योग्य

The winds and waves are always on the side of the ablest navigators

आधियाँ और समुद्री लहरें निरतर सबसे योग्य नाविको का साथ देती हैं।—गिबन

They are able because they think they are able

जो अपने को योग्य समझते है वे योग्य है। —वर्जिल

योग्य आदमी के लिए धन और यश की कमी नही रहती। —अज्ञात

योग्यता

Ability is of little account without opportunity

विना अवसर प्राप्त हुए योग्यता से लाभ कम होता है। —नेपोलियन

अपनी योग्यता को छिपाने के लिए भी वडी योग्यता की आवश्यकता होती है।
—ला रोशोको

केवल सफेद वाल, सिकुडी हुई खाल और पोपला मुह या झुकी हुई कमर किसी को आदर का पात्र नही वना देती। न जनेऊ या तिलक या पडित या शर्मा की उपाधि ही भक्ति की वस्तु है। —प्रेमचन्द

There never was a bad man, that had ability for good service.

जिसमें अच्छी सेवा की योग्यता है, ऐसा मनुष्य कभी बुरा नही हो सकता।

—बर्क

From each according to his ability, to each according to his needs

योग्यता के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को न मिलकर उसकी आवश्यकता के अनुसार उसको मिलना चाहिए। —कार्ल मार्क्स

यौवन (दे० "जवानी")

युवावस्था आवेशमय होती है, क्रोध से आग हो जाती है तो करुणा से पानी भी हो जाती है। —प्रेमचन्द

यौवन का शक्ति-प्रवाह बहुधा बौद्धिक आँखो की दृष्टि ज्योति को हरण कर लेता है, मनुष्य की सूझ-बूझ सतर्कता पर पानी फेर देती है। —अज्ञात

Youth is a continual intoxication, it is the fever of reason

यौवन एक निरन्तर मादकता है, यह बुद्धि का ज्वर है। —लारोशोको

तरुणाई की नयी उमग ऐसी चीज है कि उसके जोश में आकर मनुष्य पहाड को भी चूर चूर कर सकता है। —अज्ञात

युवावस्था बहुत सुन्दर है, सन्देह नही, पर जहाँ जीवन की गहनता की जाँच होती है, वहा यौवन का कोई मूल्य नही रह जाता। —डास्टाएव्सकी

जिन्दगी और दौलत की तरह, जवानी को भी जात देर नही लगती।

—अज्ञात

यौवन धनसम्पत्ति प्रभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्॥ —हितोपदेश

यौवन, घन-सम्पत्ति, प्रभुत्व (अधिकार) और अविवेक—इन चारो में से एक एक अनर्थकारी होता है। जहाँ ये चारो होते है, वहाँ की तो बात ही क्या ?

रक्त (दे० "खून")

रुधिर के सूखे हुए धब्बे रग के दाग बन सकते है पर ताजा लोहू आप ही आप पुकारता है। —प्रेमचन्द

राजदूत

An ambassador is an honest man who lies and intrigues abroad for the benefit of his country

राजदूत एक ईमानदार व्यक्ति है, जो विदेश में अपने देश के लाभार्थ रह कर षड्यत्र रचता है। —अज्ञात

नीति विरोध न मारिय दूता। —तुलसी (मानस-सुन्दर०)

सहज विवेक, आकर्षक रूप, मननशील विद्या, ये तीनो जिसमे हो, वही राजदूत वनने योग्य है। —सत तिरुवल्लुवर

दयालु हृदय, उच्चकुल और राजाओ को प्रसन्न करनेवाले उपाय—ये सव राजदूतो के विशेष गुण हैं। —सत तिरुवल्लुवर

प्रेम-मय प्रकृति, सुतीक्ष्ण वुद्धि और वाक्पटुता—ये तीनो वातें राजदूत के लिए अनिवार्य हैं। —सत तिरुवल्लुवर

राजधर्म

राजधर्म सव होइ सूर तहँ, प्रजा न जाय सताए। —सूरदास

मुखिया मुख सो चाहिये, खान पान कहु एक।
पालै पोषै सकल अग, तुलसी सहित विवेक। —तुलसी

राजनीति

राजनीति साधुओ के लिए नही है। —लोकमान्य तिलक

There is no gambling like politics

राजनीति के सदृश कोई दूसरा जुआ नही है। —डिजरायली

Politics is the madness of the many for the gain of the few

राजनीति कुछ मनुष्यो के लाभार्थ वहुत से व्यक्तियो का उन्माद है।

—एलेक्जेन्डर पोप

मै इस वात से सहमत नही हू कि धर्म का राजनीति से कोई सम्वन्ध नही है। धर्म से विलग राजनीति मृतक शरीर के तुल्य है जो केवल जला देने के योग्य है।

—महात्मा गाधी

कारागार की अपेक्षा राजनीति में उससे अधिक स्वतत्रता नही है।

—विल रोजर्स

आधुनिक राजनीति मूलत मनुष्यो का नही अपितु शक्तियो का सघर्ष है।

—हेनरी ऐडम

राजनीति में कुज की पुष्प-शैया जल उठती है। लाल फूल अगारो का रूप धारण कर लेते हैं और शीतल समीर सर्पों की फुफकार वन जाती है।

—डा० रामकुमार वर्मा

All political parties die at last by swallowing their own lies
समस्त राजनीतिक दल अत में अपने ही असत्यो से नष्ट हो जाते हैं।

—जान अरवुथनट

Practical politics consists in ignoring facts
व्यावहारिक राजनीति यथार्थ को स्वीकार न करने में है। —हेनरी ऐडम

Politics is the art of looking for trouble, finding it everywhere, diagnosing it wrongly and applying unsuitable remedies
राजनीति विपत्तियो को खोजने, उसे सर्वत्र प्राप्त करने, गलत निदान करने और अनुपयुक्त चिकित्सा करने की कला है। —सर अर्नेस्ट वेन

Knowledge of human nature is the beginning and end of political education
मानव स्वभाव का ज्ञान ही राजनीतिक शिक्षा का आदि और अन्त है।

हेनरी ऐडम

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या।
नित्यव्यया प्रचुरनित्यधनागमा च
वेश्याङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा॥ —भर्तृहरि

राजनीति वेश्या के समान अनेक प्रकार से व्यवहार में लायी जाती है। कही झूठी, कही सच, कही कठोर और प्रियभाषिणी होती है, कही हिंसक और दयालु होती है, कही कृपण और कही उदार होती है, कही अधिक द्रव्य व्यय करने वाली और कही वहुत सचय करने वाली होती है।

राजनीति कहती है, हाथ आये दुश्मन को छोडना और अपनी हार खरीदना एक ही चीज के दो नाम हैं। —अज्ञात

राजनीतिज्ञ

राजनीतिज्ञ पारे की तरह है। अगर तुम उस पर उगली रखने की कोशिश करो तो उसके नीचे कुछ नहीं मिलता। —आस्टिन

A politician thinks of the next election, a statesman of the next generation

राजनीतिज्ञ अगले चुनाव के बारे में और कुशल राजनेता अगली पीढी के बारे में सोचता है। —जे० एफ० क्लार्क

राजनीति-जीवियो की, उनकी नाना छल-चतुराइयो के लिए, हम तारीफ कर सकते हैं, किन्तु उनके प्रति भक्ति नही कर सकते। —रवीन्द्र

खाली पेट अच्छा राजनीतिज्ञ परामर्शदाता नही है। —आइंस्टीन

राजनीतिक उन्नति

जिस देश को राजनीतिक उन्नति करना हो वह यदि पहले सामाजिक उन्नति नही कर लेगा, तो राजनीतिक उन्नति आकाश में महल बनाने जैसी होगी।

—महात्मा गाधी

राजमद

सब ते कठिन राजमद भाई। —तुलसी (मानस-अयोध्या)

सहसबाहु सुरनाथ त्रिशकू। केहि न राज मद दीन्ह कलकू॥ —तुलसी

राजसत्ता

यदि राजसत्ता अत्याचारी हो तो किसान का सीधा उत्तर है—जा, जा, तेरे ऐसे कितने ही राज मैंने मिट्टी में मिलते देखे हैं। —सरदार पटेल

राजा

राजा सत्य च धर्मश्च राजा कुलवता कुलम्।
राजा माता-पिता चैव राजा हितकरो नृणाम्॥

—वाल्मीकि (रा० अयो०)

राजा सत्य है, राजा धर्म है, राजा कुलीन पुरुषो का कुल है, राजा ही माता और पिता है तथा राजा, समस्त मानवो का हित-साधन करनेवाला है।

जिसे पुरवासी और देश-वासियो को प्रसन्न रखने की कला आती है वह राजा इस लोक और परलोक में सुख पाता है। —वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

यदि राजा दुश्चरित्र हो तो सारे राष्ट्र को सन्तप्त कर डालता है। —वही

अधर्मी राजा के अत्याचार से प्रजा का नाश हो जाता है। —वही

जिस राजा की प्रजा सरोवर में कमलो के समान विकसित होती रहती है वह सब प्रकार से पुण्य फलो का भागी होता है और अधिक दिन तक उसका यश छाया रहता है। —वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

यथा दृष्टि शरीरस्य नित्यमेव प्रवर्तते।
तथा नरेन्द्रो राष्ट्रस्य प्रभव सत्यधर्मयो ॥ —वाल्मीकि

जैसे दृष्टि सदा ही शरीर के हित में लगी रहती है, उसी प्रकार राजा राष्ट्र को सत्य और धर्म में लगानेवाला होता है।

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवसि नरक-अधिकारी ॥
—तुलसी (मानस-अयोध्या)

जो राजा प्रजा की अच्छी तरह रक्षा नही करता वह चोर के समान है।
—वेदव्यास (महाभारत, शान्तिपर्व)

नीति न तजिय राज-पद पाये। —तुलसी (मानस-अयोध्या)

सोचिय नृपति जो नीति न जाना। जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना ॥
—तुलसी (मानस-अयोध्या)

नाराजके जनपदे स्वक भवति कस्यचित्।
मत्स्या इव जना नित्य भक्षयन्ति परस्परम् ॥ —वाल्मीकि

विना राजा के देश में किसी की कोई वस्तु अपनी नही रहती। मछलियो की भाति सब लोग सदा परस्पर एक दूसरे को अपना ग्रास वनाते—लूटते-खसोटते रहते है।

वुद्धिशस्त्र प्रकृत्यङ्गो घनसवृत्तिकञ्चुक ।
चारेक्षणो दूतमुख पुरुष कोपि पार्थिव ॥
—माघ (शिशुपालवध)

वुद्धि ही जिसका शस्त्र है, सेना अमात्य, आदि राज्याङ्ग ही जिसके अग है, दुर्भेद्य मन्त्र की सुरक्षा ही जिसका कवच है, गुप्तचर ही जिसके नेत्र है, सदेशवाहक दूत ही जिसका मुख है, इस प्रकार का राजा कोई अलौकिक ही पुरुप है।

राजाश्रय

महात्वाकाक्षी विद्वान्, शिल्पकार्य मे निपुण कारीगर, शूरवीर एव सेवा-वृत्ति में चतुर लोगो के लिए राजा के विना कही दूसरी जगह आश्रय नही मिलता।

—पचतन्त्र

अपने मित्रो और हितैषियो का उपकार करने के लिए तथा शत्रुओ का अपकार करने के लिए बुद्धिमान् लोग राजाओ का आश्रय ग्रहण करते हैं, केवल अपने पेट को कौन नही भर लेता। —पचतंत्र

राम नाम

नाम राम को अक है, सब साधन है सून।
अक गये कछु हाथ नहि, अक रहे दस गून॥

—तुलसी (दोहावली)

राम-नाम मृत्यु के दु ख को मिटा देता है, यह रामनाम का क्या कोई छोटा मोटा चमत्कार है। —महात्मा गाधी

रामनाम मणि-दीप धरु, जीह-देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरहु, जो चाहसि उजियार॥ —तुलसी

तुलसी 'रा' के कहत ही, निकसत सकल विकार।
पुनि आवन पावत नही, देत "म" कार किवार॥ —तुलसी

रामनाम सुन्दर करतारी। सशय विहग उडावन हारी। —तुलसी

सतो ने साहित्य का सारा सार रामनाम में ला रखा है। —विनोबा

तुलसी राम सनेह करु, त्यागु सकल उपचार।
जैसे घटत न अक नौ, नौ के लिखत पहार॥ —तुलसी

ब्रह्म राम तें नामु वड, वरदायक वरदानि।
राम चरित सत्कोटि मह, लिय महेस जिय जानि॥
राम नाम कलि कामतरु, सकल सुमगल कन्द।
सुमिरत करतल सिद्धि सव, पग पग परमानन्द॥ —तुलसी (दोहा०)

श्वास श्वास पर राम भज, वृथा श्वास मत खोय।
ना जाने यह श्वास को, आवन होय न होय॥ —तुलसी

राम-राज्य

धार्मिक दृष्टिकोण से रामराज्य पृथ्वी पर ईश्वरीय कहा जा सकता है। राजनीतिक दृष्टि से रामराज्य एक ऐसा पूर्ण प्रजातत्र है, जहा अधिकार, वर्ण, स्त्री तथा पुरुष के विभेद पर आश्रित असमानताए तिरोहित हो जाती है। इस प्रजातत्र मे भूमि तथा राजसत्ता की अधिकारिणी प्रजा है। —महात्मा गाधी

दैविक दैहिक भौतिक तापा। रामराज्य काहुहि नहि व्यापा॥ —तुलसी

रामायण

मै तुलसीदास जी की रामायण को भक्ति-मार्ग का सर्वोत्तम ग्रन्थ समझता हू।
रामचरित मानस विचार-रत्नो का भडार है। —महात्मा गाधी

रामायण में ज्ञान, भक्ति और वैराग्य की निर्मल त्रिवेणी का प्रवाह वहता है।
—महामना प० मदन मोहन मालवीय

रामचरित मानस विमल, सतन जीवन प्रान।
हिन्दुआन को वेद सम, जवनहि प्रगट कुरान॥ —रहीम

गीता के वाद यदि किसी ग्रन्थ ने देशोद्धार का समुचित मार्ग दिखाया है तो तुलसीकृत रामायण ने ही। —अज्ञात

रामायण सुर तरु की छाया।
दुख भय दूर निकट जो आया॥ —तुलसी

रामायण के द्वारा भारतवर्ष से स्वार्थपरता का दोष जितना दूर हुआ है उतना किसी भी नीतिवान्, धर्मविद्, समाज सुधारक राजपुरुष और राजा के द्वारा नही हो सका। —वकिमचन्द्र

यह ग्रन्थ समस्त मनुष्य जाति को अनिर्वचनीय सुख और शान्ति पहुचाने का साधन है। —महामना पं० मदन मोहन मालवीय

राष्ट्र

विवेकपूर्ण लोगो का छोटा-सा दल असख्य मूर्खों के जगल से अच्छा है, और जिस राष्ट्र ने अपने स्वरूप को पहचान लिया वही सच्चे साम्राज्य को पाने का अधिकारी है।
—रस्किन

जिस राष्ट्र मे चरित्रशीलता नही है उसमें कोई योजना काम नही कर सकती।
—विनोवा

प्रेम और भ्रातृत्व को अपना कर एक विशाल कुटुम्ब की तरह अपनी वृद्धि करने में ही राष्ट्र की सच्ची शक्ति वर्तमान है। —रस्किन

Individuals may form communities, but it is institutions that can create a nation

व्यक्तियो से केवल जातिया वनती है परन्तु सस्थाओ से ही राष्ट्र का निर्माण होता है। —डिजरायली

जिस राष्ट्र का व्यापार असत्य पर चलता है उसका शील समाप्त हुआ ही समझना चाहिए। —विनोवा

राज्यो की शक्ति का उतार-चढाव दया और न्याय के अनुपात के आधार पर अवलम्बित है। जनसख्या की वृद्धि से अथवा दूसरे देशो को हडप कर कोई भी राष्ट्र शक्तिशाली नही हो सकता। —रस्किन

राष्ट्र-निर्माता

जिन्होने राष्ट्रो का निर्माण किया है उनकी कीर्ति अमर हो गयी है।
—प्रेमचन्द

राष्ट्र-सेवा

राष्ट्रसेवा महँगा सौदा है। —प्रेमचन्द

राष्ट्रीयता

राष्ट्रीयता तो पुरानी पडी हुई सडी मिठाई है। छोटी नासमझ चीटिया स्वाद के मोह से उसमे चिपकी रहती है। वह बुद्धि के लिए एक मोटा घेरा है। मानव को मानव से दूर रखने का इन्द्र-जाल है। —अज्ञात

Nationalism is an infantile disease It is the measles of mankind

राष्ट्रीयता शिशु रोग है। यह मानव का शीतला रोग है।
—एल्बर्ट आइन्सटीन

अपनी राष्ट्रीय मनोवृत्ति को शुद्ध रखो, आपकी राष्ट्रीय आँखें स्वय ठीक हो जायगी। —रस्किन

रिपु

रिपु तेजसी अकेल अपि, लघु करि गनिय न ताहु।
अजहु देत दुख रवि ससिहिं, सिर अवसेषित राहु।।

—तुलसी (मानस-बाल)

रिपु पर दया परम कदराई। —तुलसी (मानस-अरण्य)

Heat not a furnace for your foe so hot that it do singe yourself
अपने रिपु के लिए भट्टी को इतना अधिक गर्म न कर कि वह तुझे ही भून डाले।

—शेक्सपियर

रिश्तेदार

No man will be respected by others who is despised by his own relatives

कोई भी ऐसा व्यक्ति दूसरो से सम्मान न पायेगा जिससे खुद उसके रिश्तेदार ही घृणा करते हो। —प्लाउटस

रिश्वत

रिश्वत अब भी नव्वे फीसदी अभियोगो पर पर्दा डालती है। फिर भी पाप का भय प्रत्येक हृदय मे है। —प्रेमचन्द

न्यायाधीश और सेनेट के सदस्य भी रिश्वत के द्वारा मोल लिये गये है। —पोप

रिश्वत देकर तो लोग खून पचा जाते है। —प्रेमचन्द

The universe would not be rich enough to buy the vote of an honest man

सच्चे आदमी का वोट खरीदने के लिए समस्त विश्व की सम्पदा भी पर्याप्त नही है। —सेंट ग्रेगोरी

चोर को अदालत में बेंत खाने से उतनी लज्जा नही आती, स्त्री को कलक से उतनी लज्जा नही आती, जितनी किसी हाकिम को अपनी रिश्वत का पर्दा खुलने से आती है। —प्रेमचन्द

रीति-रिवाज

रीति-रिवाज बुद्धिहीनो के कानून है। —वैनवुग

रुचि

हमारी रुचि हमारे जीवन की परख है, हमारे मनुष्यत्व की पहचान है।

— रस्किन

रुदन

रुदन करना वीरो को उचित नही, रोना-धोना स्त्रियो का काम है।

— जयशकर प्रसाद

Weep for love, but not for anger, a cold rain will never bring flowers

क्रोध के लिए नही वरन् प्यार के लिए रोओ, सर्द वारिश फूल नही खिलाती।

— डन्कन

रूढ़ियाँ

रूढियाँ कभी धर्म नही होती। वे एक एक समय की वनी हुई सामाजिक श्रृखलाए है, वे पहले की श्रृखलाएँ जिनसे समाज में सुथरापन था, मर्यादा थी पर अव जो जजीरें वन गयी है।

— निराला

रूप

रूप तो फूल की ही तरह है, पर उसमें प्रेम की सुगन्ध नही है।

— डा० रामकुमार वर्मा

पुरुषो के लिए अगर रूप-तृष्णा निन्दाजनक है तो स्त्रियो के लिए विनाशकारक है।

— प्रेमचन्द (प्रेम-पचीसी)

रूप जब सो जाता है तो और भी नशीला हो जाता है, और जुल्फें जब विखर जाती है तो और भी जहरीली हो जाती है।

— सुदर्शन

कुरूपो का रूप विद्या और तपस्वियो का रूप क्षमा है। — अज्ञात

रग कैसा ही सुन्दर हो, रूप की कमी नही पूरी कर सकता। — प्रेमचन्द

रूप ही दर्शन की सार्थकता है। — निराला (निरूपमा)

असली रूप तो अपने गुणो से ही झलकता है। अपनी छाप गुणवान् होकर डालनी चाहिए, रूपवान् होकर नही।

— महात्मा गांधी

रूप के साथ आँखो का घनिष्ठ सबध है। पतग एक दूसरे पतग को जलकर भस्म होते देखता है पर रह नही सकता। इतना बडा प्रत्यक्ष ज्ञान भी रूप के मोह से उसे बचा नही सकता। —निराला (निरूपमा)

रूप और गर्व में चोली-दामन का नाता है। —प्रेमचन्द

रूप की चौखट पर बडे बडे महीप नाक रगडते हैं। —प्रेमचन्द (गोदान)

रूप के सामने धर्म-ईमान काफ़ूर हो जाता है। —अज्ञात

रोग (दे० "बीमारी")

को दीर्घरोगो भव एव साधो। —स्वामी शकराचार्य

बडा भारी रोग क्या है? हे साधो, बार बार जन्म लेना ही।

बडे आदमियो के रोग भी बडे होते हैं। वह बडा आदमी ही क्या जिसे कोई छोटा रोग हो। —प्रेमचन्द

पावक बैरी रोग ऋन, सपनेहुँ राखिय नाहिं।
ये थोरे ही बढहिं पुनि, महाजतन सो जाहिं।। —अज्ञात

मोह सकल व्याधिन्ह कर मूला। तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला।।
काम वात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा।।
प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई। उपजइ सन्निपात दुखदाई।।
विषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब सूल नाम को जाना।।
ममता दादु कडु इरपाई। हरप विपाद गरह बहुताई।।
पर सुख देखि जरनि सोइ छई। कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई।।
अहकार अति दुखद डमरुआ। दभ कपट मद मान नेहरुआ।।
तृष्णा उदरवृद्धि अति भारी। त्रिविध ईपणा तरुन तिजारी।।
युग विधि ज्वर मत्सर अविवेका। कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका।।
—तुलसी (मानस, उत्तर)

रोना

जब रोना हो तो एकान्त की तलाश करो और जब हँसना हो तो मित्रो में आओ।
—अज्ञात

रोना और हँसना ये ही तो मानवी सभ्यता के आधार हैं, इसी के लिए सभ्यता की कल्पना है—इसी के साधन मनुष्य की उन्नति के लक्षण कहे जाते हैं।

—जयशकर प्रसाद

लक्ष्मी

न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, वह जैसे चाहती है नचाती है।

—प्रेमचन्द

गरीबो की पेटपूजा करना ही लक्ष्मी की श्रेष्ठ पूजा है। —अज्ञात

धृति क्षमा दम शौच कारुण्य वागनिष्ठुरा।
मित्राणा चाऽनभिद्रोह सप्तैता समिध श्रिय ॥ —वेदव्यास (महा०)

धैर्य धारण करना, क्रोध न करना, इन्द्रियो को वश में करना, पवित्रता, दया, सरलता से भरे वचन और मित्रो से द्वेष न करना ये सात लक्ष्मी के साधन हैं।

Riches are a blessing only to him who makes them a blessing to others

लक्ष्मी उसी के लिए वरदान है जो उसे दूसरो के लिए वरदान बना देता है।

—फील्डिग

कुचैलिन दन्तमलोपधारिण, बह्वाशिन निष्ठुरभाषिण च।
सूर्योदये चास्तमिते शयान, विमुञ्चति श्रीर्यदि चक्रपाणि ॥ —चाणक्य

मलिन वस्त्रवाले, गन्दे दाँत वाले, बहुत खानेवाले, कठोर बोलनेवाले और सूर्य के उदय और अस्त होने के समय में सोनेवाले को लक्ष्मी त्याग देती हैं चाहे वह विष्णु ही क्यो न हो।

Riches do not delight us so much with their possession, as torment us with their loss

धन पास मे रहने से उतना आनन्द नही होता जितना उसके खो जाने, छिन जाने से दुख होता है।

—सेंट ग्रेगरी

मूर्खा यत्र न पूज्यन्ते धान्य यत्र सुसञ्चितम्।
दापत्ये कलहो नास्ति तत्र श्री स्वयमागता ॥ —चाणक्य

जहा मूर्ख नही पूजे जाते, जहा अन्न सचित रहता है और जहा स्त्री-पुरुष मे कलह नही होती वहाँ लक्ष्मी आप ही आकर विराजमान रहती है।

जिस तरह एक जवान स्त्री बूढे पुरुष का आलिंगन करना नही चाहती, उसी तरह लक्ष्मी भी आलसी, भाग्यवादी और साहसविहीन व्यक्ति को नही चाहती।

—अज्ञात

नैतिक स्वरूपो के घेरे में लक्ष्मी रहती है। उसे कोई लोहे की शृखलाओ में जकड नही सकता।

—अज्ञात

वेदान्त धर्म का सच्चा अधिकारी और पात्र वही हो सकता है जो सामर्थ्यवान् हो, सम्पन्न हो, लक्ष्मी जिसके चरण चूमती हो।

—विवेकानन्द

धनवान् लोगो के मन में हमेशा शका रहती है, इसलिए यदि हम लक्ष्मी देवी को खुश करना चाहते हैं तो हमें अपनी पात्रता सिद्ध करनी पडेगी।

—महात्मा गाधी

लभेत वा प्रार्थयिता न वा श्रिय श्रिया दुराप कथमीप्सितो भवेत्।

—कालिदास (कुमारसभव)

जो लक्ष्मी को पाना चाहता हो उसे लक्ष्मी भले ही न मिले, पर जिसे स्वय लक्ष्मी चाहे वह उस को न मिले, यह कैसे हो सकता है।

इन्द्रदेव के आमत्रण से महादेवी लक्ष्मी गद्गद् हो गयी और वरद् हस्त उठाकर बोली—

"देवराज! जब किसी राष्ट्र में प्रजा सदाचार खो देती है, तो वहाँ की भूमि, जल, अग्नि कोई भी मुझे स्थिर नही रख सकते। मै लोकश्री हूँ, मुझे लोकसिंहासन चाहिए। व्यक्ति के सदाचारी मानस में ही मै अचल निवास करती हूँ।"

—राजगोपालाचारी

लक्ष्मी लोहे की नगी तलवार से जीती जाती है, उसी की सीमाओ में वह रहती है।

—अज्ञात

कमला थिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय।
पुरुष पुरातन की वधू, कस न चचला होय।

—रहीम

श्रीर्मङ्गलात् प्रभवति प्रागल्भ्यात् सप्रवर्धते।
दाक्ष्यात्तु कुरुते मूल सयमात् प्रतितिष्ठति॥

—वेदव्यास (म०)

लक्ष्मी शुभ कार्य से उत्पन्न होती है, चतुरता से बढती है और अत्यन्त निपुणता से जड बाँधती है तथा सयम से स्थिर रहती है।

उत्साहसपन्नमदीर्घसूत्र क्रियाविधिज्ञ व्यसनेष्वसक्तम् ।
शूर कृतज्ञ दृढसौहृद च लक्ष्मी स्वय याति निवासहेतो ॥ —पचतत्र

जो उत्साही है, दीर्घसूत्री (आलसी) नही है, कार्य करने की विधि को जानता है, किसी भी प्रकार के व्यसन में आसक्त नही है, वहादुर है, किये हुए उपकार को मानता है और जिसकी मैत्री दृढ होती है, ऐसे सज्जन के पास रहने के लिए लक्ष्मी स्वय ही उपस्थित हो जाती है।

लक्ष्य

प्रणवो धनु शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते ।
अप्रमत्तेन वेद्धव्य शरवत्तन्मयो भवेत् ॥
—महर्षि अगिरा

ओकार ही धनुष है, आत्मा ही वाण है, (और) परब्रह्म परमेश्वर ही उसका लक्ष्य कहा जाता है। (वह) प्रमादरहित मनुष्य द्वारा ही बीधा जाने योग्य है। (अतः) उसे देधकर वाण की भाँति (उस लक्ष्य में) तन्मय हो जाना चाहिए।

आरोहणमाक्रमण जीवतो जीवतोऽयनम् । —अथर्ववेद

उन्नत होना और आगे वढना प्रत्येक जीव का लक्ष्य है।

Have a purpose in life and having it throw into your work such strength of mind and muscle as God has given you

अपने जीवन का एक लक्ष्य वनाओ, और इसके वाद अपना सारा शारीरिक और मानसिक वल जो ईश्वर ने तुम्हें दिया है, उसमे लगा दो। —कार्लाइल

मनुष्य देवत्व का अग और ससार में उसका प्रतिनिधि है और मानवजीवन का अतिम लक्ष्य अपने में देवत्व को पहचानना और उसे प्राप्त करना है। —अज्ञात

लक्ष्यहीन जीवन जगल में भटकने के समान है। —अज्ञात

एक ही लक्ष्य की ओर अपने मन, वचन और काया को लगा देने से ससार में वडी सफलताएँ होती हुई दीख पडती हैं। —अज्ञात

लक्ष्य की सिद्धि अन्याय तथा अनीति से नही, सत्य और धर्म से ही हो सकती है।
—अज्ञात

लगन

The superior man is slow in his words and earnest in his conduct

श्रेष्ठ पुरुष बोलता कम है पर व्यवहार में अधिक सक्रियता दिखलाता है।

— कन्फ्यूशियस

लगन को काँटो की परवाह नही होती। — प्रेमचन्द

Earnestness is enthusiasm tempered by reason

बुद्धि द्वारा मृदु किया गया उत्साह ही लगन है। — पास्कल

जिसको लगन है वह साधन भी पा जाता है, यदि नही पाता तो वह उन्हें पैदा करता है। — चैनिंग

लघुता

ऊँचे पानी ना टिके, नीचे ही ठहराय।
नीचा होय तो भरि पियै, ऊँचा प्यासा जाय॥
सब ते लघुताई भली, लघुता ते सब होय।
जस द्वितिया को चन्द्रमा, शीश नवै सब कोय॥ — कबीर

देख छोटो को है अल्लाह बडाई देता।
आस्मा आँख के तिल में है दिखाई देता। — जौक

जो काम घडो जल से नही हो सकता उसे क्वाथ के दो घूँट कर देते है। जो काम तलवार से नही होता, उसे काँटा कर देता है। — अज्ञात

धनि रहीम जल पक को, लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बडाई कौन है, जगत पियासो जाय॥ — रहीम

पञ्चत्वमेव हि वर लोके लाघववर्जितम्।
नामरत्वमपि श्रेयो लाघवेन समन्वितम्॥ — अज्ञात

किसी के सामने छोटा न बनकर शान से मर जाना भी अच्छा है परन्तु ससार में लघुता से युक्त अमरत्व भी प्राप्त हो तो वह अच्छा नही है।

लघुता से प्रभुता मिलै, प्रभुता से प्रभु दूरि।
चीटी लै शक्कर चली, हाथी के सिर धूरि॥ — कबीर

रहिमन देखि वडेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करे तरवारि॥ — रहीम

परस्तुतगुणो यस्तु निर्गुणोऽपि गुणी भवेत्।
इन्द्रोऽपि लघुता याति स्वय प्रख्यापितैर्गुणै ॥ —चाणक्य

जिस गुण का दूसरे लोग वर्णन करते हैं उससे निर्गुण भी गुणवान् होता है। इन्द्र भी अपने गुण की स्वय प्रशसा करने से लघुता को प्राप्त होता है।

लज्जा

जव किसी कौम की औरतो में गैरत नही होती तो वह कौम मुरदा हो जाती है। — प्रेमचन्द

यदि कोई लडकी लज्जा त्याग देती है तो वह अपनी सुदरता का सवसे वडा आकर्पण खो देती है। — सेन्ट ग्रेगरी

लाली वन सरस कपोलो मे, आँखो मे अजन सी लगती॥
कुचित अलको सी घुंघराली, मन की मरोर वन कर जगती॥
— जयशकर प्रसाद

A blush is a sign that nature hangs to show where chastity and honour dwell

लज्जा एक सकेत है जिसे प्रकृति पवित्रता और सम्मान का निवास दिखाने के लिए वाहर लटका देती है। — गाटहोल्ड

The blush is nature's alarm at the approach of sin, and her testimony the dignity of virtue

पाप के समय लज्जा या सकोच प्रकृति की चेतावनी है और पुण्य के गौरव का प्रमाण है। — फुलर

धनहीन प्राणी को जव कष्ट-निवारण का कोई उपाय नही रह जाता तो वह लज्जा को त्याग देता है। — प्रेमचन्द

मैं वह हलकी सी मसलन हूँ,
जो वनती कानो की लाली॥ — जयशकर प्रसाद

लज्जा नारी जाति का अमूल्य आभूपण है। इसे पहनकर असुन्दरी भी आकर्षण का केन्द्र वन जाती है। — अज्ञात

लड़की

To find out a girl's fault, praise her to her girl friends

यदि किसी लडकी की त्रुटि को जानना चाहते हो, तो उसकी सखियो में उसकी प्रशसा करो। —वेन्जामिन फ्रैन्कलिन

लड़ाई (दे० "युद्ध")

In quarrelling the truth is always lost

लडाई में सत्य सदा खो जाता है। —साइरस

Truth is the first casuality in war

युद्ध में सत्य की हत्या सबसे पहले होती है। —कहावत

In a false quarrel there is no true valour

झूठी लडाई मे सच्ची वीरता नही होती। —शेक्सपियर

(The great questions of the day) are not decided by speeches and majority votes, but by blood and iron

युग की वडी वडी समस्याओं का फैसला भाषण और वोट से नही वल्कि खून और तलवार से होता है। —विस्मार्क

मित्रामात्यसुहृद्वर्गा यदा स्युर्दृढभक्तय ।
शत्रूणा विपरीतास्च कर्तव्यो विग्रहस्तदा ॥

हितोपदेश

मित्र, मत्री और आपस के लोग जव दृढ शुभचिन्तक हो और शत्रुओ के विपरीत हो तव लडाई करनी चाहिए।

भूमिर्मित्र हिरण्य च विग्रहस्य फल त्रयम्।
यदैतन्निश्चित भावि कर्तव्यो विग्रहस्तदा ॥

हितोपदेश

राज्य, मित्र और सुवर्ण यह तीन लडाई के वीज है, जव यह तीनो निश्चित हो जायें तव लडाई करनी चाहिए।

लांछन (दे० "निन्दा")

मनुष्य को पापी कहना ही पाप है, यह कथन मानव-स्वभाव पर एक लाछन है। —स्वामी विवेकानन्द

To persevere in one's duty, and be silent, is the best answer to calumny

अपने कर्तव्य मे निरतर लगा रहना और मौन रहना लाछन का सबसे अच्छा उत्तर है। —वाशिंगटन

लाचार

लाचार तो जड होता है, हम चेतन हैं, आत्म-स्वरूप हैं, अपना वातावरण हम स्वय बनायेंगे। —विनोबा

लाभ

Some times the best gain is to lose

कभी कभी खोना ही सबसे अच्छा लाभ है। —हर्बर्ट

लाभ उसी का है, जिसने भगवान् को समझ लिया है। —अज्ञात

लालच

Avarice increases with the increasing pile of gold

जैसे जैसे धन में वृद्धि होती है लालच बढता है। —जुविनल

इसान अगर लालच को ठुकरा दे, तो बादशाह से भी ऊँचा दर्जा हासिल कर ले, क्योकि सतोष ही हमेशा इसान का माथा ऊँचा रख सकता है। —सादी

Avarice is to the intellect and heart, what sensuality is to the morals

बुद्धि और हृदय के लिए लालच वैसे ही है जैसे साधुवृत्ति के लिए इन्द्रिय-सुख। —श्रीमती जेम्सन

लालच बुरी बला। —कहावत

Poverty wants some things, luxury many, avarice all things

दरिद्र व्यक्ति कुछ वस्तुएँ चाहता है, विलासी बहुत-सी और लालची सभी वस्तुएँ चाहता है।

लालची

लालची मनुष्य की जिन्दगी बडी नही होती। —अज्ञात

The avaricious man is kind to no person, but he is most unkind to himself

लालची किसी के प्रति उदार नही होता, पर अपने प्रति तो बहुत ही कठोर होता है। —जान किरले

लेखक

लिखते तो वे लोग हैं जिनके अदर कुछ दर्द है, अनुराग है, लगन है, विचार है। जिन्होने धन और भोग-विलास को जीवन का लक्ष्य बना लिया है वह क्या लिखेंगे। —प्रेमचन्द

लिखने में शीघ्रता मुशी की योग्यता है, लेखक की नही। —शरत्‌चन्द्र

Every author in some degree portrays himself in his works, even if it be against his will

प्रत्येक लेखक कुछ अशो में अपने को ही अपनी कृतियो में चित्रित करता है, भले ही ऐसा करना उसकी इच्छा के विरुद्ध हो। —गेटे

महान् लेखक अपने पाठक का मित्र और शुभचिन्तक होता है। —मैकाले

लेखक की रोशनाई शहीद के खून से ज्यादा पवित्र है। —अज्ञात

लेखक वही है जो साधना और तपस्या का पुजारी है। —अज्ञात

लोकतत्र

बहुमत भी लोकतत्र की सच्ची कसौटी नही है। सच्चा लोकतत्र लोगो की वृत्ति और अभिलाषाओ का प्रतिनिधित्व करनेवाले थोडे व्यक्तियो से असगत नही है। —महात्मा गाधी

वही राष्ट्र सच्चा लोकतत्रात्मक है, जो अपने कार्यों को बिना हस्तक्षेप के सुचारु और सक्रिय रूप से चलाता है। —महात्मा गाधी

लोकतत्रवादी

लोकतत्रवादी कहलाने का अधिकार केवल उसी व्यक्ति को है जो मानव जाति के अत्यन्त दीन प्राणियो के साथ भी आत्मीयता दिखला सके, जो उनसे अधिक सुखमय जीवन बिताने की इच्छा न रखता हो और साथ ही साथ उनकी समता करने का यथाशक्ति प्रयत्न करता हो। —महात्मा गाधी

लोकमत

लोकमत का अर्थ है जिस समाज की राय हमें चाहिए उस का मत। यह मत नीतिविरुद्ध न हो तब तक उसका आदर हमारा धर्म है। — महात्मा गांधी

कानून का वास्तविक आधार लोकमत ही है। लोकमत की उपेक्षा करके कोई कानून दीर्घ काल तक जीवित नहीं रह सकता। — अज्ञात

लोकराज

आजादी का मतलब होना चाहिए लोकराज। लोकराज का अर्थ है कि हर शख्स को वृद्धि पाने का मौका मिले। — महात्मा गांधी

लोचन (दे० "आँख", "नेत्र")

लोभ (दे० "लालच")

मनुष्य बूढा हो जाता है परन्तु लोभ बूढा नहीं होता। — सुदर्शन

लोभ से बुद्धि नष्ट हो जाती है। — अज्ञात

लोभ भी एक छूत की बीमारी है। — शरत्चन्द्र (निष्कृति)

लोभ पाप को मूल है, लोभ मिटावत मान।
लोभ न कबहूँ कीजिए, यामें नरक निदान। — अज्ञात

गहरे जल से भरी हुई नदियाँ समुद्र में मिल जाती है परन्तु ैसे उनके जल से समुद्र तृप्त नहीं होता, उसी प्रकार चाहे जितना धन प्राप्त हो जाय पर लोभी तृप्त नहीं होता। — वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

जिसमें लोभ है, उसे दूसरे अवगुण की क्या आवश्यकता? — भर्तृहरि

जन्म से लेकर बुढापे तक किसी भी अवस्था में लोभ का परित्याग करना कठिन है। — वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

लोभ सरिस अवगुन नहीं, तप नहिं सत्य समान। — अज्ञात

अनेक शास्त्रो के जाननेवाले, दूसरो की शका का समाधान करनेवाले बहुश्रुत पडित भी लोभ के वशीभूत होकर ससार में कष्ट ही पाते हैं। — वेदव्यास (वही)

पाप, अधर्म और कपट की जड लोभ ही है। — वेदव्यास (वही)

जव मन लागै लोभ सो, गया विषय में सोय।
कहै कवीर विचारि के, कस भक्ती धन होय॥ —कवीर

ज्ञानी तापस सूर कवि, कोविद गुन आगार।
केहि की लोभ विडवना, कीन्ह न एहि ससार॥ —तुलसी

कविरा औंधी खोपरी, कवहूँ धापै नाहि।
तीन लोक की सम्पदा, कव आवै घर माहि॥ —कवीर

लोभी (दे० लालची)

लोभी मनुष्य की कामना कभी पूरी होती ही नही। —वेदव्यास (महाभारत)

लोभी मनुष्य सदैव क्रोध और द्वेष में डूवे रहते हैं।
—वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

लोभी की आँख दुनिया की चीजो से, ओस से कुँए की तरह कभी नही भरती।

लोभी की प्रार्थना यदि भगवान्, सुन ले तो उसे भी दर दर का भिखारी होना पडे। क्योकि इस चराचर में जो कुछ भी प्रभुता है, लोभी उस सवको पाकर भी हाय, हाय तो करता ही रहेगा। —अज्ञात

वक्त (दे० "समय")

वक्त की धार वहुत तेज होती है। —अज्ञात

वक्त सवसे अधिक वुद्धिमान् सलाहकार है। —पेरीक्लीज

Do not squander time, for that is the stuff life is made of
वक्त को वरवाद न करो क्योकि जीवन इसी से वना है। —फ्रैंक्लिन

जो वक्त की जरूरतो को पूरा नही करते, वक्त उन्हें वरवाद कर देता है।—अज्ञात

वक्त और सागर की लहरें किसी की प्रतीक्षा नही करती। —अग्रेजी कहावत

वक्ता

An orator without judgment is a horse without a bridle
विना वुद्धि के वक्ता विना लगाम के घोडे की तरह होता है। —थ्यूफ्रास्टस

What the orators want in depth, they give you in length
वक्ता अपनी गहराई के अभाव को लम्वाई में पूरा करता है। —मान्टेंस्क्यू

The ability to speak is a short cut to distinction It puts a man in the limelight, raises him head and shoulder above the crowd

भाषण करने की योग्यता प्रसिद्धि प्राप्त करने का सीधा मार्ग है। इससे मनुष्य लोगो के सामने आ जाता है और साधारण जनता से ऊपर उठ जाता है।

—डेल कारनेगी

The man who can speak acceptably is usually given credit for an ability out of all proportion to what he really possesses

जो मनुष्य श्रोताओ को अपने भाषण से अपने साथ वहा ले जा सकता है, उसमें वस्तुत जितनी योग्यता होती है साधारणत लोग उसमें उससे कही अधिक समझने लगते है। —डेल कारनेगी

वक्तृता

There is not less eloquence in the tone of the voice, in the eyes and in the demeanour, than in the choice of words

वक्तृता केवल शब्दो के चुनाव ही में नही वरन् शब्दो के उच्चारण में, आँखो में, और चेष्टा में होती है। —ला रोशोको

The finest eloquence is that which gets things done; the worst is that which delays them

सर्वोत्तम वक्तृता वह है जो स्वेच्छया कर्म करा ले और निकृष्ट वह है जो उसमें वाधा डाले। —लायड जार्ज

वक्तृता अवसर विशेष के प्रभाव से प्रभावित होकर वनती है।

—डा० रामकुमार वर्मा

वचन (दे० "वाणी")

मसारकटुवृक्षस्य द्वे फले अमृतोपमे।
सुभापित च सुस्वादु सगति सुजने जने॥ —चाणक्य

मसाररूपी कटु वृक्ष के अमृत के समान दो फल है, सरस प्रिय वचन और सज्जनो की सगति।

तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरन इक मत्र है, तज दे वचन कठोर॥ —तुलसी

हित मनोहारि च दुर्लभ वच ।

—भारवि (किरातार्जुनीय)

लाभप्रद और साथ ही चित्ताकर्षक वचन बडा अलभ्य होता है।

वर्तमान

He who neglects the present moment, throws away all he has
जो वर्तमान की उपेक्षा करता है वह सब कुछ खो देता है। —शिलर

The future is purchased by the present
भविष्य वर्तमान के द्वारा खरीदा जाता है। —जानसन

कर्त्तव्य और वर्तमान हमारा है, फल और भविष्य ईश्वर का है —होरेस ग्रेले

वश

नम्रता, प्रेमपूर्ण व्यवहार तथा सहनशीलता से मनुष्य तो क्या देवता भी तुम्हारे वश में हो जाते हैं। —लोकमान्य तिलक

क्षमया दमया प्रेम्णा सूनृतेनार्जवेन च।
वशी कुर्याज्जगत्सर्वं विनयेन च सेवया॥ —अज्ञात

क्षमा, दया, प्रेम, मधुर वाणी, सरल स्वभाव, नम्रता और सेवा से सब ससार को वश में करना चाहिए।

लुब्धमर्थेन गृह्णीयात् स्तब्धमञ्जलिकर्मणा।
मूर्खं छन्दानुरोधेन यथातथ्येन पण्डितम्॥ —हितोपदेश

लोभी को धन से, अभिमानी को हाथ जोडकर, मूर्ख को उसका मनोरथ पूरा करके और पण्डित को सच सच कहकर वश में करना चाहिए।

सद्भावेन हरेन्मित्र सम्भ्रमेण तु बान्धवान्।
स्त्री-भृत्यौ दानमानाभ्या दाक्षिण्येनेतराञ्जनान्॥ —हितोपदेश

विनय से मित्र को, सम्मान द्वारा बांधवो को, दान तथा मान से स्त्री और सेवको को तथा चतुरता से अन्य लोगो को वश में करना चाहिए।

वाणी (दे० "वचन")

वाणी से भी बाणवृष्टि होती है, जिस पर इसकी बौछारें पडती ह वह दिन रात दुखी रहता है। —वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

मधुर वचन है औषधी, कटुक वचन है तीर।
श्रवन द्वार ते सचरै, सालै सकल सरीर॥ —कबीर

वाणी ही मनुष्य का एक ऐसा आभूषण है जो अन्य भूषणो के सदृश कभी ग्रसता नही। —अज्ञात

घट घट में वह साँई रमता कटुक वचन मत बोल रे। —कबीर

तीखे और कडुए शब्द कमजोर पक्ष की निशानी है। —विक्टर ह्यूगो

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय॥
औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय॥ —कबीर

मधुर वाणी क्रोध को भी भगा देती है। —अज्ञात

जैसा अन जल खाइए, तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिए, तैसी बानी सोय॥ —कबीर

वाणी मन का चित्र है। —कहावत

बोलत ही पहचानिए, साहु चोर को घाट।
अतर की करनी सबै, निकसै मुख की बाट॥ —कबीर

वायु

न पादपयोन्मूलनशक्तिरह शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य —कालिदास
वायु पेड को जड से उखाड सकती है पर पहाड को नही हिला सकती।

वायदा (दे० "प्रण, प्रतिज्ञा")

सच्चे दिल का मजबूत आदमी कभी अपना वायदा पूरा करने से मुह नही मोडेगा। वायदा कसम से बढकर है, जिसे पूरा करना ही होगा। —नेपोलियन

वासना

वासना का वार निर्मम, आशाहीन, आधारहीन प्राणियो पर ही होता है। चोर की अँधेरे में ही चलती है, उजाले में नही। —प्रेमचन्द

विषय-त्रस्य सुर नर मुनि स्वामी। —तुलसी (मानस)

वासना खोटे सोने के समान चमकती तो बहुत है परन्तु परीक्षा की आग में पड-कर वह चमक स्थिर नही रहती। —सुदर्शन

नाथ विषय सम मद कछु नाही। मुनि मन मोह करै क्षण माही।
—तुलसी (मानस, किष्किन्धा)

जिसके हृदय मे सेवा का स्रोत वह रहा हो उसमें वासनाओ के लिए स्थान कहा। —प्रेमचन्द

वासना एक कसौटी है—अग्नि लोहे को परखती है और वासना सत्पुरुष को।
—अज्ञात

विकार

विकाररूप मैल को दूर करने से प्रेम वढता है। —महात्मा गाधी

जो शरीर को कावू में रखता हुआ जान पडता है पर मन से विकार का पोषण किया करता है वह मूढ मिथ्याचारी है। —भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

मन को विकारपूर्ण रहने देकर शरीर को दवाने की कोशिश करना हानिकर है। —महात्मा गाधी

विकास

विकास ही जीवन और सकोच ही मृत्यु है। —स्वामी विवेकानन्द

विकास ईश्वर का अग्रोन्मुख कदम है। —विक्टर ह्यूगो

परस्पर व्यवहार विकास की आत्मा है। —वक्सटन

No steps backward, is the rule of human history.

मानव-इतिहास का नियम है कि एक भी कदम पीछे न हो। —थियोडोर पार्कर

Nature knows no pause in progress and development and attaches her curse on all inaction.

प्रकृति अपनी उन्नति और विकास में रुकना नही जानती, और अपना अभिशाप प्रत्येक अकर्मण्यता पर लगाती है। —गेटे

The voice of time cries to man, advance

समय की पुकार मनुष्य को ललकारती है कि आगे वढो। —डिकन्स

विघ्न (दे० "बाधा")

विचार

विचार का चिराग वुझ जाने से आचार अंधा हो जाता है। —विनोवा

Great thoughts reduced to practice become great acts

महान् विचार कार्य रूप में परिणत होने पर महान् कर्म वन जाते हैं। —हैजलिट

आध्यात्मिक शक्ति भौतिक शक्ति से वढकर है, विचार ही ससार पर शासन करते हैं। —एमर्सन

Thought which is not meant to lead to action has been called an abortion, action which is not based on thought is chaos and confusion

जो विचार कार्य-रूप में नही परिणत होता, उसकी 'गर्भपात' से तुलना की गयी है। उस कर्म की, जो विचार का आश्रित नही है, अघेरखाते और अराजकता मे गिनती है। —जवाहरलाल नेहरू

कोई वस्तु अच्छी या बुरी नही—विचार ही उसे ऐसा वना देता है।—शेक्सपियर

कुविचार ही सबसे हानिकारक चोर है। —स्वामी शिवानन्द

ऊँचे विचार शाश्वत होते हैं, वे किसी भौगोलिक सीमा में नही बाँधे जा सकते। —अज्ञात

विचार की शुद्धि तब हो सकती है जब वह हवा की तरह सबके हृदय से लगे, चाँदनी की तरह सब की आँखें ठडी कर दे। —अज्ञात

The greatest events of an age are its best thoughts Thought finds its way into action

युग की महान् घटनाएँ उसके उत्तम विचार हैं। विचार स्वय ही कार्य में परिणत होने का मार्ग ढूंढ लेता है। —ब्वायस

आचरण-रहित विचार कितने अच्छे क्यो न हो उन्हें खोटे मोती की तरह समझना चाहिए। —महात्मा गांधी

वुरे विचार हमारे अन्त करण पर कुठाराघात करते हैं। —अज्ञात

मनुष्य वैसा ही वन जाता है जैसे उसके हृदय के विचार होते है।—बाइबिल

निश्चयात्मक विचार से निर्माणशक्ति का विकास होता है। —अज्ञात

Learning without thought is labour lost, thought without learning is perilous

विना विचार के सीखना परिश्रम नष्ट करना है, विना शिक्षा प्राप्त किये विचार करना भयावह है। —कन्फ्यूशियस

विरोध उत्पन्न करनेवाला विचार हमारे परिश्रम को पगु वना देता है।—अज्ञात

शासन विचारो का होता है, नकशे की रेखाओ का नही। —अज्ञात

अच्छे विचारो और प्रयासो का परिणाम भी निस्सदेह अच्छा होगा।
—स्वामी विवेकानन्द

दुष्ट विचार ही मनुष्य को दुष्ट कर्म की ओर ले जाता है। —उपनिषद्

अचारी सव जग मिला, मिला विचारि न कोय।
काटि अचारी वारियें, एक विचारि जो होय॥ —कवीर

जो वाते विचार पर छोड दी जाती है वे कभी पूरी नही होती। —हरिभाऊ

जैसे विचार होते है उन्हीके अनुसार भविष्य का निर्माण होता है। —अज्ञात

मन के विचार को मन ही में लय न करके उसका दृश्य रूप में रखना अत्यन्त आवश्यक है। —स्वेट मार्डेन

अनुभव, ज्ञान-उन्मेष और वयस् मनुष्य के विचारो को वदलते है। —हरिऔघ

जो ऊँचे विचार के महानुभाव होते है वे नम्र और दयावान् होते है। —अज्ञात

Thinking is the talking of the soul with itself
आत्मा का अपने साथ वातचीत करना ही मनन है। —प्लेटो

विचार मर्यादापूर्ण, सहानुभूति-मूलक और परिमित होने से ही समादृत होता है। —हरिऔघ

To hear ideas is to gather flowers, to think, is to weave them into garlands
विचार फूलो को चुनने के समान है, और सोचना उनको माला में गूँथना।
—श्रीमती स्वेटशीन

Guard well thy thoughts, our thoughts are heard in Heaven
अपने विचारो की अच्छी तरह रक्षा करो, क्योंकि विचार स्वर्ग में सुने जाते है।
—यग

जैसे हमारे विचार होते है वैसी ही हमारी शारीरिक स्थिति होती है। हम चाहें कि हमारी शारीरिक स्थिति इसके विपरीत हो तो यह वात सर्वथा असभव है।
—स्वेटमार्डेन

वह विचार कभी कार्यकारी और सुफलप्रसू नही होता जिसमें यथोचित शालीनता नही होती।

—हरिऔध

अगर कोई मनुष्य गुफा मे रहे, वही पर उच्च विचार करे और विचार करता हुआ ही मर जाय तो वे विचार कुछ समय पश्चात् गुफा की दीवारें फाडकर बाहर निकलेंगे और सब जगह छा जाँयगे तथा अत में सारे मानवसमाज को प्रभावित कर देंगे। विचारो में इतनी शक्ति है।

—स्वामी विवेकानन्द

अच्छे विचार रखना भीतरी सुन्दरता है।

—स्वामी रामतीर्थ

They are never alone that are accompanied with noble thoughts

सुन्दर विचार जिनके साथ है वे कभी एकान्त मे नही है।

—सर पी० सिडनी

विचारक

विचारको को जो चीज आज स्पष्ट दीखती है दुनिया उस पर कल अमल करती है।

—विनोबा

विचारक दृष्टिमा ् होते है।

—विनोबा

विजय

मनोवृत्ति का परिवर्तन ही हमारी असली विजय है।

—प्रेमचन्द

मनुष्य की सबसे बडी विजय मन की दुर्बलताओ पर विजय पाना है।

—अज्ञात

प्रत्येक व्यक्ति की हर समय परीक्षा होती रहती है और जो कसौटी पर खरे उतरते है विजयश्री उन्ही के हाथ है।

—हरिभाऊ

अपने ऊपर विजय प्राप्त करना सबसे बडी विजय है।

—प्लेटो

विजय प्राप्त करने के लिए अविचल श्रद्धा की अत्यन्त आवश्यकता है।

—स्वेट मार्डेन

अर्थ देकर विजय खरीदना तो देश की वीरता के प्रतिकूल है।

—जयशकर प्रसाद

जीवनसग्राम में विजय प्राप्त कर लेना कोई आसान काम नही है। उसके लिए अत्यन्त कठोर साधना की आवश्यकता है।

—सर ऑर्थर हेल्प्स

मनुष्य लडाई मे हजार आदमियो पर विजय पा सकता है लेकिन जो अपने ऊपर विजय पाता है वही सबसे बडा विजयी है।

—भगवान बुद्ध

सबसे उत्तम विजय प्रेम की है जो सदैव के लिए विजेताओ का हृदय बाँध लेती है। —सम्राट् अशोक

अगर तू ससार पर विजय पाना चाहता है तो पहले अपने पर विजय पा। अगर तू अपने पर विजय पाना चाहता है तो औरत की दुनिया से बचकर रह। —सुदर्शन

विजय ध्येय की प्राप्ति में नही है वरन् उसे पाने के निरन्तर प्रयास में है।— —महात्मा गाधी

दान द्वारा कृपणता पर विजय प्राप्त करो। शान्ति द्वारा क्रोध पर विजय प्राप्त करो। श्रद्धा से अश्रद्धा पर विजय प्राप्त करो। सत्य से असत्य पर विजय प्राप्त करो। यही सन्मार्ग है। यही स्वर्ग है। स्वर्ग की ओर जाओ। प्रकाश की ओर जाओ।—सामवेद

विजयी

जीवन में वही तो विजयी होता है जो दिन रात 'युध्यस्व विगतज्वर' का शखनाद सुना करता है। —जयशकर प्रसाद

भगवान् के विरुद्ध आचरण करनेवाला बडे से बडा वीर भी विजयी नही हो सकता। —महाभारत

ससार विजयी पर विश्वास करता है। उस मनुष्य का विश्वास करता है जिसके चेहरे पर विजय के भाव झलकते हो। —स्वेट मार्डेन

For they can conquer who believe they can
वे ही विजयी हो सकते है जिन्हें विश्वास है कि वे विजयी होगे। —वर्जिल

विज्ञान

विज्ञान को विज्ञान तभी कह सकते है जब वह शरीर, मन और आत्मा की भूख मिटाने की पूरी ताकत रखता हो। —महात्मा गाधी

भौतिक विज्ञान बल है और धर्म-विज्ञान विवेक है। —एक सत

Science commits suicide, when it adopts a creed
विज्ञान आत्महत्या कर लेता है जब वह किसी एक मत को स्वीकार करता है। —हक्सले

विज्ञान ने मनुष्य को ऐसा गुरुमत्र प्रदान किया है जिससे प्रकृति की गुप्त निधियो के द्वार सहज में खुल जाते हैं। —अज्ञात

विज्ञान ने मनुष्य को अपरिमित शक्ति प्रदान की, प्रकृति को उसकी चेरी बनाया और ऐश्वर्य तथा वैभव उसके चरणो मे उँडेल दिया। काल तथा स्थान की बाधाएँ मिट गयी। —अज्ञात

विज्ञान और कला का सम्बन्ध समस्त विश्व से है और उनके आगे राष्ट्रीयता की सीमाएँ लोप हो जाती हैं। —गेटे

Science is organised knowledge

सघटित ज्ञान का नाम विज्ञान है। —एच० स्पेन्सर

Science surpasses the old miracles of mythology

पौराणिक कथाओ के पुराने आश्चर्य से भी विज्ञान आगे बढ गया है। —एमर्सन

विज्ञान ने अधो को आँख दी है और बहरो को सुनने की शक्ति। उसने जीवन को दीर्घ बना दिया है, भय को कम कर दिया है। उसने पागलपन को वश मे कर लिया है और रोग को रौंद डाला है। —आर्केडियन फरार

वित्त

वित्त से अमृततत्त्व की आशा करना बेकार है। —विनोबा

विद्या

विद्या के समान कोई नेत्र नही है। —वेदव्यास

अपूर्व कोऽपि कोषोऽय विद्यते तव भारति।
दानेन वृद्धिमायाति सचयेन विनश्यति ॥

—अज्ञात

हे सरस्वती, यह (विद्या) तुम्हारा बडा ही अनोखा कोष है, जो दान देने से तो बढता है किन्तु गाडकर रखने मे नष्ट हो जाता है।

पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्ते गत धनम्।
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम् ॥

जो विद्या पुस्तक मे ही रखी हो, मस्तिष्क में सचित न की गयी हो और जो धन दूसरे के हाथ मे चला गया हो, आवश्यकता पडने पर न वह विद्या ही काम आ सकती है और न वह धन ही।

परमात्मा को प्राप्त करा देने वाली विद्या ही वास्तव मे विद्या है।

—स्वामी विवेकानन्द

विद्या कामधेनु गाय है। —चाणक्य

वर्षहि जलद भूमि नियराये। यथा नवहि बुध विद्या पाये॥ —तुलसी

विना अभ्यास के विद्या विष के समान है। —अज्ञात

गतेऽपि वयसि ग्राह्या विद्या सर्वात्मना बुधैं।
यद्यपि स्यान्न फलदा, सुलभा सान्यजन्मनि॥ —अज्ञात

उम्र बीत जाने पर भी बुद्धिमान् मनुष्य हर तरह से विद्या को प्राप्त करे। चाहे वह इस जन्म में फल न दे लेकिन दूसरे जन्म के लिए सुलभ हो जाती है।

न चौरचौर्यं न च राजदण्डश्च।
न भ्रातृभाज्य न करोति भारम्॥
दाने कृते वर्द्धति चैव नित्यम्।
विद्याधन सर्वधनप्रधानम्॥ —अज्ञात

विद्यारूपी धन को चोर चुरा नही सकता, राजा दण्ड मे ले नही सकता, भाई हिस्से में बाँट नही सकता, उसका कोई बोझ नही होता, वह दान देने से नित्य बढती है, विद्या सब धनो में श्रेष्ठ है।

देहोऽहमिति या बुद्धिरविद्या सा प्रकीर्तिता।
नाह देहश्चिदात्मेति बुद्धिर्विद्येति भण्यते॥

—अध्यात्म रामायण

'मैं देह हूँ' इस बुद्धि का नाम ही अविद्या है, और मै देह नही, चेतन आत्मा हूँ, इसी को विद्या कहते हैं।

जिस विद्या में कर्तृत्व शक्ति नही, स्वतन्त्र रूप से सोचने की बुद्धि नही, खतरा उठाने की वृत्ति नही वह विद्या निस्तेज है। —विनोवा

रूप-यौवन-सपन्ना विशालकुल-सभवा।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुका॥ —चाणक्य

सुन्दर, तरुणतायुक्त और वडे कुल में उत्पन्न भी विद्याहीन मनुष्य ऐसे नही शोभित होते जैसे गन्धहीन पलाश के फूल।

जो विद्या की ओर ध्यान नही देता और अपने समय को व्यर्थ नष्ट करता है वह सदा मनुष्य-जन्म के फल से वचित रहता है। —प्रेमचन्द

वहुत सी पुस्तको मे निर्दोष आनन्द लेने का जो अटूट भडार भरा है, वह भी विद्या के विना हमें नही मिल सकता। —महात्मा गाधी

यथा खनन् खनित्रेण भूतले वारि विन्दति।
तथा गुरुगता विद्या शुश्रूषुरधिगच्छति॥ —चाणक्य

जैसे कुदारी से खोद कर मनुष्य पाताल के जल को पाता है, वैसे ही गुरु-गत विद्या सेवा से प्राप्त होती है।

विद्या के सम धन नही, जग में कहत सुजान।
विद्या ही से मनुज लघु, होवे भूप समान॥ —अज्ञात

विद्या स्वर्ण है, परन्तु भूमि की मिट्टी और मलिनता से लथपथ, जब तक प्रयोग की भट्टी में उसे तपाया न जाय उस पर कान्ति और आभा नही आती, और जव तक कान्ति न आये तव तक ससार में उसका उचित मूल्य नही लगता। —अज्ञात

विद्या अमूल्य और अनश्वर धन है। —ग्लैडस्टन

विद्या मनुष्य का अधिक रूप है और छिपा हुआ गुप्त धन है, विद्या से भोग, सुख और यश प्राप्त होता है। विद्या गुरुओ की गुरु है। विदेश में विद्या भाई के समान है। विद्या परम देवता है, राजाओ मे विद्या ही पूजी जाती है, धन नही। विद्या से ीन मनुष्य पशु है। —भर्तृहरि

सुख चाहे विद्या पढै, विद्या है सुख हेतु।
भव सागर से तरन को, विद्या है दृढ सेतु। —अज्ञात

विद्या ददाति विनय विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मं तत सुखम्॥ —हितोपदेश

विद्या विनय को देती है, नम्रता से योग्यता मिलती है, योग्यता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख प्राप्त होता है।

The end of all knowledge must be the building up of character
विद्या का अतिम लक्ष्य चरित्र-निर्माण होना चाहिए। —महात्मा गाधी

Knowledge itself is power
विद्या स्वय ही शक्ति है। —बेकन

जिसके पास विद्यारूपी नेत्र नही वह अन्धे के समान है। —हितोपदेश

The end of all knowledge should be virtuous action
सुकर्म विद्या का अतिम लक्ष्य होना चाहिए। —सर पी० सिडनी

विद्या विवादाय धन मदाय शक्ति परेषा परिपीडनाय।
खलस्य साधो विपरीतमेतद् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥

खलो की विद्या विवाद के लिए, धन मद के लिए और शक्ति दूसरो को सताने के लिए होती है। इसके विपरीत सज्जनो की विद्या ज्ञान के लिए, धन दूसरो को देने के लिए तथा वल (दुर्वलो की) रक्षा के लिए होता है।

जो मनुष्य अपनी विद्या और ज्ञान को कार्यरूप में परिणत कर सकता है वह दर्जनो कल्पना करनेवालो से श्रेष्ठ है। —एमर्सन

जैसे सूर्य सवको एक सा प्रकाश देता है, वरसात जैसे सव के लिए वरसती है, उसी तरह विद्यावृष्टि सव पर वरावर होनी चाहिए। —महात्मा गाधी

विद्यादान

विद्या के अतिरिक्त और कोई श्रेष्ठ दान नही है। —फुलर

विद्यार्थी

विश्वविद्यालयो के विद्यार्थियो की परीक्षा उनके ज्ञान से नही वरन् उनके धर्माचरण द्वारा ही होगी। —महात्मा गांधी

ऐच्छिक विद्यार्थी के जीवन को अकथनीय आनन्द प्राप्त होता है। —गोल्डस्मिथ

सच्चा विद्यार्थी वही है जिसको विद्योपार्जन की सच्ची भूख लगी हो, जो विद्या-प्राप्ति की कठिनाइयो को देखकर आनन्दित होता है, जो विद्या को केन्द्र वनाकर अन्य सव वातो को भूल जाता है। —अज्ञात

सुखार्थिन कुतो विद्या विद्यार्थिन कुत सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद विद्याम् विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्॥
—चाणक्य

सुखार्थी को विद्य कहाँ, विद्यार्थी को सुख कहाँ ? सुख को चाहे तो विद्या छोड दे, विद्या को चाहे तो सुख त्याग दे।

There is no royal road to learning
शिक्षा-प्राप्तिका कोई आसान रास्ता नही है। —कहावत

विद्वत्ता

Seeing much, suffering much and studying much are the three pillars of learning
अधिक अनुभव, अधिक विपत्ति सहना और अधिक अध्ययन, यही विद्वत्ता के तीन स्तम्भ है। —डिजरायली

The great art of learning is to undertake but little at a time
विद्वत्ता की महान् कला है कि एक समय में थोडा सा कार्य लिया जाय। —लॉक

विद्वत्ता को अभिमान है कि उसने वहुत कुछ सीख लिया, ज्ञान नम्र है कि वह अधिक नही जानता। —कूपर

Learning makes a man fit company for himself
विद्वत्ता से मनुष्य स्वय अपना योग्य साथी वन जाता है। —यंग

विद्वत्ता असख्य मनुष्यो को जितना वे स्वाभाविक रूप से हैं उससे कही अधिक मूर्ख वना देती है। —शोपेनहर

Learning is an ornament in prosperity, a refuge in adversity and a provision in old age
विद्वत्ता अच्छे दिनो में आभूषण है, विपत्ति में सहायक एव वुढापे में सचित सामग्री है। —अरस्तू

विद्वत्ता का अभिमान करना सवसे वडी अज्ञानता है। —जर्मी टेलर

विद्वत्ता युवको को सयमी वना देती है। यह वुढापे का आराम है, निर्धनता में धन का काम देती हैं और धनवानो के लिए आभूषण का काम करती है। —सिसरो

विद्रोह

विना उद्देश्य का विद्रोह विनाशक है, पर साधु उद्देश्य से प्रणोदित विद्रोह शूर का धर्म है। —अज्ञात

Rebellion to tyrants is obedience to God
अत्याचारी के प्रति विद्रोह ईश्वर की आज्ञा मानना है। —जैफरसन

विद्वान्

जहाँ तक मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध है मैं यह जानता हूँ कि मैं कुछ भी नही जानता।
—सुकरात

Wise men learn more from fools than fools from the wise
मूर्ख जितना विद्वान् से सीखते हैं उससे कही अधिक विद्वान् मूर्ख से सीखते हैं।
—अज्ञात

नालम्बते दैष्टिकता न निषीदति पौरुषे।
शब्दार्थौ सत्कविरिव द्वय विद्वानपेक्षते॥ —माघ (शिशुपालवध)

विद्वान् पुरुष न तो दैव के भरोसे रहता है और न केवल पुरुषार्थ पर ही आश्रित रहता है, किन्तु वह शब्द और अर्थ दोनो की अपेक्षा करनेवाले सुकवि की भाँति दैव और पुरुषार्थ दोनो की अपेक्षा करता है।

अधिक विद्वान प्राय बहुत सकीर्ण विचार के होते हैं। —हैजलिट

विद्वत्त्व च नृपत्व च नैव तुल्य कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥ —चाणक्य

राजा और पण्डित दोनो कभी बराबर नही हो सकते, क्योकि राजा का अपने देश में ही आदर होता है और विद्वान् का सारे ससार में आदर होता है।

विधान

विधान की स्याही का एक बिन्दु गिरकर भाग्यलिपि पर कालिमा चढा देता है।
—जयशकर प्रसाद

There is a higher law than the constitution
सविधान के ऊपर भी एक बडा कानून है। —सिवर्ड

A good constitution is infinitely better than the best despot
किसी सर्वश्रेष्ठ निरकुश शासक की अपेक्षा एक अच्छा विधान अधिक उत्तम होता है। —मैकाले

विधि

Laws are always useful to those who possess and obnoxious to those who have nothing

विधि सम्पत्तिवान के लिए सदैव उपयोगी है, जिनके पास कुछ भी नही है उनके लिए अप्रिय है। —रूसो

विनय

विनय और श्रद्धा के सामने तर्क नही पेश किया जाता। —सुदर्शन

Sense shines with a double lustre when it is set in humility An able and yet humble man is a jewel worth a kingdom

विनय के साथ विवेक दूने प्रकाश से चमकता है। योग्य और नम्र मनुष्य किसी राज्य के समान वहुमूल्य रत्न है। —पेन

विनय स्वय का ठीक ठीक मूल्याकन है। —स्पर्जन

विनय प्राय गर्व की अपेक्षा अधिक प्राप्त कर लेता है।

—इटै० कहावत

विनाश

विनाशकाले विपरीतवुद्धि । —चाणक्य

विनाश-काल मे वुद्धि विपरीत हो जाती है।

विनीत

वडो की कुछ समता हम अत्यन्त विनीत होकर ही कर पाते हैं। —रवीन्द्र

विनय समस्त गुणो की ठोस आधारशिला है। —कन्फ्यूशियस

After crosses and losses, men grow humbler and wiser

कष्ट और हानि के वाद मनुष्य अधिक विनीत और ज्ञानी हो जाता है।

—फ्रेंकलिन

Humility, like darkness, reveals the heavenly lights

विनय अधकार की भाँति स्वर्गीय प्रकाश दिखाता है। —थोरो

विनोद

विनोद एक प्रकार का टानिक है, जिससे शरीर और मस्तिष्क को शक्ति मिलती है। —अज्ञात

विनोद एक कला है, गाली-गलौज वला है। सच्चा कलाकार विनोदी होता है।
— अज्ञात

यदि मुझमें विनोद का भाव न होता तो मैं ने वहुत पहले आत्महत्या कर ली होती।
— महात्मा गाधी

भाषा और भाषण दोनो का भूषण है विनोद। जिस भाषा में विनोद का पुट नही वह फीकी है। और जिस भाषण में विनोद का रग नही वह निस्सदेह फीका है, 'वोर' है।
— अज्ञात

धनियो का विनोद सदा सफल होता है।
— गोल्डस्मिथ

A joke is a very serious thing
विनोद वहुत गम्भीर वस्तु है।
— चर्चिल

विनोद का उपयोग रक्षा के लिए होना चाहिए, उसे दूसरो को घायल करने के लिए तलवार न वनना चाहिए।
— फुलर

विनोद वातचीत का नमक है, भोजन नही।
— हैजलिट

कविता केवल हृदय का उद्गार होती है, विनोद रोम रोम का उद्गार है।
— अज्ञात

विनोदी

A humourist's entrance into a room is as though another candle has been lighted
किसी स्थान में विनोदी व्यक्ति के आगमन से ऐसा प्रतीत होता है, मानो दूसरा दीपक प्रकाशित कर दिया गया है।
— अज्ञात

विपत्ति (दे० "दुःख", "मुसीवत")

विपत्ति में भी जिस हृदय में सद्ज्ञान उत्पन्न न हो, वह एक ऐसा सूखा वृक्ष है जो पानी पाकर पनपता नही वल्कि सड़ जाता है।
— प्रेमचन्द

विश्वास के कारण उत्पन्न होने वाली विपत्ति जीव का समूल नाश कर डालती है।
— वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

विपत्ति के सदृश कोई शिक्षा नही है।
— डिजरायली

विपद सन्तु न शाश्वत् तत्र तत्र जगद्गुरो।
भवतो दर्शन यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम् ॥ —कुन्ती

जगद्गुरो! हमारे जीवन मे सर्वदा पद-पद पर विपत्तियाँ आती रहें, क्योकि विपत्तियो मे ही निश्चित रूप से आपके दर्शन हुआ करते है और आपके दर्शन हो जाने पर फिर जन्म-मृत्यु के चक्कर में नही आना पडता।

बचन काय मन मम गति जाही।
सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही॥ —तुलसी (मानस)

Prosperity is no just scale, adversity is the only balance to weigh friends

सुदिन अच्छी तुला नही है, विपत्ति ही केवल ऐसी तुला है जिस पर हम मित्रो को तौल सकते हैं। —प्लूटार्क

विपत्ति में पडे बिना सुख की महिमा समझ में नही आती। —अज्ञात

Adversities come in battalions

विपत्ति अकेले नही आती। —कहावत

दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहचानि।
सोच नही चित हानि को, जो न होय हित हानि॥ —रहीम

कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देनेवाले श्रेष्ठ गुण हैं, जो मनुष्य साहस के साथ उन्हें सहन करते है वे अपने जीवन में विजयी होते है। —लोकमान्य तिलक

विपति बराबर सुख नही, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जान परै सब कोय।

विपत्ति पुराने घावो को बढाती है, सम्पत्ति उन्हें भर देती है। —अज्ञात

रत्न बिना रगड खाये नही चमकता, मनुष्य बिना परीक्षा के पूर्ण नही होते। —चीनी कहावत

विपति भए धन ना रहै, होय जो लाख करोर।
नभ तारे छिपि जात हैं, जिमि रहीम भै भोर॥ —रहीम

He that has no cross will have no crown

जिसने विपत्ति नही झेली उसे राजमुकुट नही मिलता। —क्वार्ल्स

जिसे हम व्यथा और विपदा कहते है वह यथार्थ में शत्रु नही, मित्र है। —अज्ञात

जितने दुख, जितनी विपत्तियाँ हमे प्राप्त होती हैं उनका कारण यही है कि अनन्त ऐश्वर्ययुक्त सर्वशक्तिमान् परमात्मा की ओर हम भिन्नता का भाव रखते हैं।
— स्वेट मार्डेन

विपत्ति में हमारा मन अन्तर्मुखी हो जाता है। — प्रेमचन्द (गवन)

विपत्ति हीरे की धूल है जिससे ईश्वर अपने रत्नो को चमकाता है। — लेटन

विना विपत्ति के नेत्र नही खुलते, विना कष्ट झेले ज्ञान नही होता। — अज्ञात

कहि रहीम सपत्ति सगे, वनत वहुत वहु रीत।
विपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत॥ — रहीम

धर्मपरायण व्यक्तियो की कसौटी तो विपत्ति और दुख ही है। — अज्ञात

Constant success shows us but one side of the world, adversity brings out the reverse of the picture

निरन्तर सफलता हमें ससार का केवल एक ही भाग दिखाती है, विपत्ति हमे चित्र का दूसरा भाग भी दिखाती है। — कोल्टन

विपत्ति आ पडने पर जीवनरक्षा के लिए वलवान् व्यक्ति को अपने समीपवर्ती शत्रु से भी मेल कर लेना चाहिए। — वेदव्यास, (महाभारत, शातिपर्व)

को रहीम पर द्वार पर, जात न जिय पछितात।
सपति के सव जात हैं, विपति सवहि लै जात॥ — रहीम

God brings men into deep waters, not to drown them but to cleanse them

ईश्वर मनुष्य को गहरे पानी मे डुवाने के लिए नही ले जाता वरन् निर्मल वनाने के लिए। — अग्हे

विपत्ति से वढकर तजुर्वा सिखानेवाला कोई विद्यालय आज तक नही खुला।
— प्रेमचन्द

विभूति

महान् विभूतियाँ देह छोडने पर ही अधिक वलवान् वनती हैं।
— विनोवा

विपद सन्तु न शाश्वत् तत्र तत्र जगद्गुरो।
भवतो दर्शन यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम्॥ —कुन्ती

जगद्गुरो! हमारे जीवन मे सर्वदा पद-पद पर विपत्तियाँ आती रहें, क्योकि विपत्तियो मे ही निश्चित रूप से आपके दर्शन हुआ करते है और आपके दर्शन हो जाने पर फिर जन्म-मृत्यु के चक्कर में नही आना पडता।

वचन काय मन मम गति जाही।
सपनेहुँ बूझिअ विपति कि ताही॥ —तुलसी (मानस)

Prosperity is no just scale, adversity is the only balance to weigh friends

सुदिन अच्छी तुला नही है, विपत्ति ही केवल ऐसी तुला है जिस पर हम मित्रो को तौल सकते हैं। —प्लूटार्क

विपत्ति मे पडे विना सुख की महिमा समझ में नही आती। —अज्ञात

Adversities come in battalions

विपत्ति अकेले नही आती। —कहावत

दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहचानि।
सोच नही चित हानि को, जो न होय हित हानि॥ —रहीम

कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देनेवाले श्रेष्ठ गुण है, जो मनुष्य साहस के साथ उन्हें सहन करते हैं वे अपने जीवन मे विजयी होते है। —लोकमान्य तिलक

विपति बराबर सुख नही, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जान परै सब कोय।

विपत्ति पुराने घावो को बढाती है, सम्पत्ति उन्हें भर देती है। —अज्ञात

रत्न बिना रगड खाये नहीं चमकता, मनुष्य विना परीक्षा के पूर्ण नही होते। —चीनी कहावत

विपति भए धन ना रहै, होय जो लाख करोर।
नभ तारे छिपि जात हैं, जिमि रहीम भै भोर॥ —रहीम

He that has no cross will have no crown

जिसने विपत्ति नहीं झेली उसे राजमुकुट नही मिलता। —क्वार्ल्स

जिसे हम व्यथा और विपदा कहते है वह यथार्थ में शत्रु नही, मित्र है। —अज्ञात

जितने दु ख, जितनी विपत्तियाँ हमें प्राप्त होती हैं उनका कारण यही है कि अनन्त ऐश्वर्ययुक्त सर्वशक्तिमान् परमात्मा की ओर हम भिन्नता का भाव रखते हैं।
—स्वेट मार्डेन

विपत्ति में हमारा मन अन्तर्मुखी हो जाता है। **—प्रेमचन्द (गबन)**

विपत्ति हीरे की धूल है जिससे ईश्वर अपने रत्नो को चमकाता है। **—लेटन**

बिना विपत्ति के नेत्र नही खुलते, बिना कष्ट झेले ज्ञान नही होता। **—अज्ञात**

कहि रहीम सपत्ति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
विपति कसौटी जे कसे, तेई सांचे मीत॥ **—रहीम**

धर्मपरायण व्यक्तियो की कसौटी तो विपत्ति और दु ख ही है। **—अज्ञात**

Constant success shows us but one side of the world, adversity brings out the reverse of the picture

निरन्तर सफलता हमें ससार का केवल एक ही भाग दिखाती है, विपत्ति हमें चित्र का दूसरा भाग भी दिखाती है। **—कोल्टन**

विपत्ति आ पडने पर जीवनरक्षा के लिए बलवान् व्यक्ति को अपने समीपवर्ती शत्रु से भी मेल कर लेना चाहिए। **—वेदव्यास, (महाभारत, शांतिपर्व)**

को रहीम पर द्वार पर, जात न जिय पछितात।
सपति के सब जात हैं, विपति सबहि लै जात॥ **—रहीम**

God brings men into deep waters, not to drown them but to cleanse them

ईश्वर मनुष्य को गहरे पानी मे डुबाने के लिए नही ले जाता वरन् निर्मल बनाने के लिए। **—अग्रहे**

विपत्ति से बढकर तजुर्बा सिखानेवाला कोई विद्यालय आज तक नही खुला।
—प्रेमचन्द

विभूति

महान् विभूतियाँ देह छोडने पर ही अधिक बलवान् बनती हैं।
—विनोबा

वियोग, विरह

Love reckons hours for months and days for years, and every little absence is an age

प्रेम में घटे महीनो के और दिन वर्षो के समान होते हैं, और प्रत्येक छोटा वियोग एक युग के समान होता है। —ड्राइडेन

मेरे प्रभु! तुम्हारे वियोग के क्षण मुझे शत्रुओ के वाणो की भाँति लगते हैं। तुम्हारे हाथ कब उन वाणो को मेरे शरीर से दूर करेंगे। —अज्ञात

हिरदे भीतर दव बरै, धुआँ न परगट होय।
जाके लागी सो लखै, की जिन लाई होय॥ —कबीर

कटे यह रात क्योकर हाय, क्या सदमें गुजरते हैं।
न वह आते, न नम्र आता, न नीद आती, न मरते हैं। —दाग

Absence makes the heart grow fonder

वियोग हृदय को और अधिक आसक्त बना देता है। —टामस हेन्स बेली

यथा काष्ठ च काष्ठ च समेयाता महार्णवे।
समेत्य तु व्यपेयाता कालमासाद्य कञ्चन॥
एव भार्याश्च पुत्राश्च ज्ञातयश्च वसूनि च।
समेत्य व्यवधावन्ति ध्रुवो ह्येषा विनाभव॥
—वाल्मीकि (रा० अयो०)

जैसे महासागर मे बहते हुए दो काठ कभी एक दूसरे से मिल जाते हैं और मिलकर कुछ काल के बाद एक दूसरे से विलग भी हो जाते है, उसी प्रकार स्त्री, पुत्र, कुटुम्ब और धन भी मिलकर बिछुड जाते हैं, इनका वियोग अवश्यम्भावी है।

कठिन विरह भी मिलन की आशा से सह्य हो जाता है। —कालिदास

The joy of meeting pays the pangs of absence, else who could bear it

मिलन की प्रसन्नता विरह की वेदना को सह्य बना देती है, यदि ऐसा न होता तो उसे कौन सहता। —रो

आशाबन्ध कुसुमसदृश प्रायशो ह्यङ्गनाना।
सद्यपाति प्रणयिहृदय विप्रयोगे रुणद्धि॥ —कालिदास

विरह में वनिता के कुसुमसदृश हृदय को आशा ही कुम्हला जाने से बचाती है।

विरह अगिनि तनु तूल समीरा। स्वास जरइ छन माहिं सरीरा॥
नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी। जरैं न पाव देह विरहागी॥
—तुलसी (मानस-सुन्दर)

विरह भुवगम तन डसा, मत्र न लागै कोय।
नाम वियोगी ना जिए, जिए तो बाउर होय॥ —कबीर

Distance sometimes endears friendship, and absence sweeteneth it

प्राय दूरी मित्रता को प्रिय बना देती है और विरह उसे मधुर बना देता है।
—जे० हावेल

Absence is to love what wind is to fire, it puts out the little and kindles the great

जैसे अग्नि के लिए आँधी है वैसे प्रेम के लिए विरह है। यह तुच्छ को बुझा देते हैं और महान् को प्रकाशमान बना देते हैं। —बूसे

वियोगी, विरही

विरह बान जेहि लागिया, औषध लगत न ताहि।
सुसुक सुसुक मरि मरि जियै, उठै कराहि कराहि॥ —कबीर

पिय बिन जिय तरसत रहै, पल पल विरह सताय।
रैन दिवस मोंहि कल नही, सिसक सिसक जिय जाय॥ —कबीर

मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेत
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसस्थे। —कालिदास

जो सुखी हैं उनका भी चित्त बादलो को देख स्थिर नही रहता, फिर जो विरही हैं उनकी तो बात ही क्या?

विरोध

Opposition always inflames the enthusiast, never converts him

विरोध उत्साहियो को सदैव उत्तेजित करता है, उन्हें बदलता नही।
—शिलर

जो हमसे कुश्ती लडता है, हमारे अगो को मजबूत करता है, हमारे गुणो को तेज करता है, हमारा विरोधी हमारी मदद करता है। —बर्क

No government can be long secure without a formidable opposition

कोई भी सरकार प्रबल विरोधी दल के बिना अधिक दिन नही टिक सकती।
— डिजरायली

Hardship and opposition are the native soil of manhood and self-reliance

कठिनाई और विरोध वह देशी मिट्टी है जिसमे पराक्रम और आत्मविश्वास का विकास होता है। — जान नील

विवाह

विवाह का उद्देश्य भोग नही, आत्मा का विकास है। — प्रेमचन्द

कुलीन कन्या कुरूप भी हो तो विवाह कर लो। सुन्दर किन्तु नीच सस्कारोवाली स्त्री से कभी विवाह न करो। (दे० 'कुलीन") — मनु

Hanging and wiving go by destiny

फाँसी और विवाह भाग्यानुसार होता है। — शेक्सपियर

A woman must be a genius to create a good husband

अच्छा पति बनाने के लिए स्त्री को प्रतिभावान् होना चाहिए। — बालजक

A man finds himself seven years older the day after his marriage

मनुष्य अपने विवाह के दूसरे ही दिन अपने को सात वर्ष और वृद्ध अनुभव करने लगता है। — बेकन

Married in haste, we repent at leisure

जल्दी के विवाह पर हम फुरसत में पश्चात्ताप करते है। — काग्रेव

शरीर का व्याह नही होता, व्याह होता है हृदय की आत्मा का। यही विवाह का धार्मिक महत्त्व है, इसी से नैतिक महत्त्व की उपलब्धि हुआ करती है।
— जनार्दन प्रसाद झा "द्विज"

विवाह प्रेम की वह व्यवस्था है जो हमारी मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक इन्द्रियों के विकास का साधन है। — अज्ञात

प्रत्येक स्त्री का यह कर्त्तव्य है कि वह जितनी जल्दी सम्भव हो सके विवाह कर ले और पुरुष का, जहां तक सम्भव हो सके, उससे दूर रहे। — जार्ज बर्नार्ड शा

Marriage with a good woman is a harbour in the tempest of life, with a bad woman, it is a tempest in the harbour.

अच्छी स्त्री से विवाह जीवन के तूफान में बदरगाह है और खराब स्त्री से विवाह बदरगाह में ही तूफान है। —जे० पी० सेन

Marriage is a great civilizer of the world

विवाह ससार को महान् सभ्य बनाने वाला है। —राबर्ट हाल

Marriage is popular because it provides maximum of enjoyment with maximum of opportunity.

विवाह लोकप्रिय इसलिए है कि वह सबसे अधिक आनन्द का सबसे अधिक अवसर से मेल कराता है। —जार्ज बर्नार्ड शा

प्रथम बार विवाह कर्त्तव्य है, द्वितीय बार मूर्खता और तृतीय बार पागलपन है। —डच कहावत

प्रेम जब आत्मसमर्पण का रूप लेता है, तभी ब्याह है, उसके पहले ऐयाशी। —प्रेमचन्द (गोदान)

विवाहित जीवन

विवाहित जीवन एक तपोभूमि है। सहनशीलता और सयम खोकर कोई इसमें सुखी नही रह सकता। —अज्ञात

वैवाहिक जीवन मसाले की भाँति है। लोग आँखो में आँसू भर भरकर उसकी प्रशसा करते हैं। —अज्ञात

विवेक (दे० "बुद्धि")

Let your own discretion be your tutor, suit the action to the word, the word to the action

अपने विवेक को अपना शिक्षक बनाओ। शब्दो का कर्म से और कर्म का शब्दो से मेल कराओ। —शेक्सपियर

विवेक बुद्धि की पूर्णता है, जीवन के सभी कर्त्तव्यो में वह हमारा पथप्रदर्शक है। —ब्रूये

समझा समझा एक है, अन-समझा सब एक।
समझा सोई जानिए, जाके हृदय विवेक॥ —कबीर

उपासना के द्वारा विवेक उत्पन्न होता है। विवेकी होने से क्षणिक वस्तुओ से शोक और आनन्द ये दोनो नही होते। —स्वामी दयानन्द सरस्वती

The better part of valour is discretion
पराक्रम का प्रमुख अग विवेक है। —शेक्सपियर

जड चेतन गुन दोषमय, विस्व कीन्ह करतार।
सत हस गुन गर्हहि पय, परिहरि वारि विकार॥
—तुलसी (दोहावली)

Discretion is the salt and fancy the sugar of life, the one preserves, the other sweetens it

विवेक जीवन का नमक और कल्पना उसकी मिठास है। एक उसको सुरक्षित रखता है और दूसरा उसे मधुर बनाता है। —बोवी

हसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यप। —कालिदास

हस दूध निकाल लेता है और उसमे मिले हुए पानी को छोड देता है।

Men in general judge more from appearances than from reality All men have eyes, but few have the gift of penetration

साधारणत मनुष्य सत्य की अपेक्षा बाहरी आकार से ही अनुमान लगाते है। सभी मनुष्यो के नेत्र होते है किन्तु किसी किसी को ही विवेक का वरदान मिलता है।
—मेकियावेली

Wisdom is sometimes nearer when we stoop than when we soar

उडने की अपेक्षा जब हम झुकते है तब विवेक के अधिक निकट होते है।
—वर्ड्सवर्थ

Wisdom is only found in truth
विवेक केवल सत्य मे पाया जाता है। —गेटे

यौवन और सौदर्य मे विवेक कदाचित् ही होता है। —होमर

विवेकभ्रष्ट

शिर शार्वं स्वर्गात् पशुपतिशिरस्त क्षितिधर
महीध्रादुत्तङ्गादवनिमवनेश्चापि जलधिम्।
अधोऽधो गङ्गेय पदमुपगता स्तोकमधुना
विवेकभ्रष्टाना भवति विनिपात शतमुख ॥ — भर्तृहरि

स्वर्ग से च्युत होकर शिवजी के सिर पर, शिवजी के सिर से हिमालय पर्वत पर, हिमालय से पृथ्वी पर और फिर पृथ्वीतल से समुद्र में गिरती हुई वही गगा लघु पद को प्राप्त हुई। वस्तुत विवेक-भ्रष्ट पुरुषो का पतन सैकडो प्रकार से होता है।

विवेक-भ्रष्ट मनुष्य की दुर्गति निश्चय ही होती है। — अज्ञात

विवेकशील

विवेकिनमनुप्राप्ता गुणा यन्ति मनोज्ञताम्।
सुतरा रत्नमाभाति चामीकरनियोजितम् ॥ — चाणक्य

विवेकी मनुष्य को पाकर गुण सुन्दरता को प्राप्त होते हैं, सोने में जडा हुआ रत्न अत्यन्त सुशोभित होता है।

विवेकशील कीचड में पडे रत्न को भी ग्रहण करते हैं, कीचड में लिप्त होने के कारण उसे अग्राह्य नही करते। — हरिऔध

विश्राम

कार्य के लिए विश्राम वैसा ही है जैसा नेत्रो के लिए पलको का होना। — रवीन्द्र

वहुत अधिक विश्राम स्वय दर्द वन जाता है। — होमर

जैसे पक्षी दिन मे चारो तरफ इधर-उधर उडता फिरता है, लेकिन शाम के समय अपने घोसले में आकर स्थिर हो जाता है, वैसे ही जीवात्मा जब ससार के सब तरह के कामो मे थककर भटक जाता है तव विश्राम के लिए परमेश्वर के पास पहुँच जाता है। — विनोवा

उद्योग का परिवर्तन ही विश्राम है, इसमें वहुत सत्य है। — महात्मा गांधी

Rest is the sweet sauce of labour

विश्राम् परिश्रम की मधुर चटनी है। — प्लूटार्क

Absence of occupation is not rest, a mind quite vacant is a mind distressed

व्यवसाय का अभाव विश्राम नही है, शून्य मस्तिष्क दु खी मस्तिष्क है।

—काउपर

विश्राम में भी उद्यम की गति है।
शात समुद्र की तरगें गति-हीन नही है॥ —रवीन्द्र

विश्व

समस्त विश्व ईश्वर से पूर्ण है। अपने नेत्र खोलो और उसे देखो।

—स्वामी विवेकानन्द

विश्वात्मा

विश्वात्मा को ही जब कोई अपनी आत्मा समझने लगता है तब अखिल विश्व उसके शरीर का काम देता है। —स्वामी रामतीर्थ

युग-प्रवर्त्तक महापुरुषो के अतिम क्षण विश्वात्मा की प्रखरतम दीप्ति के साक्ष्य होते हैं।

—अज्ञात

विश्व-शान्ति

अगर तुम्हारा हृदय पवित्र है, तो तुम्हारा आचरण भी सुन्दर होगा, अगर तुम्हारा आचरण सुन्दर है, तो तुम्हारे घर मे शान्ति रहेगी, अगर घर मे शाति है तो राष्ट्र मे सुव्यवस्था होगी और अगर राष्ट्र में सुव्यवस्था है, तो समस्त विश्व में शाति और सुख रहेगा।

—कनफ्यूशियस

विश्वास

विश्वास प्रेम की पहली सीढ़ी है। —प्रेमचन्द

Faith is the force of life

विश्वास जीवन की शक्ति है। —टाल्सटाय

ईश्वर की अपने अन्दर उपस्थिति का चैतन्य ज्ञान ही विश्वास है।

—महात्मा गाधी

Faith is one of the forces by which men live, and the total absence of it means collapse

विश्वास उन शक्तियो में से एक है जो मनुष्य को जीवित रखती है, विश्वास का पूर्ण अभाव ही जीवन का अवसान है। —विलियम जेम्स

विश्वास के विना कार्य करना, सतहविहीन गड्ढे में पहुँचने के प्रयत्न के सदृश है। —महात्मा गांधी

विश्वास मनुष्य को केवल मनुष्य ही नही वनाता वरन् ईश्वर तक पहुँचाने में पूर्णतया सफल होता है। —अज्ञात

विश्वास क्या नही कर सकता—विश्वास हमें अथाह सागर के वीच से होकर ले चलता है और समय पर गगनचुम्वी पहाडो को लांघने मे भी सरलता अनुभव कराता है। —अज्ञात

जो अपने आप में विश्वास नही करता वह नास्तिक है। —स्वामी विवेकानन्द

मनुष्य उसी काम को ठीक तरह से कर सकता है, उसी में सफलता प्राप्त कर सकता है जिसकी सिद्धि में उसका सच्चा विश्वास है। —स्वेट मार्डेन

विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है। —रवीन्द्र

विश्वास से वढ कर कोई दवा नही, इलाज तो वहाना है। —अज्ञात

Faith is the root of all blessings

विश्वास सारे वरदानो का आधार है। —जर्मी टेलर

विश्वास मैत्री का मुख्य अग है। —प्रेमचन्द

विश्वास ही हमें वह मार्ग वताता है जो हमें अपनी मजिल पर पहुँचा देता है। —स्वेट मार्डेन (दिव्य जीवन)

महापुरुषो का विश्वास इतना प्रवल और अनन्य होता है कि वे पानी का घी और वालू की चीनी तक वना सकते हैं। —स्वामी शिवानन्द

विश्वास तूफानी सागर में हमको खेता है, पर्वतो को डिगा देता है, सागर लँघा देता है। विश्वास एक कोमल पुष्प नही है जो साधारण वायु के झोके मे कुम्हला जाय। यह हिमाचल के सदृश अडिग है। —महात्मा गाधी

जिसने पहले अपकार किया हो वह धन और मान द्वारा वहुत सत्कार करे तो भी उसका विश्वास नही करना चाहिए। —वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

विश्वास विश्वास, अपने आप में विश्वास, ईश्वर में विश्वास यही महानता का रहस्य है। —स्वामी विवेकानन्द

विश्वास का अभाव अज्ञान है। —स्वामी रामतीर्थ

जिस मनुष्य के चित्त से विश्वास जाता रहता है उसे मृतक समझना चाहिए। —प्रेमचन्द

There is nothing which strengthens faith more than the observance of morality

सदाचार के आचरण के अतिरिक्त विश्वास को दृढ वनानेवाली दूसरी वस्तु नही है। —एडीसन

The faith waiting in the heart of a seed promises a miracle of life which it cannot prove at once

वीज के हृदय में प्रतीक्षा करता हुआ विश्वास जीवन में एक महान् आश्चर्य का वादा करता है, जिसे वह उसी समय सिद्ध नही कर सकता। —रवीन्द्र

Faith is the pencil of the soul that pictures heavenly things

विश्वास हृदय की वह पेंसिल है जो स्वर्गीय वस्तुओ को चित्रित करती है। —टी० वूरब्रिज

As the flower is before the fruit, so is faith before good works

जैसे फल के पहले फूल, वैसे ही सत्कार्य के पहिले विश्वास। —ह्वेटली

अविश्वासी के उत्तम विचार मे विश्वासी की भूल अधिक अच्छी है। —टामस रसल

Faith is like love it cannot be forced As trying to force love begets hatred, so trying to compel religious belief leads to unbelief

विश्वास प्रेम के सदृश है, यह विवश नही किया जा सकता। जैसे वलपूर्वक प्रेम कराना घृणा उत्पन्न करता है वैसे ही धार्मिक विचारो में विवश करना अविश्वास पैदा करना है। —शोपेनहावर

विश्वास महान् ज्ञानियो का जनक है। यह योग्यता को शक्ति प्रदान करता है, यत्न को दूना करता है, मानसिक शक्तियो का पोषण करता है, शक्ति को वढाता है। —ओ० एस० मार्डन

Love all, trust a few, do wrong to none

प्रेम सबसे करो, विश्वास कुछ पर करो, किसी का बुरा न करो।

— शेक्सपियर

विश्वासघात

Treachery, though at first very cautious, in the end betrays itself

विश्वासघात यद्यपि प्रारम्भ में बहुत सावधान होता है किन्तु अत में स्वय को धोखा देता है। — लिवी

मित्रद्रोही कृतघ्नश्च यश्च विश्वासघातक ।
ते नरा नरक यान्ति यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥

मित्रद्रोही, कृतघ्न और विश्वासघाती तब तक नरक में वास करते हे जब तक सूरज और चाँद रहते हैं। — अज्ञात

जब अत्याचारी प्रेम का अभिनय करे तब वह डरने का समय है। — शेक्सपियर

जिसने एक बार विश्वासघात किया है, उसका पुन विश्वास न करो।

— शेक्सपियर

विश्वासघात महापाप है। — अज्ञात

विष

अनभ्यासे विष शास्त्रमजीर्णे भोजन विषम्।
दरिद्रस्य विष गोष्ठी वृद्धस्य तरुणी विषम्॥ — चाणक्य

विना अभ्यास के शास्त्र विष हो जाता है, अजीर्ण में भोजन करना विष हो जाता है। दरिद्रो को सभा विष और वृद्ध को युवती विष जान पडती है।

प्रेमपूर्ण व्यवहार अमृत है और द्वेषपूर्ण व्यवहार ही विष है।

— हनुमानप्रसाद पोद्दार

एक का भोजन दूसरे के लिए विष है। — कहावत

विषय (दे० 'वासना')

सारे विषयभोग विष से भी भारी विष हैं। — स्वामी शकराचार्य

There is no rememberance which time does not obliterate, nor pain which death does not terminate

कोई ऐसी स्मृति नही है जिसे समय भुला न दे, कोई ऐसी पीडा नही है जिसे मृत्यु समाप्त न कर दे। —सर्वेनटीज

The Pyramids themselves, doting with age, have forgotten the names of their founders

युगो से अनुरक्त पिरामिड भी अपने बनानेवालो के नाम को विस्मृत कर गये हैं। —फुलर

वीतराग

वनेषु दोषा प्रभवन्ति रागिणा गृहेषु पञ्चेन्द्रियनिग्रहस्तप ।
अकुत्सिते कर्मणि य प्रवर्तते निवृत्तरागस्य गृह तपोवनम् ॥

विषयी वन मे भी दोषमुक्त नही हो पाते और सयमी जन घर में रह कर भी इन्द्रिय निग्रह कर लेते हैं। इसलिए अच्छे कार्य में प्रवृत्त रहने वाले वीतराग पुरुष के लिए उसका घर ही तपोवन है।

वीर

वही सच्चा वीर है जो ससार की माया के बीच में रह कर भी पूर्णता को प्राप्त करता है। —परमहस रामकृष्ण

शूरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा
मनोजबाणैर्व्यथितो न यस्तु ॥ —स्वामी शंकराचार्य

वीरो में सबसे बडा वीर कौन है? जो कामबाणो से पीडित नही होता।

कायर मृत्यु के पूर्व अनेक वार मरते हैं, किन्तु वीर एक ही वार मरते हैं।
—शेक्सपियर (जूलियस सीजर)

वीर पुरुष अपने पौरुष के भरोसे युद्ध करता है, सैनिको की सख्या के बल पर नही।
—वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

वीर का सबसे बडा शत्रु उसका अपना अहकार होता है। —अज्ञात

वीर पुरुष वह कहलाता है जो दुनिया को जीतता है, लेकिन महावीर वह है जिसने अपने ऊपर जय पायी है और दुनिया में ऐसे छिप गया जैसे दूध मे शक्कर।
—विनोवा

विपत्ति आती है और चली जाती है, वीर वही है जो धीर रहे और न्याय, सचाई का त्याग न करे। —अज्ञात

दो वीरो में महान् वीर वह है जो अपने शत्रुओ का भी आदर करता है। —ब्यूमेल

यदि तुम्हें क्षमावान् और सत्यवादी वीर वनना हो तो तुम्हें वीर्य की अच्छी तरह रक्षा करनी चाहिए। —महात्मा गाधी

सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु, कायर करहिं प्रलापु॥ —तुलसी

वीर पुरुष अपना असम्मान नही देख सकते। —अज्ञात

योद्धा के लिए विजय और वीरगति एक ही समान आनददायी है, क्योकि दोनो में ही एक समान आत्मगौरव की रक्षा होती है। —अज्ञात

The heroes of mankind are the mountains, the highlands of the moral world

मानवता के वीर नैतिक जगत् के पर्वत एव पर्वतीय प्रदेश हैं। —ए० पी० स्टैनली

वीरो ने पहले मानस-ससार पर विजय प्राप्त की है, फिर पार्थिव ससार पर। —स्वेट मार्डेन

वीर पुरुष दयालु होते हैं, असहायो पर, स्त्रियो पर और दुर्वलो पर उन्हें क्रोध नही आता। —प्रेमचन्द

वीरगति

क्षत्रिय युद्ध में विजय प्राप्त करके अथवा प्राणो की वलि देकर जो गति प्राप्त करता है वह तपस्या के द्वारा भी नही प्राप्त हो सकती। —वेदव्यास (महा०)

वीरता

प्राणो का मोह त्याग करना, वीरता का रहस्य है। —जयशकर प्रसाद

आत्म-विश्वास वीरता का सार है। —एमर्सन

शस्त्र-युद्ध में विजय प्राप्त करने की अपेक्षा आत्मविजय करने में अधिक वीरता है। —अज्ञात

अहिंसा वीरो की होनी चाहिए, दुर्बलो की कदापि नही। जब शस्त्र की धार शरीर मे लगती है, तभी वीरता की परीक्षा होती है। **—महात्मा गांधी**

Heroism is the brilliant triumph of the soul over fear

भय पर आत्मा की शानदार विजय ही वीरता है। **—एमियल**

विना विवेक के वीरता महासमुद्र की लहरो में डोंगी-सी डूब जाती है।**—अज्ञात**

वीरता मारने में नही है, मरने में है, किसी की प्रतिष्ठा बचाने में है, प्रतिष्ठा गँवाने में नही। **—महात्मा गांधी**

वीरपूजा

सारी मानवता मे विश्वव्यापी वीरपूजा है, रही है और सदैव ही रहेगी।

—कारलाइल

वीरपूजा वहाँ पर सबसे अधिक होती है, जहाँ पर मनुष्य की स्वतन्त्रता का बहुत कम ध्यान रहता है। **—हर्बर्ट स्पेन्सर**

वृक्ष

जो मनुष्य सडक के किनारे तथा जलाशयो के तट पर वृक्ष लगाता है वह स्वर्ग मे उतने ही वर्षों तक फूलता फलता है जितने वर्षों तक वह वृक्ष फलता फूलता है।

—पद्मपुराण

अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्ण।
शमयति परिताप छायया सश्रितानाम्॥ **—कालिदास**

वृक्ष अपने सिर पर गर्मी सह लेता है परन्तु अपनी छाया से औरो को गरमी से बचाता है।

पत्रपुष्पफलच्छाया मूल वल्कल दारुभि।
गन्धनिर्यासभस्मास्थितोक्मैं कामान् वितन्वते॥

वृक्ष अपने पत्ते, फूल, फल, छाया, मूल, वल्कल, काष्ठ, गन्ध, दूध, भस्म, गुठली और कोमल अकुर से सभी प्राणियो को सुख पहुँचाते हैं।

वृत्तिहीन

परागन्दा रोजी परागन्दा दिल। **—शेख सादी**

वृत्तिहीन मनुष्य का चित्त स्थिर नही रहता।

वेतन

मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते घटते लुप्त हो जाता है। —प्रेमचन्द

वेदना

Pain and pleasure, like light and darkness, succeed each other
वेदना और हर्ष, प्रकाश और छाया की भाँति, एक के बाद एक आते हैं।
—लारेन्स स्टर्न

Pain is the wages of ill pleasure
वेदना कुत्सित आनन्द का वेतन है। —कहावत

वेदना और बेइज्जती के मुकाबिले दुनिया में ऐसी कोई चीज नही है जो मनुष्य की सच्ची रूह को खीचकर बाहर ला सके। —शरत् (अधिकार)

वेदना पाप का परिणाम है। —गौतम बुद्ध

मानसिक वेदना, शारीरिक वेदना की अपेक्षा अधिक कष्टदायक होती है।
—साइरस

वेदान्त

वेदान्त की शिक्षा ग्रहण करने पर मनुष्य शोक, भय और चिन्ता से विमुक्त हो जाता है। —स्वामी रामतीर्थ

भारत को वेदान्त भुलाने की आवश्यकता है और पश्चिम को अध्यात्म सीखने की जरूरत है। —स्वामी विवेकानन्द

वेदान्त का उद्देश्य ससार को दु ख, सुख, भाग्य, मोहादि से विमुक्त करना है।
—स्वामी रामतीर्थ

वेदान्त हिन्दू सभ्यता एव सस्कृति की पराकाष्ठा है। अपने जीवन को सर्वोच्च और सर्वोत्तम प्रकार से बिताने के विज्ञान और कला को वेदान्त कहते हैं। यह वह प्रकाश है जो विचार और ज्ञान के ससार को प्रकाशित करता है। वेदान्त कहता है तुम यह नश्वर शरीर नही हो वरन् तुम सब में व्याप्त अमर आत्मा हो। वेदान्त भारत की सबसे बडी पैतृक देन है। यह भारत का सबसे महान् कोष है।

—स्वामी शिवानन्द

वेश्या

वेश्या जगत् की एक विकृत वस्तु है। देखने में मोहक और कोमल, किन्तु वास्तव मे हलाहल विष। अपहरण उसका व्यवसाय, छल उसका स्वभाव, पाप उसका जीवन और पतन उसका मार्ग है।

—अज्ञात

सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जाश्च कुलस्त्रिय ।

—अज्ञात

शर्मीली वेश्या भूखो मरती है और निर्लज्ज गृहस्थिन बदनाम होकर नष्ट होती है।

खूब साज-सिंगार किये और बनी-ठनी वेश्या के सुकुमार बाहु एक तरह की गन्दी दोजखी नाली है जिनमे घृणित मूर्ख लोग जाकर अपने को डुबा देते है।

—संत तिरुवल्लुवर

जिन लोगो की बुद्धि निर्मल है और जिनमें अगाध ज्ञान है वे उन औरतो के स्पर्श से अपने को अपवित्र नही करते जिनका सौन्दर्य और लावण्य सब लोगो के लिए खुला है।

—सत तिरुवल्लुवर

वेश्यासौ मदनज्वाला रूपेन्धनसमेधिता।
कामिभिर्यत्र हूयन्ते यौवनानि धनानि च॥

—भर्तृहरि

वेश्या सुन्दरता-रूपी ईंधन से जलती हुई प्रचण्ड कामाग्नि है। कामी पुरुष अपने धन और यौवन को इस ज्वाला मे भस्म कर देते है।

वित्तेन वेत्ति वेश्या स्मरसदृश कुष्ठिन जराजीर्णम्।
वित्त विनापि वेत्ति स्मरसदृश कुष्ठिन जराजीर्णम्॥

पैसेवाले कोढी और जराजीर्ण को वेश्या कामदेव के समान सुन्दर समझती है और बिना पैसेवाले को चाहे वह कामदेव के समान सुन्दर ही क्यो न हो, कोढी और बुढापे से जीर्ण समझती है।

—भर्तृहरि

कश्चुम्बति कुलपुरुषो वेश्याधरपल्लव मनोज्ञमपि।
चारभटचोरचेटकनट-निष्ठीवनशरावम्॥

—भर्तृहरि

वेश्या का अधर यदि अतीव मनोहर है तो भी कौन कुलीन पुरुष उसे चुम्बन करेगा? क्योंकि वह तो दूत, योद्धा, धूर्त, चोर, नीच, नट और जारो के थूकने का पात्र है।

वैभव

Like madness is the glory of this life
इस जीवन का वैभव पागलपन के सदृश है। —शेक्सपियर

वैभव में पशुता है, पशुता ही नही दानवता है। —भगवतीचरण वर्मा

The shortest way to glory is to be guided by conscience
अन्तरात्मा द्वारा निर्धारित मार्ग पर चलना ही वैभव का सबसे छोटा मार्ग है।
—होम

धर्म का भूषण वैराग्य है, वैभव नही। —महात्मा गाधी

The paths of glory lead but to the grave
वैभव का मार्ग केवल कब्र की ओर जाता है। —ग्रे

Glory follows virtue like its shadow
अपनी छाया के सदृश वैभव गुणो के पीछे पीछे चलता है। —सिसरो

वैभव अपने ध्येय तक पहुँचने के प्रयास मे है, न कि उस तक पहुँचने में।
—महात्मा गाधी

वैर

वैर-विरोध से झगडा बखेडा शुरू हो जाता है और वह कुलनाश के लिए विना लोहे का शस्त्र है। —वेदव्यास (महाभारत, सभापर्व)

इस ससार में वैर से वैर कभी शान्त नही होते। प्रेम से ही वैर शान्त होते है। यही सदा का नियम है। —धम्मपद

वैराग्य

वैराग्य होने पर ही शान्तिदायी त्याग साधक में दीख पडता है। —अज्ञात

अपने दुःखो का अनुभव और दूसरो की आपत्ति का दृश्य बहुधा वह वैराग्य उत्पन्न करता है जो सत्सग, अध्ययन और मन की प्रवृत्ति से भी सभव नही।
—प्रेमचन्द

धर्म का भूषण वैराग्य है, वैभव नही। —महात्मा गांधी

वैरी

वलोपपन्नोपि हि वुद्धिमान्नर पर नयेन्न स्वयमेव वैरिताम्।
भिपङ्ममास्तीति विचिन्त्य भक्षयेदकारणात् को हि विचक्षणो विषम् ॥
—अज्ञात

वुद्धिमान् पुरुप वल से युक्त हो तो भी स्वय दूसरे को बैरी न वनाये। मेरे वैद्य वर्तमान है, ऐसा सोचकर कौन चतुर अकारण विष खा सकता है।

मृगमीनसज्जनाना तृणजलसतोषविहितवृत्तीनाम्।
लुब्धकधीवरपिशुना निष्कारणमेव वैरिणो जगति ॥ —भर्तृहरि

तृण वृत्तिवाले मृग, जल वृत्तिवाले मीन (मछली) और सतोष वृत्तिवाले सज्जनो के भी इस ससार में शिकारी, मछुवा और चुगलखोर विना कारण के ही वैरी रहते है।

वोट

Votes should be weighed not counted
वोटो को गिनना नही, तौलना चाहिए। —शिलर

The ballot is stronger than the bullet
वोट वन्दूक की गोली से अधिक शक्तिशाली है। लिंकन

व्यग्य

व्यग्य वचन दूसरो का हृदय छेदने मे तीर का काम करते है। —अज्ञात

हाजिरजवावी व्यग्योक्ति का प्राण होती है। शब्दो की कोमलता और अर्थ की गहनता ये दो उसके आवश्यक और महत्त्वपूर्ण अग होते है। —अज्ञात

व्यग्य और ताना मेरे देखने में शैतान की भापा है। इसी से बहुत दिनो से मैंने उसे छोड दिया है। —कार्लाइल

चितवन से जो रुखाई प्रकट की जाती है वह भी क्रोध से भरे हुए कटु वचनो से कम नही होती। —रामचन्द्र शुक्ल

Sharp wits, like sharp knives, do often cut their owner's fingers
तीव्र व्यग्य तेज कृपाण की भाँति प्राय अपने मालिक की ही उँगलियो को काट देता है। —एरोस्मिथ

ऐसा व्यग्य कभी स्वीकार के योग्य नही होता जो दूसरो को कष्ट पहुँचाये।

— मर्फी

किसी मनुष्य को दूसरे को कटु वचन कहने का उसी प्रकार अधिकार नही है जिस प्रकार उसे ढकेल देने का। — डाक्टर जानसन

No sword bites so fiercely as an evil tongue

कोई तलवार इतनी वेदर्दी से नही काटती जितना कि कटु वचन।

— सर पी० सिडनी

वार्त्तालाप में व्यग्योक्तियो का प्रयोग भी एक कला है। — अज्ञात

Good humour is the best shield against the darts of satirical raillery

व्यग्योक्तियो के तीर से वचने के लिए रसिक स्वभाव सर्वोत्तम ढाल है।

— सी० सिमन्स

Satire should not be like a saw, but a sword, it should cut and not mangle

व्यग्य आरी नही, तलवार की तरह होना चाहिए जो एक ही वार में काट दे, रेते नही। — जैफर

We smile at the satire expended upon the follies of others, but we forget to weep at our own

दूसरे की मूर्खता पर किये गये व्यग्य पर हम हँसते हैं लेकिन अपने ऊपर किये गये व्यग्य पर हम रोना भूल जाते हैं। — म० नेकर

विवेकरहित व्यग्य मूर्ख के हाथ में कृपाण के सदृश है। — अज्ञात

व्यक्ति

वे व्यक्ति तेजी से आगे वढते है जो अकेले चलते हैं। नेपोलियन

इस ससार में हम केवल यथार्थ वस्तुएँ ही नही है जैसे कि पत्थर के टुकडे होते है, हम तो व्यक्ति है और इसलिए हमें इससे सन्तोप नही होता कि हम परिस्थितियो के प्रवाह के साथ वहते जायें। — रवीन्द्र

इस ससार में वही व्यक्ति अपने कार्य में सफल होते है, जो अपनी परिस्थितियो को अनुकूल वना लेते है और यदि वे वना नही सकते तो अपने अनुकूल परिस्थितियो को पैदा कर लेते है। — जार्ज वर्नार्ड शा

The worth of a state, in the long run, is the worth of the individuals composing it
किसी राष्ट्र का मूल्य उसके व्यक्तियो का मूल्य है जिनसे वह बना है।
—जे० एस० मिल

व्यक्तित्व

मानव के लिए व्यक्तित्व पुष्प के लिए सुगन्ध के सदृश है।
—चार्ल्स एम० श्वेब

कुछ ऐसे व्यक्तित्व होते हैं जो दूसरो को अपनी ओर आकर्षित कर लेते है, जो दूसरे व्यक्तित्व को आकर्षित करके उसको दबा देते है और उसको अपना दास बना लेते है। —अज्ञात

Individuality is everywhere to be spared and respected as the root of everything good
व्यक्तित्व की सभी जगह रक्षा और सम्मान करना चाहिए, क्योकि यह सभी अच्छाइयो का आधार है। —रिचर

That life only is truly free which rules and suffers for itself
वास्तव मे वही जीवन स्वतन्त्र है जो अपने पर शासन करता है और कष्ट सहता है। —बुल्वर

The strong man is stronger if he remains alone
बलवान् मनुष्य यदि अकेला रहे तो और बलवान् बन जाता है। —हिटलर

व्यथा

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुन अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय॥ —रहीम

There are two things to be sanctified—pain and pleasure
दो वस्तुएँ पवित्र करने की है—व्यथा और हर्ष। —पैस्कल

व्यभिचार

किसी स्त्री के सतीत्व को भंग करने से पहले मर जाना उत्तम कार्य है।
—महात्मा गाधी

द्रव्यलुब्धस्य नो सत्य न स्त्रैणस्य पवित्रता। —चाणक्य

धन के लोभी को सचाई नही होती और व्यभिचार करने वाले को पवित्रता नही होती।

व्यवसायी

नात्युच्चशिखरो मेरुर्नातिनीच रसातलम्।
व्यवसायद्वितीयाना नाप्यपारो महोदधि ॥ —अज्ञात

व्यवसायी मनुष्य के लिए सुमेरु पहाड की चोटी भी बहुत ऊँची नही है, उसके लिए रसातल भी अधिक नीचे नही है और वह (उद्योगी) समुद्र को भी अपार नही समझता।

व्यवहार

यस्मिन्यथा वर्तते यो मनुष्य। तस्मिस्तथा वर्तितव्य स धर्म।
मायाचारो मायया बाधितव्य। साध्वाचार साधुना प्रत्युपेय ॥
—वेदव्यास (महा० शान्तिपर्व)

अपने साथ जो जैसा बरतता है उसके साथ वैसा ही बर्ताव करना धर्मनीति है, मायावी पुरुष के साथ मायावीपन और साधु पुरुष के साथ साधुता का व्यवहार करना चाहिए।

Behavior is a mirror in which every one displays his image.
मनुष्य का व्यवहार वह दर्पण है जिसमें वह अपना चित्र दिखाता है।
—गेटे

मनुष्य नियम बनाते है, स्त्रियाँ व्यवहार। —डी० सीगर

The society of women is the foundation of good manners
स्त्रियो की सगति उत्तम व्यवहार की नीव है। —गेटे

There are few things more catching than bad temper and bad manner
खराब व्यवहार और चिडचिडे स्वभाव की तरह कुछ ही वस्तुएँ अति शीघ्र प्रभावित करती है। —ए० जी० गार्डनर

सभ्य और सुन्दर व्यवहार हर जगह आदर पाने के लिए प्रवेशपत्र है।
—जानसन

The ability to deal with people is as purchasable a commodity as sugar and coffee

लोगो के साथ व्यवहार करने की योग्यता वैसे ही क्रेय वस्तु है जैसे चीनी और काफी। —जान डी० राकफेलर

Politeness goes far, yet costs nothing

शिष्टता का प्रभाव दूर तक जाता है, पर उसमे कुछ व्यय नही होता।

—सैमुअल स्माइल्स

अच्छे व्यवहार छोटे छोटे त्याग से वनते हैं। —एमर्सन

Manners are minor morals

व्यवहार छोटे सदाचार हैं। —पेले

Manners must adorn knowledge, and smooth their way through the world

व्यवहार ज्ञान को सुशोभित करता है, और ससार में अपने मार्ग को सरल वनाता है। —चेस्टरफील्ड

If bad manners are infectious, so also are good manners

जैसे बुरे व्यवहार का प्रभाव बुरा पडता है वैसे ही अच्छे व्यवहार का प्रभाव अच्छा पडता है।

—ए० जी० गार्डनर

महापुरुष अपनी महत्ता का परिचय छोटे मनुष्यो के साथ किये गये अपने व्यवहार मे देते हैं। —कार्लाइल

आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत्। —अज्ञात

जो व्यवहार अपने प्रतिकूल जान पडे उसे दूसरो के साथ भी न करो।

Manners often make fortune

सदव्यवहार प्राय भाग्य का निर्माण करते हैं।

—कहावत

दूसरो के साथ वैसा व्यवहार करो जैसा कि तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करे। —बाइबिल

When dealıng wıth people, let us remember we are not dealıng wıth creatures of logıc We are dealıng wıth creatures of emotıon, creatures brıstlıng wıth prejudıces and motıvated by prıde and vanity

लोगो के साथ व्यवहार करते समय हमें स्मरण रखना चाहिए कि हम तर्क-शास्त्रियो के साथ व्यवहार नही कर रहे हैं, हम ऐसे लोगो के साथ व्यवहार कर रहे हैं, जिनमें मानसिक आवेश है, पक्षपात है और जो गर्व एव अहकार से सचरित होते हैं। —डेल कारनेगी

सद्व्यवहार से उचित और सस्ती कोई अन्य वस्तु नही। —एनन

न कश्चित्कस्यचिन्मित्र न कश्चित्कस्यचिद्रिपु।
व्यवहारेण मित्राणि जायन्ते रिपवस्तथा॥ —हितोपदेश

न तो कोई किसी का मित्र है, और न कोई किसी का शत्रु है। व्यवहार से मित्र तथा शत्रु बन जाते हैं।

न्यायोचित कर्मानुकूल व्यवहार करने पर ही सच्चे और सरल कर्म को जाना जा सकता है। —रस्किन

व्यसन

व्यसनानि सन्ति बहुशो, व्यसनद्वयमेव केवल व्यसनम्।
विद्याभ्यसन व्यसनमथवा हरिपादसेवन व्यसनम्॥ —अज्ञात

ससार में व्यसन तो बहुत से हैं, किन्तु उनमें से दो ही व्यसन ऐसे है जिन्हें वस्तुत व्यसन (प्रिय विषय) कहा जा सकता है—एक तो विद्या का अभ्यास करना और दूसरे भगवान् के चरणो की सेवा करना।

व्याख्यान (दे० "भाषण", "तकरीर")

बुद्धिमान् लोगो के सामने उपदेशपूर्ण व्याख्यान देना जीवित पौदो को पानी देने के समान है। —सत तिरुवल्लुवर

Speech ıs power speech ıs to persuade, to convert, to compel
व्याख्यान शक्ति है, व्याख्यान कायल करने, मत बदलने एव बाध्य करने के लिए है। —एमर्सन

A printed speech is like a dried flower . the substance, indeed is there, but the colour is faded and the perfume gone

छपा हुआ व्याख्यान मुरझाये पुष्प के सदृश है जिसमें सार तो है लेकिन रग उडा हुआ है और सुगन्ध चली गयी है। —लोरेन

ऐ शब्दो का मूल्य जाननेवाले पवित्र पुरुषो! पहले अपने श्रोताओ की मानसिक स्थिति को समझ लो और फिर उपस्थित जनसमूह की अवस्था के अनुसार अपने व्याख्यान देना आरम्भ करो। —सत तिरुवल्लुवर

व्यापार

महँगे या छल-छद्मपूर्ण व्यापार से जनता को सुख नही होता। अत राष्ट्र के कर्णधारो का कर्त्तव्य है कि वे सोच-समझकर व्यापार करें। —अज्ञात

जिस व्यक्ति से आप वार्त्तालाप कर रहे हैं उसकी ओर पूर्ण ध्यान देने में ही सफल व्यापार निहित है। —इलियट

Business today consists in persuading crowds

आज का व्यापार समूह को प्रलोभन देने में निहित है। —जी० ई० ली

Business is the salt of life

व्यापार जीवन का नमक है। —कहावत

Business neglected is business lost

व्यापार की उपेक्षा करना व्यापार को खोना है। —कहावत

व्यापार मनुष्य को बनाता है और उसकी परीक्षा भी लेता है। —कहावत

Business may be troublesome, but idleness is pernicious

व्यापार कष्टदायक हो सकता है लेकिन आलस्य नाशकारी है। —कहावत

Business is like oil, it won't mix with anything but business

व्यापार तैल के सदृश है। यह व्यापार से ही मिलता है किसी अन्य वस्तु से नही। —जे० ग्राहम

व्यायाम

I take the true definition of exercise to be, labour without weariness

मेरे लिए व्यायाम की परिभाषा बिना थकावट के परिश्रम है। —डा० जानसन

Health is the vital principle of bliss, and exercise, of health
आनन्द का अति आवश्यक सिद्धान्त स्वास्थ्य है, एव स्वास्थ्य का व्यायाम।—**टामसन**

शरीरोपचय कान्तिर्गात्राणा सुविभक्तता।
दीप्ताग्नित्वमनालस्य स्थिरत्व लाघव मृजा॥ —**महर्षि चरक**

व्यायाम करने से शरीर की पुष्टि, गात्रो की कान्ति, मास-पेशियो के उभार का ठीक विभाजन, जठराग्नि की तीव्रता, आलस्य-हीनता, स्थिरता, हलकापन, और मलादि की शुद्धि प्राप्त होती है।

न चैन सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति। —**महर्षि चरक**

व्यायाम करनेवालो पर बुढापा सहसा आक्रमण नही कर पाता।

शरीरचेष्टा या चेष्टा स्थैर्यार्था वलवर्धिनी।
देहव्यायाम सख्याता मात्रया तास माचरेत्॥ —**महर्षि चरक**

शरीर की जो चेष्टा देह को स्थिर करने एव उसका वल वढानेवाली हो, उसे व्यायाम कहते हैं। इसका उचित मात्रा में सेवन करना चाहिए।

शंका

शका से शका वढती है और विश्वास से विश्वास वढता है। यह अनुभव का शास्त्र है। —**विनोवा**

Doubt is hell in the human soul
शका मानव-आत्मा में नरक के समान है। —**गैस्प्रेन**

When you doubt, abstain
जव शका हो, तो काम करने से रुक जाओ। —**जरदस्तु**

We know accurately only when we know little, with knowledge doubt increases.
जव हम थोडा जानते है तभी हम ठीक ठीक जानते है। ज्ञानवृद्धि के साथ शका वढती है। —**गेटे**

Our doubts are traitors
And make us lose the good we oft might win,
By fearing to attempt
हमारी शकाएँ हमारे साथ विश्वासघात करती है और हमे उन अच्छाइयो से वचित रखती है जिन्हें हम प्रयास से पा जाते। —**शेक्सपियर**

हमारे यथार्थ शत्रु तीन हैं—दरिद्रता, रोग और [illegible]। [illegible] हैं जो इन तीनों के विरुद्ध युद्ध छेड़ते हैं। वे मानवता के [illegible] और हमारे सच्चे सेना-नायक हैं।

—अज्ञात

शत्रु को तुच्छ माननेवाली प्रज्ञा एक मोहमयी मदिरा के समान है जो ज्योति और अमरत्व की तरफ नहीं वरन् अंधकार और मृत्यु की तरफ ले जाती है।

—अज्ञात

अपने शत्रु को कभी छोटा मत समझो, देखो तृण के ढेर को आग की छोटी सी चिनगारी भस्म कर देती है।

—वृन्द

म्रियते यावदेकोऽपि रिपुस्तावत्कुत सुखम्।
पुर क्लिश्नाति सोम हि सैंहिकेयोऽसुरद्रुहाम्॥

जब तक एक भी शत्रु शेष रहता है तब तक मनुष्य को सुख कहाँ? राहु समस्त देवताओ के सम्मुख ही चन्द्रमा को दुख पहुँचाता है।

बुद्धिमान शत्रु अच्छा होता है, मूर्ख मित्र नही। वेदव्यास—(शान्तिपर्व)

Have you fifty friends ?—It is not enough Have you one enemy ?—It is too much

क्या आपके पचास मित्र हैं?—यह अधिक नही है। क्या आपका एक शत्रु है?—यह बहुत अधिक है। —कहावत

हित करनेवाला शत्रु भी मित्र होता है तथा अहित करनेवाला मित्र भी शत्रु होता है। अपने शरीर से उत्पन्न हुआ रोग भी शत्रु है तथा जगल में उत्पन्न औषधि मित्र है। —वेदव्यास

बलवान् शत्रुओ से कभी वैर नही ठानना चाहिए, क्योकि आग जैसे तिनके में बैठ जाती है उसी प्रकार बुद्धिमान् की बुद्धि भी उसके नाश का उपाय निकाल लेती है। —वेदव्यास (महाभारत शान्तिपर्व)

न कोई किसी का मित्र है न कोई किसी का शत्रु, शत्रुता और मित्रता केवल व्यवहार से ही होती है। — हितोपदेश

समूलघातमघ्नन्त पराम्नोद्यन्ति मानिन।
प्रध्वसितान्धतमसस्तत्रोदाहरण रवि॥ —माघ

स्वाभिमानी पुरुष शत्रुओ का समूल नाश किये बिना उन्नति नही प्राप्त करते। इस विषय में गाढे अन्धकार को पूर्णत नष्ट करके उदय होनेवाला सूर्य ही उदाहरण है।

शत्रु के साथ मृदुता का व्यवहार अपकीर्ति का कारण बनता है, और पुरुषार्थ यश का। —अज्ञात

तरह तरह के कुविचार हमारी शान्ति, सुख और विजय के घोर शत्रु हैं। —स्वेट मार्डेन

बलवान् शत्रु के सामने जो गर्वित होता है वह नष्ट हो जाता है और जो नम्र होता है वह अपना अस्तित्व स्थिर रखता है, जिस प्रकार पानी के प्रबल प्रवाह में बडे से बडा वृक्ष बह जाता है किन्तु इसके विपरीत बेंत का वृक्ष झुककर अपना अस्तित्व कायम रखता है। —वेदव्यास (महाभारत, शान्तिपर्व)

Words are like leaves and where they most abound, much fruit of sense beneath is rarely found

शब्द पत्तियों के समान हैं और जब उनकी अधिकता होती है तो उनके नीचे बुद्धिमानी का फल कदाचित् ही कभी मिलता है। —पोप

शब्द आकाश का गुण है। उसमें निन्दा-स्तुति, मान-अपमान की कल्पना है। सब शब्द हैं शब्द में अर्थ की तो कल्पना की गयी है। —अज्ञात

"असम्भव" शब्द मेरे कोश में नहीं है। —नेपोलियन

Words that weep, and tears that speak
कुछ शब्द रोते हैं और कुछ आँसू बोलते हैं। — काउले

सब्द सब्द सब कोइ कहै, सब्द के हाथ न पाँव।
एक सब्द औषधि करै, एक सब्द कर घाव॥ — कबीर

Words are the powerful drug used by mankind
शब्द शक्तिशाली औषध हैं जिसका मानव उपयोग करता है। — किप्लिंग

सब्द बराबर धन नही, जो कोइ जानै बोल।
हीरा तो दामो मिलै, सब्दहि मोल न तोल॥ — कबीर

जब तक बात तुम्हारे मुख से नही निकली, तब तक वह तुम्हारे वश में है, ज्यो ही वह तुम्हारे मुख से निकली कि तुम उसके वश में हो गये। — सुकरात

शरणागत

शरणागत कहँ जे तजहिं, हित अनहित निज जानि।
ते नर पामर पापमय, तिन्हहिं विलोकत हानि॥ — तुलसी

शरणागत की रक्षा करना बडा ही पुण्य काम है, ऐसा करने से पापी के भी पाप का प्रायश्चित्त हो जाता है। — वेदव्यास (महाभारत)

जो अपने शरणागत की रक्षा नही करता उसके सभी सुकृत नष्ट हो जाते हैं। — अज्ञात

शराब

Wine has drowned more men than the sea
समुद्र की अपेक्षा शराब ने अधिक मानवो को डुबाया है। — पब्लियस साइरस

When the wine is in, the wit is out
जब शराब मनुष्य में प्रवेश करती है, तो बुद्धि को बाहर निकाल देती है। — अज्ञात

यह तो हद दर्जे की बेवकूफी और नालायकी है कि अपना रुपया खर्च करें और बदले में सिर्फ बेहोशी और बदहवासी हाथ लगे। — संत तिरुवल्लुवर

संसार की सारी सेनाएँ मिलकर इतने मानवो और इतनी सम्पत्ति को नष्ट नही करती जितनी शराब पीने की आदत। — मिल्टन

It is the cause and not the death, that makes the martyr

यह ध्येय है, मृत्यु नहीं, जो मनुष्य को शहीद बना देता है। —नेपोलियन

हमारे शहीद भाई "हम में से गए हैं" जिनके नाम हमारों के पास नहीं परमात्मा के पास रहनेवाले हैं। —विनोबा

Let us all be brave enough to die the death of a martyr but let no one lust for martyrdom

हम सभी को इतना अधिक वीर होना चाहिए कि शहीद की मौत मर सकें, परन्तु हममें शहीद होने की तृष्णा न होनी चाहिए। —महात्मा गांधी

शादी (दे० "विवाह")

शान्ति

रात्रि के पश्चात् अरुण का उदय होता है, सग्राम के पश्चात् शान्ति का पुनरागमन होता है। —अज्ञात

शान्तितुल्य तपो नास्ति। —चाणक्य

शान्ति के समान (दूसरा) तप नही है।

सात द्वीप नव खड लौं, तीनि, लोक जग माहि।
तुलसी शान्ति समान सुख, और दूसरो नाहिं॥

—तुलसीदास

। कल्पना में रत रहना, जव कि सघर्ष आवश्यक हो, निश्चित रूप से
। है। —वेदव्यास (महाभारत)

शान्ति का मूलाधार शक्ति है। —वेदव्यास (महाभारत)

Peace hath her victories,
No less renowned than war

। विजय युद्ध की विजय से कम यशस्वी नही होती। —मिल्टन

prepared for war is one of the most effectual means of peace

युद्ध के लिए तैयार रहना शान्ति कायम रखने के लिए सबसे अधिक प्रभावशाली साधनो में से एक है। —वाशिंगटन

अपने भीतर ही यदि शान्ति मिल गयी तो सारा ससार शान्तिमय प्रतीत होता है। —योगवासिष्ठ

विगत रात्रि के तूफान ने, आज के प्रभात को, स्वर्णमयी शान्ति का ताज पहना दिया है। —रवीन्द्र

जिस मनुष्य ने अपनी सारी इच्छाओ का त्याग कर दिया है एव मैं और मेरेपन के भाव से जो मुक्त हो गया है, वही शान्ति पाता है। —महात्मा गाधी

मनुष्य की शान्ति की कसौटी समाज में ही हो सकती है, हिमालय के शिखर पर नही। —महात्मा गांधी

मैं ख्याति के ऊँचे शिखर पर चढा हूँ। परन्तु उस ठडे और अनुर्वर प्रदेश मे मुझे त्राण नही मिला है। हे मेरे नायक, दिवसावसान के पूर्व ही मुझे शान्ति की घाटी में पहुँचा दो—जहाँ जीवन की खेती स्वर्णमय ज्ञान में परिपक्व होती है। — रवीन्द्र

Peace is the happy, natural state of man, war, his corruption, his disgrace

शाति मनुष्य की सुखद और स्वाभाविक स्थिति है, युद्ध उसका पतन है, उसका कलक है। —टामसन

जो कुछ मिले उसी में सन्तोष तथा दूसरो से ईर्षा न करना ही शान्ति की कुजी है। — धम्मपद

सन्तोषामृततृप्ताना यत्सुख शान्तचेतसाम्।
न च तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्॥ — चाणक्य

सन्तोषरूपी अमृत से जो लोग तृप्त होते हैं, उनको जो शाति और सुख होता है, वह धन के लोभियो को, जो इधर उधर दौडा करते हैं, नही प्राप्त होता।

विषयो का सुख और आत्मा की शान्ति—इन दोनो में से किसी एक को हमें चुनना है। अगर ससार मे रहकर आत्मिक शान्ति प्राप्त करनी है, अगर दिव्य जीवन तक पहुँचना है, अगर मृत्यु के इस ससार से मुक्त होना है—तो भौतिक जीवन के फलो को नही चखना चाहिए। — शिलर

Peace flourishes when reason rules

जहाँ बुद्धि शासन करती है वहाँ शान्ति में वृद्धि होती है। — कहावत

आनन्द उछलता-कूदता जाता है, शाति मुस्कराती हुई चलती है। — हरिभाऊ उपाध्याय

जिसमें शान्ति का निवास नही है, उसके सारे सद्गुण व्यर्थ हैं। — अज्ञात

शान्ति मानवजीवन का चरम उद्देश्य है। ससार के जितने धर्म कर्म हम करते हैं, उन सबके पीछे यही लालसा तो रहती है कि हम शान्तिपूर्वक जीवन वितायें। — अज्ञात

शासक

दूसरो को सिखाने की भावना रखनेवाला स्वय कुछ नही सीख सकता, दूसरो पर अपना रोब गालिब करनेवाला अधिकार-लोलुप कभी अच्छा शासक नही बन सकता। — रस्किन

That sovereign is a tyrant who knows no law but his own caprice

वह शासक अत्याचारी है जो अपनी रुचि के अतिरिक्त और कोई नियम नही जानता। —वालटेयर

अन्यायी शासक के प्रति विद्रोह ईश्वर की आज्ञा का पालन करना है। —फ्रैंकलिन

शासक जब प्रजा को दिये गये आश्वासनो को स्वप्न की भाँति भूलने लगता है तो मृत्यु की निद्रा ही उसका स्वागत करती है। —डा० रामकुमार वर्मा

शासन

एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर राज्य करे यह विचार दोनो के लिए असह्य है, बुरा है और दोनो को नुकसान पहुँचानेवाला है। —महात्मा गाधी

शासन-दण्ड धर्म मे परिवर्तन नही करा सकता। —जयशकर प्रसाद

कसीदे से न चलता है न ये दोहे से चलता है।
समझ लो खूब कारे सल्तनत लोहे से चलता है॥ —अज्ञात

प्रेम से शासन करना मानवता है, अन्याय से शासन करना बर्बरता है। —प्रेमचन्द

सम्पूर्ण राष्ट्र के रक्तरहित विरोध के समक्ष कोई भी शासन सम्भवत टिक नही सकता। —महात्मा गांधी

For forms of government let fools contest
Whatever is best administered is best

शासन-प्रणाली की रूपरेखा पर मूर्खों को वादविवाद करने दो। वही सर्वोत्तम शासन है जो सुव्यवस्थित हो। —पोप

What government is the best? That which teaches us to govern ourselves

कौन शासन सर्वोत्तम है? जो आत्मशासन की शिक्षा देता है। —गेटे

शासनविधान

बढिया शासनविधान बनाना सरल है पर उसके अनुसार आचरण कर सकना बडा कठिन है। यह तभी हो सकता है जब कि सर्वसाधारण में नागरिकता का उच्च-भाव विकसित किया जाय। —श्रीनिवास शास्त्री

शास्त्र

सर्वस्य लोचन शास्त्र यस्य नास्त्यव एव न —हितोपदेश

शास्त्र सबके लिए नेत्र के समान हैं जिसे शास्त्र का ज्ञान नही वह अधा है।

यस्य नास्ति स्वय प्रज्ञा शास्त्र तस्य करोति किम् ।
लोचनाभ्या विहीनस्य दर्पण कि करिष्यति ।।

—हितोपदेश

जिस मनुष्य को अपनी बुद्धि नही है उसके लिए शास्त्र बेकार है, जैसे दोनो आँखो से रहित अन्धे को दर्पण क्या करेगा।

शिक्षक

लोकशिक्षक चरित्रहीन हो तो वह बिना खारेपन के नमक जैसा फीका होगा।

— महात्मा गाधी

The teacher is like the candle which lights others in consuming itself

शिक्षक मोमबत्ती के सदृश है जो स्वयम् जलकर दूसरे को प्रकाश देती है।

— रुफिनी

शिक्षक का अपना चरित्र भी ऐसा होना चाहिए जो मूक शिक्षण का कार्य करे, जिसे देखकर शिक्षार्थी की श्रद्धा जाग्रत हो जाय। — अज्ञात

शिक्षण

शिक्षण दड है, यह गुलामी की भावना ही आज विद्यार्थियो में प्रचलित है।

— विनोबा

शिक्षण का कार्य कोई स्वतत्र तत्त्व उत्पन्न करना नही है, सुप्त तत्त्व को जाग्रत करना है। —विनोबा

शिक्षा (दे० "नसीहत", "सीख")

सदाचार और निर्मल जीवन सच्ची शिक्षा का आधार है। — महात्मा गाधी

मनुष्य में जो सम्पूर्णता गुप्त रूप से विद्यमान है उसे प्रत्यक्ष करना ही शिक्षा का कार्य है। — स्वामी विवेकानन्द

To develop in the body and in the soul all the beauty and all the perfection of which they are capable

शरीर और आत्मा में अधिक से अधिक जितने सौन्दर्य और जितनी सम्पूर्णता का विकास हो सकता है उसे सम्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। —प्लेटो

शिक्षा का महान् उद्देश्य ज्ञान नही कर्म है। —हर्बर्ट स्पेन्सर

Education is the ability to meet life's situations

शिक्षा जीवन की परिस्थितियो का सामना करने की योग्यता का नाम है।

—डा० जान जी० हिवन

What is education ? A parcel of books ? Not at all, but intercourse with the world, with men and with affairs

शिक्षा क्या है ? पुस्तको का ढेर ? बिल्कुल नही, बल्कि ससार के साथ, मनुष्यो के साथ और कार्यों से पारस्परिक सम्बन्ध। —बर्क

लोगो को पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए प्रस्तुत करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। —हर्बर्ट स्पेन्सर

जैसे सूर्य सबको एक-सा प्रकाश देता है, बादल जैसे सबके लिए समान बरसते हैं, उसी तरह विद्या-वृष्टि सब पर बराबर होनी चाहिए। —महात्मा गांधी

जिन्होने मानव पर शासन करने की कला का अध्ययन किया है उन्हें यह विश्वास हो गया है कि युवको की शिक्षा पर ही राज्यो का भाग्य आधारित है। —अरस्तू

युवको को यह शिक्षा मिलना बहुत जरूरी है कि वे अपने सामने सर्वोत्तम आदर्श रखें। —महामना मदनमोहन मालवीय

Schoolhouses are the republican line of fortification

विद्याभवन प्रजातत्री किलेबन्दी है। —होरेस मैन

Education is cheap defence of nation

शिक्षा राष्ट्र की सस्ती सुरक्षा है। —बर्क

शिक्षा का ध्येय चरित्र-निर्माण है। —हर्बर्ट स्पेन्सर

ससार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा सबसे बढकर है। —निराला

Education is the apprenticeship of life

शिक्षा जीवन की तैयारी का शिक्षणकाल है। —विल्मट

उच्च शिक्षा के प्रभाव से लोगो की बुद्धि सुकुमारता छोड प्रौढ़ता प्राप्त करती है।

— अज्ञात

शिक्षा का रहस्य शिष्य का आदर करने मे है। —एमर्सन

शिक्षा भी अपने स्थान पर न हो तो वैसी ही निकम्मी है जैसे योग्य जगह पर न होने से किसी चीज की गिनती कचरे में की जाती है। — महात्मा गाधी

What sculpture is to a block of marble, education is to the human soul

शिक्षा मानव-आत्मा के लिए वैसे ही है जैसे सगमरमर के टुकडे के लिए शिल्पकला।

— एडीसन

कार्यकौशल और कर्मशीलता ही हमारी शिक्षा का मूल मत्र है। — अज्ञात

Universal sufferage, without universal education, would be a curse

सर्व-व्यापी शिक्षा के विना व्यापक मताधिकार अभिशाप हो सकता है।

— वेलैन्ड

शिक्षा और सम्पत्ति का प्रभुत्व हमेशा रहा है और रहेगा। — प्रेमचन्द

शिक्षा विविध जानकारियो का ढेर नही है। — स्वामी विवेकानन्द

जो शिक्षा हमें निर्बलो को सताने के लिए तैयार करे, जो हमे धरती और धन का गुलाम वनाय, जो हमे भोग-विलास में डुवाये, जो हमें दूसरो का रक्त पीकर मोटा होने का इच्छुक वनाये, वह शिक्षा नही भ्रष्टता है। — प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)

शिक्षा केवल ज्ञान-दान नही करती वह सस्कार और सुरुचि के अकुरो का पालन भी करती है।

— अज्ञात

जिस शिक्षा में समाज और देश की कल्याण-चिन्ता के तत्त्व नही है, वह कभी सच्ची शिक्षा नही कही जा सकती।

— अज्ञात

हमारी शिक्षा तव तक अधूरी ही रहेगी, जव तक उसमे धार्मिक विचारो का समावेश नही किया जायगा।

— अज्ञात

हमारी आज की शिक्षा में चाहे जितने सद्गुण हो, किन्तु उसमें जो सवसे वडा दुर्गुण है वह यही है कि उसमें वुद्धि को ऊँचा और परिश्रम को नीचा स्थान दिये जाने की भावना है।

— अज्ञात

शिल्पी

शिल्पी पत्थर या मिट्टी में से मूर्ति उत्पन्न नही करता। वह तो उसमे है ही, सिर्फ छिपी हुई है उसे प्रकट करना उसका काम है। — रस्किन (विजयपथ)

Sculptures are far closer akin to poetry, than paintings are
शिल्पकला चित्रकला की अपेक्षा काव्य के अधिक निकट है। —फेविल

शिशु (दे० "बच्चा", "बालक")

बच्चो के आत्मविश्वास को नष्ट करना, उनके मन पर निराशा की छाया डालना, बडा ही भयानक पाप है। — स्वेट मार्डेन

प्रेरणा-शक्ति के द्वारा बच्चो की उन शक्तियो का विकास किया जा सकता है जिन पर उनका स्वास्थ्य, सफलता और सुख निर्भर है। — स्वेट मार्डेन

बच्चो को तो शावाशी, प्रशसा और उत्साह की ही आवश्यकता है। इन्ही से उनका जीवन उन्नतिशील हो सकता है। — स्वेट मार्डेन

इतिहास की धूल से मलिन न होते हुए शिशु अनन्त समय के रहस्य में सदैव निवास करता है। — रवीन्द्र

नीरव रात्रि में माता का सौन्दर्य आभासित होता है और कोलाहलपूर्ण दिवस में शिशु का। — रवीन्द्र

From the solemn gloom of the temple children run out to sit in the dust, God watches them play and forgets the priest
देवालय के गभीर अधकार से शिशु धूल में बैठने के लिए बाहर भाग आते है, ईश्वर उन्हें खेलते हुए देख उनकी रखवाली करता है और पुजारी को भूल जाता है। — रवीन्द्र

जीवन की महत्त्वाकाक्षाएँ शिशुओ के रूप में आती हैं। — रवीन्द्र

शिशुओ की दुनिया अलौकिक है, अद्भुत है, अद्वितीय है और आराध्य है। —अज्ञात

छोटे वच्चे तो भगवान् की, परब्रह्म की छोटी छोटी मूर्तियाँ है। — साने गुरु

शिशुत्व

क्राति का पथ पकडकर शिशुत्व का वाना पहनो। — रस्किन

महापुरुष जन्म-सिद्ध शिशु है। जब वह मरता है तो अपना शिशुत्व ससार को प्रदान कर जाता है। — रवीन्द्र

अपने रोग की सच्ची चिकित्सा और आत्म-शिक्षा का यथार्थ ज्ञान आपको शिशुत्व की शाला में ही मिलेगा। शिशुत्व को अपनाओ—इसी में आपका कल्याण है। — रस्किन

शिशुत्व मानवजीवन मे परमात्मा के सद्‌गुणो की एक थाती है, जो माता-पिता उनकी उचित देख-रेख रखते हैं, उन्हें कभी पछताना नही पडता। — अज्ञात

शिष्टाचार

शिष्टाचार का मूल सिद्धान्त है दूसरे को अपने प्रेम और आदर का परिचय देना और किसी को असुविधा और कष्ट न पहुँचाना। — अज्ञात

शील

शील प्रधान पुरुषे तद्यस्येह प्रणश्यति।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभि ॥ — वेदव्यास (म०)

शील मानवजीवन का अनमोल रत्न है। उसे जिस मनुष्य ने खो दिया उसका जीना ही व्यर्थ है। वह चाहे जितना धनी अथवा भरे-पूरे घर का हो उसका कोई मूल्य नही रहता।

सीलवत सब ते बडा, सर्व रतन की खानि।
तीन लोक की सम्पदा, रही सील में आनि॥ — कबीर

धर्म, सत्य, सदाचार, बल और लक्ष्मी सब शील के ही आश्रय पर रहते हैं। शील ही सब की जड है। — वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

ज्ञानी ध्यानी सयमी, दाता सूर अनेक।
जपिया तपिया बहुत है, सीलवत कोइ एक॥ — कबीर

सब धर्मों में शील एक छिपा खजाना है। — वेदव्यास (महाभारत)

सुख का सागर सील है, कोइ न पावै थाह।
सब्द बिना साधू नही, द्रव्य बिना नहि साह॥ — कबीर

अपनी प्रभुता के लिए चाहे जितने उपाय किये जायें परन्तु शील के बिना ससार मे सब फीका हैं। — वेदव्यास (महाभारत)

सील छिमा जब ऊपजै, अलख दृष्टि तब होय।
बिना सील पहुँचै नही, लाख कथै जो कोय॥ —कबीर

शून्य

अपुत्रस्य गृह शून्य दिश शून्यास्त्वबाधवा ।
मूर्खस्य हृदय शून्य सर्वशून्या दरिद्रता॥ —चाणक्य

निपुत्र का घर सूना है, बन्धुरहित दिशाएँ शून्य हैं, मूर्ख का हृदय शून्य है, और दरिद्रता के होने पर सब कुछ सूना है।

अन्त सारविहीनानामुपदेशो न जायते।
मलयाचलससर्गाद् न वेणुश्चन्दनायते॥ —चाणक्य

शून्य हृदयवालो को शिक्षा देना सफल नही होता। मलयाचल पर्वत का बाँस चदन के ससर्ग से चन्दन नही बन जाता।

शूर (दे० "वीर")

तृण ब्रह्मविदा स्वर्ग तृण शूरस्य जीवितम्।
जिताक्षस्य तृण नारी नि स्पृहस्य तृण जगत्॥ —चाणक्य

ब्रह्मज्ञानी को स्वर्ग तृण है, शूर को जीवन तृण है, जितेन्द्रिय को स्त्री तृणतुल्य जान पडती है, निस्पृह को जगत् तृण है।

शूर वीर वही है जो बिना शस्त्र धारण किये शत्रु के सामने छाती खोलकर मरने का साहस करता है। —महात्मा गांधी

Physical bravery is an animal instinct, moral bravery is a much higher and truer courage

शारीरिक वीरता पाशविक प्रवृत्ति है। नैतिक वीरता बहुत ऊँची और सच्ची वीरता है। —वेन्डेल फिलिप्स

सच्चे शूरवीरो के सामने सेना की शक्ति कुछ काम नही करती।
—वेदव्यास (महाभारत-उद्योगपर्व)

शैतान

दुष्ट आदमी के हाथ मे नीति-शास्त्र का हथियार आने से ही तो वह शैतान कहलाता है। —महात्मा गाधी

शौर्य

शौर्य किसी में वाहर से पैदा नहीं किया जा मकता, वह तो मनुष्य के स्वभाव में होना चाहिए। —महात्मा गाधी

श्मशान

ससार का मूक शिक्षक 'श्मशान' क्या डरने की वस्तु है? जीवन की नश्वरता के साथ ही सर्वात्मा के उत्थान का ऐसा सुन्दर स्थल और कौन है।
—जयशकर प्रसाद (स्कधगुप्त)

श्मशान ही एक ऐसा स्थल है जहां पहुँचकर ससार की असारता का प्रत्यक्ष अनुभव होता है। —अज्ञात

श्रद्धा

किसी मनुष्य में जन-साधारण से विशेष गुण या शक्ति का विकास देख उसके सम्वन्ध में जो एक स्थायी आनन्द-पद्धति हृदय में स्थापित हो जाती है उसे श्रद्धा कहते हैं। —रामचन्द्र शुक्ल

श्रद्धा महत्व की आनन्दपूर्ण स्वीकृति के साथ-साथ पूज्य वुद्धि का सञ्चार है।
—रामचन्द्र शुक्ल

वस्तुत निराश हृदय को सात्वना, अवलम्व और जीवन देनेवाली वृत्ति श्रद्धा ही है—श्रद्धा में आत्म-समर्पण है। —अज्ञात

प्रेम में केवल दो पक्ष होते है, श्रद्धा में तीन। प्रेम मे कोई मध्यस्थ नही, पर श्रद्धा में मध्यस्थ अपेक्षित है। —रामचन्द्र शुक्ल

श्रद्धा का व्यापारस्थल विस्तृत है, प्रेम का एकान्त। प्रेम में घनत्व अधिक है और श्रद्धा में विस्तार। —रामचन्द्र शुक्ल

श्रद्धा की गुजाइश तो वही है, जहाँ वुद्धि कुठित हो जाय। —महात्मा गाधी

मनोवाछित पदार्थ का मूल श्रद्धा ही हो सकती है। —स्वेट मार्डेन

श्रद्धा—आस्था ही हमारे आदर्श की वाह्य रेखा है। —स्वेट मार्डेन

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत।
श्रद्धामयोऽय पुरुषो यो यच्छ्द्ध स एव स ॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

हे भारत! सबकी श्रद्धा अपने स्वभाव का अनुसरण करती है। मनुष्य में कुछ न कुछ श्रद्धा तो होती ही है। जैसी जिसकी श्रद्धा, वैसा वह होता है।

श्रद्धा का मूल तत्त्व है दूसरे का महत्त्व-स्वीकार। — रामचन्द्र शुक्ल

सद्विचार पर वुद्धि रखने का ही नाम श्रद्धा है। यही श्रद्धा मनुष्य को वल देती है, सव तरह से प्रेरणा देती है और उसके जीवन को सार्थक वनाती है। — विनोवा

श्रद्धा हृदय की वस्तु है, जव उससे मस्तिष्क टकराता है तो वह चूर चूर हो जाती है। — अज्ञात

श्रद्धा का अर्थ है आत्म-विश्वास और आत्म-विश्वास का अर्थ है ईश्वर पर विश्वास। — महात्मा गाधी

श्रद्धा एक ऐसी आनन्दपूर्ण कृतज्ञता है जिसे हम केवल समाज के प्रतिनिधिरूप में प्रकट करते हैं। — रामचन्द्र शुक्ल

श्रम (दे० "परिश्रम")

Labour conquers all things
श्रम सभी पर विजयी होता है। — होमर

श्रम और उद्योग चुम्वक के समान हैं, जो सव अच्छे अच्छे पदार्थों को पास खीच लाते हैं। — वार्टन

विना श्रम के कोई भी उन्नति नही करता। — सफोक्लीज

A man's best friends are his ten fingers
मनुष्य का सर्वोत्तम मित्र उसकी दस उँगलियाँ हैं। — राबर्ट कोलियर

No sweat, no sweet
विना परिश्रम के सुख नही मिलता। — कहावत

सच्चा श्रम करनेवाले का चेहरा मनोहर होता है। — डेकर

From labour, health, from health contentment springs
श्रम से स्वास्थ्य और स्वास्थ्य से सतोप उत्पन्न होता है। वेट्टी

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा ॥ — हितोपदेश

उद्यम करने से ही कार्य सिद्ध होते हैं, केवल इच्छा करने से नही। पशुगण सोते हुए सिंह के मुख में प्रवेश नही करते।

श्रम ईश्वर का सबसे बडा पूजन है। — कार्लाइल

Labour makes us insensible to sorrow
श्रम से हम अपना शोक भूल जाते हैं। — सिसरो

Labour is life
श्रम जीवन है। — कार्लाइल

श्रम की पूजा करो। वह ऐसा ईश्वर है जो चतुर्मुख ब्रह्मा और चतुर्भुज विष्णु से भी बढकर शक्तिशाली है। उसकी पूजा करनेवाला त्रिकाल में भी कभी निराश नही होता। — अज्ञात

श्री

यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ — गीता

जहाँ योगेश्वर कृष्ण हैं, जहाँ धनुर्धारी पार्थ हैं, वही श्री है, विजय है, वैभव है, और अविचल नीति है, ऐसा मेरा अभिप्राय है।

श्रेष्ठ

सर्वश्रेष्ठ मनुष्य वही है जिसने मनरूपी राक्षस को अपने वश में कर लिया है।
— मीरा

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्ख शतान्यपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारा सहस्रश ॥ — चाणक्य

एक गुणी पुत्र श्रेष्ठ है, सैकडो गुणरहित पुत्र नही। एक ही चन्द्रमा अधकार को नष्ट कर देता है, सैकडो तारे नही।

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन।
कर्मेन्द्रियै कर्मयोगमसक्त स विशिष्यते॥
— भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

जो मनुष्य इन्द्रियो को मन से नियम में रखकर सगरहित होकर कर्म करनेवाली इन्द्रियो द्वारा कर्मयोग का आरम्भ करता है वह श्रेष्ठ पुरुष है।

वास्तव में वे ही लोग श्रेष्ठ हैं जिनके हृदय में सर्वदा दया और धर्म बसता है, जो अमृत-वाणी बोलते हैं तथा जिनके नेत्र नम्रतावश सदा नीचे रहते हैं।
— मलूकदास

महात्मा, गुणहीन साधारण जीवो पर भी दया करते है। चन्द्रमा चाण्डाल के घर से अपनी किरणो को हटा नही लेता। —हितोपदेश

जो सम्पूर्ण प्राणियो को शान्त रखने का प्रयत्न करता है, सर्वदा सत्य व्यवहार करता है, कोमल स्वभाव होकर सबका सम्मान करता है, सर्वदा शुद्ध भाव से रहता है वह कुल में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। —विदुर

सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति वह है जो अटल-प्रतिज्ञा के साथ सत्य का अनुसरण करता है, जो आन्तरिक और वाह्य सभी प्रलोभनो का प्रतिरोध करता है, जो भारी से भारी वोझो को खुशी से सहता है, जो तूफानो में शान्त रहता है, धमकियो तथा त्यौरियो में निडर रहता है और सत्य, नेकी तथा ईश्वर पर जिसकी निर्भरता सर्वथा अडिग है।

—चेनिंग

संकट (दे० 'दुःख', 'मुसीबत', 'विपत्ति')

सकट यदि न होते तो इस ससार में महान् व्यक्तियो के चरित्रो को, जो हीरे के समान आज चमक रहे है, कौन चमकाता। —अज्ञात

सबसे अधिक सकट का क्षण विजय के साथ आता है। —नेपोलियन

सकट का समय ही मनुष्य की आत्मा को परखता है। —टामस पेन

In great straits, and when hope is small, the boldest counsels are the safest

महान् सकट में और जब कि आशा बहुत कम होती है तब सबसे निडर सम्मति ही सबसे बडी सुरक्षा है। —लिवी

सकट के समय में बडे मनुष्य थोडे ही होते हैं और बाकी की कोई गिनती नही। छोटे-छोटे टीले जिनकी ऊँचाई खुले मौसम में साफ मालूम पडती है बाढ में डूब जाते है, लेकिन सबसे ऊँची पहाड की चोटियाँ पानी की सतह के ऊपर दिखाई पडती हैं।

—लायड जार्ज

संकल्प

इतिहास, पुराण सभी साक्षी हैं कि मनुष्य के सकल्प के सम्मुख देव, दानव सभी पराजित होते हैं। —एमर्सन

An abiding vow is like a fortress affording protection against dangerous temptation It cures one of weakness and vacillation

दृढ सकल्प एक गढ के समान है जोकि भयकर प्रलोभनो से हमको बचाता है, दुर्बल और डाँवाडोल होने से वह हमारी रक्षा करता है। — महात्मा गाधी

अच्छे काम को करने में धन की आवश्यकता कम पडती है, पर अच्छे हृदय और सकल्प की अधिक। — मूर

सकल्प की शुद्धि और दृढता ने भगवान् तक को घटो कच्चे धागे में बाँधकर नाच नचाया है। — अज्ञात

जब सकल्प दृढ हो जाता हैं, अध्यवसाय अशिथिल हो जाता है और महामाया के श्रीचरणो में अखड विश्वास हो जाता है—तब उद्देश्य की सफलता भी निश्चित हो जाती है। — अज्ञात

सकल्प कर लो, सोच समझकर कर लो, किन्तु करने के बाद उसे मत छोडो। सत्य सकल्प ही ईश्वर के प्रति सबसे बडी निष्ठा है। — अज्ञात

संगति (दे० 'कुसगति', 'सत्सगति')

असत सग के वास सो, गुन अवगुन ह्वै जात।
दूध पिवै कलवार घर, मदिरा सर्बाह बुझात॥ — विदुर

अच्छी सगति बुद्धि के अधकार को हरती है, वचनो को सत्य की धार से सींचती है, मान को बढाती है, पाप को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न रखती है और चारो ओर यश फैलाकर मनुष्यो को क्या क्या लाभ नही पहुँचाती ? —भर्तृहरि

Tell me with whom thou art found and I will tell thee who thou art

मुझे बताइए आपके सगी-साथी कौन हैं और मैं बता दूंगा कि आप कौन हैं।— गेटे

बुरे साथी हमें नरक में जाने के लिए निमन्त्रित और प्रलोभित करते हैं। — फील्डिग

काजर की कोठरी में कैसो हू सयानो जाय
एक लीक काजर की लागि है पै लागि है॥ — कहावत

सत सगत के वास सो, अवगुन हू छिपि जात।
अहिर धाम मदिरा पिवै, दूध जानियै तात॥ — विदुर

सगति सुमति न पावई, परे कुमति के वध।
राखो मेलि कपूर मे, हीग न होय सुगन्ध। —विहारी

शठ सुधर्रहि सतमगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई॥ —तुलसी

सगीत

मधुर सगीत आत्मा के ताप को शान्त कर सकता है। —महात्मा गाधी

मनोव्यथा जब असह्य और अपार हो जाती है, जब उसे कही त्राण नही मिलता, जब वह रुदन और क्रन्दन की गोद मे भी आश्रय नही पाती, तो वह सगीत के चरणो में जा गिरती है। —प्रेमचन्द

सगीत से क्रोध मिट जाता है। —महात्मा गांधी

सगीत मे क्रूर हृदय को भी शान्त करने का जादू है। —जेम्स ब्रम्सटन

सगीत के पीछे-पीछे खुदा चलता है—जिस दिल के दरिया को सगीत की बयार तरगित नही कर देती समझो कि उस दिल से शैतान भी डरता है। —सादी

Music is the universal language of mankind
मगीत मानव की विश्वव्यापी भाषा है। —लागफेलो

सगीत द्वारा मनुष्य जितनी जल्दी और सुगमता से अपने इष्टदेव में तन्मय हो जाता है वैसा साधन दूसरा नही है। जीवात्मा तथा परब्रह्म की जिस एकता के लिए योगी जन अपने रक्त-मास को सुखा देते है, वह सगीत द्वारा सहज में ही प्राप्त हो सकती है। —अज्ञात

सगीत की कसौटी यही है कि जड दीप उससे जल उठे। —डा० राजेन्द्र प्रसाद

मगीत में पशु-पक्षियो को भी वश मे करने की शक्ति होती है। —अज्ञात

सगीत टूटे हुए हृदय की औषध है। —ए० हन्ट

ससार मुझसे चित्रो में बात करता है, मेरी आत्मा सगीत मे उत्तर देती है। —रवीन्द्र

Music is well said to be the speech of angels
सगीत को फरिश्तो की भाषा ठीक ही कहा है। —कारलाइल

सगीत ही केवल ऐसा इन्द्रियसुख है जिसमें कोई बुराई नही होती। —जानसन

Music washes away from the soul the dust of everyday life

सगीत आत्मा की प्रतिदिन की मलिनता को दूर कर देता है। —आवेर वेच

वेदना के सुरो में ही स्वर्गीय सगीत की सृष्टि होती है। —अज्ञात

हमारे यहाँ भगवान् भी विना तो मुरली या डमरु के पूरे नही समझे गये हैं, मानव का तो प्रश्न ही क्या है। यह अकारण ही नही है कि विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती के हाथ में पुस्तक के साथ-साथ वीणा भी वतायी जाती है। —डा० राजेन्द्रप्रसाद

सग्रह

रागासक्ति-वश वस्तुओ का सग्रह करना विश्व का ऋणी होना है, उन्हें दूसरो की सेवा मे लगा देना ही उऋण होना है। —अज्ञात

सबै वस्तु सग्रह करै, आवै कोइ दिन काम।
समय परे पै ना मिलै, माटी खर्चे दाम॥ —अज्ञात

सच्चे सस्कृति-सुधार और सभ्यता का लक्षण परिग्रह की वृद्धि नही, वल्कि विचार और इच्छापूर्वक उसकी कमी है। जैसे-जैसे परिग्रह कम करते हैं वैसे-वैसे सच्चा सुख और सच्चा सन्तोष वढता है। —महात्मा गाधी

जलविन्दुनिपातेन क्रमश पूर्यते घट।
स हेतु सर्वविद्याना धर्मस्य च धनस्य च॥ —चाणक्य

एक-एक विन्दु से जैसे धीरे-धीरे घडा भर जाता है उसी तरह सभी विद्याओ, धर्म और धन का भी थोडा-थोडा सचय करने से विशाल सग्रह हो जाता है।

सग्राम

Worse than war is the fear of war

सग्राम की अपेक्षा सग्राम का भय अधिक निकृष्ट है। —सेनेका

War is death's feast

सग्राम मृत्यु (की प्रसन्नता) के लिए दिये गये भोज के समान है। —कहावत

सग्राम विनाश का विज्ञान है। —एवाट

मन के साथ सग्राम करना ही सवसे वडा सग्राम है। —स्वामी शिवानन्द

War makes thieves, and peace hangs them

सग्राम चोरो को उत्पन्न करता है और शान्ति उन्हें सूली पर चढाती है। —कहावत

संघटन

By uniting we stand, by dividing we fall

सघटन मे हमारा अस्तित्व कायम रहता है, विभाजन में हमारा पतन होता है।

—जान डिकिन्सन

अल्पानामपि वस्तूना सहति कार्यसाधिका।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्वध्यन्ते मत्तदन्तिन ॥ —हितोपदेश

छोटी-छोटी वस्तुओ के सघटन से भी कार्य सिद्ध हो जाता है, जैसे घास की वटी हुई रस्सियो से मतवाले हाथी बाँधे जाते हैं।

Union is strength —सघटन ही शक्ति है। —कहावत

सघे शक्ति कलौ युगे। कलियुग में सघटन में ही शक्ति है। —अज्ञात

संघर्ष

सघर्ष ही जीवन है। —अज्ञात

सघर्ष हमे आगे वढने की प्रेरणा देता है। जो सघर्प से डरते हैं, उन्हें चाहिए कि वे जगल की राह लें। —अज्ञात

सघर्पहीन जीवन और मृत्यु में अन्तर केवल इतना है कि हम साँस लेते हैं। —अज्ञात

संत

सत हृदय नवनीत समाना। —तुलसी (मानस-उत्तर)

नहिं शीतल है चन्द्रमा, हिम नहिं शीतल होय।
कविरा शीतल सतजन, नाम सनेही सोय॥ —कवीर

सत न छोडे सतई, कोटिक मिलैं असत।
मलय भुवगहिं वेधिया, सीतलता न तजत॥ —कवीर

विनु हरि कृपा मिलहिं नहिं सता। —तुलसी (मानस-सुन्दर)

दुखी और दीन पुरुषो के लिए सत ही परम आश्रय है।

—वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

सत कष्ट सहि आपुही, सुखी करै जु समीप।
आप जरै तऊ और को, करै उजेरो दीप॥ —कवि वृन्द

पारस मे अरु सत मे, वडो अतरो जान।
वह लोहा सोना करै, वह कर आपु समान॥ —अज्ञात

सपत्सु महता चित्त भवत्युत्पलकोमलम्।
आपत्सु च महागैलशिलासघातकर्कशम्॥ —भर्तृहरि

सतो का चित्त समृद्धि के समय कमल से भी कोमल होता है, परन्तु आपत्ति मे उनका चित्त पहाड के पत्थर से भी कडा हो जाता है।

बूंद अघात सहँ गिरि कैसे। खल के वचन सत सह जैसे॥
—तुलसी

जो कुठार चन्दन को काटता है, चन्दन उसी कुठार की मूठ में अपना गुण, सुगन्ध भर देता है। —अज्ञात

निज परिताप द्रवइ नवनीता।
पर दुख द्रवहि सत सुपुनीता॥—तुलसी (मानस-उत्तर)

सत विटप सरिता गिरि धरनी।
परहित हेतु सवन्ह कै करनी॥

उमा सत की इहै वडाई।
मन्द करत जो करै भलाई॥

हर मजहव में जितने सत हुए हैं उन सवका हृदय एक है, आपस में जो भेद दिखाई देते हैं वे अन्य लोगो ने पैदा किये हैं, सतो ने नही। —कुरान

सता हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्त करणप्रवृत्तय। —कालिदास

सन्देहजनक परिस्थितियो में सज्जनो के अन्त करण की प्रवृत्तियाँ प्रमाण वनती हैं।

संतान

जिस प्रकार हीरे की खान से हीरा और पत्थर की खान से पत्थर निकलता है, उसी प्रकार योग्य माता-पिता ही योग्य सतान उत्पन्न कर सकते हैं। —अज्ञात

सतान आत्मा की प्रतिमूर्ति है। —अज्ञात

दाने तपसि शौर्ये च यस्य न प्रथित यश ।
विद्यायामर्थलाभे च मातुरुच्चार एव स ।। —अज्ञात

दान, तप, शौर्य, विद्या और सम्पदा की दृष्टि से जिसके यश का लोग वखान नही करते वह सतान अपनी माता के मल के समान है।

सतान वह सवसे कठिन परीक्षा है जो ईश्वर ने मनुष्य को परखने के लिए गढी है। —प्रेमचन्द (कायाकल्प)

सतान को विवाहित देखना वुढापे की सवसे वडी अभिलाषा है। —प्रेमचन्द

संतोष

असतोष पर दु ख सतोप परम सुखम् ।
सुखार्थी पुरुपस्तस्मात् सतुष्ट सतत भवेत् ।। —महर्षि गौतम

असतोप ही सवसे वढकर दु ख है और सतोष ही सवसे वडा सुख है, अत सुख चाहनेवाले पुरुष को सदा सतुप्ट रहना चाहिए।

सतोष-सेतु जव टूट जाता है तव इच्छा का वहाव अपरिमित हो जाता है। —प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)

अपने तुच्छ शारीरिक स्वार्थों को परित्याग करने के उपरान्त जो सतोपसुख होता है वह चक्रवर्ती राजा हो जाने के सुख से भी हजारो गुना अधिक है। —अज्ञात

जैसे हरा चश्मा लगा लेने से सभी वस्तुएँ हरी-हरी ही दीखती हैं उसी प्रकार तोष धारण कर लेने पर सारा ससार आनन्दरूप ही दिखाई पडता है। —स्वामी भजनानन्द

गोधन गजधन वाजिधन, और रतन धन खान।
जव आवै सतोप धन, सव धन धूरि समान।। —कवीर

सन्तोपामृततृप्ताना यत्सुख शान्तचेतसाम् ।
न च तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम् ।। —चाणक्य

सतोषरूपी अमृत से जो लोग तृप्त होते हैं, उनको जो शाति और सुख होता है वह धन के लोभियो को, जो इधर-उधर दौडा करते है, नहीं प्राप्त होता।

Contentment is natural wealth, luxury is artificial poverty
सतोष स्वाभाविक धन है, विलासिता कृत्रिम दरिद्रता है। —सुकरात

He is well paid that is well satisfied
वह अच्छा वेतन पाता है जो पूर्ण सन्तुष्ट है। —शेक्सपियर

सतोप से वढकर अन्य कोई लाभ नही। जो मनुष्य इम विशेप मद्‌गुण मे सम्पन्न है वह त्रिलोक में सव से धनी व्यक्ति है। —स्वामी शिवानन्द

सतोप यद्यपि कड़ुवा वृक्ष है, तथापि इसका फल वडा ही मीठा और लाभदायक है। —मौलाना रूमी

Contentment gives a crown where fortune hath denied it
सतोष मुकुट पहनाता है, जहाँ भाग्य उससे वचित रखता है। —फोर्ड

Contentment is the best food to preserve a sound man, and the best medicine to restore a sick one
मनुष्य को स्वस्थ रखने के लिए सतोष एक सर्वोत्तम भोज्य पदार्थ है एव रोगी को नीरोग रखने के लिए सर्वोत्तम औषध है। —डब्लू० सीकर

An ounce of contentment is worth a pound of sadness, to serve God with
ईशसेवा के लिए सतोष की एक रत्ती, शोक के एक तोले के तुल्य है। —फुलर

कोउ विस्राम कि पाव, तात सहज सन्तोष विन।
जल विन चलइ कि नाव, कोटि जतन रचिपचि मरिय।। —तुलसी

चाह गई चिन्ता मिटी, मनुवाँ वेपरवाह।
जिनको कछू न चाहिए, सोई साहसाह।। —कवीर

Content is more than a kingdom
सतोष साम्राज्य से भी वढकर है। —कहावत

एक हिन्दू के जीवन में सतोष की मात्रा स्वभावत अधिक होती है। वह सुन्दर परलोक के ख्याल से भूखा रहकर भी सतुष्ट रहने में अपना गौरव समझता है। —अज्ञात

The noblest mind the best contentment has
सर्वोत्कृष्ट मनुष्य को ही सर्वोत्तम सतोष होता है। —स्पेन्सर

सतोष वह पारस पत्थर है जो जिस वस्तु को छूता है उसे सोना बना देता है। —कहावत

विनु सतोष न काम नसाही। काम अछत सुख सपनेहुँ नाही। —तुलसी

क्रोधो वैवस्वतो राजा तृष्णा वैतरणी नदी।
विद्या कामदुघा धेनु सतोपो नन्दन वनम्॥ — चाणक्य

क्रोध यमराज है और तृष्णा वैतरणी नदी है, विद्या कामधेनु गाय और मन्तोप देवराज इन्द्र का नन्दनवन है।

शान्तितुल्य तपो नास्ति न सन्तोषात्पर सुखम्।
न तृष्णाऽया परो व्याधिन च धर्मो दयापर॥ —चाणक्य

शान्ति के समान दूसरा तप नही है, न सन्तोष से परे मुख है, तृष्णा से वढकर दूसरी व्याधि नही है, न दया से अधिक धर्म है। — चाणक्य

दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्यो लोभाच्च नान्योऽस्ति पर पृथिव्याम्।
विभूषण शीलसम न चान्यत्सतोषतुल्य धनमस्ति नान्यत्॥
—पचतन्त्र

दान के समान दूसरी निधि नही है, लोभ के समान दूसरा शत्रु नही है, शील के समान दूसरा भूषण नही है और सतोप के समान दूसरा धन नही है।

संदेह

सन्देह पानी का वुलवुला नही है जो एक क्षण में भग हो जाता है। सन्देह तो धूमकेतु की रेखा है जो आकाश में एक छोर से दूसरे छोर तक फैली रहती है। और धूमकेतु जानते हो किस वात का प्रतीक है? भय का, आशका का, अमगल का।
— डा० रामकुमार वर्मा

मनुष्य-प्रकृति का यह गुण है कि जव थोडा-सा भी सदेह हो जाता है तो साधारण से भी साधारण घटनाएँ उस सदेह का समर्थन करने लग जाती हैं। — अज्ञात

जव मनुष्य को सदेह अधिक होता है तो वुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। — अज्ञात

सन्देह हमारा शत्रु है, वह हमारे हृदय में भय उत्पन्न करता है, जिससे हमें जिस पर विजय प्राप्त करने का पूरा भरोसा होता है, उसी के सामने नत-मस्तक होना पडता है। — शेक्सपियर

Doubt is brother devil to despair.
सदेह नैराश्य का भ्राता है। — ओरेली

सधि

उपकर्त्रारिणा सधिर्न मित्रेणापकारिणा।
उपकारापकारौ हि लक्ष्य लक्षणमेतयो ॥ — माघ

उपकारी शत्रु के साथ भी सन्धि कर लेना उचित है, किन्तु अपकारी मित्र के साथ कभी) नही, क्योकि इस उपकार और अपकार को ही मित्र और शत्रु का लक्षण मझना चाहिए।

सन्यास

काम्याना कर्मणा न्यास सन्यास कवयो विदु ।
— भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

कामना से उत्पन्न हुए कर्मों के त्याग को ज्ञानी सन्यास के नाम से जानते है।

सन्यास स्वार्थ है, सेवा त्याग है। — प्रेमचन्द

गीता का प्रेरक मत्र यह कहा जा सकता है—"सब धर्मो को तजकर मेरी शरण ले।" यह सच्चा सन्यास है। परन्तु सब धर्मों के त्याग का मतलब सब कर्मों का त्याग नही है। परोपकार के कर्मों मे भी जो सर्वोत्कृष्ट कर्म हो उन्हें ईश्वर के अर्पण करना और फलेच्छा का त्याग करना, यह सर्वधर्म-त्याग या सन्यास है। — महात्मा गाधी

सन्यासी

सन्यासी के लिए सेवाकार्य छोडने की जरूरत नही है, अहकार और आसक्ति छोडने की आवश्यकता है। — विनोबा

कर्म-मात्र का त्याग गीता के सन्यास को भाता ही नही। गीता का सन्यासी अति कर्मी होने पर भी अति अकर्मी है। — महात्मा गाधी

संपत्ति

आपन्नार्तिप्रशमनफला सम्पदो ह्युत्तमानाम्। — कालिदास

उत्तम पुरुषो की सपत्ति का मुख्य प्रयोजन यही है कि औरो की विपत्ति का नाश हो।

सम्पति भरम गँवाइ के, हाथ रहत कछु नाहि।
ज्यो रहीम ससि रहत है, दिवस अकासहि माहि॥ — रहीम

बेईमानी से जमा की हुई सम्पत्ति ऐसी है जैसी मृग के लिए कस्तूरी ।— अज्ञात

I consider my ability to arouse enthusiasm among the men, the greatest asset I possess and the way to develop the best that is in a man is by appreciation and encouragement

लोगो मे उत्साह भरने की अपनी योग्यता को ही मै अपनी सबसे बडी सम्पत्ति समझता हूँ और मनुष्य के भीतर जो कुछ सर्वोत्तम है उसका विकास, प्रशसा एव प्रोत्साहन द्वारा ही किया जा सकता है। —चार्ल्स श्वेब

पवित्रता वह सम्पत्ति है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होती है। —रवीन्द्र

जहाँ सम्पत्ति है वही सुख है, परन्तु सम्पत्ति के भेद से ही सुख का भी भेद है— दैवी सम्पत्तिवालो को परमात्मसुख, आसुरीवालो को आसुरी सुख और नरक के कीडो को नारकीय सुख। —हनुमानप्रसाद पोद्दार

जहाँ सुमति तहँ सम्पत्ति नाना। —तुलसी

आपत्ति मे पडे हुए पुरुषो की पीडा हर लेना ही सत्पुरुषो की सम्पत्ति का सच्चा फल है। सम्पत्तिमान् होकर भी मनुष्य यदि विपत्ति-ग्रस्तो के काम न आया तो उसकी सम्पत्ति किस काम की। —कालिदास

सा लक्ष्मीरुपकुरुते यया परेषाम्। भारवि

वही सम्पत्ति सम्पत्ति है जो औरो का उपकार करे।

सभाषण

A good speech is a good thing, but the verdict is the thing

सम्भाषण एक अच्छी वस्तु है, किन्तु मुख्य वस्तु निर्णय है। —डेनियल ओकानल

Great talkers are like leaky vessels, everything runs out of them

बातूनी लोग छिद्रयुक्त बर्तन के तुल्य है जिनमें से सभी वस्तुएँ बह जाती है। —सी० सिमन्स

संयम

विद्यार्थी अवस्था मे सयम की महान् विद्या सीख लेनी चाहिए। जब आप सयम की शक्ति का सग्रह कर लेगे तो एकाग्रता भी, जो जीवन की एक महान् शक्ति है, पा लेंगे। —विनोबा

वलवान् वनने के लिए एक और जरूरी वात है सयम। मै इन्द्र हूँ, ये इन्द्रिया मेरी शक्तियां है। —विनोवा

सयमहीन जीवन विपत्तियो का आगार वन जाता है। —अज्ञात

Most powerful is he who has himself in his own power
जो आत्मसयमी है वही सर्वशक्तिमान् है। —सेनेका

जो अपने ऊपर शासन कर सकते है वही दूसरो पर भी करते है।
—हैजलिट

No man is free who cannot command himself
जो आत्मसयमी नही है वह स्वतत्र नही है। —पाइथागोरस

सवेदना (दे० 'सहानुभूति')

उन पाषाणवत् हृदयो को धिक्कार है जो दूसरे के दु ख को कोमलता से अपनाकर द्रवीभूत नही हो जाते। —ए० हिल

सशय (दे० 'सन्देह')

सशय बडे घातक है। ये हमारी उत्पादक शक्ति को नष्ट कर देते है—हमारी अभिलाषा को पगु और शक्तिहीन वना देते है। —स्वेट मार्डेन

Doubt comes in at the window when inquiry is denied at the door
जहाँ जाँच-पडताल से इनकार कर दिया जाता है, वहाँ सशय गुप्त रास्ते से उपस्थित हो जाता है। —जोवेट

Men was not made to question but adore
मानव सन्देह करने के लिए नही, वरन् उपासना करने के लिए वनाया गया है।
—यग

नासमजससशीलैस्तु सहासीत कथचन।
सद्वृत्तसन्निकर्षो हि क्षणार्धमपि शस्यते॥ —विष्णुपुराण

सशयशील व्यक्ति के साथ कभी न रहे, सदाचारी पुरुषो का तो आधे क्षण का भी सयोग प्रशसनीय है।

अज्ञश्चाश्रद्धधानश्च सशयात्मा विनश्यति।
नाय लोकोऽस्ति न परो न सुख सशयात्मन ॥ — भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

जो अज्ञानी, श्रद्धारहित और सशयवान् है, उसका नाश होता है। सशयवान् के लिए न यह लोक है, न परलोक है, उसे कही सुख नही है।

संसार

यह ससार प्रचड तूफानो का ससार है, इसको सौन्दर्य-सगीत शान्त किये हुए है। — रवीन्द्र

यह ससार एक सुन्दर पुस्तक है, परन्तु जो इसे पढ नही सकता उसके लिए व्यर्थ है। — गोल्डोनी

ससार परिवर्तनशील फेन है जो शान्तिरूपी सागर की सतह पर सदैव तैरता रहता है। — रवीन्द्र

You will never have a quiet world till you knock patriotism out of the human race

तुम शान्त ससार कभी नही पा सकते, जब तक कि मानव-जाति से देश-प्रेम निकाल नही फेंकते। — बर्नार्ड शा

Hell is God's justice, heaven is His love, earth, His long suffering

नरक ईश्वर का न्याय है, स्वर्ग उसका प्रेम है, पृथ्वी उसकी दीर्घकालीन यातना है। बारोन बेसेन बर्ग

जब मनुष्य मुस्कराया तब ससार ने उससे प्रेम किया, जब उसने अट्टहास किया तब ससार उससे भयभीत हो गया। — रवीन्द्र

लोक एव विषयानुरजन दु खगर्भमपि मन्यते सुखम्।
आमिष बडिशगर्भमप्यहो मोहतो ग्रसति यद्वदण्डज ॥ — अज्ञात

मछली जैसे मास को ही देखती है, उसके नीचे छिपी बर्शी को नही, वैसे ही यह ससार विषयो के बाह्य आकर्षण को ही देखता है, विषयो के परिणामरूप अवश्यम्भावी दु खो को नही।

जिस ससार में दैववश प्राप्त अपने शरीर और फल-पुष्पादि अवयवो से बारबार उपकार करनेवाला वृक्ष भी कुठारो से काटा जाता है, ऐसे कृतघ्न ससार से उपकार की क्या आशा है? — अज्ञात

Everything is for the best in this best of all possible worlds

सभी सम्भव ससारो में यह ससार सर्वोत्तम है और इसमे सभी वस्तुएँ सर्वोत्तम के लिए है। —वाल्टेयर

संस्कार

सस्कार का अर्थ सहार नही है। जो क्षेत्र-सस्कारक खेत की घासो के साथ अन्न के पौधो को भी उखाड देना चाहेगा वह सस्कारक नाम का अधिकारी नही।

—हरिऔध

सस्कारो की दासता सबसे भयकर शत्रु है। —अज्ञात

जन्मना जायते शूद्र सस्काराद् द्विज उच्यते। —स्मृति

जन्म से मनुष्य शूद्र ही पैदा होता है, किन्तु सस्कार होने से द्विज कहलाता है।

जो सस्कार हृदय मे बद्धमूल हो जाते है वे जीवन-पर्यन्त साथ नही छोडते।

—हरिऔध

जैसे कुम्हार द्वारा मिट्टी के बर्तन में खीची गयी रेखाएँ फिर कभी नही छूटती, उसी प्रकार माता-पिता द्वारा डाले गये सस्कार बच्चो के मन से कभी नही छूटते।—अज्ञात

संस्कृति

सस्कृति की चाहे कोई भी परिभाषा क्यो न हो, किन्तु उसे व्यक्ति, समूह अथवा राष्ट्र की सीमाओ में बाँधना मनुष्य की सबसे बडी भूल है। —प० जवाहरलाल नेहरू

कोई भी सस्कृति जीवित नही रह सकती यदि वह अपने को अन्य से पृथक् रखने का प्रयास करे। —महात्मा गाधी

Serenity of spirit, poise of mind, is one of the last lesson of culture and comes from a perfect trust in the all controlling force of universe

स्वभाव की गम्भीरता, मन की समता, सस्कृति के अतिम पाठो में से एक है और यह समस्त विश्व को वश में करनेवाली शक्ति में पूर्ण विश्वास से उत्पन्न होती है। —मार्डन

जो सस्कृति महान् होती है, वह दूसरो की सस्कृति को भय नही देती, बल्कि उसे साथ लेकर पवित्रता देती है। गगा महान् क्यो है? दूसरे प्रवाहो को अपने मे मिला लेने के कारण ही वह पवित्र रहती है। —साने गुरु

While civilization is the body, culture is the soul, while civilization is the result of knowledge and great painful researches in diverse fields, culture is the result of wisdom

सभ्यता शरीर है, सस्कृति आत्मा, सभ्यता जानकारी और भिन्न क्षेत्रो में महान् एव दु खदायी खोज का परिणाम है, सस्कृति ज्ञान का परिणाम है। —श्रीप्रकाश

Culture is to know the best that has been said and thought in the world

विश्व के सर्वोत्कृष्ट कथनो और विचारो का ज्ञान ही सस्कृति है।

—मैथ्यू आर्नल्ड

नेकी और ज्ञान का समिश्रण होना चाहिए। मैंने जीवन में पाया है कि केवल नेकी ही बहुत उपयोगी नही है। हमे विवेकशील गुण को विकसित करना चाहिए जोकि आध्यात्मिक साहस और चरित्र के साथ आता है।

—महात्मा गांधी

Partial culture runs to the arnate, extreme culture to simplicity

आशिक सस्कृति शृगार की ओर दौडती है, अपरिमित सस्कृति सरलता की ओर। —बोवी

सच्चरित्र (दे० 'चरित्र')

सच्चरित्रता ही वह सर्वोत्तम सपत्ति है जो कोई भी व्यक्ति आनेवाली सतानो के लाभ के लिए दे सकता है। —स्वामी शिवानन्द

चरित्र बुद्धि की अपेक्षा अधिक उच्च है। —एमर्सन

Character is simply a habit long continued

चरित्र केवल एक स्थायी स्वभाव है। —प्लूटार्क

विनीत, दयालु और सच्चरित्र होना धर्म का परम तत्त्व है।

—विलियम पेन

चरित्र का सुधारना ही मनुष्य का परम लक्ष्य होना चाहिए। —टा० ग्रीन

चरित्र को उज्ज्वल और पवित्र रखना चाहिए। —चेस्टरफील्ड

ससार मे सच्चरित्र मनुष्य ही उन्नति प्राप्त करते हैं। —चेस्टरफील्ड

When wealth is lost, nothing is lost,
When health is lost, something is lost,
When character is lost, all is lost

जब धन गया, कुछ भी नही गया,
जब स्वास्थ्य गया, कुछ गया,
जब चरित्र गया, सब कुछ गया। —अज्ञात

महान् चरित्र का निर्माण महान् और उज्ज्वल विचारो से होता है।
—स्वामी शिवानन्द

There is no substitute for beauty of mind and strength of character

मन के सौन्दर्य और चरित्रबल की समानता करनेवाली कोई दूसरी वस्तु नही।
—जे० एलन

मनुष्य की सबसे बडी आवश्यकता शिक्षा नही, वरन् चरित्र है और यही उसका सबसे बडा रक्षक है। —हर्बर्ट स्पेन्सर

चरित्र जब तक उज्ज्वल रहता है तब तक उसे सहेजकर चलने की इच्छा रहती है। जब दुर्भाग्यवश उसमे एक भी छीटा लग जाता है तो हम गन्दे वस्त्र की भाँति उसकी चिंता नही करते। — अज्ञात

Be a man of action and high character

कर्मशील बनो और उच्च चरित्रवान् मनुष्य बनो। —नेपोलियन

अपने चरित्र को दर्पण के समान सहेजकर रखो जिससे दूसरो को भी उसमें अपना प्रतिबिम्ब देखने की आकाक्षा हो। —अज्ञात

चरित्र एक बार जब गिर जाता है तब मिट्टी के बरतन की भाँति चकनाचूर हो जाता है। —अज्ञात

सचाई

सचाई से जिसका मन भरा है, वह विद्वान् न होने पर भी देशसेवा बहुत कर सकता है। —पं० मोतीलाल नेहरू

सचाई की परख सुख में नही, विपत्ति के समय हुआ करती है। —अज्ञात

सच्चा

ove all, to thine ownself be true

य बात यह है कि अपने साथ सच्चे बनो। —शेक्सपियर

सच्चिदानन्द

सत्य के साथ ज्ञान, शुद्ध ज्ञान अवश्यम्भावी है। जहाँ सत्य नही है, वहाँ शुद्ध ज्ञान की सम्भावना नही है। इसीसे ईश्वर के नाम के साथ चित् अर्थात् ज्ञान शब्द की योजना हुई है और जहाँ सत्य ज्ञान है—वहाँ आनन्द ही होगा, शोक होगा ही नही। सत्य के शास्वत होने के कारण आनन्द भी शाश्वत होता है। इसी कारण ईश्वर को हम सच्चिदानन्द नाम से भी पहचानते है। —महात्मा गाधी

सज्जन (दे० 'महापुरुष,' 'महात्मा,' 'महान्,' 'संत,' 'सत्यपुरुष,' 'साधु')

सर्वत्र च दयावन्त सन्त करुणवेदिन। —वेदव्यास

सज्जनो का यह लक्षण है कि वे सदा दया करनेवाले और करुणाशील होते है।

कीचड से काचन को लेना, यह तो सज्जनो की रीति है।

—विनोवा

नि शब्दोऽपि प्रदिशसि जल याचितश्चातकेभ्य
प्रत्युक्त हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव ॥ —कालिदास

हे मेघ, विना गरजे हुए भी तुम चातक को वर्षाजल से तृप्त करते हो, क्योकि प्रार्थना करनेवालो के मनोरथको पूरा कर देना ही सज्जनो का जवाव होता है।

सज्जन पुरुष विना कहे ही दूसरो की आशा पूरी कर देते है, जैसे सूर्य स्वय ही घर घर प्रकाश फैला देता है। —अज्ञात

सज्जन मनुष्यो का चित्त किसी के क्रुद्ध होने पर भी नही विगडता, जैसे समुद्र का जल फूस की लुकारी से गरम नही किया जा सकता। —हितोपदेश

ससार में सज्जन मनुष्य ही स्वतंत्र होते है, नीच मनुष्य दास होते है। —प्लूटार्क

दातार सविभक्तारो दीनानुग्रहकारिण ।
सर्वभूतदयावन्तस्ते शिष्टा शिष्टसम्मता ॥ — वेदव्यास

सज्जनो की सम्मति मे वे ही लोग सभ्य पुरुष माने जाते है, जो दानी, अपने आश्रितो के भाग को न्यायपूर्वक अर्पण करनेवाले, दीन जनो पर अनुग्रह करनेवाले और सब प्राणियो के प्रति दयालु होते है।

दर्शनध्यानसस्पर्शैर्मत्सी कूर्मी च पक्षिणी।
शिशु पालयते नित्य तथा सज्जनसगति ॥ — चाणक्य

मछली, कछुई और पक्षी ये दर्शन, ध्यान और स्पर्श से जैसे बच्चो (अडो) को सर्वदा पालते है वैसे ही सज्जनो की सगति है।

स्वाभिमानी होना सत्पुरुष का सच्चा लक्षण है। — अज्ञात

Propriety of manners and consideration for others are the two main characteristics of a gentleman

व्यवहारो की शुद्धता और दूसरो के प्रति आदर यही सज्जन मनुष्य के दो मुख्य लक्षण है। — डिजरायली

प्रसादसौम्यानि सता सुहृज्जने पतति चक्षूषि न दारुणा शरा । — कालिदास

सज्जन अपने मित्रो पर कृपा की दृष्टि डालते है, शरो की वर्षा नही करते।

अद्यापि नोज्झति हर किल कालकूट कूर्मो बिभर्ति धरणी खलु पृष्ठभागे।
अभोनिधिर्वहति दुर्वहवाडवाग्निमगीकृत सुकृतिन परिपालयन्ति॥ — अज्ञात

आज तक भगवान् शकर कालकूट विष का परित्याग नही करते, कच्छपरूप भगवान् विष्णु अपनी पीठ पर पृथ्वी धारण किये ही है और समुद्र भी असह्य वडवानल को धारण कर रहा है। वस्तुत सज्जन लोग अगीकार किये हुए वचन और कर्म का सदा पालन ही करते है।

परिचरितव्या सन्तो यद्यपि कथयन्ति नो सदुपदेशम्।
यास्तेषा स्वैरकथास्ता एव भवन्ति शास्त्राणि॥ — अज्ञात

सज्जनो की उपासना करनी चाहिए, चाहे वे उपदेश न भी करते हो, क्योकि जो उनके निजी वार्तालाप है वही सदुपदेश हो जाते है।

सज्जन के साथ यदि कोई अपकार करता है तो वे अपनी सज्जनता को नही त्यागते, जैसे चन्दन के वृक्ष को काटने पर कुल्हाडी भी महकने लगती है। — अज्ञात

He makes light of favours while he does them and seems to receiving when he is conferring

सज्जन दूसरो का उपकार वहुत विनम्रता से करता है और ऐसा प्रतीत होता वह उपकार पा रहा है जब कि वह कर रहा है। —सी० न्यूमैन

त्यजन्ति शूर्पवद्दोषान् गुणान् गृह्णन्ति साधव ।
दोषग्राही गुणत्यागी, चालनीवद्धि दुर्जन ॥ —अज्ञात

सज्जनो का स्वभाव सूप के समान होता है जो दोषरूप ककड आदि को दूर कर देता है और गुणरूप धान्य को अपने पास रख लेता है। दुर्जनो का स्वभाव चलनी के समान होता है जो दोषरूप चोकर आदि अपने पास रख लेती है और गुणरूप आटे आदि को अलग गिरा देती है।

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णास्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभि प्रीणयन्त ।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्य निजहृदि विकसन्त सन्ति सन्त कियन्त ॥
—भर्तृहरि

मन, वचन और शरीर में पुण्यामृत से परिपूर्ण, उपकारो से तीनो लोको को तृप्त करनेवाले और दूसरो के अणु मात्रगुण को पर्वत के वरावर मानकर अपने हृदय में प्रसन्न होनेवाले सज्जन कितने हैं ? अर्थात् इन गुणो से सम्पन्न सज्जन ससार में इने गिने ही हैं।

विप्रियमप्याकर्ण्य ब्रूते प्रियमेव सर्वदा सुजन ।
क्षार पिवति पयोधेर्वर्षत्यम्भोधरो मधुरम् ॥ —अज्ञात

जिस प्रकार वादल समुद्र का खारा पानी पीकर भी मीठा जल ही वरसाता है उसी प्रकार सज्जन किसी की कटुवाणी सुनकर भी सदा मधुर वाणी ही वोलता है।

सन्तोऽसत्सु न रमन्ते, हस प्रेतवने न रमते। —कौटिल्य

सज्जन असज्जनो के साथ नही रहते, हस श्मशान में नही रहता।

दुर्जन प्राणी मिट्टी के घडे के सदृश अनायास फूट जाते हैं, और वडी कठिनाई से जोडे जा सकते हैं, परन्तु सज्जन प्राणी सोने के घट के समान हैं जो सहज में टूटते नही तथा टूटने पर सरलता से जोडे जा सकते हैं। —हितोपदेश

टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ वार।
रहिमन फिरि फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार॥ —रहीम

उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता॥

उदय होते समय सूर्य लाल होता है और अस्त होते समय भी, सम्पत्ति के समय तथा विपत्ति के समय महान् पुरुषो मे एकरूपता देखी जाती है (उनमें विकार नही होता)।

आदान हि विसर्गाय सता वारिमुचामिव। —कालिदास

बादलो के समान सज्जन पुरुष भी दान करने के लिए ही किसी वस्तु को ग्रहण करते हैं।

भला काम करने का स्वभाव ऐसा साधन है जिसको शत्रु छीन नही सकता और चोर चुरा भी नही सकता। —मा० ओरिलियस

Repose and cheerfulness are the badge of the gentleman
शान्ति और प्रसन्नता सज्जन पुरुष के लक्षण हैं। —एमर्सन

अजलिस्थानि पुष्पाणि वासयन्ति करद्वयम्।
अहो सुमनसा प्रीतिर्वामदक्षिणयो समा॥ —अज्ञात

जिस प्रकार अजलि में रखे हुए पुष्प दोनो हाथो को समान रूप से सुगधित करते है, उसी प्रकार सज्जन दोनो के प्रति कृपालु ही रहते है।

असज्जन सज्जनसङ्गिसङ्गात् करोति दु साध्यमपीह लोके।
पुष्पाश्रया शम्भुजटाधिरूढा पिपीलिका चुम्वति चन्द्रविम्वम्॥

असज्जन भी सज्जनो की सगति से इस ससार में दु साध्य काम कर डालते हैं। फूलो के सहारे चीटी शकर की जटा पर बैठकर चन्द्रमा का चुम्बन लेने पहुँच जाती है। —अज्ञात

केषा न स्यादभिमतफला प्रार्थना ह्युत्तमेषु। —कालिदास

सज्जनो से की हुई प्रार्थना किनकी सफल नही होती?

सज्जन पुरुष कष्टो को कोमल कुसुमो के स्पर्श की भाँति हर्षोत्फुल्ल होकर सहन किया करते हैं। —अज्ञात

याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा। —कालिदास

सज्जन से निष्फल याचना भी अच्छी, नीच से सफल याचना भी अच्छी नही।

It is almost a definition of a gentleman to say he is one who never inflicts pain

सज्जन पुरुष की वास्तविक परिभाषा यही है कि वह कभी किसी व्यक्ति को पीडित नही करता। —न्यूमैन

सज्जनता

राजकीय ठाट-बाट की अपेक्षा सुजनता की दरिद्रता अधिक मीठी है।
—रस्किन

Gentlemanliness, being another word for intense humanity

सज्जनता उत्कृष्ट मानवता के लिए दूसरा शब्द है। —टार्स्कन

भवति नम्रास्तरव फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्भूरि विलम्बिनो घना ।
अनुद्धता सत्पुरुषा समृद्धिभि स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥
—कालिदास

फल के आने से वृक्ष झुक जाते हैं, नव वर्षा के समय बादल झुक जाते हैं, सम्पत्ति के समय सज्जन नम्र होते हैं—परोपकारियो का स्वभाव ही ऐसा है।

सत्य और न्याय का समर्थन मनुष्य की सज्जनता और सभ्यता का एक अग है।
—प्रेमचन्द

सतीत्व

राजभक्त को राजा, जौहरी को उत्तम हीरा, प्यासे को शीतल जल और रोगी को सजीवनीरस जैसे प्यारे और आदर के पदार्थ होते हैं, स्त्रियो के लिए सतीत्व उससे कही अधिक प्यारी और आदर की वस्तु है। —अज्ञात

Chastity is a wealth that comes from abundance of love

सतीत्व वह सम्पत्ति है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होती है। —रवीन्द्र

सतीत्व घर की चहारदीवारी में नही उपजता। यह ऊपर से लादा नही जा सकता। परदे की दीवारें इसकी रक्षा नही कर सकती। यह अन्त करण से उत्पन्न होता है और इसका मूल्य तभी कुछ है, जब इसमे सभी प्रलोभनो पर विजय पाने की क्षमता होती है। —महात्मा गाधी

जैसे बिना जल के मीन और बिना आहार के मनुष्य नही रह सकता, वैसे ही बिना सतीत्व और पतिव्रत के धर्म का अकुर हृदयभूमि में नही जम सकता। —अज्ञात

जैसे सोने का खरा-खोटापन अग्नि की ज्वलन्त शिखा मे प्रकट होता है, स्त्री का सतीत्व भी वैधव्य की कठोर यातना में पूर्ण रूप मे प्रमाणित होता है। — अज्ञात

जैसे अकेले चन्द्रमा से आकाश में शोभा होती है, सहस्रो तारागणो के उदय होते हुए भी विना चन्द्रमा के वैसी शोभा नही होती। इसी प्रकार और सब गुणो के होते हुए भी सतीत्वरूपी रत्न न होने से वे सारे गुण स्त्रियो को वैसी शोभा नही दे सकते।

— अज्ञात

सत्कार (दे० "मान")

आवत ही हर्षे नही, नयनन नही सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइए, कचन वरसे मेह॥ — तुलसी
रहिमन रहिला की भली, जो परसै चित लाय।
परसत मन मैला करे, सो मैदा जरि जाय॥ — रहीम

सत्ता

सत्ता कभी लुप्त भले ही हो जाय, किन्तु उसका नाश नही होता। गृह का रूप न रहेगा तो ईंटे रहेंगी जिनके मिलने पर गृह वने थे। वह रुप भी परिवर्तित हुआ तो मिट्टी हुई, राख हुई, परमाणु हुए। उस चेतन के अस्तित्व की सत्ता कही नही जाती, और न उसका चेतनमय स्वभाव उससे भिन्न होता है। — जयशकर प्रसा

The highest duty is to respect authority
सत्ता का सम्मान ही सर्वोच्च कर्त्तव्य है। — प

Power gradually extirpates from the mind every humane ai gentle virtue
सत्ता धीरे धीरे सभी मानवीय और अच्छे गुणो का नाश कर देती है। — बर्

सत्पुरुष (दे० "सज्जन")

पुष्प, चन्दन, तगर या चमेली किसी की सुगन्ध वायु के विपरीत कभी नही जाती। किन्तु सन्तो का यश वायु के विपरीत भी फैलता है। सत्पुरुष सभी दिशाओ को अपनी सुगन्ध से वासित कर देते हैं। — भगवान् वुद्ध

सत्पुरुषो की मनोवृत्ति सर्वदा धर्म की ओर ही रहती है। सत्पुरुष ही भूत और भविष्य के आधार हैं। — वेदव्यास (महाभारत, शांतिपर्व)

सत्य

सत्यमेव जयते नानृतम्। —मुंडकोपनिषद

सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नही।

सत्य से वढकर धर्म नही है। सत्य स्वय परब्रह्म परमात्मा है।

—वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

सत्य ही सर्वोत्तम नीति है। —महात्मा गांधी

सत्य अनत रूप में असत्य की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। —विवेकानन्द

ईश्वर सत्य है और प्रकाश उसकी छाया। —प्लेटो

सत्य एक है, उसकी उपासना करनेवाले उसे अलग अलग नामो से पुकारते हैं।

—विनोबा

सत्य सहस्रो अश्वमेघो से भी श्रेष्ठ है। —वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

परमेश्वर सत्य है, यह कहने के वजाय "सत्य ही परमेश्वर है" यह कहना अधिक उपयुक्त है। —महात्मा गाधी

धरमु न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान वखाना॥ —तुलसी

Time is precious but "truth" is more precious than time

समय मूल्यवान् है, परन्तु "सत्य" समय की अपेक्षा अधिक मूल्यवान् है।

—डिजरायली

सत्य मूल सब सुकृत सुहाई। वेद पुराण विदित मुनि भाई॥

—तुलसी (मानस, अयोध्या)

सत्य का सर्वश्रेष्ठ अभिनन्दन यह है कि हम उसको आचरण मे लाये।

—एमर्सन

सत्य की कभी हार नही होती। —प्रेमचन्द

My way of joking is to tell the truth Its the funniest joke in the world

सत्य को कह देना ही मेरे मजाक करने का तरीका है। ससार में यह सबसे विचित्र मजाक है। —जार्ज वर्नार्ड शा

सत्य तो अमूर्त है, इसलिए सब लोग अपने को ठीक लगे, ऐसे सत्य की मूर्ति की कल्पना कर ले। —महात्मा गाधी

सत्य की सहायता से ही ऋषिगण देवयान मार्ग से परमात्मा के परम धाम तक पहुंचते हैं। —उपनिषद्

सत्य कभी वृद्ध नही होता। —कहावत

विलास के प्रेमी सत्य का पालन नही करते। —प्रेमचन्द

One of the sublimest things in the world is plain truth

सरल सत्य ससार की सर्वोत्कृष्ट वस्तुओ मे से एक है। —बुल्वर

न्याय से बढकर कोई रक्षक नही, विचार से बढकर कोई राजा नही, पदार्थ से बढकर कोई खड्ग नही और सत्य से बढकर कोई सत्य नही। —सुकरात

सारे वेदो को पढ ले और सारे तीर्थों मे स्नान कर ले फिर भी सत्य उनसे बढकर है। —वेदव्यास (महाभारत, आदिपर्व)

सत्य ईश्वर की आत्मा है और प्रकाश उसका शरीर है। —पाइथॅगोरस

Truth's best ornament is nakedness

सत्य का सर्वोत्कृष्ट अलकार नग्नता है। —कहावत

'Tis strange, but true, for truth is always strange, stranger than fiction

यह अनोखी बात है परन्तु सत्य है कि सत्य सदैव अनोखा होता है, कहानी से भी ज्यादा अनोखा। —बायरन

सत्य हि परम बलम्। —वेदव्यास (म०)

सत्य ही परम बल है।

जो सत्य जानता है, मन से, वचन से और काया से सत्य का आचरण करता है, वह परमेश्वर को पहचानता है। इससे वह त्रिकालदर्शी हो जाता है। उसे इसी देह मे मुक्ति प्राप्त हो जाती है। —महात्मा गाधी

सत्यस्य वचन श्रेय सत्यादपि हित वदेत्। —वेदव्यास

सत्य बोलना श्रेय का प्रधान साधन है, सत्य के साथ साथ जो हितकर हो वही बात कहे।

Truth is as impossible to be soiled by any outward touch as the sun beam

जिस प्रकार सूर्य की किरणे किसी पदार्थ से अपवित्र नही की जा सकती उसी प्रकार सत्य को भी वाह्य स्पर्श से अपवित्र करना असम्भव है। —मिल्टन

He who seeks truth should be of no country

जो सत्य की खोज मे रहता है उसे किसी एक देश का न होना चाहिए।

—वाल्टेयर

सत्य के ऊपर और कोई ईश्वर नही है, सत्य ही सर्वप्रथम खोजने की वस्तु है।

—महात्मा गांधी

यदि तुम भूलो को रोकने के लिए द्वार वद कर दोगे, तो सत्य भी वाहर रह जायगा।

—रवीन्द्र

सत्य से वढ कर ससार में दूसरा धर्म नही है तथा मिथ्या-भाषण से वढकर दूसरा पाप नही है, अतएव सत्य की अर्चना करो, असत्य मत वोलो। —वेदव्यास

मैं सत्य के आदर्श को अहिंसा के सिद्धान्त से अविक समझता हूँ। सत्य विना अहिंसा का प्रयोग निष्फल है। —महात्मा गाधी

सत्य और तैल सदैव ऊपर रहते हैं। —कहावत

Truth is God's daughter

सत्य ईशकन्या है। —कहावत

साच वरावर तप नहीं झूठ वरावर पाप।
जाके हिरदे साच है ता हिरदे गुरु आप॥ —कवीर

सत्य का स्थान हृदय में है, मुंह में नही। —शरत्चन्द्र (दत्ता)

सृष्टि में एकमात्र सत्य की सत्ता है। —महात्मा गाधी

सत्य का स्रोत भूलो मे होकर वहता है। —रवीन्द्र

सत्य अविनश्वर ब्रह्म है, सत्य अविनश्वर तप है। —वेदव्यास (महाभारत)

असत्य फूस के ढेर की तरह है। सत्य की एक चिनगारी भी उसे भस्म कर देती है। —हरिभाऊ उपाध्याय

सत्य वचन मनुष्य के परलोक वनाने में परम सहायक होता है। —वाल्मीकि

सत्येनार्क प्रतपति सत्ये तिष्ठति मेदिनी।
सत्य चोक्त परो धर्म स्वर्ग सत्ये प्रतिष्ठित ॥ —विश्वामित्र

सत्य से ही सूर्य तप रहा है। सत्य पर ही पृथ्वी टिकी हुई है। सत्य-भाषण सबसे बडा धर्म है। सत्य पर ही स्वर्ग प्रतिष्ठित है।

He, who has the truth at his heart, need never fear the want of persuation on his tongue

जिसके हृदय में सत्य है उसे भयभीत होने की आवश्यकता नही, भले ही उसकी वाणी में लुभाने का अभाव हो। —रस्किन

Truth is like a lighted lamp in that it cannot be hidden away in the darkness because it carries its own light

सत्य एक जलते हुए दीपक की भाति है जो अन्धकार मे छिपाया नही जा सकता क्योकि वह अपना प्रकाश स्वय ले चलता है। —एडवर्ड विल्सन

साच विना सुमिरन नही, भय विन भक्ति न होय।
पारस में परदा रहै, कचन केहि विधि होय॥ —कवीर

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहित मुखम्।
तत्व पूषन्नपावृणु सत्य-धर्माय दृष्टये॥ —ईशावास्योपनिषद्

सत्य का मुह स्वर्णपात्र से ढका हुआ है। हे ईश्वर, उस स्वर्णपात्र को तू उठा दे जिससे सत्य धर्म का दर्शन हो सके।

सत्यमार्ग

सुगा ऋतस्य पन्था। —ऋग्वेद

सत्य का मार्ग सुख से गमन करने योग्य, सरल है।

ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृत। —ऋग्वेद

सत्य के मार्ग को दुष्कर्मी पार नही कर सकते।

सत्य का, अहिंसा का मार्ग सीधा है, उतना ही सकरा भी है। तलवार की धार पर चलने के समान है। नट लोग जिस रस्सी पर एक निगाह रख कर चल सकते है, सत्य और अहिंसा की रस्सी उससे भी पतली है। —महात्मा गाधी

सत्यवादी

सत्यभाषी एक बार जो वचन कह देता है वह नवरूप हो जाता है। सैकडो वर्षों तक उस वचन से मनुष्यो का विष उतरता है, वशीकरण होता रहता है।

— अज्ञात

तनु तिय तनय धामु धन धरनी। सत्य-सध कहु तृन सम बरनी।। — तुलसी

सच्चा आदमी एक मुलाकात में ही जीवन को बदल सकता है, आत्मा को जगा सकता है और अज्ञात को मिटाकर प्रकाश की ज्योति फैला सकता है। —प्रेमचन्द

भूमि कीर्तिर्यशो लक्ष्मी पुरुष प्रार्थयन्ति हि।
सत्य समनुवर्तन्ते सत्यमेव भजेत्तत ।। — वाल्मीकि

भूमि, कीर्ति, यश और लक्ष्मी—ये सत्यवादी पुरुष को प्राप्त करना चाहते हैं और उसी का अनुसरण करते हैं, अत सदा सत्य का ही सेवन करना चाहिए।

सत्यवादी तो उसे कहेंगे जिसमें सत्य बोलना विधि-निषेध की सीमा पार कर स्वभाव ही बन चुका है। — अज्ञात

सत्याग्रह

सत्याग्रह स्वय आर्त्त हृदय की एक मूक और अचूक प्रार्थना है।

— महात्मा गाधी

सत्याग्रह तो बल-प्रयोग के सर्वथा विपरीत होता है। हिंसा के सम्पूर्ण त्याग में ही सत्याग्रह की कल्पना की गयी है। — महात्मा गाधी

सत्याग्रह ऐसी तलवार है जिसके सब ओर धार है। उसे काम में लानेवाला और जिस पर वह काम मे लायी जाती है, दोनो सुखी होते हैं। खून न बहाकर भी वह बडी कारगर होती है। उस पर न तो कभी जग लगता है और न कोई उसे चुरा ही सकता है। — महात्मा गाधी

सत्याग्रही

सत्याग्रही के लिए अविनयी होना तो दूध मे जहर पडने के समान है। विनय सत्याग्रह का सबसे कठिन अश है। विनय है विरोधी के प्रति भी मन में आदर रखना, सरल भाव से उसके हित की इच्छा करना, और उसी के अनुसार अपना बर्ताव रखना।

— महात्मा गाधी

गर्व और सत्याग्रही के बीच तो समुद्र लहराता है। सत्याग्रही का बल मत्स्या में नही, आत्मा में है। दूसरे शब्दो में ईश्वर में है। —महात्मा गाधी

सत्याचरण

सत्याचरण व्रतधारी के लिए कोई युक्ति नही है। वह तो उसके शरीर से लगी हुई वस्तु है, उसका स्वभाव है। —महात्मा गाधी

सत्याचरण में रत होना ही मानवता की सबसे मूल्यवान् सेवा है। —अज्ञात

सत्सग

बिनु सतसग विवेक न होई। रामकृपा बिनु सुलभ न सोई॥ —तुलसी

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला इक अग।
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सतसग॥ —तुलसी

जाहि बडाई चाहिए, तजै न उत्तम साथ।
ज्यो पलास, सग पान के, पहुचे राजा हाथ॥ —अज्ञात

सतसगति दुर्लभ ससारा। निमिष दड भरि एकउ बारा॥
—तुलसी (मानस-उत्तर)

कबिरा सगत साधु की ज्यो गधी की बास।
जो कछु गधी दे नही तौ भी बास सुबास॥ —कबीर

सठ सुधरहि सतसगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई॥
—तुलसी (मानस-बाल)

कबिरा सगत साधु की हरै और की व्याधि।
सगत बुरी असाधु की आठो पहर उपाधि॥ —कबीर

जाड्य धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्य मानोन्नति दिशति पापमपाकरोति।
चेत प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्ति, सत्सगति कथय किन्न करोति पुसाम॥
—भर्तृहरि

सत्सगति बुद्धि की जडता नष्ट करती है, वाणी को सत्य से सीचती है, मान बढाती है, पाप मिटाती है, चित्त को प्रसन्नता देती है, ससार में यश फैलाती है। सत्सगति मनुष्य के लिए क्या नही करती?

निधान सर्वरत्नाना, हेतु कल्याण-सपदाम्।
सर्वस्या उन्नतेर्मूल महता सग उच्यते ॥ —अज्ञात

महान् पुरुषो का सत्सग समस्त उत्कृष्ट अमूल्य पदार्थों का आश्रय, कल्याण सपत्तियो का हेतु और सारी उन्नति का मूल कहा जाता है।

कबिरा खाई कोट की, पानी पिवै न कोय।
जाय मिलै जब गग से, सब गगोदक होय॥ —कबीर

पूर्ण महात्मा और सज्जनो के साथ को ही सत्सग कहते हैं। सत्सग करे तो लोहे से सोना बन जाय। —योगवाशिष्ठ

तुलयाम लवेनापि, न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
भगवत्सगिसगस्य, मर्त्यांना किमुताशिष ॥ —व्यासदेव

यदि भगवान् में आसक्त रहनेवाले लोगों का क्षण भर भी सग प्राप्त हो, तो उमसे स्वर्ग और मोक्ष तक की तुलना ही नही कर सकते, फिर अन्य अभिलषित पदार्थों की तो बात ही क्या है?

काच काञ्चनससर्गाद्धत्ते मारकती द्युतिम्।
तया सत्मनिधानेन मूर्खो याति प्रवीणताम्॥ —हितोपदेश

सुवर्ण के सबध से काच भी सुन्दर रत्न की शोभा को प्राप्त करता है, इसी प्रकार मूर्ख भी सज्जन के ससर्ग से चतुर हो जाता है।

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति ते निर्गुण प्राप्य भवन्ति दोषा।
आस्वाद्यतोया प्रभवन्ति नद्य समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेया॥
—हितोपदेश

गुण बुद्धिमानो मे मिल जाने से गुण ही रहते हैं किन्तु मूर्खों में मिल जाने से वे ही गुण दोष बन जाते हैं, जैसे मीठे जलवाली नदिया समुद्र में मिल कर खारी बन जाती हैं।

सदाचार

सदाचार-सम्पन्नता ही बडी कीर्ति है। —हरिभाऊ उपाध्याय (प्रियदर्शी अशोक)

जैसे चमक के बिना मोती किसी काम का नही होता, इसी प्रकार सदाचार के बिना मनुष्य किसी काम का नही होता। —अज्ञात

सदाचार जीवन के अभ्यास की अमूल्य वस्तु है। —अज्ञात

चन्दन या तगर, कमल या जूही इन सभी की सुगन्धो मे सदाचार की सुगन्ध उत्तम है। —धम्मपद

लोहे का मोरचा उसी से उत्पन्न होकर उसी को खाता है, वैसे ही सदाचार के उल्लघन करनेवाले मनुष्य के अपने ही कर्म उसे दुर्गति को प्राप्त कराते है। —धम्मपद

यस्तु शूद्रो दमे सत्ये धर्मे च सततोत्यित ।
त ब्राह्मणमह मन्ये वृत्तेन हि भवेद् द्विज ॥ —वेदव्यास

जो शूद्र दम, सत्य और धर्म मे परायण है उसे मैं ब्राह्मण मानता हू, क्योकि सदाचार से ही द्विज बनता है।

एक सदाचारी मनुष्य विना जवान हिलाये सैकडो मनुष्यो का सुधार कर सकता है। पर जिसका आचरण ठीक नही है उसके लाखो उपदेशो का कुछ फल नही होता। —मौलाना रूमी

न पर पापमादत्ते परेषा पाप-कर्मणाम्।
समयो रक्षितव्यस्तु सन्तश्चारित्र-भूषण ॥ —वाल्मीकि

श्रेष्ठ पुरुष दूसरे पापाचारी प्राणियो के पाप को नही ग्रहण करता, उन्हे अपराधी मान कर उनसे वदला लेना नही चाहता। इस उत्तम सदाचार की सदा रक्षा करनी चाहिए, क्योकि सदाचार ही सत्पुरुषो का भूषण है।

सदाचारी

तगर और चन्दन से जो गन्ध फैलती है वह अल्पमात्र है और जो यह सदाचारियो की गन्ध है वह उत्तम गन्ध देवताओ में फैलती है। —धम्मपद

शत्रु भी सदाचारी की प्रशसा करते हैं। —अज्ञात

सदाचारी मूर्ख आचारहीन बुद्धिमान् की अपेक्षा पूज्य होता है। —अज्ञात

सद्गुण

Virtue and happiness are mother and daughter

सद्गुण और प्रसन्नता मा और वेटी हैं। —कहावत

This is the law of God that virtue only is firm and cannot be shaken by a tempest

यही दैवी नियम है कि केवल सद्गुण ही अचल है और यह तूफानो के द्वारा विचलित नही किया जा सकता। —पाइथैगोरस

अपने शत्रु में उत्तम बातो को खोजने और उसे अपनाने में ही सद्गुण है।

— महात्मा गाधी

पुष्पो की सुगन्ध वायु के विपरीत नही जाती, किन्तु सद्गुणो की सुगन्ध सभी दिशाओ में व्याप्त हो जाती है। — धम्मपद

Even virtue is more fair when it appears in a beautiful person

सद्गुण मे भी चार चाद लग जाते है जब वह किसी सुन्दर व्यक्ति में होता है।

— वर्जिल

Virtue maketh men on the earth famous, in their graves illustrious, in the heavens immortal

सद्गुण पृथ्वी पर मनुष्य को प्रसिद्धि प्रदान करता है, कब्र में प्रख्यात कर देता है और स्वर्ग में अमर बना देता है। — चिलो

सद्गुण का पुरस्कार केवल सद्गुण ही है। — एमर्सन

Virtue is more persecuted by the wicked than encouraged by the good

अच्छे मनुष्यो द्वारा सद्गुण को जितना प्रोत्साहन नही मिला उससे कही अधिक वह दुष्टो द्वारा पीडित किया गया है। — कहावत

सम्मान सद्गुण का पुरस्कार है। — सिसरो

Virtue though momentarily shamed cannot be extinguished

यद्यपि सद्गुण क्षण भर के लिए लज्जित किया जा सकता है, किन्तु उसे मिटाया नही जा सकता। — प्यूबियस साइरस

सद्भावना

सर्वेऽत्र सुखिन सन्तु सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु खभाग्भवेत् ॥

इस ससार में सबके प्रति सद्भावना रखनी चाहिए। यह विचार रखना चाहिए कि सभी सुखी हो, सभी नीरोग हो, सभी कल्याण की प्राप्ति करें और किसी को दु ख न हो। — अज्ञात

सन्मार्ग

सन्मार्ग पर चलते हुए अगर लोग बुरा कहें तो यह उससे अच्छा है कि कुमार्ग पर चलते हुए लोग तुम्हारी प्रशसा करें। — सादी

जिस मार्ग पर तुम्हारे पूर्वज चले हो, उस सत्पथ पर चलो। उस सन्मार्ग के यात्री का कभी पतन नही होता। —मनुस्मृति

सफलता

सफलता की रेखाए उन मनुष्यो के कपाल मे अकित है—जिनके हृदय मे नवीन आविष्कारो की आधी हरहराया करती है, जो कर्मक्षेत्र मे कमर कसकर खडे होने की ताकत रखते है, जिनकी मानसिक शक्तिया तेजस्वी, अटल और प्रतापी होती है। —अज्ञात

Success is counted sweetest by those who never succeed

जिन्होने जीवन में कभी सफलता नही पायी है उनके लिए सफलता का मूल्याकन मधुरतम होता है। —इमली डिकन्स

I believe that the true road to pre-eminent success in any line is to make yourself master of that line

मेरा विश्वास है कि किसी भी व्यवसाय मे विशेष सफलता पाने का ठीक मार्ग उस व्यवसाय का अपने को पूर्ण ज्ञाता वना लेना है। —एन्ड्रयू कारनेगी

सफलता-प्राप्ति का साधन निर्भीकता है। —स्वामी रामतीर्थ

जीवन में सफलता पाना प्रतिभा और अवसर की अपेक्षा एकाग्रता और निरतर प्रयास पर कही अधिक अवलम्वित है। —सी० डव्ल्यू० वेन्डेल

Successful business consists in exclusive attention to the person speaking to you

जिस व्यक्ति से आप वार्त्तालाप कर रहे है उसमें पूर्ण ध्यान देने में ही सफल व्यवसाय (का गुर) निहित है। —इलियट

Success is the realization of the estimate you place upon yourself

आप अपना जो मूल्य आकते है, सफलता उसी का साकार रूप है। —एलबर्ट हवर्ड

किसी ध्येय की सफलता के लिए मनुष्य की पूर्ण एकाग्रता और समर्पण आवश्यक है। —ब्राउन

Success treads on every right step

प्रत्येक ठीक कदम पर सफलता चलती है। —एमर्सन

सफलता के लिए साहस सवसे वडी वस्तु है। —व्राउन

सिद्धान्तत जीवन में वही सव से अधिक सफल व्यक्ति है जो सवसे अधिक जानकार है। —डिजरायली

सफलता का कोई रहस्य नही है। वह केवल अति परिश्रम चाहती है। —हेनरी सी० क्रेक

Successful minds work like a gimlet, to a single point
सफल व्यक्ति वर्मी की तरह एक ही केन्द्र पर केन्द्रित रहते हैं। —वोवी

Success is the sole earthly judge of right and wrong
इस पृथ्वी पर केवल सफलता ही अच्छे वुरे का निर्णायक है। —हिटलर

The secret of success is constancy of purpose
सफलता का रहस्य ध्येय की दृढता में है। —डिजरायली

सफाई

Certainly this is a duty not a sin Cleanliness is next to godliness
वास्तव मे यह पाप नही कर्त्तव्य है। स्वच्छता देवत्व के निकटतम है। —जान वेजले

Cleanliness of body was ever esteemed to proceed from a due reverence to God, to society, and to our-selves
शारीरिक स्वच्छता का सम्मान सदैव ईश्वर, समाज और अपने प्रति उचित सम्मान से हुआ है। —वेकन

न्हाए धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोये वास न जाय॥ —कवीर

सवल

दुर्वल मनुष्य, जो सवल और शक्तिशाली पुरुषो का अपमान करता है वह मानो यमराज को अपने पास आने का इशारा करता है। —सत तिरुवल्लुवर

जलती हुई आग में पडे हुए लोग चाहे भले ही वच जाय, मगर उन लोगो की रक्षा का कोई उपाय नही है जो शक्तिशाली लोगो के प्रति दुर्व्यवहार करते हैं। —अज्ञात

जिस मार्ग पर तुम्हारे पूर्वज चले हो, उस सत्पथ पर चलो। उस सन्मार्ग के यात्री का कभी पतन नही होता। —मनुस्मृति

सफलता

सफलता की रेखाए उन मनुष्यो के कपाल मे अकित है—जिनके हृदय मे नवीन आविष्कारो की आधी हरहराया करती है, जो कर्मक्षेत्र मे कमर कसकर खडे होने की ताकत रखते है, जिनकी मानसिक शक्तिया तेजस्वी, अटल और प्रतापी होती है। —अज्ञात

Success is counted sweetest by those who never succeed

जिन्होने जीवन मे कभी सफलता नही पायी है उनके लिए सफलता का मूल्याकन मधुरतम होता है। —इमली डिकन्स

I believe that the true road to pre-eminent success in any line is to make yourself master of that line

मेरा विश्वास है कि किसी भी व्यवसाय मे विशेष सफलता पाने का ठीक मार्ग उस व्यवसाय का अपने को पूर्ण ज्ञाता बना लेना है। —एन्ड्रयू कारनेगी

सफलता-प्राप्ति का साधन निर्भीकता है। —स्वामी रामतीर्थ

जीवन मे सफलता पाना प्रतिभा और अवसर की अपेक्षा एकाग्रता और निरतर प्रयास पर कही अधिक अवलम्बित है। —सी० डब्ल्यू० वेन्डेल

Successful business consists in exclusive attention to the person speaking to you

जिस व्यक्ति से आप वार्त्तालाप कर रहे है उसमे पूर्ण ध्यान देने मे ही सफल व्यवसाय (का गुर) निहित है। —इलियट

Success is the realization of the estimate you place upon yourself

आप अपना जो मूल्य आकते है, सफलता उसी का साकार रूप है। —एलबर्ट हबर्ड

किसी ध्येय की सफलता के लिए मनुष्य की पूर्ण एकाग्रता और समर्पण आवश्यक है। —ब्राउन

Success treads on every right step

प्रत्येक ठीक कदम पर सफलता चलती है। —एमर्सन

सफलता के लिए साहस सवसे वडी वस्तु है। —ब्राउन

सिद्धान्तत. जीवन में वही सव से अविक सफल व्यक्ति है जो सवसे अधिक जानकार है। —डिजरायली

सफलता का कोई रहस्य नही है। वह केवल अति परिश्रम चाहती है। —हेनरी सी० क्रेक

Successful minds work like a gimlet, to a single point
सफल व्यक्ति वर्मी की तरह एक ही केन्द्र पर केन्द्रित रहते हैं। —वोवी

Success is the sole earthly judge of right and wrong
इस पृथ्वी पर केवल सफलता ही अच्छे वुरे का निर्णायक है। —हिटलर

The secret of success is constancy of purpose
सफलता का रहस्य ध्येय की दृढता मे है। —डिजरायली

सफाई

Certainly this is a duty not a sin Cleanliness is next to godliness

वास्तव मे यह पाप नही कर्त्तव्य है। स्वच्छता देवत्व के निकटतम है। —जान वेजले

Cleanliness of body was ever esteemed to proceed from a due reverence to God, to society, and to our-selves

शारीरिक स्वच्छता का सम्मान सदैव ईश्वर, समाज और अपने प्रति उचित सम्मान से हुआ है। —वेकन

न्हाए धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोये वास न जाय॥ —कवीर

सवल

दुर्वल मनुष्य, जो सवल और शक्तिशाली पुरुषो का अपमान करता है वह मानो यमराज को अपने पास आने का इशारा करता है। —सत तिरुवल्लुवर

जलती हुई आग में पड़े हुए लोग चाहे भले ही वच जाय, मगर उन लोगो की रक्षा का कोई उपाय नही है जो शक्तिशाली लोगो के प्रति दुर्व्यवहार करते हैं। —अज्ञात

सर्वं सहायक सवल के, कोउ न निवल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहिं देत वुझाय॥ —वृन्द

सभा

Society is no comfort to one not sociable.

जो व्यक्ति मिलनसार नही उसके लिए सभा (समाज) सुखदायक नहीं है।
—शेक्सपियर

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा, वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्म स नो यत्र न सत्यमस्ति, सत्य न तद्यच्छलमभ्युपैति॥

वह सभा सभा नही जहाँ वृद्ध जन न हो, वे वृद्ध वृद्ध नही जो धर्म की वात न कहते हो, वह धर्म धर्म नही जिसमें सत्य न हो और वह सत्य, सत्य नही जो छल-कपट की ओर प्रेरित करे।

सभासद

श्रुत्यध्ययनसम्पन्ना धर्मज्ञा सत्यवादिन ।
राज्ञा सभासद कार्या रिपौ मित्रे च ये समा ॥ —अज्ञात

वेद के अध्ययन से सम्पन्न, धर्म को जाननेवाले, सत्य वोलनेवाले तथा मित्र और शत्रु मे सम भाव रखनेवाले, इस तरह के सभासद राजा को रखना चाहिए।

सभ्यता

सभ्यता एकान्तिक वस्तु नही है। उसका अर्थ हर एक जगह एक ही नही होता। पश्चिम की सभ्यता पूर्व की सभ्यता हो सकती है। —महात्मा गाधी

Nations like individuals live or die, but civilization cannot perish

व्यक्ति की भाँति राष्ट्र भी जीवित रहते है और मरते हैं, किन्तु सभ्यता का कभी पतन नही होता। —मैजिनी

सभ्यता की वास्तविक परीक्षा देश की जनगणना या नगरो की रूपरेखा अथवा फसल से नही होती, वरन् किस प्रकार के व्यक्ति देश उत्पन्न करता है इससे होती है। —एमर्सन

Increased means and increased leisure are the two civilizers of man

अधिक साधन और अधिक अवकाश मानव को सभ्य बनानेवाले हैं।

—डिजरायली

A sufficient measure of civilization is the influence of good women

सभ्यता का सही मूल्यांकन अच्छी नारियों का उस पर प्रभाव है —एमर्सन

सभ्यता क्या है ? वह तो पूरी राक्षसी है। जो सभ्यता गरीबों के मुंह का कौर, जन-साधारण का जीवन, मुट्ठी में करके उन्हें मरने को लाचार बना दे वह राक्षसी नहीं तो और क्या कहलायेगी ? —शरत्चन्द्र (जागरण)

सम-दृष्टि

घरों में पानी के पाइप लगे हैं, क्या वे बारिश की बूंद की योग्यता रखते हैं। बारिश की बूंद छोटी भले ही हो, पर वह सब जगह गिरती है, इसलिए उसकी योग्यता महान् है। —आचार्य विनोबा

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता समदर्शिन ॥

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

ज्ञानीलोग विद्वान् और विनयी ब्राह्मण में, गाय में, हाथी में और कुत्ते के खानेवाले चाण्डाल में समदृष्टि रखते हैं।

समदृष्टी तब जानिए, सीतल समता होय।
सब जीवन की आत्मा, लखै एक सी सोय॥ —कबीर

समझ (दे० 'बुद्धि')

God has placed no limit to intellect

ईश्वर ने समझ की कोई सीमा नहीं रखी है। —बेकन

समझ मस्तिष्क की शक्ति है। —सिचलर

Intellect the star light of the brain

समझ मस्तिष्क का प्रकाश है। —विल्स

The human intellect delights in inventing specious arguments in order to support injustice itself

अन्याय का समर्थन करने के लिए मानवीय बुद्धि लम्बी-चौड़ी दलील खोजकर प्रसन्न होती है। —महात्मा गांधी

समझदारी

संघर्ष और उथल-पुथल के बिना जीवन बिलकुल नीरस बन कर रह जाता है। इसलिए जीवन में आनेवाली विषमताओं को सह लेना ही समझदारी है।

—संत विनोबा

समता

योगस्थ कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्यो समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥ —गीता

हे धनञ्जय! आसक्ति त्याग कर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धि वाला होकर तू कर्तव्य कर्मों को कर। समता का ही नाम योग है।

समता ही सिद्धि की कसौटी है। —अज्ञात

सम शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयो।
शीतोष्णसुखदुःखेषु सम सङ्गविवर्जित॥

—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)

जो शत्रु-मित्र में और मान-अपमान मे सम है, तथा सरदी-गरमी और सुख-दुःखादि द्वन्द्वो में सम है और आसक्ति से रहित है वह भक्तिमान् पुरुष मुझको प्रिय है।

पूर्णतया समता आये बिना कोई भी सिद्ध योगी, सिद्ध भक्त या सिद्ध ज्ञानी नही समझा जा सकता। —अज्ञात

समय (दे० 'वक्त')

समय बदलने पर लोगो की आँखें भी बदल जाती हैं। —जयशंकर प्रसाद

का बरषा जब कृषी सुखाने। समय चूकि पुनि का पछिताने॥ —तुलसी

समय शुभ जीवन और लक्ष्मी का अक्षय भंडार है। —अज्ञात

समय फिरे रिपु होहिं पिरीते। —तुलसी (मानस-अयोध्या)

समय की पाबन्दी सुशीलता का चिह्न है। —सम्राट लुई

I wasted time and now doth time waste me
मैंने समय को नष्ट किया और अब समय मुझे नष्ट कर रहा है। —शेक्सपियर

समय सत्य का पथ-प्रदर्शक है। —सिसरो

Time is the wealth of change but the clock in its parody makes it mere change and no wealth
समय परिवर्तन का धन है, परन्तु घडी उसका उपहास करती है। उसे केवल परिवर्तन के रूप में दिखाती है, धन के रूप में नही। —रवीन्द्र

A stitch in time saves nine
समय पर थोडा-सा प्रयत्न भी आगे की बहुत-सी परेशानियो को बचाता है।
—कहावत

As every thread of gold is valuable so is every moment of time
सोने का प्रत्येक धागा मूल्यवान् होता है इसी प्रकार समय का प्रत्येक क्षण।
—मेसन

Time and thinking tame the strongest grief
समय और विचार महान् शोक को भी निस्तेज कर देता है। —कहावत

(बीता हुआ) समय और कहे हुए शब्द कभी वापस नही बुलाये जा सकते।
—कहावत

Time is money
समय ही धन है। —कहावत

To choose time is to save time
समय का उचित उपयोग करना समय को बचाना है। —बेकन

किसी भी विचारशील व्यक्ति के लिए जीवन की क्षणभगुरता का अन्तिम अर्थ यह नही है कि वह उन क्षणो को बर्बाद करे। —रस्किन

समय सब से महान है, परमात्मा से भी। भक्ति आदि साधनों से परमात्मा को तो बुलाया जा सकता है, किन्तु कोटि उपाय करने पर भी बीता हुआ समय नही बुलाया जा सकता। —अज्ञात

समरथ

समरथ कह नहि दोष गुसाईं। रवि पावक सुर सरि की नाईं॥ —तुलसी

समाचार

News are as welcome as the morning air

समाचारो का प्रातःकालीन वायु के सदृश स्वागत होता है। —चैपमैन

समाचारपत्र

I fear three hostile newspapers more than hundred thousand bayonets

मैं लाखो सगीनो की अपेक्षा तीन विरोधी समाचारपत्रो से अधिक डरता हूँ।

—नेपोलियन

समाचारपत्र ससार के दर्पण हैं। —जेम्स एलिस

In these times we fight for ideas and newspapers are our fortresses

आजकल हम विचारो के लिए सघर्ष करते हैं और समाचारपत्र हमारी किलेबन्दियाँ हैं।

—हेन

समाचारपत्र साधारण जनता के शिक्षक हैं। —वीचर

समाचारपत्र जनता के विश्वविद्यालय हैं। —जे० पार्टन

समाज

अगर हममें शक्कर का गुण है तो हम समाज में ऐसे विलीन हो जायेंगे जैसे समुद्र में नदी या सिन्धु मे बिन्दु। सिन्धु में विलीन होने पर बिन्दु स्वय ही सिन्धु हो जाता है, बिन्दु नही रहता।

—आचार्य विनोवा

वही समाज सदा सुखी रह सकता है जिसने नैतिक गुणो को अपने जीवन मे आत्मसात् कर लिया है।

—रस्किन, विजय पथ

Society exists for the benefit of its members, not the members for the benefit of the society

समाज सदस्यो के लाभ के लिए होता है न कि सदस्य समाज के लाभ के लिए।

—हर्बर्ट स्पेन्सर

वहवो यत्र नेतार सर्वे पडित-मानिन ।
सर्वे महत्त्वमिच्छन्ति तद्वृन्दमवमीदति ॥ —अज्ञात

जहाँ वहुत से नेता हैं, सभी अपने को पडित माननेवाले अहकारी हैं और सव अपनी वडाई चाहते हैं वह समाज नष्ट हो जाता है।

Society is composed of two great classes, those who have more dinners than appetite and those who have more appetite than dinners

समाज मे दो वडी श्रेणियाँ होती हैं, एक जिनके पास भूख से अधिक भोजन है और दूसरी वह जिनके पास भोजन से अधिक भूख है। —चैम्फर्ट

अच्छा समाज शरीर जैसा है। समाज मे जो दु खी हिस्सा है उसकी ओर सवको ध्यान देना उचित है। —आचार्य विनोवा

सवसे अधिक सुखी समाज वह है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति परस्पर हार्दिक सम्मान की भावना रखता है। —गेटे

तुम समाज के साथ ही ऊपर उठ सकते हो और समाज के साथ ही तुम्हें नीचे गिरना होगा। यह तो नितान्त असम्भव है कि कोई व्यक्ति अपूर्ण समाज मे पूर्ण वन सके। क्या हाथ अपने आपको शरीर से पृथक् रख कर वलशाली वन सकता है ? कदापि नही। —स्वामी रामतीर्थ

समाजवाद

शोपणमुक्त समाज की रचना करके वर्त्तमान समाज की प्रचलित दासता, विपमता और असहिष्णुता को सदा के लिए दूर करके, समाजवाद, स्वतन्त्रता, समता और भ्रातृत्व की वास्तविक स्थापना करना चाहता है। —आचार्य नरेन्द्रदेव

दो ही स्थानो पर समाजवाद काम करता है। एक तो मधुमक्खियो के छत्ते मे और दूसरा चीटियो के विल मे। —अज्ञात

समाजवाद मनुष्य को विवशता के क्षेत्र से हटाकर उसे स्वाधीनता के राज्य में ले जाना चाहता है। —कार्ल मार्क्स

धर्म के वोझ के तले से मानव दवा पडा है। समाजवाद धर्म की सच्ची मीमासा कर धर्म की कैद से मनुष्य को नजात दिलाना है और इस तरह मानवता के गौरव को वढाता है। —आचार्य नरेन्द्रदेव (राष्ट्रीय और समाजवाद से)

समाधि

समाधि में ही साक्षात्कार होता है। समाधि के एक क्षण की तुलना मे पठन-पाठन और मनन का सहस्र वर्ष भी नही ठहरता। —डा० सम्पूर्णानन्द

देहाभिमाने गलिते ज्ञानेन परमात्मन।
यत्र यत्र मनो याति तत्र तत्र समाधय ॥ —चाणक्य

परब्रह्म के ज्ञान से देह के अभिमान के नष्ट होने पर जहां जहां मन जाता है तहां तहाँ समाधि है।

देश-प्रेम के दीवानो की समाधियो मे राग है—एकता, समानता और राष्ट्रीयता का। इन समाधियो मे एक ही सी ध्वनि उठती है—'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'। वादलो के वीच दामिनी चमकती है केवल उनके इसी नीरवता से उठते हुए उद्‌गार सुनने को वूदे गिरती हैं, उनके चरणो को मोतियो से धोकर सागर में ज्वार उठा देने को। —वलभद्र प्रसाद गुप्त

समालोचक

जिसका हृदय सहानुभूति के भाव से परिपूर्ण है उसे ही आलोचना करने का अधिकार है। —लिंकन

Critics are sentinels in the grand army of letters, stationed at the corners of newspapers and reviews, to challenge every new author

समालोचक साहित्य के भव्य भवन के प्रहरी होते हैं जो समाचारपत्रो तथा मासिक पत्रिकाओ के स्तभो में नियुक्त होते हैं जो प्रवेश चाहनेवाले प्रत्येक नये लेखक की जाँच-पडताल करते हैं।

Critics are the men who have failed in literature and art
समालोचक वे व्यक्ति हैं जो साहित्य और कला में असफल रहे हैं।

—डिजरायली

The severest critics are always those who have either never attempted, or who have failed in original composition

सब से कटु आलोचक सदैव वे व्यक्ति रहे है, जिन्होने कभी लिखने का प्रयास नहीं किया अथवा वे व्यक्ति जो मौलिक लेख लिखनेमें असफल रहे है। —हैजलिट

It is much easier to be critical than to be correct
ठीक ठीक रचना करने की अपेक्षा समालोचक होना ज्यादा आसान है।
--डिजरायली

समालोचना

Silence is sometimes the severest criticism
कभी कभी मौन रह जाना सबसे कटु आलोचना है। —चार्ल्स बक्सटन

अपने कर्त्तव्यपालन में हमें जनता की राय से स्वतत्र रहना चाहिए।
—महात्मा गांधी

Neither praise or blame is the object of true criticism—Justly to discriminate, firmly to establish, wisely to prescribe, and honestly to award—these are the true aims and duties of criticism

वास्तविक समालोचना का ध्येय प्रशसा या निंदा नही है, ठीक ठीक मूल्याकन करना, दृढता से साबित करना, बुद्धिमानी से स्वीकृत करना और ईमानदारी से पुरस्कृत करना—यही समालोचना का ध्येय और उचित कर्त्तव्य है। —सिम्स

The most noble criticism is that in which the critic is not the antagonist so much as the rival of the author

सबसे अच्छी समालोचना वह है जिसमें समालोचक लेखक का वैरी नही वरन् प्रतिद्वन्द्वी हो। —डिजरायली

समूह

The multitude is always in the wrong
समूह सदैव गलती पर होता है। —डिलन

It has been very truly said that the mob has many heads, but no brains

यह बहुत ठीक ही कहा गया है कि समूह के अनेक सिर होते हैं लेकिन मस्तिष्क एक भी नही होता। —सारोल

सम्बन्धी

The worst hatred is that of relatives
सबसे निकृष्ट घृणा अपने सम्बन्धी की होती है। —टेसीटस

सम्बन्धियो का झगडा वास्तव मे बडा भयानक होता है और उनमें सन्धि कराना बडा कठिन कार्य है। —यूरोपिडीज

सम्मति

अच्छी सम्मति अमूल्य होती है। —मैजिनी

अच्छी सम्मति स्वीकार करना अपनी योग्यता बढाना ही है। —गेटे

Give every man thine ear, but few thy voice
सब की बात ध्यान से सुनो परन्तु अपनी सम्मति केवल थोडे ही मनुष्यो का दो। —शेक्सपियर

बिना पूछे सम्मति मत दो। —जर्मन कहावत

Never advise any one to go to war or to marry
युद्ध मे जाने की या विवाह करने की सलाह किसी को भी मत दो। —स्पेनिश कहावत

सम्मति बहुत से लोग लेते है, पर केवल बुद्धिमान् ही उससे लाभ उठाते है। —साइरस

सम्मान

प्रख्यात मृतक पुरुषो का सर्वश्रेष्ठ सम्मान हम उनका अनुकरण करके ही करते है। —महात्मा गाधी

Honour lies in honest toil
सम्मान सच्चे परिश्रम मे है। —जी० क्लीवलैन्ड

The way to gain a good reputation, is to endeavour to be what you desire to appear
अच्छा सम्मान पाने का मार्ग यह है कि जो तुम प्रतीत होने की कामना करते हो वैसा बनने का प्रयास करो। —सुकरात

Better to die ten thousand deaths than wound my honour
मै अपने सम्मान पर आघात पहुँचने की अपेक्षा दस सहस्र बार मरना अधिक अच्छा समझता हू। —एडीसन

जीवन हर मनुष्य को प्रिय है। किन्तु शूरवीर को अपना सम्मान, जीवन से भी अधिक मूल्यवान् और प्रिय है। —शेक्सपियर

इस दुनिया में सम्मान वही पाता है जो यथाशक्ति दान देकर दु खियो का दुख हरता है। — अज्ञात

सम्मान की इच्छा करनेवाले को सम्मान नही मिलता, वह मिलता उसे ही है जो उसकी चिन्ता बिना किये ही अपने कर्त्तव्य-पथ पर डटा रहता है। — अज्ञात

सरकार

सरकार का कर्त्तव्य सबकी पूरी रक्षा करना है। — विनोबा

जिस सरकार में औरतो की इज्जत की रखवाली नही होती वह बहुत दिनो तक नही टिकती। — अज्ञात

The aggregate happiness of society which is best promoted by the practice of a virtuous policy, is, or ought to be, the end of all Government

सभी सरकारो का ध्येय समाज का सामूहिक सुख है, या होना चाहिए और इसकी पूर्ति अच्छी नीति के परिपालन से अच्छी तरह की जा सकती है। — वाशिंगटन

That is the most perfect Government under which a wrong to the humblest is an affront to all

वही पूर्ण (आदर्श) सरकार है जिसमे एक तुच्छ व्यक्ति के साथ किया गया अन्याय सभी का अपमान समझा जाता है। — सोलन

सरस

प्राय सर्वो भवति करुणावृत्तिरार्द्रान्तिरात्मा। — कालिदास

सरस हृदयजन बहुधा मृदुल स्वभाव के होते हैं।

सरस्वती

सरस्वती से श्रेष्ठतर कोई वैद्य नही और उसकी साधना से बढकर कोई दवा नही। — जापान के शाही कला भवन के तोरणद्वार पर अंकित

अपूर्व कोऽपि कोशोऽय, विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायाति, क्षयमायाति सचयात्॥

हे सरस्वती देवी, विद्यारूपी यह आपका अपूर्व कोष है जो व्यय करने से तो बढता है और सचय करने से नष्ट होता है। — अज्ञात

सरस्वती देवयन्तो हवन्ते। —ऋग्वेद

देव-पद के अभिलाषी सरस्वती का आवाहन करते हैं।

सर्जन

He is a good surgeon who can amputate a limb, but he is a better surgeon who can save a limb

वह अच्छा सर्जन है जो किसी अंग को काट सकता है परन्तु वह सर्जन उससे भी अच्छा है जो उस अंग को बचा सकता है। —सर ए० कूपर

सर्वश्रेष्ठ

सर्वश्रेष्ठ केवल परमात्मा है। —अज्ञात

सर्वश्रेष्ठ मनुष्य वही है जिसने मनरूपी राक्षस को अपने वश में कर लिया है। —मीरा

The noblest mind the best contentment has

सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति वह है जिसे पूर्ण संतोष है। —एच० स्पेन्सर

सहनशीलता

मनुष्य कटु उक्तियों को किसी प्रकार सहन कर लेता है, परन्तु जब उसके ग्रन्थों और धर्मनेताओं पर आक्रमण होता है तब उसकी सहनशीलता की प्राय समाप्ति हो जाती है। —हरिऔध

जैसी परै सो सहि रहै, कहि रहीम यह देह।
धरती ही पर परत सब, शीत, घाम अरु मेह॥ —रहीम

सहानुभूति (दे० "समवेदना", "हमदर्दी")

किसी का रुपया वापस दिया जा सकता है परन्तु सहानुभूति के दो शब्द वह ऋण हैं जिसे चुकाना मनुष्य की शक्ति के बाहर है। —अज्ञात

संकट में मनुष्य को कोई हमदर्दी दिखाता है तो चाहे बाह्य संकट से निवृत्ति न भी हो तो भी उसके दिल को तसल्ली हो जाती है। —आचार्य विनोबा

सहानुभूति या दया पाने की क्षुधा प्रत्येक मानव-हृदय में गुप्त रूप में किन्तु मजबूती के साथ छिपी रहती है। —अज्ञात

दु खी मनुष्य जव स्नेह और सहानुभूति का शव्द सुनता है, तव आसुओ की झडी लग जाती है । —अज्ञात

सहानुभूति और सवेदना दु खी हृदय को और भी व्याकुल वना देती है।
—अज्ञात

प्रेम के उपरान्त सहानुभूति मानव-हृदय की पवित्रतम भावना है। —वर्क

सहानुभूति सहृदयता की निशानी है। —अज्ञात

सहायता

किसी की कुछ सहायता करना, उधार देने की एक वैज्ञानिक पद्धति है।
—अज्ञात

Light is the task where many share the toil
वह काम हल्का है, जिसमे वहुत से लोग हाथ वँटाते हैं। —होमर

अपनी सहायता स्वय करो तो ईश्वर तुम्हारी सहायता करेगा।
—एच० स्पेन्सर

जव हम अपने पैर की धूल से भी अधिक अपने को नम्र समझते हैं तो ईश्वर हमारी सहायता करता है। केवल दुर्वल और असहायो पर ही दैवी कृपा होती है।
—महात्मा गाधी

ईश्वर उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वय करते हैं । —कहावत

सहारा

तिनके का सहारा पानेवाले की आशाए वहुत लम्बी हो उठती हैं । —अज्ञात

When a person is down in the world, an ounce of help is better than a pound of preaching.
इस ससार मे किसी दु खी व्यक्ति के लिए थोडी सी भी सहायता ढेरो उपदेश से कही अधिक अच्छी है। —वुलवर

सान्त्वना

दुखियारो को हमदर्दी के आँसू भी कम प्यारे नही होते। —प्रेमचन्द

The due of compassion is a tear
अश्रु सान्त्वना का ओसकण है। —वायरन

सात्विक

क्या तुम्हें मालूम है कि सात्विक प्रकृति का मनुष्य कैसे ध्यान करता है ? वह आधी रात को अपने बिस्तर पर मसहरी के अन्दर ध्यान करता है, ताकि और लोग उसे न देख सकें। —रामकृष्ण परमहंस

साथी

तेरा साथी अगर जल्दी करता है तो वह तेरा साथी नही है। —सादी

जब तुम्हे अवसर मिले तो अपने से अधिक अच्छो का साथ करो, यही ठीक और वास्तविक अभिमान है। —चेस्टरफील्ड

When one associates with wise it is but one step from companionship to slavery

जब कोई व्यक्ति किसी बुद्धिमान् का साथ करता है तो यह मित्रता से दासता को ओर केवल एक कदम है। —क्वार्ल्स

No man can be prudent of his time, who is not prudent in the choice of his company

जो व्यक्ति अपने साथियो के चुनाव में विवेकी नही है वह अपने समय का सदुपयोग नही कर सकता। —जर्मी टेलर

जो अन्त तक साथ निभाये ऐसा साथी पत्नी के सिवा दूसरा नही। —प्रेमचन्द

साधक

नाव जल में रहे तो कुछ हर्ज नही परन्तु नाव में जल नही जाना चाहिए। इसी प्रकार साधक चाहे ससार में रहे परन्तु साधक के मन में ससार नही रहना चाहिए। —रामकृष्ण परमहंस

साधक के लिए सबसे बडा प्रतिबन्ध कीर्ति की चाह है। —अज्ञात

साधन

अभ्यास की दृष्टि रही तो साधन काम आते हैं। अभ्यास की दृष्टि न रही तो उत्तम साधन भी निकम्मे हो जाते हैं। —विनोबा

पाप कर्म से दूर रहना, निरंतर पुण्य में तत्पर रहना, अच्छी मनोवृत्ति रखना और शुभ आचरण करना—यह सबसे बड़ा कल्याण का साधन है। —वेदव्यास (म० शा०)

उत्तम साध्य के लिए उत्तम साधन भी होना चाहिए। सुगन्ध की प्राप्ति चन्दनादि सुगंधित द्रव्यों से ही सम्भव है। मिट्टी का तेल जलाकर हवन की सुगन्ध नहीं पैदा की जा सकती। —अज्ञात

साधु

कष्ट पड़ने पर भी साधु पुरुष मलिन नहीं होते, जैसे सोने को ज्यों-ज्यों तपाया जाय त्यों-त्यों चमकता है। —अज्ञात

कबिरा संगत साधु की, हरै और की व्याधि।
संगत बुरो असाधु की, आठो पहर उपाधि॥ —कबीर

साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः।
कालेन फलते तीर्थं सद्यः साधुसमागमः॥ —चाणक्य

साधुओं का दर्शन ही पुण्य है इस कारण कि साधु तीर्थरूप हैं, तीर्थ समय से फल देता है पर साधुओं की संगति शीघ्र ही फल देती है।

सब बन तो चंदन नहीं, सूरा का दल नांहि।
सब समुद्र मोती नहीं, यों साधू जग नाहि॥ —कबीर

सिंहन के लेंहड़े नहीं, हंसन की नहिं पांत।
लालन की नहिं बोरियाँ, साधु न चलें जमात॥ —कबीर

मनसो यत्सुखं नित्यं स्वर्गोऽपि नरकोपमः।
तस्मात्परसुखेनैव साधवः सुखिनः सदा॥ —पद्मपुराण

जहाँ सदा अपने मन को ही सुख मिलता है, वह स्वर्ग भी नरक के समान है। अतः साधु पुरुष सदा दूसरों के सुख से ही सुखी होते हैं।

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने॥ —चाणक्य

प्रत्येक पर्वत पर माणिक्य नहीं होता और प्रत्येक हाथी में मुक्ता नहीं मिलती, सर्वत्र साधु नहीं मिलते और सब वनों में चन्दन नहीं होता।

साध्य

साध्य के लिए साधन होते हैं, साधन के लिए साध्य नही। —विनोवा

साध्य कितने भी पवित्र क्यो न हो, साधन की पवित्रता के विना उनकी उपलब्धि सम्भव नही। —कमलापति त्रिपाठी (वापू और मानवता)

साम्राज्य

साम्राज्य में एक हठ, घमण्ड और अकड होती है जिस पर वह सैकडो गुलामो का कत्लेआम कर सकता है। —सुभाषचन्द्र वोस

सल्तनत किसी आदमी की जायदाद नही, वल्कि एक ऐसा दरख्त है जिसकी हर शाख और पत्ती एक-सा खूराक पाती है। —प्रेमचन्द

साम्राज्यवाद

साम्राज्यवाद की वृकोदर-वृत्ति की इमारत हिंसा के ही पाये पर रची जा सकती है। —पतजलि

सावधान

The cautious seldom err
सावधान मनुष्य क्वचित् ही गलती करते हैं। —कन्फ्यूशियस

दूसरे की मुसीवत से सावधान रहो जिससे कि दूसरे लोग तुमसे सवक न ले सकें। —सादी

जव वादल दिखलाई पडते हैं तो वुद्धिमान् मनुष्य जामा पहन लेते हैं। —शेक्सपियर

दूसरे की मुसीवत से सावधान होना अच्छा है। —प्यूब्लियस साइरस

उस पर विश्वास नही करो जिसने तुम्हें एक वार धोखा दिया है। जिसने तुम्हे एक वार धोखा दिया वह तुम्हें फिर धोखा देगा। —शेक्सपियर

सावधानी

Caution is the eldest child of wisdom
सावधानी, वुद्धिमानी की सवसे वडी सन्तान है। —विक्टर ह्यूगो

Of all forms of caution, caution in love is perhaps not fatal to true happiness

सभी तरह की सावधानी में, प्रेम में सावधानी, कदाचित सच्चे सुख के लिए घातक नही है। —बी० रसल

साहस

सच्चे साहस में न तो अधीरता है और न जल्दबाजी।

—माताजी (अरविन्दाश्रम)

उचित को जानना और उस पर अमल न करना साहस का अभाव है।

—कन्फ्यूशस

Courage is the first of human qualities because it is the quality which guarantees all the others

मानव के सभी गुणो में साहस पहला गुण है क्योकि यह सभी गुणो की जिम्मेदारी लेता है। —चर्चिल

वगैर निराश हुए पराजय को सह लेना पृथ्वी पर साहस की सवसे वडी परीक्षा है।

—आर० जी० इन्गरसोल

अपने दोषो को स्वीकार करना एक उत्कृष्टतम साहस है।

—माताजी (अरविन्दाश्रम)

A great deal of talent is lost to the world for want of a little courage Everyday sends to their grave obsure men whose timidity prevented them from making a first effort

थोडे से साहस के अभाव में काफी प्रतिभा ससार से खो जाती है। प्रत्येक दिन ऐसे अपरिचित व्यक्तियो को कब्र में भेजता है जिनकी कायरता ने उनको प्रथम प्रयास से वञ्चित रखा है —सिडनी स्मिथ

Courage consists not in hazarding without fear but being resolutely minded in a just cause

विना भय के, अपने को सकट में डालना साहस नहीं है वरन् उचित ध्येय में दृढ-निश्चयी होना है। —प्लूटार्क

सकट में साहस होना आधी सफलता प्राप्त कर लेना है। —प्लाउटस

साहसी

साहसी लोग इस बात की खोज नही करते कि शत्रु कितने हैं, परन्तु वे तो यह खोजते हैं कि वे कहाँ हैं। —अज्ञात

कोई भी ऐसा व्यक्ति साहसी नही हो सकता जो पीडा को जीवन की सबसे बडी बुराई समझता है। —सिसरो

साहित्य

ज्ञान-राशि के सचित कोप का नाम ही साहित्य है। —महावीरप्रसाद द्विवेदी

सबसे जीवित रचना वह है जिसे पढने से प्रतीत हो कि लेखक ने अन्तर से सब कुछ फूल की तरह प्रस्फुटित किया है। —शरत्चन्द्र (पत्रावली)

जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें गति और शक्ति न पैदा हो, हमारा सौन्दर्य-प्रेम न जाग्रत हो, जो हममे सच्चा सकल्प और कठिनाइयो पर विजय पाने की सच्ची दृढता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नही। —प्रेमचन्द्र

साहित्य के अन्तर्गत वह सारा वाड्मय लिया जा सकता है जिसमे अर्थ-बोध के अतिरिक्त भावोन्मेष अथवा चमत्कारपूर्ण अनुरजन हो तथा जिसमें ऐसे वाड्मय की विचारात्मक समीक्षा या व्याख्या हो। —रामचन्द्र शुक्ल

अधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नही है।
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नही है॥ —अज्ञात

सच्चे साहित्य का निर्माण तो एकान्त-चिन्तन और एकान्त-साधना मे होता है। —अज्ञात

The decline of literature indicates the decline of a nation, the two keep pace in their downward tendency

साहित्य का पतन राष्ट्र के पतन का द्योतक है, पतन की ओर वे परस्पर एक दूसरे का साथ देते हैं। —गेटे

प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का सचित प्रतिबिम्ब होता है। —रामचन्द्र शुक्ल

साहित्य की सरिता जब जनता के हर्ष-विषाद से तरगित होती है तभी गगा के तुल्य उसमें सब अवगाहन करते हैं, अन्यथा वह कर्मनाशा के तुल्य त्याज्य है। —अज्ञात

साहित्य-सगीत-कला-विहीन साक्षात्पशु पुच्छ-विषाणहीन ।
तृण न खादन्नपि जीवमानस्तद् भागधेय परम पशूनाम् ॥

— भर्तृहरि

साहित्य, सगीत और कला से रहित पुरुष विना पूंछ और सीग के साक्षात् पशु ही है। वह विना तृण खाये हुए जो जीता है, यह पशुओ का परम सौभाग्य है।

समाज नष्ट हो सकता है, राष्ट्र भी नष्ट हो सकता है, किन्तु साहित्य का नाश कभी नही हो सकता। — अज्ञात

साहित्य का अध्ययन युवको का पालन-पोषण करता है, वृद्धो का मनोरजन करता है, उन्नति का शृगार करता है, विपत्ति को धीरज देता है, घर मे प्रमुदित करता है और वाहर विनीत वनाता है। — सिसरो

साहित्य के साधकों ने इस अनुपम उद्यान को सदैव अपने हृदय के रस से सीचा है। यही कारण है कि इसका परिमल हमारे मुरझाते हुए हृदय को हरा-भरा कर देता है।

— अज्ञात

राजनीति क्षणभगुर है, चचल है, परन्तु साहित्य चिरस्थायी है, मगलमय है, उसके आधार-भूत मूल्यो की क्षति नही होती। — अनन्त गोपाल शेवड़े

साहित्यकार

सच्चा साहित्यकार तो अपनी अन्तरप्रेरणा को छोडकर और किसी देवता की पूजा नही करता। वह तो इस विश्वास से चलता है कि मेरे हृदय में भगवान् का वास है, मैं यदि उसकी अभ्यर्थना करूँगा, आराधना करूँगा, तो उसी की वाणी मेरी जवान या कलम पर उतरेगी। —अज्ञात

साहित्यकार एक दीपक के समान है, जो जलकर केवल दूसरो को ही प्रकाश प्रदान करता है। — अज्ञात

सिद्धान्त

Principle is a passion for truth and right

सिद्धान्त सत्य और न्याय के लिए उत्कण्ठा का नाम है। — हैजलिट

महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त लचीले हो सकते हैं और होने भी चाहिए। — लिंकन

Principles become modified in practice by facts

वास्तविक तथ्यो के कारण सिद्धान्तो मे व्यावहारिक दृष्टि से परिवर्तन हो जाता है। —कूपर

सिद्धान्त-विहीन जीवन का कोई मूल्य नही है। —अज्ञात

सिद्धि

विधातु सर्वलोकस्याभिप्रायोऽप्येष दृश्यते।
यत्कार्य-सिद्धित पूर्वं कष्टस्वीकरण मतम्॥ —अज्ञात

समस्त ससार की सृष्टि करनेवाले प्रजापति का अभिप्राय भी यही दीखना है कि किसी भी कार्य की सिद्धि से पहले कष्ट या दु ख उठाना ही चाहिए।

योगाभ्यास आत्मा का विषय है इसलिए सिद्धियाँ शरीर को प्राप्त नही होती बल्कि आत्मा को होती है। —स्वामी दयानन्द सरस्वती

विना कर्म किसी ने सिद्धि नही पायी। —भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

सीख (दे० "नसीहत", "शिक्षा")

हमारे जीवन का प्रत्येक अगला दिन पिछले दिन से कुछ ऐसे ढग का हो, जिसमे हमने कुछ सीखा हो। —रवीन्द्र

शिक्षा वाको दीजिए, जाको सीख सोहाय।
सीख न दीजै वाँदरा, आपन हानि कराय॥ —अज्ञात

Every man I meet is my superior in some way In that, I learn of him

जिन जिन व्यक्तियो से मै मिलता हूँ वे किसी न किसी रूप में मुझसे श्रेष्ठ होते है, और इस तरह मै उनसे कुछ सीख पाता हूँ। —एमर्सन

विनय राजपुत्रेभ्य पण्डितेभ्य सुभाषितम्।
अनृत द्यूतकारेभ्य स्त्रीभ्य शिक्षेत्तु कैतवम॥ —चाणक्य

विनयी होना राजपुत्रो से सीखना चाहिए, पण्डितो से सुभाषित, जुआ खेलने वालों से झूठ बोलना और प्रपच करना स्त्रियो से सीखना चाहिए।

सीख का कदाचित् ही स्वागत होता है। जिनको इसकी अधिक आवश्यकता है वे ही इसको सबसे कम पसन्द करते है। —जानसन

Advice is like snow, the softer it falls the longer it dwells upon, and the deeper it sinks into the mind.

सीख हिम के सदृश है, जब धीरे-धीरे गिरती है तब अधिक देर तक टिकती है और मस्तिष्क मे गहरायी तक पहुँचती है। —कालरेज

सुकर्म

A good action is never lost, it is a treasure laid up and guarded for the doer's need

सुकर्म कभी नष्ट नही होता, यह निधि कर्ता की आवश्यकता के लिए सुरक्षित रक्खी रहती है। —काल्ड्रेयन

मनुष्य के मर जाने के बाद भी उसके सुकर्म जीवित रहते हैं। —अज्ञात

सुख

यो वै भूमा तत्सुख नाल्पे सुखमस्ति। भूमैव सुख भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्य ।
—छान्दोग्य उपनिषद्

जो पूर्ण है वह सुख है, अल्प में सुख नही, पूर्ण ही सुख है, पूर्ण को ही जानना चाहिए।

पराधीन सपनेहुँ सुख नाही। —तुलसी

दुनिया के सुख केवल निर्जीव शव जैसे हैं। —स्वामी रामतीर्थ

कस्यात्यन्त सुखमुपनत दु खमेकान्ततो वा,
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण। —कालिदास

किसी को सुख अथवा एकमात्र दु ख नही मिलता—दु ख और सुख रथ के पहिये की भाँति कभी ऊपर और कभी नीचे रहा करते है।

अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन्॥ —हितोप०

हे राजा! नित्य धन का लाभ, आरोग्यता, प्रियतमा और मधुरभाषिणी स्त्री, आज्ञाकारी पुत्र और धन का लाभ करानेवाली विद्या—ये ससार मे छ सुख हैं।

सुख ससार की किसी भी वस्तु मे नही है, इसलिए वह किसी भी बडे से बडे वैभव द्वारा प्राप्त नही हो सकता। सुख तो मन की एक स्थिति है जो आत्मसाधन द्वारा प्राप्त होती है। —अज्ञात

जीवन में सबसे महान् सुख किसी वस्तु को त्याग कर चले जाने में है। सबसे महान् सुख किसी वस्तु की प्राप्ति मे नही वरन् उसके त्याग मे है।

—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

यदि मन स्थिति बिगडी हुई हो तो दूसरे अवसरो पर सुखकारक प्रतीत होने-वाले पदार्थ भी सुख नही दे सकते। —वेद

सच्चा सुख स्वार्थनाश में है और उसे अपने आप के अतिरिक्त अन्य कोई सुखी नही बना सकता। —विवेकानन्द

सच्चा सुख बाहर से नही मिलता, अतर से मिलता है। —महात्मा गांधी

The secret of happiness is renunciation

सुख का रहस्य त्याग मे है। —एण्ड्रू कारनेगी

सुख, जो कुछ तुम त्याग कर सकते हो उस पर आधारित है, जो कुछ तुम पा सकते हो उस पर नही। —महात्मा गाधी

Virtue alone is happiness below

केवल सद्गुण ही इस पृथ्वी पर सुख है। —शेक्सपियर

राग के समान अग्नि नही है, द्वेप के समान मल नही, स्कन्धो के समान दु ख नही, शान्ति से बढकर सुख नही। —धम्मपद

The happiness of a man in this life does not consist in the absence but in the mastery of his passions

इस जीवन में मनुष्य का सुख वासनाओ के अभाव में नही है वरन् उन पर शासन करने में है। —टेनीसन

नीरोग होना परम लाभ है, सन्तोष परम धन है, विश्वास सबसे बडा बन्धु है, निर्वाण परम सुख है। —धम्मपद

विषयानुपभुञ्जानै सुख-प्राप्तिधिया नरै।
सुखस्य कारण स्वान्तम् इत्येतदवधार्यताम्॥ —अज्ञात

मनुष्य सुख-प्राप्ति के विचार से विषयो का उपभोग करते हैं। उनको समझ लेना चाहिए कि वास्तव में सुख का कारण मन ही है।

एक महान् उद्देश्य के लिए प्रयत्न में स्वत ही आनन्द है, सुख है और किसी अश तक प्राप्ति की मात्रा भी है। —जवाहरलाल नेहरू

No thoroughly occupied man was ever yet very miserable
जो व्यक्ति अत्यधिक व्यस्त रहता है वह आज तक कभी बहुत दुखी नहीं हुआ।

—एल० ई० लन्डन

This is the true joy in life the being used for a purpose recognised by yourself as a mighty one, the being thoroughly worn out before you are thrown on the scrap heap, the being a force of nature, instead of a felverishy selfish little clod of ailments and grievances complaining that the world will not devote itself to making you happy

यही जीवन का सच्चा सुख है—ऐसे उद्देश्य मे जिसे तुम स्वय ही महान् समझते हो, काम आ जाना, इसके पहले कि तुम घूरे पर रद्दी की तरह उठाकर फेक दिये जाओ, काम करते करते पूर्णरूप से घिस जाना। प्रकृति की एक शक्ति बन जाना कही अच्छा है बजाय इसके कि तुम रोग और आपत्तियो की एक ज्वरपीडित, स्वार्थपूरित, क्षुद्र पीडा बने हुए रोते फिरो कि दुनिया तुमको सुखी बनाने की ओर कुछ ध्यान नही देती।

—जार्ज बर्नाड शा

विषदिग्धस्य भक्तस्य दन्तस्य चलितस्य च।
अमात्यस्य च दुष्टस्य मूलादुद्धरण सुखम्॥ —हितोपदेश

विष मिले हुए भोजन, हिले हुए दाँत और बुरी सलाह देनेवाले मत्री का समूल विनाश कर देना ही सुखदायी होता है।

सुख-भोग की लालसा, आत्मसम्मान का सर्वनाश कर देती है।

—प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)

सुखी (दे० "प्रसन्न")

हर्ष के साथ शोक और भय इस प्रकार लगे हुए हैं जिस प्रकार प्रकाश के सग छाया। सच्चा सुखी वही है जिसकी दृष्टि में दोनो समान है। —धम्मपद

जीवन में सुखी वही हो पाता है जिसे शान्ति का मार्ग मिल गया है। —अज्ञात

लोभमूलानि पापानि व्याधयो रसमूलका।
स्नेहमूलानि दुखानि त्रीणि त्यक्त्वा सुखी भव॥ —अज्ञात

लोभ के कारण पाप होते है, रस के कारण रोग होते है और स्नेह के कारण दुख होते है। अत लोभ, रस और स्नेह का त्याग करके सुखी हो जाओ।

सुखी जीवन

The way to have a happy life is to be busy doing what you like all the time, having no time left to consider whether you are happy or not

सुखी जीवन व्यतीत करने का उपाय यह है कि मनुष्य तन्मय होकर मनोनुकूल कार्य मे अपने को लगा रखे और इस वात को सोचने के लिए भी कुछ समय न दे कि वह सुखी है या नही। जार्ज वर्नार्ड शा

सुदिन

भले दिन मनुष्य के चरित्र पर सदैव के लिए अपना चिह्न छोड जाते हैं।
—प्रेमचन्द

सुदिन सवके लिए आते हैं, किन्तु टिकते उसी के पास हैं जो उनको पहचानकर आदर देता है। —अज्ञात

घूरे के भी दिन फिरते हैं। —अज्ञात

सुधार

Reform must come from within, not from without, you can not legislate for virtue

सुधार आन्तरिक होना चाहिए, वाह्य नही। तुम सद्गुणो के लिए नियम नही वना सकते। —गिवन

Reform like charity must begin at home

सुधार दानशीलता की भाँति घर से प्रारम्भ होना चाहिए। —कारलाइल

कोई भी सुधार सम्भव नही है जव तक कुछ शिक्षित और धनी व्यक्ति स्वेच्छा से निर्धनता का स्तर नही अपना लेते। —महात्मा गाधी

To reform a man you must begin with his grand-mother

यदि किसी व्यक्ति का सुधार करना चाहते हो तो उसकी दादी से शुरू करो।
—विक्टर ह्यूगो

Necessity reforms the poor, and satiety the rich

आवश्यकता निर्धन का सुधार करती है, सन्तुष्टता घनी का। —टेसीटस

जो व्यक्ति अपना सुधार स्वय कर लेता है वह लम्बी-चौडी बातें करनेवाले निर्बल देशभक्तो के समूह से कही अधिक जनता का सुधार करता है। —लेवेटर

सुधारक

उपहास और विरोध तो सुधारक के पुरस्कार है। —प्रेमचन्द

सुधारक चाहे कितना भी श्रेष्ठ पक्ति का क्यो न हो, जब तक जनता उसे परख नही लेगी उसकी बात नही सुनेगी। —विनोबा

जो सुधारक अपने सदेश के अस्वीकार होने पर क्रोधित हो जाता है उसे सावधानी, प्रतीक्षा और प्रार्थना सीखने के लिए वन में चला जाना चाहिए। —महात्मा गांधी

सच्चा सुधारक न केवल पाप से घृणा करेगा वरन् उस स्थान को अच्छाइयो से भरने का उत्साहपूर्वक प्रयत्न करेगा। —सी० सिमन्स

सुन्दर

जो अहित करनेवाली चीज है वह थोडी देर के लिए सुन्दर बनाने पर भी असुन्दर है, क्योकि वह अकल्याणकारी है। सुन्दर वही हो सकता है जो कल्याणकारी हो। —भगवतीचरण वर्मा

यदि सुन्दर दिखाई देना है तो तुम्हें भडकीले कपडे नही पहनना चाहिए बल्कि अपने गुणो को बढाना चाहिए। —महात्मा गाधी

किमिव हि मधुराणा मण्डन नाकृतीनाम्। —कालिदास

सुन्दर शरीर पर सभी कुछ शोभा देने लगता है।

सुन्दर स्त्रियाँ गाना और रोना दोनो अच्छी तरह जानती हैं।

—जयशंकर प्रसाद

मैंने चमकीली आँख, सुन्दर रूप, खूबसूरत शक्ल देखी, लेकिन एक भी ऐसी आत्मा न मिली जो मेरी आत्मा से बोलती। —एमर्सन

सुन्दरता (दे० "खूबसूरती", "सौंदर्य")

नेत्रो का सुन्दरता से घना सम्बन्ध है। —प्रेमचन्द

सुन्दरता चलती है तो साथ ही देखनेवाली आँख, सुननेवाले कान और अनुभव करनेवाले हृदय चलते हैं। —अज्ञात

हाजते मश्शाता नेस्त रूम दिलाराम रा। —सादी

सुन्दरता बिना शृंगार के ही मन को मोहती है।

The most beautiful things in the world are the most useless, peacocks and lilies for instance

ससार मे सबसे सुन्दर वस्तु सबसे अधिक बेकार होती है, जैसे मोर और कुमुदिनी। —रस्किन

A thing of beauty is a joy forever Its loveliness increases, it will never pass into nothingness

सुन्दर वस्तु चिर-आनन्ददायिनी है। उसकी माधुरी नित्य बढती जाती है, उसका कभी ह्रास नही होने पाता। —कीट्स

अच्छे विचार रखना भीतरी सुन्दरता है। —स्वामी रामतीर्थ

Beauty draws us with a single hair

सुन्दरता एक बाल के द्वारा भी हमको अपनी ओर खीच सकती है। —पोप

क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूप रमणीयताया। —माघ

क्षण प्रति क्षण जो नवीन दिखाई पडे वही सुन्दरता का उत्कृष्ट नमूना है।

हे सौंदर्य, तू अपने को प्रेम के भीतर ढूंढ, दर्पण की मिथ्या प्रशसा मे नही। —रवीन्द्र

If virtue accompanies beauty, it is the heart's paradise, if vice be associated with it, it is the soul's purgatory It is the wise man's bonfire, and the fool's furnace

यदि सुन्दरता के साथ सद्गुण है, तो वह हृदय का स्वर्ग है, यदि उसके साथ दुर्गुण है तो वह आत्मा का नरक है। वह बुद्धिमान् की होली और मूर्ख की भट्ठी है। —क्वार्ल्स

बिना सद्गुण के सुन्दरता अभिशाप है। —कहावत

Beauty provoketh thieves sooner than gold

स्वर्ण से भी शीघ्र सुन्दरता चोरो को आकर्षित करती है। —कहावत

What is lovely never dies,
But passes into other loveliness

जो सुन्दर है उसका कभी ह्रास नही होता, वरन् वह अन्य सुन्दर वस्तुओ में प्रवेश कर जाता है। —टी० बी० एल्ड्रिच

सुपात्र

सुपात्र-दानाच्च भवेद्धनाढ्यो धन-प्रभावेण करोति पुण्यम्।
पुण्य-प्रभावात्सुरलोकवासी पुनर्धनाढ्य पुनरेव योगी॥ —अज्ञात

सुपात्र को दान देने से आदमी धनी होता है, धन के प्रभाव से वह पुण्य प्राप्त करता है और पुण्य के प्रभाव से स्वर्ग मिलता है। उसके बाद जन्म-जन्मान्तर में भी आदमी धनी और भोगी होता है।

सुपुत्र

एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।
आह्लादित कुल सर्व यथा चद्रेण शर्वरी॥ —चाणक्य

विद्यायुक्त, भले, एक भी सुपुत्र से सारा कुल ऐसे आनन्दित हो जाता है जैसे चन्द्रमा से रात्रि।

एक ही सुपुत्र के कारण सिंहनी वन की महारानी होती है किन्तु दस नालायक पुत्रो के होते हुए भी गदही भार ढोते ढोते मर जाती है। —अज्ञात

एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना।
वासित स्याद् वन सर्व सुपुत्रेण कुल यथा॥ —चाणक्य

एक भी अच्छे वृक्ष से, जिसमें सुन्दर फूल और गन्ध है, सारा वन इस प्रकार सुवासित हो जाता है जैसे सुपुत्र से कुल।

कि जातैर्बहुभि पुत्रै शोकसतापकारकै।
वरमेक कुलालवी यत्र विश्राम्यते कुलम्॥ —चाणक्य

शोक-सताप उत्पन्न करनेवाले बहुत पुत्रो से कुल को क्या? सहारा देनेवाला एक ही पुत्र श्रेष्ठ है, जिससे कुल विश्राम पाता है।

एकोऽपि गुणवान्पुत्रो निर्गुणैश्च शतैर्वर।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारा सहस्रश॥ —चाणक्य

एक भी गुणी पुत्र श्रेष्ठ है, सैकडो गुणरहितो से क्या? एक ही चन्द्रमा अधकार नष्ट कर देता है, सहस्र तारे नही।

सुप्रसिद्धि

Passion for fame, a passion which is the instinct of all great souls

प्रसिद्धि की अभिलाषा, वह अभिलापा है जो प्रत्येक महान् व्यक्ति की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। —वर्क

प्रसिद्धि की तृष्णा यदि महान् व्यक्तियो की आखिरी कमजोरी है तो छोटे मनुष्यो की पहली कमजोरी है। —रस्किन

सुभार्या (दे० "भार्या")

सुभार्या स्वर्ग की सवसे वडी विभूति है जो मनुष्य के चरित्र को उज्ज्वल और पूर्ण वना देती है, जो आत्मोन्नति का मूल-मत्र है। —प्रेमचन्द

मनुष्य की सवसे वडी सम्पत्ति सुभार्या है। —वर्टन

सा भार्या या शुचिर्दक्षा सा भार्या या पतिव्रता।
सा भार्या या पतिप्रीता सा भार्या सत्यवादिनी ॥ —चाणक्य

वही भार्या है जो पवित्र और चतुर है, वही भार्या है जो पतिव्रता है, वही भार्या है जिस पर पति की प्रीति है, वही भार्या है जो सत्य वोलती है।

सुमति

जहाँ सुमति तहँ सपति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥

—तुलसी (मानस-सुन्दर)

सुलभ

सुलभ वस्तु सर्वस्य न यात्यादरणीयताम्।
स्वदारपरिहारेण परदारार्थिनो जना ॥ —अज्ञात

जो वस्तु आसानी से लोगो को मिलती रहती है वे उसका आदर नहीं किया करते। लोग अपनी सुलभ सुन्दर पत्नी को छोडकर दूसरे की औरतो के पीछे घूमा करते हैं।

सुशीलता

छिन्नोऽपि चन्दनतरुर्न जहाति गन्ध
वृद्धोऽपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम्।
यन्त्रार्पितो मधुरता न जहाति चेक्षु
क्षीणोऽपि न त्यजति शीलगुणान्कुलीन ॥ — चाणक्य

काटा हुआ चन्दन का वृक्ष गन्ध को नही छोड देता, बूढा गजपति भी क्रीडा को नही छोड देता, कोल्हू में पेरी हुई ईख मधुरता नही छोड देती, दरिद्र भी कुलीन सुशीलता आदि गुणो को नही छोड देता।

सूक्तियाँ

जीवन भर के कितने अनुभवो का अमृत सूक्ति के एक विन्दु में रहता है।

— डा० रामकुमार वर्मा

सूक्तियाँ साहित्य-गगन में देदीप्यमान उज्ज्वल नक्षत्र के समान हैं। इनकी आभा देश और काल की सकुचित सीमा पार करके सर्वदा एकसमान और एकरस रहने वाली है। — रामप्रताप त्रिपाठी

यदि वाङ्मय को हम हरितिमा-पुज का रूपक दें तो सूक्तियो को हमें सुवासित पुष्प की सज्ञा देनी पडेगी। पुष्प जैसे हमारी घ्राण तथा चाक्षुप शक्तियो को आह्लादित करता है वैसे ही सूक्तियाँ हमारे मन तथा मस्तिष्क को पुलकायमान करती हैं।

— प्रिंसिपल हृदयनारायण सिंह

ज्ञानियो का ज्ञान और युगो के अनुभव सूक्तियो द्वारा सुरक्षित रहते हैं।

— डिजरायली

विधाता की इस मानव-सृष्टि में सूक्तियाँ कल्पतरु के समान हैं। इनकी सुविस्तृत सघन छाया में जीवनपथ की थकान को ही दूर करने की शक्ति नही है प्रत्युत भविष्य की दुर्गम यात्रा को सुखपूर्वक समाप्त करने का इनमे अक्षय तथा दैवी सम्बल भी रहता है। — रामप्रताप त्रिपाठी

Quotation is the highest compliment you can pay to an author.
सूक्तियां सर्वोच्च अभिनन्दन है जो तुम किसी लेखक को समर्पित कर सकते हो।

— डा० जानसन

सूक्तियो से जीवन की सच्ची परिस्थितियो का मार्मिक अनुभव मिलता है।

—अज्ञात

Next to the originater of a good sentence is the first quoter of it

किसी सुन्दर वाक्य के निर्माण करनेवाले के वाद उसकी वारी आती है जो उसका सर्वप्रथम प्रयोग करता है। —एमर्सन

सूक्तियो मे आत्म-अनुभूतियाँ भावपूर्ण शव्दो मे व्यक्त होती है, जिनको वात वात में हम प्रमाणस्वरूप प्रयोग करते है। —अज्ञात

प्रत्येक सूक्ति भापा के विस्तार और उसे चिरस्यायी वनाने मे सहयोग देती है।

—डा० जानसन

सूक्तियो में मनीपियो के चिन्तन, अनुभृति, परीक्षण और कल्पना के तत्त्व, सारभूत सत्य निहित होते है। उनके द्वारा जीवन-यात्रा मे हमे स्फूर्ति, प्रोत्साहन, मानसिक वल प्राप्त होता है। वे जीवन के अधकारपूर्ण क्षणो में प्रकाश-किरण का काम करती है। —प्रिंसिपल हृदयनारायण सिंह

सूर्य

सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टे कल्पेत लोकस्य कथ तमिस्रा। —कालिदास

जव सूर्य दीप्तिमान् हो तव लोगो की आँखो के सामने अँधेरा कैसे छा सकता है।

सव जीवधारी उत्पत्ति के लिए सूर्य के ऋणी है। —स्वामी रामतीर्थ

सूर्य प्रतिदिन प्रात आकर हमें उठाता है और कर्त्तव्यपथ का सकेत करता है।

—अज्ञात

सूर्योदय

सूर्योदय में जो नाटक भरा है, सौंदर्य भरा है और जो लीला भरी है वह और कही देखने को नही मिल सकती। —महात्मा गाधी

सृष्टि

जगत् की सृष्टि का कारण वुद्धिगम्य नही है, यह तो स्वय आत्मा के अनुभव का विषय है। वुद्धि इस गुत्थी को नही सुलझा सकती। —अरविंद घोष

सृष्टि एक व्यापार है, कार्य है। —जयशकर प्रसाद

सृष्टि पाप और पुण्य, जड और चेतन दोनो के योग से होती है, केवल पुण्य या केवल चैतन्य से कभी सृष्टि का कारखाना चल नही सकता। —अज्ञात

ईश्वर की सृष्टिरूपी अनोखे चमन में जवानी का सुहावना फूल न खिलता तो कवि लोग बैठे-बैठे ऊँघा करते। —अज्ञात

सेनापति

सेनापति वही है जो सिपाही की सेवा को अधिकार की वस्तु न समझ कर श्रद्धा की वस्तु समझता है। —अज्ञात

सेवक

सेवक वही है जो विपत्ति में साथ रहे, जैसे शरीर की छाया धूप में शरीर के साथ रहती है। —अज्ञात

समदरसी मोहि कह सब कोऊ।
सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ॥
—तुलसी (मानस-किष्किन्धा)

सब तें सेवक-धरम कठोरा। —तुलसी (मानस-अयोध्या)

सब के प्रिय सेवक यह नीती।
मोरे अधिक दास पर प्रीती॥—तुलसी (मानस-उत्तर)

जिसने सेवा को कुत्ते की वृत्ति का कहा उसने ठीक उदाहरण नही दिया, कारण कहा तो स्वच्छन्द विचरण करनेवाला कुत्ता और कहा सेवक जिसने अपने जीवन को भी बेच दिया।

प्रणमत्युन्नतिहेतो जीवितहेतोर्विमुञ्चति प्राणान्।
दु खीयति सुखहेतो को मूढ सेवकादन्य ॥ —अज्ञात

ऊचा उठने के लिए मालिक के यहा प्रणिपात करता है, जीने के लिए अपने प्राण तक को छोडने को तैयार रहता है, सुख-प्राप्ति के लिए दु खी रहता है, इसलिए कहा गया है कि सेवक से बढकर और दूसरा कौन मूर्ख हो सकता है।

अपने सेवक से बहुत हिलमिल न जाओ, प्रारम्भ में यह मेल-जोल बढा सकता है परन्तु अन्त में तिरस्कार को जन्म देगा। —फुलर

सेवा

गरीबो की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। —सरदार वल्लभभाई पटेल

सेवा धरम कठिन जग जाना। —तुलसी (मानस-अयोध्या)

जिसे मेरी सेवा करनी है वह पीडितो की सेवा करे। —गौतम बुद्ध

सेवामार्ग भक्तिमार्ग से भी ऊचा है। —अज्ञात

वीर-पूजा जैसे वीर वन कर ही हो सकती है वैसे ही गरीवो की सेवा गरीव वनकर ही हो सकेगी। —विनोवा

सेवा से शत्रु भी मित्र हो जाता है। —अज्ञात

सेवा मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है। —प्रेमचन्द

सेवा हृदय और आत्मा को पवित्र करती है। सेवा से ज्ञान प्राप्त होता है, और यही जीवन का लक्ष्य है। —स्वामी शिवानन्द

त्याग और सेवा ही भारत का जातीय आदर्श है। इसी भाव को पुन जगा देना चाहिए। वाकी आप ही आप ठीक हो जायगा। —स्वामी विवेकानन्द

लाखो गूगो के हृदय मे ईश्वर विराजमान है। मैं उसके सिवा अन्य किसी ईश्वर को नही मानता। मैं इन लाखो की सेवा द्वारा उस ईश्वर की पूजा करता हूँ। —महात्मा गाधी

वन्धुभाव से की हुई सेवा की अपेक्षा आत्मभाव से की हुई सेवा उत्तम है। —अज्ञात

जो लोग सेवाभाव रखते हैं और स्वार्थ-सिद्धि को जीवन का लक्ष्य नही वनाते उनके परिवार को आड देनेवालो की कमी नही रहती। —प्रेमचन्द

सेवा के लिए पैसे की जरूरत नही होती, जरूरत है अपना सकुचित जीवन छोडने की, गरीबो से एकरूप होने की। —विनोवा

धन-सम्पत्ति, शारीरिक सुख और मान, वडाई, प्रतिष्ठा आदि को न चाहते हुए, ममता, आसक्ति और अहकार से रहित होकर मन, वाणी, शरीर और धन के द्वारा सम्पूर्ण प्राणियो के हित में रत होकर उन्हे सुख पहुचाने की चेष्टा करना सेवा-साधन कहलाता है। —अज्ञात

अपनी और ससार की सर्वोत्तम सेवा इसी मे है, तुम सदा पवित्र विचार रखो। —अज्ञात

जहाँ रूप, यौवन, सपत्ति और प्रभुता तया स्वाभाविक सौजन्य प्रेम का बीज बोने में अकृतकार्य रहते हैं, वहाँ प्राय उपकार का जादू चल जाता है। कोई हृदय ऐसा वज्र और कठोर नही हो सकता जो सत्य सेवा से द्रवीभूत न हो जाय।

—प्रेमचन्द

सेवा उसकी करो जिसे सेवा की जरूरत है। जिसे सेवा की जरूरत नही उसकी सेवा करना ढोंग है, दम्भ है। —महात्मा गांधी

सेवा करने की योग्यता रखना दड नही, ईश्वर का आशीर्वाद है। —अज्ञात

निष्ठावत और निष्काम सेवा ज्यादा दिन एकाकी नही रहने पाती। —विनोबा

उत्तम देश, काल और पात्र के प्राप्त होने पर जो न्यायानुकूल सेवा की जाती है वही सेवा महत्त्वपूर्ण होती है। —अज्ञात

प्रेम करने की योग्यता सब मे है, किन्तु सेवा करने की शक्ति किसी को ही मिलती है। —अज्ञात

सेवा में वृत्ति जितनी निरहकार रहेगी उतनी सेवा की कीमत बढेगी।

—विनोबा

सेवा ही वास्तविक सन्यास है। सन्यासी केवल अपनी मुक्ति का इच्छुक होता है, सेवा-व्रतधारी अपने को परमार्थ की वेदी पर बलि दे देता है। —प्रेमचन्द

फल की सेवा मूल्यवान् है, पुष्प की सेवा मधुर है, परन्तु विनीत भक्तिभाव से छाया करनेवाली पत्तियो की सेवा के सदृश मेरी सेवा हो। —रवीन्द्र

यथा खनन् खनित्रेण भूतले वारि विन्दति।
तथा गुरुगता विद्या शुश्रूषुरधिगच्छति॥ —चाणक्य

जैसे कुदारी से खोदकर मनुष्य पाताल के जल को पाता है, वैसे ही गुरुगत विद्या सेवा से प्राप्त होती है।

सैनिक

सैनिक केवल एक यत्र है जिसकी गति का निर्णय उसके नायक को है। सैनिक जीवन और मृत्यु में कोई अन्तर नही समझ सकता। —डा० रामकुमार वर्मा

सैनिक केवल इसलिए जीवित है कि नायक की आज्ञा से मृत्यु प्राप्त कर सके। इससे अधिक सैनिक का कोई अधिकार नही है। —वही

सौन्दर्य (दे० "खूबसूरती", "सुन्दरता")

वास्तविक सौन्दर्य हृदय की पवित्रता में है।

— महात्मा गाधी ("आत्म कथा" से)

Beauty is truth, truth beauty

सौन्दर्य ही सत्य है और सत्य ही सौन्दर्य। — कीट्स

सौन्दर्य, जीवन-सुधा है। मालूम नही क्यो इसका असर इतना प्राणघातक होता है। —प्रेमचन्द (हार की जीत)

Beauty is power, a smile is its sword

सौन्दर्य शक्ति है और मुस्कान उसकी कृपाण। — चार्ल्स रीड

सौन्दर्य सौन्दर्य को आकर्षित करता है। — ले हन्ट

सौन्दर्य वह चीज है जिसकी परिभाषा नही हो सकती, व्याख्या या निरूपण नही हो सकता, जो सर्जनात्मिका कला को अमर आनन्द का स्रोत बना देता है, और जो नैतिक अच्छाई से सर्वथा जुदा वस्तु है। — अज्ञात

Truth and goodness and beauty are but different faces of the same all

सत्य, अच्छाई और सौन्दर्य उसी एक (परमात्मा) के विभिन्न रूप हैं।

— एमर्सन

सौन्दर्य सत्य की मुस्कान है जब वह अपनी ही आकृति एक उत्तम दर्पण में देखता है। — रवीन्द्र

Men move from beautiful things to beautiful ideas, from beautiful ideas to beautiful life, from beautiful life to absolute beauty

मनुष्यो की गति सुन्दर वस्तुओ से सुन्दर मनोभावो की ओर, सुन्दर मनोभावो से सुन्दर जीवन की ओर, सुन्दर जीवन से पूर्ण सौन्दर्य की ओर होती है। — प्लेटो

सौन्दर्य को देखनेवाले में भी अशत सौन्दर्य होता है। — बोवी

दुनिया का सारा सौन्दर्य स्वस्थ शरीर में है। — भगवती चरण वर्मा

सौन्दर्य और पवित्रता का सयोग क्वचित् ही होता है। — जुवेनल

ज्ञानी के लिए सत्य है, भावुक हृदय के लिए सौन्दर्य है। — शिलर

When beauty fires the blood, how love exalts the mind

जब सौन्दर्य रक्त में उबाल पैदा करता है तब प्रेम मस्तिष्क को बहुत ऊंचा उठा देता है। —ड्राइडेन

If eyes were made for seeing,
Then beauty is its own excuse for being

यदि आँखें देखने के लिए बनायी गयी हैं, तो सौन्दर्य अपने अस्तित्व के लिए स्वय बहाना है। —एमर्सन

सौन्दर्य ही सकल विश्व का एकमात्र सत्य है। —अज्ञात

किसी परिचय पत्र की अपेक्षा व्यक्तिगत सौन्दर्य स्वय एक बडी सिफारिश है। —अरस्तू

Beauty is the lover's gift

सौन्दर्य प्रेमी का उपहार है। —कानग्रेव

अच्छाई सौन्दर्य को कितना ऊचा उठा देती है। —हन्नामोर

The best part of beauty is that which no picture can express

सौन्दर्य का सर्वोत्तम भाग वह है जिसको कोई चित्र चित्रित न कर सके। —बेकन

Beauty is often worse than wine, intoxicating both the holder and the beholder

सौन्दर्य प्राय मदिरा से भी अधिक बुरा है क्योकि यह सौन्दर्यवान् और दर्शक दोनो को मदमत्त बना देती है। —जमीरमन

पुरुष! स्वामी बनकर सौन्दर्य की सराहना कर, सेवक बनकर आत्म-समर्पण न कर। —डा० रामकुमार वर्मा

सौन्दर्य की सर्वव्यापी सत्ता है। —चैनिंग

सौन्दर्य का आदर्श सादगी और शाति है। —गेटे

सौभाग्य

सौभाग्य उन्ही को प्राप्त होता है, जो अपने कर्त्तव्य-पथ पर अविचल रहते हैं। —प्रेमचन्द

सच्चा सौभाग्य, सच्ची समृद्धि तो आत्मिक-वैभव आत्मिक-पूर्णता का आत्मिक ज्ञान ही है। —स्वेट् मार्डेन (दिव्य जीवन)

सौभाग्य वीर से डरता है और केवल कायर को भयभीत करता है। —सेनेका

A pound of pluck is worth a ton of luck
रत्तीभर साहस मनो सौभाग्य से अच्छा है। —जे० ए० गारफील्ड

स्कूल

जो मनुष्य एक स्कूल खोलता है वह ससार का एक जेलखाना बन्द कर देता है। —विक्टर ह्यूगो

स्कूल प्रजातत्री किलेबन्दी है। —होरेस मैन

स्त्री (दे० 'नारी,' 'भार्या,' 'सुभार्या')

सुयोग्य पत्नी परिवार की शोभा तथा गृह की लक्ष्मी है। —मनु

स्त्रियो की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है। —अरस्तू

अवला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी।
आचल में है दूध और आखो में पानी॥
—मैथिली शरण गुप्त (यशोधरा)

स्त्री पृथ्वी की भाँति धैर्यवान् है, शाति-सम्पन्न है, सहिष्णु है। —प्रेमचन्द

स्त्रियो की सगति अच्छे स्वभाव की आधार-शिला है। —गेटे

सम्पूर्ण महान् कार्य के प्रारम्भ में किसी स्त्री का हाथ रहा है। —लामार्टिन

Earth's noblest thing, a woman perfected
साध्वी स्त्री ससार की सर्वोत्तम वस्तु है। —लावेल

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। —मनु
जिस घर मे स्त्रियो की पूजा होती है उस घर में अवश्यमेव देवता रमते हैं।

"Virtuous wife, where thou dost meet
Both pleasures more refined and sweet,
The fairest garden in her looks
And in her mind the wisest books"

सद्‌गुणी स्त्री जहा कही भी मिलती है वहा आपको आनन्द मिलता है। उसकी चितवन में वहुत सुन्दर उद्यान है और उसका मन सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी पुस्तक है। —काउले

स्त्री, जगत की एक पवित्र स्वर्गीय ज्योति है। वह पुरुष शक्ति के लिए जीवन-सुधा है। त्याग उसका स्वभाव, प्रदान उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है। —चतुरसेन शास्त्री

नारी की झाई परत, अन्धा होत भुजग।
कविरा तिनकी कौन गति, नित नारी को सग॥ —कबीर

विन गृहणी घर भूत के डेरा। —तुलसी

सौन्दर्यवती स्त्री नयनाभिराम होती है, बुद्धिमती स्त्री हृदय को प्रसन्न करती है। एक अनमोल रत्न है तो दूसरी रत्न-राशि। —नैपोलियन

स्त्रियो की मानहानि साक्षात् लक्ष्मी और सरस्वती की मानहानि है। —निराला

न घर में सद्गुण सम्पन्ना नारी सुखपूर्वक निवास करती है, उस घर में लक्ष्मी रती है, सैकडो देवता भी उस घर को नही छोडते। —महर्षि गर्ग

oman is "a necessary evil, a natural temptation, a desirable ty, a domestic peril, a deadly fascination and a painted ill"
ी एक अनिवार्य आपत्ति, स्वाभाविक मोह, वाछनीय विपदा, घरेलू खतरा, क आकर्षण, बाहर से मीठी और भीतर से विपरस भरे कनक घट के है। —सेन्ट क्रिस्टोस्टम

ष शस्त्र से काम लेता है, स्त्री कौशल से। —प्रेमचन्द

A wife is a gift bestowed upon man to reconcile him to the loss of paradise
स्त्री एक ईश्वरीय उपहार है जिसे स्वर्ग के खो जाने पर ईश्वर ने मनुष्य को उसकी क्षति-पूर्ति के लिए दिया है। —गेटे

स्त्री प्रकृति की सुन्दर भूलो में है। —फाउले

स्त्री की चितवन में हमारे कानून की अपेक्षा अधिक बल है और उसके अश्रुओ मे हमारे तर्क की अपेक्षा अधिक शक्ति है। —सेवाइल

स्त्री सब कुछ कर सकती है, मगर अपनी इच्छा के विरुद्ध प्रेम नही कर सकती। —सुदर्शन

स्त्री एक मधुर सरिता है, जहाँ मनुष्य अपनी चिन्ताओ और दु खो से त्राण पाते है। —अज्ञात

Men at most differ as heaven and earth, but women, worst and best, as heaven and hell

पुरुषो में अधिकाशत स्वर्ग और पृथ्वी का, परन्तु उत्तम और निकृष्ट स्त्री में स्वर्ग और नरक का अन्तर होता है। —टेनीसन

मेरे मत में स्त्री को घर छोडकर घर की रक्षा के निमित्त कन्धे पर बन्दूक धरने के लिए आह्वान करने अथवा उसके लिए उसे प्रोत्साहित करने में स्त्री और पुरुष दोनो का ही पतन है। —महात्मा गाधी

तुम अजस्र वर्षा सुहाग की, और स्नेह की मधु रजनी।
चिर अतृप्त जीवन यदि था, तो उसमें सन्तोष बनी॥
नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रचत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत में बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।

—जयशंकर प्रसाद

स्त्री का हृदय नवनीत-सा स्निग्ध होता है, वह सहज ही पिघल जाता है, उसके हृदय मे सदा एक प्रेमसागर लहराता है। फिर भी वह प्रेम की प्यासी रहती है।—अज्ञात

स्त्री, जिस समय तू अपने गृहकार्य में लीन रहती है उस समय तेरे शरीर मे ऐसी मधुर रागिनी निकलती है जैसी छोटे-छोटे पत्थरो के टुकडो के साथ, पर्वत स्रोत के क्रीडा करने से निकलती है। —रवीन्द्र

स्त्री काटेदार झाडी को फूल बनाती है, दरिद्र से दरिद्र मनुष्य के घर को भी सुशील स्त्री स्वर्ग बना देती है। —गोल्डस्मिथ

यह लौकिक रीति पुरुष के अत्याचार का बहुत निर्बल बहाना है कि स्त्री का सद्गुण सच्चरित्रता और आज्ञाकारिता है। —डा० सर्वपल्लीराधाकृष्णन

नारि-विवस नर सकल गोसाईं, नाचहिं नर मर्कट की नाईं॥ —तुलसी

जो पुरुष रोग से पीडित हो, विपत्ति में फँसा हुआ हो, उसके लिए भी स्त्री के समान कोई दूसरी औषधि नही है। —वेदव्यास (महाभारत, शाति पर्व)

स्त्री को पराजित करना हो तो उसकी प्रशसा करो। —वृन्दावन लाल वर्मा

A woman is like your shadow, follow her, she flies, fly from her, she follows

स्त्री तुम्हारी छाया के सदृश है, उसका पीछा करो, वह भागेगी, उससे भागो, वह आपका पीछा करेगी। —कैम्फोर्ट

प्यार के खातिर स्त्री सब कुछ करने को तैयार हो जाती है, परन्तु प्रतिकार के लिए उससे भी अधिक भयानक कर्म कर बैठती है। —सुदर्शन

स्त्री का बल और साहस, मान और मर्यादा पति तक है। उसे अपने पति के ही बल और पुरुषत्व का घमड होता है। —प्रेमचन्द

बाहुवीर्यबल राज्ञो ब्राह्मणो ब्रह्मविद्बली।
रूपयौवनमाधुर्य स्त्रीणा बलमनुत्तमम्॥ —चाणक्य

राजा का बाहुवीर्य बल है, ब्राह्मण, ब्रह्मज्ञानी और वेदपाठी बली होता है, स्त्रियो की सुन्दरता, तरुणता और मधुरता उनका उत्तम बल है।

स्त्री-जाति मे हर उम्र में मातृत्व का अश रहता है, और वही अश उनमे सहिष्णुता, क्षमा और स्नेह को प्रेरित करता है, दुःख को कम करने की शक्ति लाता है, और इसी से उनका दिग्विजय इतना सरल हो जाता है।

—क० मा० मुन्शी

There is no worse evil than a bad woman and nothing has ever been produced better than a good one

एक निकृष्ट स्त्री से बढकर कोई बुराई नही और अच्छी स्त्री की अपेक्षा आजतक कोई अच्छाई उत्पन्न नही हुई। —यूरोपिडीज

वह सेवा को अपना अधिकार समझती है, इसलिए देवी है, वह त्याग करना जानती है, इसलिए साम्राज्ञी है, विश्व उसके वात्सल्यमय आचल मे स्थान पा सकता है इसलिए जगन्माता है। —अज्ञात

पुरुष का स्त्री के समान न कोई बन्धु है, न धर्म-साधन में वैसा कोई सहायक।
—वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

Frailty, thy name is woman
दुर्बलता तेरा ही नाम स्त्री है। —शेक्सपियर

स्त्री प्रकृति की कन्या है। उसकी ओर कोप दृष्टि से कभी मत देखो, उनका हृदय कोमल होता है, उस पर विश्वास करो। —वेदव्यास (महाभारत)

In revenge and in love, woman is more barbarous than man.
बदला लेने में और प्रेम में स्त्री पुरुष से अधिक निर्दयी होती है। —नीत्शे

A beautiful and chaste woman is the perfect workmanship of God, the true glory of angels, the rare miracle of earth and sole wonder of the world

सुन्दर और सच्चरित्र स्त्री ईश्वर की उत्कृष्ट कारीगरी, देवताओं की वास्तविक शोभा, पृथ्वी का अपूर्व चमत्कार तथा ससार का एकमात्र आश्चर्य है।

—हरमीज

स्त्री के हृदय में करुणा अमृत वन कर वहा करती है। —डा० रामकुमार वर्मा

प्रत्येक स्त्री का यह कर्त्तव्य है कि वह जितनी जल्दी सम्भव हो सके विवाह कर ले जब कि पुरुष का यह कर्त्तव्य है कि जहा तक सम्भव हो उससे दूर रहे।

—जार्ज वर्नार्ड शा

काम क्रोध लोभादि मद, प्रवल मोह कै धारि।
तिन्ह मह अति दारुन दुखद, मायारूपी नारि॥ —तुलसी

सुशीला रमणी ईश्वर का सवसे उत्तम प्रकाश है, जो इस ससार की शोभा वढा रहा है। —रवीन्द्र

स्त्रिया पूजा करने योग्य, वडे भाग्यवाली, पुण्यात्मा, गृह का प्रकाश तथा साक्षात् लक्ष्मी होती हैं—इससे स्त्रियो की विशेष रक्षा करनी चाहिए। —विदुर

'Tis beauty that doth oft make women proud, 'tis virtue, that doth make them most admired, 'tis modesty that make them seem divine

सौन्दर्य स्त्रियो को प्राय अभिमानी वनाता है, सद्गुण उनको अति प्रशसनीय वनाता है और विनय से वे देवतुल्य हो जाती हैं। —शेक्सपियर

आभूषण के विना पति ही स्त्री का परम आभूषण है, पति से रहित भूषण आदि से स्त्री शोभायमान नही होती। —हितोपदेश

किसी स्त्री के स्त्रीत्व को भग करने से पूर्व मर जाना ही एक उत्तम कार्य है, किसी स्त्री को पाप कर्म से वचा लेना सवसे वडा कार्य है। —महात्मा गांधी

Woman and wine intoxicate the young and old
स्त्री और मदिरा, नवयुवको एव वृद्धो को मदमत्त वना देती है। —कहावत

स्त्री प्रेम करती है अथवा घृणा, वह इनके वीच की स्थिति नही जानती।

—साइरस

जिमि स्वतन्त्र भए बिगरहिं नारी। —तुलसी

भर्तु शुश्रूषया नारी लभते स्वर्गमुत्तमम्।
अपि या निर्नमस्कारा निवृत्ता देवपूजनात्॥ —वाल्मीकि

देवताओ की पूजा और वन्दना से दूर रहने पर भी जो स्त्री अपने स्वामी की सेवा में लगी रहती हैं, वह उस सेवा के प्रभाव से उत्तम स्वर्गलोक को प्राप्त होती है।

स्त्री क्या है? साक्षात् त्याग की मूर्ति। जब कोई स्त्री किसी काम में जी जान से लग जाती है तो वह पहाड को भी हिला देती है। —महात्मा गाधी

स्त्रियो का जीवन ऐसा होता है कि वे अपने स्वभाव की भयकरता को छिपा सकती हैं और बाहर से अपनी तीखी वाणी को मधुर भी बना सकती हैं। —रवीन्द्र

कार्य्येषु मन्त्री, करणेषु दासी, भोज्येषु माता, रमणेषु रम्भा।
धर्मानुकूला, क्षमया धरित्री, भार्य्या च षाड्गुण्यवती च दुर्लभा॥—अज्ञात

कार्य में मन्त्री के समान सलाह देनेवाली, सेवादि मे दासी के समान काम करनेवाली, भोजन कराने में माता के समान पथ्य भोजन करानेवाली, शयन के समय रम्भा के समान सुख देनेवाली और धर्म के अनुकूल तथा क्षमादि गुण धारण में पृथ्वी के सदृश ऐसे छ गुणो से युक्त स्त्री दुर्लभ होती है।

All the reasonings of men are not worth one sentiment of women
पुरुष के सारे तर्क स्त्री के एक भाव की तुलना नही कर सकते।

—वालटेयर

'The woman's cause is man's, they rise or sink
Together, dwarfed or godlike, bond or free'

स्त्री और पुरुष का ध्येय परस्पर एक है, वे साथ ही साथ उन्नति करते हैं या पतन की ओर जाते हैं, छोटे या देवतुल्य बनते हैं, पराधीन या स्वतत्र होते हैं। —टेनीसन

स्त्री सब कुछ सह सकती है, दारुण से दारुण दु ख, बडे से बडा सकट। अगर नही सह सकती तो अपने यौवन-काल की उमगो का कुचला जाना। —प्रेमचन्द

स्त्री सहनशक्ति की साक्षात् प्रतिमूर्ति है, धैर्य का अवतार है। —महात्मा गाधी

सन्देह का भार पुरुष ढोता है, स्त्री विश्वास चाहती है। —अज्ञात

स्त्री गालिया सह लेती है, मार भी सह लेती है, पर मैके की निन्दा उनसे नही सही जाती। —सुदर्शन

The test of civilization is the estimate of woman

स्त्री के सम्मान से सभ्यता का परिचय मिलता है। —जी० डब्लू० फर्टिस

स्त्रियो की कोमलता पुरुषो की काव्य-कल्पना है। उन्हे शारीरिक सामर्थ्य चाहे न हो, पर उनमें वह धैर्य और साहस है जिस पर काल की दुश्चिन्ताओ का जरा भी असर नही होता। —प्रेमचन्द

स्त्री बल को जीत सकती है, परन्तु प्रेम और वह भी पति का प्रेम—इससे सग्राम करने की हिम्मत दुनिया के किसी नारी-हृदय में न होगी। यहा आकर नारी बेबस हो जाती है। —सुदर्शन

तारे आकाश की कविता है, तो स्त्रिया पृथ्वी की सगीत-माधुरी। —अज्ञात

स्त्री के आँसू

नारी का अश्रुजल अपनी एक-एक बूद में एक एक बाढ लिये रहता है।

—जयशकर प्रसाद (जन्मेजय का नागयज्ञ)

स्त्री! तूने अपने अथाह अश्रुओ से ससार के हृदय को उसी प्रकार घेर रखा है जिस प्रकार समुद्र पृथ्वी को। —रवीन्द्र

हम स्त्री की लाल आँखें देख सकते है, पर उसकी सजल आँखें नही देख सकते।

Beauty's tears are lovelier than her smiles

सुन्दरी के आँसू उसकी मुसकान की अपेक्षा अधिक प्यारे लगते है। —कैंपवेल

स्थितप्रज्ञ

स्थितप्रज्ञ के श्लोक गानेवाले को शान्तिपूर्वक काम करने की आदत डालनी ही चाहिए। —महात्मा गाधी

जिस मनुष्य के चित्त में किसी तरह की कामना उठती ही नही और स्वय आनन्द-मय हो जाता है, जिसके चित्त को कडी से कडी विपत्ति में भी दुख नही पहुचता, जो सुख या अभ्युदय में अपने को परम सुखी नही मानता है, जिसके पास से भय, प्रीति और क्रोध दूर हट गये है, वह मनुष्य स्थितप्रज्ञ कहा जाता है। —भगवान् कृष्ण

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्ट स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

जव मनुष्य मन में उठती हुई सभी कामनाओ का त्याग करता है और आत्मा द्वारा ही आत्मा में सन्तुष्ट रहता है तव वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है।

यदा सहरते चाय कूर्मोऽङ्गानीव सर्वश ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ —गीता

कछुआ जैसे सव ओर से अग समेट लेता है वैसे ही जव यह पुरुष इन्द्रियो को उनके विषयो से समेट लेता है, तव उसकी बुद्धि स्थिर हुई कही जाती है।

स्नान

न जलाप्लुतदेहस्य स्नानमित्यभिधीयते।
स स्नातो यो दमस्ना शुचि शुद्धमनोमल ॥

जल में शरीर को डुवो लेना ही स्नान नही कहलाता। जिसने दमरूपी तीर्थ में स्नान किया है—मन-इन्द्रियो को वश में कर रखा है, उमी ने वास्तव में स्नान किया है। जिसने मन का मल धो डाला है, वही शुद्ध है।

स्नेह

स्नेह के कारण ही विपयो की सत्ता का अनुभव होता है और फिर उनमें राग हो जाता है। —वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

स्नेह एक ऐसा चिकना और परिव्यापक भाव है कि उसमें व्यक्तित्व नही रहते। स्नेह अपने स्नेह पात्र को कभी 'याद' नही करता क्योकि वह उसे कभी भूलता नही। —अज्ञेय ('शेखर' से)

स्नेह के कारण ही मनुष्य विपयो में फँसता है और अनेको प्रकार के दु ख भोगने लगता है। —वेदव्यास (महाभारत, वनपर्व)

स्पर्धा

स्पर्धा ही जीवन है। उसमें पीछे रहना जीवन की प्रगति को रोकना है। —निराला

स्मरण, स्मृति

यादें हमारे जीवन को हरा-भरा रखने के लिए, हमारे साथ प्रभु का पक्षपात है। यादे पख हैं जो उडने का पुरुषार्थ देती हैं। —माखनलाल चतुर्वेदी

दुख में सुमिरन सब करै, सुख मे करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय॥ —कबीर

स्मृति मस्तिष्क का खजाची है। —कहावत

स्मृति वह पुजारिन है जो वर्तमान को समाप्त कर अपना हृदय मृतक भूत की मूर्ति पर अर्पित कर देती है। —रवीन्द्र

सुमिरन सुरत लगाइ के मुख ते कछू न बोल।
बाहर के पट देइ के अतर के पट खोल॥ —कबीर

The true art of memory is the art of attention
स्मरण की सच्ची कला ध्यान की कला है। —सैमुएल जानसन

स्वकर्म

यत प्रवृत्तिर्भूताना येन सर्वमिद ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विदति मानव ॥ —गीता

जिस परमात्मा से सम्पूर्ण प्राणियो की प्रवृत्ति होती है और जिस परमेश्वर से यह सब ससार व्याप्त है उस परमेश्वर को जो कोई स्वकर्म से जपता है वह मोक्ष पाता है।

सहज कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृता ॥

—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

अपने स्वाभाविक कर्म में कुछ दोष हो तो भी उसे न छोडना चाहिए, सब ही कर्म दोषयुक्त हैं, जैसे अग्नि धुए से व्याप्त है।

स्वच्छता

दरिद्रता धीरतया विराजते
कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते। —चाणक्य

दरिद्रता भी धीरता से शोभित होती है, स्वच्छता से कुवस्त्र भी अच्छा लगता है। स्वच्छता फटे पुराने वस्त्रो में भी सौन्दर्य ला देती है। —अज्ञात

स्वतंत्र

Man is born free, and yet he is everywhere in chains
मनुष्य जन्म से स्वतन्त्र है, लेकिन वह सब जगह जजीरो से जकडा हुआ है।
—रूसो

परमात्मा अनादि है, स्वतन्त्र और स्वयदर्शी है, अत मानव-मात्र स्वतन्त्र स्वय-द्रष्टा है और इसीलिए स्वतन्त्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है।
—विपिनचन्द्र पाल

स्वतन्त्र वही हो सकता है जो अपना काम आप कर लेता है। —विनोबा

स्वर्ग मे दास बनने की अपेक्षा नरक मे शासन करना कही अच्छा है।
—मिल्टन

No man is free who is not master of himself
वह व्यक्ति स्वतन्त्र नही है जो स्वय अपना स्वामी नही है। —इपिक्टेटस

स्वतंत्रता

स्वतत्रता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। —लोकमान्य तिलक

स्वतत्रता जन्म-सिद्ध हक नही, कर्म-सिद्ध हक है। —विनोबा

Liberty is not a personal affair only but a social contract It is an accommodation of interest.
स्वतत्रता एक व्यक्तिगत मामला ही नही है, बल्कि एक सामाजिक ठेका है। यह स्वार्थों की सुविधा है। —ए० जी० गार्डनर

Eternal vigilance is the price of libertv
स्वतन्त्रता का मूल्य निरन्तर सावधानी है। —जे० पी० कुरल

Those who denv freedom to others deserve it not for themselves and under a just God cannot long retain it
जो दूसरे को स्वतन्त्रता से वचित रखते हैं वे स्वय उसके अधिकारी नही है और न्यायप्रिय ईश्वर के शासन में उसको बहुत दिनो तक नही रख सकते। —लिंकन

The tree of libertv grows onlv when watered by the blood of tyrants
स्वतन्त्रता का वृक्ष केवल अत्याचारियो के रक्त से सींचने पर पनपता है।
—बरेरे

स्वागत स्वतत्रते, स्वागत, जिन्दगी और आत्मा की अमरता के वाद ईश्वर की सर्वोत्तम देन। —टॉमसन

स्वतत्रता राष्ट्रो का शाश्वत यौवन है। —अज्ञात

We hold these truths to be self-evident, that all men are created equal, that they are endowed by their creator with certain unalienable rights, that among these are life, liberty, and the pursuit of happiness

हम इन सत्यो को स्वयसिद्ध मानते है कि सव मनुष्य ममान उत्पन्न हुए हैं, उनके स्रष्टा ने उन्हें कुछ अनपहरणीय अधिकारो से सम्पन्न किया है, और इनमें जीवन, स्वतन्त्रता और सुख-प्राप्ति के प्रयत्न भी हैं। —अमेरिकन स्वतन्त्रता की घोषणा १७७६

मुझे स्वतन्त्रता दो अथवा मृत्यु। —पेट्रिक हेनरी

Liberty too must be limited in order to be possessed

सुरक्षा के लिए स्वतन्त्रता को भी सीमित होना चाहिए। —वर्क

जव स्वतन्त्रता चली जाती है तव जीवन निस्तेज हो जाता है, उसमें कोई उत्साह नही रहता। —एडीसन

जिस ईश्वर ने हमको जीवन दिया है, उसने उसी समय हमें स्वतन्त्रता भी दी है। —जेफरसन

स्वतन्त्रता के विजय-नाद एक दिन मे नही प्राप्त किये जाते क्योकि स्वतन्त्रता की देवी वडी कठिनाई से सन्तुष्ट और तृप्त होती है। वह भक्तो की कठोर एव दीर्घकालव्यापी तपस्या चाहती है और परीक्षा लेती है। —सुरेन्द्रनाथ वनर्जी

What light is to the eyes, what air is to the lungs, what love is to the heart, liberty is to the soul of man

नेत्रो के लिए जैसे प्रकाश है, फेफडो के लिए जैसे वायु है, हृदय के लिए जैसे प्यार है, उसी प्रकार मनुष्य की आत्मा के लिए स्वतन्त्रता है। —आर० जी० इन्गरसोल

स्वदेशप्रेम

जो भरा नही है भावो से,
वहती जिसमें रसधार नही।
वह हृदय नही है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नही। —मैथिलीशरण गुप्त

Breathes there the man with soul so dead
Who never to himself hath said
'This is my own my native land'

क्या कोई मनुष्य ऐसा मृत-चित्त है जिसने कभी अपने मन में ऐसा न कहा हो कि यह मेरा अपना प्यारा देश है। —वाल्टर स्काट

देश-प्रेम के दो शब्दो के सामजस्य मे वशीकरण मत्र है, जादू का सम्मिश्रण है। यह वह कसौटी है जिस पर देश-भक्तो की परख होती है। —अज्ञात

देश-प्रेम की सत्ता, जहाँ एक ओर मघर्ष तथा सकट-काल में प्रलयाग्नि का सा काम करती है वहाँ दूसरी ओर इसका स्पर्श हिमानी शिखर-सा शीतल भी है।—अज्ञात

स्वदेशाभिमान

यदि स्वदेशाभिमान सीखना है तो सीखो एक मछली से, जो स्वदेश (पानी) के लिए तडप-तड़प कर जान दे देती है। —सुभाषचन्द्र बोस

जिसको न निज गौरव तथा,
निज देश का अभिमान है।
वह नर नही पशु है निरा,
और मृतक समान है। —मैथिलीशरण गुप्त

स्वदेशी

स्वदेशी का व्रत तो सदा ही पालना है द्वेष या वैर भाव से नही, बल्कि अपने प्यारे देश के प्रति कर्त्तव्यबुद्धि से प्रेरित होकर पालना है। — महात्मा गाधी

स्वधर्म

श्रेयान्स्वधर्मो विगुण परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वभावनियत कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्विपम्॥
स्वधर्मे निधनं श्रेय परधर्मो भयावह।

परधर्म अति उत्तम हो तो भी उससे अपना निर्गुण धर्म ही अच्छा है, क्योकि अपने स्वाभाविक धर्म के करने से पाप नही लगता।

अपने धर्म में मर जाना भी कल्याणकारी होता है, किन्तु परधर्म भयावह होता है।
—भगवान् श्रीकृष्ण (गीता)

स्वभाव

अन्दर की वस्तु को वाहर की, भाव की वस्तु को भाषा की, निज की वस्तु को विश्व की और क्षणिक वस्तु को चिरस्थायी बना देने की आकाक्षा मानव स्वभाव है।

—अज्ञात

मनुष्यो का यह स्वभाव है कि वह दूसरो को अपने से अधिक सुखी समझते है और स्वय वैसा ही होना चाहते हैं। —सुकरात

स्वभाव मिलने पर ही मन मिलता है। जैसे दूध दही से ही जमता है काजी मे फट जाता है। —अज्ञात

मनुष्य की सच्ची प्रकृति ईश्वरत्व है। —रामतीर्थ

प्राणीमात्र अपने स्वभाव का अनुसरण करते है। —श्रीकृष्ण (गीता)

आत्मा का स्वभाव सुख-दु ख से अछूते रहना है। उस स्वभाव तक मनुष्य को पहुँचना है। —महात्मा गाधी

मानव-स्वभाव निम्न व पतित होने की अपेक्षा उच्च व दिव्य है।

—रस्किन (विजयपथ)

कोटि जतन कोऊ करै, परै न प्रकृतिहि वीच।
नल-वल जल ऊँचो चढै, अन्त नीच को नीच॥ —विहारी

रहिमन लाख भली करो, अगुनी अगुन न जाय।
राग सुनत पय पियत हूँ, साँप सहज धरि खाय॥ —रहीम

मनुष्य-स्वभाव आदर्शों और सिद्धान्तों से भी प्रवल है। —अज्ञात

उपभोक्तु न जानाति श्रिय 'प्राप्यापि मानव ।
आकण्ठजलमग्नोऽपि श्वा लिहत्येव जिह्वया॥ —अज्ञात

गर्दन तक पानी में खडा रहकर भी कुत्ता जैसे जीभ से पानी चाटता है वैसे ही प्रभूत सम्पत्ति पाकर भी मनुष्य उसका ढग से उपभोग करना नही जानता।

न धर्मशास्त्र पठतीति कारण न चापि वेदाध्ययन दुरात्मन ।
स्वभाव एवात्र तयातिरिच्यते यथा प्रकृत्या मधुर गवा पय ॥ —हितो०

दुरात्मा वेदाध्ययन करता है या धर्मशास्त्र पढ़ता है, यह कोई कारण नही है। स्वभाव ही सर्वोपरि होता है। जैसे गाय का दूध स्वभाव से ही मधुर होता है।

स्त्रियाँ, राजा और लताएँ—इनका प्राय ऐसा स्वभाव होता है कि जो भी बगल मे मिलता है उसी से लिपट जाती हैं। —पचतत्र

मनुष्य का स्वभाव ही है। तनिक-सा दोष देखते ही, कुछ क्षण पूर्व की सभी बातें भूलते उसे कितनी देर लगती है। —शरत्चन्द्र (श्रीकान्त)

स्वराज्य

यतेमहि स्वराज्ये—हम स्वराज्य के लिए सदा प्रयत्न करे। —ऋग्वेद

स्वराज्य चित्त की वृत्ति मात्र है। ज्यो ही पराधीनता का आतक दिल से निकल गया, बस स्वराज्य मिल गया। भय ही पराधीनता है, निर्भयता ही स्वराज्य है। —प्रेमचन्द

जैसे माता बच्चे को उठाने के लिए नीचे झुकती है, उसी तरह हमे भी नीचे झुकना चाहिए और नीचे वालो को ऊपर उठाना चाहिए। तभी विषमता मिटेगी और तभी सच्चा स्वराज्य आयेगा। —विनोबा

स्वराज्य गणेशजी की वह मूर्ति है जिसका निर्माण हमें मिट्टी मे से करना है। —विनोबा

स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। —लोकमान्य तिलक

Every man, and every body of men on earth, possess the right of self-government

इस भूतल पर प्रत्येक मनुष्य को और मनुष्यो के वर्ग को, स्वशासन का अधिकार है। —टामस जैफर्सन

स्वर्ग

यदि स्वर्ग कोई स्थान है तो प्रेम ही वहाँ जाने का मार्ग है। —टालस्टाय

जहाँ दु ख का लेश भी नही है उस स्वर्ग को दु ख-पथ से ही पहुँचने का मार्ग है। —काउपर

दो प्रकार के व्यक्ति ससार में स्वर्ग के ऊपर भी स्थित होते हैं—एक तो जो शक्तिशाली होकर क्षमा करता है और दूसरा जो दरिद्र होकर भी कुछ दान करता है। —वेदव्यास (महाभारत, उद्योगपर्व)

स्वर्ग मनुष्य के जीवन में है। वह ठोस नही है, तरल है जो मन्दाकिनी की तरह मानव के प्राणो से कल-कल ध्वनि करता है। वह प्रेम मे है, दया मे है, सहानुभूति में है। —अज्ञात

Heaven means to be one with God
ईश्वर से एकता स्थापित करना ही स्वर्ग है। —कन्फ्यूशस

जो परोपकार में रत है, ईश्वर में जिसको विश्वास है और सत्य का जो अनुसरण करता है उसको भूमडल ही स्वर्ग है। —बेकन

जहाँ हमारी सुन्दर कल्पना आदर्श का नीड वन कर विश्राम करती है वही स्वर्ग है। वही विहार का, वही प्रेम करने का स्थल स्वर्ग है और वह इसी लोक में मिलता है।
—जयशकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)

The mind in its own place, and in itself can make a heaven of hell, a hell of heaven
मन अपने भीतर ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग बना सकता है।
—मिल्टन

दान, पश्चात्ताप, सन्तोष, सयम, दीनता, सत्य और दया ये स्वर्ग के सात द्वार हैं।

स्वर्ग और पृथ्वी सब हमारे ही अन्दर है। हम पृथ्वी से तो परिचित हैं, पर अपने अन्दर के स्वर्ग से बिल्कुल अपरिचित हैं। —महात्मा गाधी

सदा प्रसन्न मुखमिष्टवाणी, सुशीलता च स्वजनेषु सख्यम्।
सता प्रसग खलसगत्यागश्चिह्नानि देहे त्रिदिवस्थितानाम्॥ —अज्ञात

सदा प्रसन्न मुख रहना, प्रिय बोलना, सुशीलता, आत्मीय जनो से प्रेम, सज्जनो का सग और नीचो की उपेक्षा—ये स्वर्ग में रहनेवालो के लक्षण हैं।

यस्य पुत्रो वशीभूतो भार्य्या छन्दानुगामिनी।
विभवे यश्च सन्तुष्टस्तस्य स्वर्गमिहैव हि॥ —वेदव्यास

जिसका पुत्र आज्ञाकारी हो, पत्नी अनुरूप हो, और मन में धन की तृष्णा न हो वह इस जीवन में ही स्वर्ग पा लेता है।

तेरा स्वर्ग तेरी माँ के पैरो तले है। —हजरत मोहम्मद

स्वर्ण

A mask of gold hides all deformities
सोने का घूंघट सारी कुरूपता को ढक देता है। —डैकर

It is much better to have your gold in the hand than in the heart

सोने को हृदय की अपेक्षा हाथ मे रखना कही अच्छा है। —फुलर

Gold is no balm to a wounded spirit

स्वर्ण घायल आत्मा के लिए लेप नही है। —कहावत

अग्निदाहे न मे दुःख छेदे न निकषे न वा।
यत्तदेव महद्दुःख गुञ्जया सह तोलनम्॥ —अज्ञात

स्वर्ण कहता है—मुझे न तो आग में तपाने से दुःख होता है, न काटने-पीटने से, न कसौटी पर कसने से, मेरे लिए जो महान् दुःख का कारण है वह है घुँघची के साथ मुझे तोलना।

पक्षी के पंख को स्वर्ण से आभूषित कर दो तो वह आकाश में फिर कभी न उड सकेगा। —रवीन्द्र

स्वाद

स्वाद तो भूख में है। सूखी रोटी भूखे को जितनी स्वादिष्ट लगेगी उतना भर-पेट खाये हुए को लड्डू भी नही लगेगा। —महात्मा गांधी

स्वाधीनता

बँधे बैल मे और छूटे साँड में बडा अन्तर है। एक रातिब पाकर भी दुर्बल है, दूसरा घास-पात ही खाकर मस्त हो रहा है। स्वाधीनता बडी पोषक वस्तु है।

—प्रेमचन्द ('प्रेम पचीसी')

पराधीनता की विजय से स्वाधीनता की पराजय सहस्रगुना अच्छी है। —अज्ञात

स्वाधीनता ही स्वाधीनता का अंत नही है। धर्म, शान्ति, काव्य-आनन्द—यह और भी बडे है। इनके चरम विकास के लिए स्वाधीनता चाहिए, नही तो उसका मूल्य ही क्या है? —शरत्चन्द्र (अधिकार)

स्वाभिमान

स्वाभिमान एक सात्त्विक सुगन्धित कमल पुष्प है जिसके चारो ओर सद्गुणो के भ्रमर सदैव गुंजित रहते हैं। —अज्ञात

स्वामी

स्वामी की आँखे उसके दोनो हाथो की अपेक्षा अधिक काम करती हैं।— अज्ञात

Masters are mostly the greatest servants in the house
स्वामी बहुधा घर के सबसे बडे सेवक होते हैं। — कहावत

Masters should be sometimes blind and sometimes deaf
स्वामी को कभी-कभी अन्धा और कभी बहरा होना चाहिए। — कहावत

स्वार्थ

सुर नर मुनि सब की यह रीती।
स्वारथ लागि करैं सब प्रीती॥ — तुलसी

स्वार्थ में मनुष्य बावला हो जाता है। — प्रेमचन्द

स्वार्थ की अनुकूलता और प्रतिकूलता से ही मित्र और शत्रु बना करते हैं।
— वेदव्यास (महाभारत, शातिपर्व)

स्वारथ के सब ही सगे, बिन स्वारथ कोउ नाहिं।
सेवें पक्षी सरस तरु, निरस भये उड जाहिं॥ — तुलसी

कौन किसी के साथ निस्वार्थ सलूक करता है। भिक्षा तक तो लोग स्वार्थ ही के लिए देते हैं। —प्रेमचन्द

जेहि ते कछु निज स्वारथ होई।
तेहि पर ममता कर सब कोई॥ — तुलसी (मानस-उत्तर)

अगर मूर्ख, लोभ और मोह के पजे मे फँस जायँ तो वे क्षम्य हैं, परन्तु विद्या और सभ्यता के उपासको की स्वार्थान्धता अत्यन्त लज्जाजनक है। — प्रेमचन्द

स्वार्थी

स्वार्थी मनुष्य ही बलिदान कर सकता है। वह आत्म-समर्पण कर देता है अपने स्वार्थ के लिए, अपने ध्येय के लिए। — अज्ञात

स्वार्थी और कपटी लोग सरल प्रकृति के उद्योगी व्यक्तियो के श्रमफल का अपहरण कर सकते हैं, परन्तु उनमें जो नवनिर्माण करने की शक्ति होती है उसे वे नही चुरा सकते। — अज्ञात

स्वावलम्बन

'स्वावलम्बन' आत्मनिर्भर सफलता का अन्तिम साधन है।

—स्वामी विवेकानन्द

स्वास्थ्य

त्रय उपस्तम्भा आहार स्वप्नो ब्रह्मचर्यमिति। —महर्षि चरक

स्वास्थ्यरूपी घर को स्थिर रखने के लिए उसके तीनो पाये—आहार, स्वप्न (निद्रा), ब्रह्मचर्य ठीक-ठीक रखने चाहिए। —अज्ञात

Health lies in labour and there is no royal road to it but through toil

स्वास्थ्य परिश्रम में है और श्रम के अतिरिक्त वहाँ तक पहुँचने का कोई दूसरा राजमार्ग नही है। —वेन्डेल फिलिप्स

जल्दी सोना और प्रात उठना मनुष्य को स्वस्थ, धनवान् और बुद्धिमान् बनाता है। —कहावत

Good health and good sense are two of life's greatest blessings

अच्छा स्वास्थ्य एव अच्छी समझ जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान हैं।

—पी० साइरस

हँसना

Always laugh when you can, it is a cheap medicine Merriment is a philosophy not well understood It is the sunny side of existence

जब भी सम्भव हो सदा हँसो, यह एक सस्ती दवा है। प्रसन्नता ऐसा दर्शनशास्त्र है जो ठीक से समझा नही गया। यह मानव-जीवन का उज्ज्वल भाग है। —बॉयरन

उससे सावधान रहो जो बालक की हँसी से घृणा करता है। —लवेटर

मानव ही केवल एक ऐसा प्राणी है जिसमें हँसने की शक्ति है। —ग्रेवाइल

ठट्ठा मार कर हँसने से मनुष्य का पाचन तीव्र होकर उसका स्वास्थ्य बढ़ता है। —अज्ञात

Laugh and the world laughs with you,
Weep and you weep alone,
For the sad old earth must borrow its mirth,
But has trouble enough of its own

हँसो और ससार तुम्हारे साथ हँसेगा, रोओ और तुम्हे अकेले रोना पडेगा। दुखी वृद्ध पृथ्वी को प्रसन्नता उधार लेनी है, किन्तु उसके पास अपनी व्यथा काफी है। —एला वीलर विलकाक्स

हँसमुख

To be freeminded and cheerfully disposed at hours of meals and of sleep, and of exercise, is one of the best precepts of long lasting

भोजन, निद्रा, और व्यायाम में चिन्तारहित तथा हँसमुख स्वभाव दीर्घ आयु का सर्वोत्तम नियम है। —बेकन

A cheerful look makes a dish a feast

हँसमुख चेहरे से दिया गया जलपान भी स्वादिष्ट भोजन हो जाता है। —हर्बर्ट

हँसमुख मनुष्य वह फुहारा है जिसके शीतल छींटे मन को ठडा करते है। —अज्ञात

हँसी (दे० 'प्रसन्नता', 'मुसकान')

जब जिन्दगी के कगारो की हरियाली सूख गयी हो, पक्षियो का कलरव मौन हो गया हो, सूरज के चेहरे पर ग्रहण की छाया गहरी होती जा रही हो, परखे हुए मित्र और आत्मीय जन कॉंटो के रास्ते पर मुझे अकेला छोड कर चल दिये हो और आसमान की सारी नाराजी मेरी तकदीर पर बरसनेवाली हो, तो हे मेरे प्रभु, तुम मेरे साथ इतना अनुग्रह करना कि मेरे होठो पर हँसी की एक उजली रेखा खिंच जाये। —योन नागोची

मनुष्य बराबरवालो की हँसी नही सह सकता, क्योकि उनकी हँसी में ईर्ष्या, व्यग और जलन होती है। —प्रेमचन्द

अच्छी हँसी गृह की प्रकाश किरण है। —थैकरे

हँसी जीवन का एक अग है, इसलिए इसको गम्भीर साहित्य से भी अलग न करना चाहिए। —लिनयूटाग

हँसी छूत की बीमारी है, आपको हँसी आयी नही कि दूसरे को जबरदस्ती दाँत निकालने पड़ेंगे, भले ही उसकी दाँत निकालने की इच्छा हो या न हो। —अज्ञात

हमारे भीतर का विषाद और अवसाद हँसी के तेज झोको से रुई के कतरो की भाँति उड़कर नष्ट हो जाता है। —अज्ञात

हमे हँसी तभी आती है जब हम किसी वस्तु और उसके मनोभाव में यकायक कोई असम्बद्धता अथवा असगति देख लेते हैं। —शोपेनहार

जब मैं स्वय पर हँसता हूँ तो मेरा अपना बोझ हलका हो जाता है। —रवीन्द्र

I like the laughter that opens the lips and the heart, that shows at the same time pearls and the soul

मुझे वह हँसी प्रिय है जो ओठो और हृदय को खोल देती है तथा उसी समय आत्मा और दाँतो का दर्शन कराती है। —विक्टर ह्यूगो

हँसी मन की गाँठें बडी आसानी से खोल देती है—मेरे मन की ही नहीं, तुम्हारे मन की भी! —महात्मा गाधी

हँसी मानव-जाति को दिये गये सर्वोत्तम दिव्य उपहारो में से एक है। —अज्ञात

हँसी की सुन्दर पृष्ठभूमि पर जवानी के प्रसून खिलते हैं। जवानी को तरोताजा रखने के लिए आप खूब हँसिए। —जार्ज बर्नार्ड शा

यौवन का आनन्द हँसने में है। हँसी ही यौवन का सुन्दर शृगार है, और जो व्यक्ति यौवन का शृगार नही कर सकता उसके पास यह हर्गिज नही ठहर सकता। —केरीबोर

उल्लास और हँसी का ही नाम जवानी है। —अज्ञात

हँसी प्रकृति की सबसे बडी नियामत है। —डा० लक्ष्मणपति वार्ष्णेय

No man who has once heartily and wholly laughed can be altogether and irreclaimably depraved

कोई भी व्यक्ति जिसने अच्छी तरह दिल खोल कर एक बार हँसा है, बिलकुल ऐसा दुराचारी नही हो सकता जिसका पुन सुधार न हो सके। —कार्लाइल

मुझे विश्वास है कि हर बार जब कोई मनुष्य मुस्कराता है या इससे अधिक हँसता है तो वह अपने जीवन में वृद्धि करता है। —स्टर्न

हँसी हमारे जीवन की सफलता की चाभी है। —अज्ञात

हत्या

For murder, though it have no tongue, will speak with most miraculous organ

हत्या के जीभ नही होती तो क्या, समय पर वह सिर पर चढ कर बोलती है।

—शेक्सपियर

मानव रक्त का प्रवाह सगीत का प्रवाह नही, रस का प्रवाह नही—एक वीभत्स दृश्य है जिसे देखकर आँखें मुह फेर लेती हैं, हृदय सिर झुका लेता है। —प्रेमचन्द

One murder makes a villain, millions, a hero, numbers sanctify the crime

एक हत्या से मनुष्य हत्यारा हो जाता है, लाखो की हत्या से वीर, अधिक सख्या पाप को धो देती है। —पोर्टियस

हमदर्दी (दे० 'सहानुभूति')

दुखियारो को हमदर्दी के दो आँसू भी कम प्यारे नही होते। —प्रेमचन्द

हया (दे० 'लज्जा')

पर्दा कपडे का नही होता, हया दूसरी चीज है। —प्रेमचन्द

तुमको बख्शा है खुदा ने जो हया का जेवर।
मोल उसका नही कारूँ का खजाना हर्गिज॥

—पं० बृजनारायण चकबस्त

हरिनाम

प्रमादादपि सस्पृष्टो, यथानलकणो दहेत्।
तयोष्ठपुट-सस्पृष्ट हरिनाम हरेदघम्॥ —स्कंदपुराण

जैसे आग की चिनगारी भूल से भी छू जाय तो वह जला ही देती है, उसी प्रकार होठो से श्री हरिनाम का स्पर्श होते ही वह समस्त पापो को हर लेता है।

हर्ष

The most profound joy has more of gravity than of gaiety in it

पूर्ण हर्ष में आनन्द की अपेक्षा गभीरता अधिक है। —मानटेन

Great joy, especially after a sudden change of circumstances is apt to be silent, and dwells in the heart than on the tongue

अधिक हर्ष, मुख्यत परिस्थिति में एकाएक परिवर्तन होने पर, शात होता है और जिह्वा की अपेक्षा हृदय मे निवास करता है। —फील्डिंग

हलवाहा

हल चलानेवाले अपने शरीर का हवन किया करते हैं। खेत उनकी हवनशाला है। उनके हवनकुड की ज्वाला की किरणें चावल के लम्बे और सफेद दानो के रूप में निकलती हैं। गेहूँ के लाल-लाल दाने इन अग्नि की चिनगारियो की डालियाँ-सी हैं।

—पूर्णसिंह

हाथ

कृत्य मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहित। —अथर्ववेद

मेरे दाहिने हाथ में कर्म-पुरुषार्थ है और सफलता बाँये हाथ मे रखी हुई है।

हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ। —तुलसी

Wise men never sit and wail their loss, but cheerily seek how to redress their harms

बुद्धिमान् मनुष्य अपनी हानि पर कभी रोते नही, अपितु प्रसन्नतापूर्वक क्षतिपूर्ति का उपाय करते हैं। —शेक्सपियर

My loss may shine yet goodlier than your gain,
When time and God give judgment

जब समय और ईश्वर न्याय करेगा मेरी हानि तुम्हारे लाभ की अपेक्षा कही अधिक चमकेगी। —स्विमबर्न

हार (दे० "पराजय")

निर्लज्ज हारकर भी नही हारता, मरकर भी नही मरता।

—जयशकर प्रसाद ('स्कन्दगुप्त')

जितनी बार हमारा पतन हो उतनी बार उठने मे गौरव है। —महात्मा गाधी

हार मौत से भी बुरी है। —अज्ञात

हार क्या है? शिक्षा के अतिरिक्त कुछ नहीं, एक अच्छी स्थिति के लिए केवल पहला कदम है। —वेन्डेल फिलिप

जो महान् उद्देश्य के लिए मरते हैं उनकी कभी हार नहीं होती। —बायरन

जब अपने में ही विश्वास नहीं है और न नेताओं में ही श्रद्धा है, तब हमारी हार अवश्य निश्चित है। —सरदार वल्लभभाई पटेल

हावभाव

स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु। —कालिदास

स्त्रियों का हावभाव प्रेमी के साथ बातचीत का पहला स्वरूप है।

हास्य (दे० 'हंसी')

हमारे हास्य में हमारी विजय-भावना निहित रहती है जब-जब हमारी श्रेष्ठता स्थापित होती है, तब-तब हमें हँसी आती है। —लेहन्ट

हास्य संसार का सबसे बहुमूल्य उपहार है। —अज्ञात

हास्य की परिभाषा असम्भव है। कुरूपता, अशुद्धता, भ्रष्टता तथा दोषपूर्ण व्यवहार द्वारा ही हास्य प्रकट होता है। —टामस विल्सन

आप अपने सारे दुःखों, सारे कटु अनुभवों, सारी उलझनों को हास्य के अथाह सागर में डुबो कर जी का भार हल्का कर सकते हैं। —अज्ञात

आकस्मिक नवीनता हास्य का प्राण है। —टामस हाब्स ("लेवायथन" से)

तन और मन के पोषण के लिए हास्य एक बेहतरीन टानिक है। —अज्ञात

हास्य वह मिसरी है, जो उपदेश की कड़वी कुनैन को भी इतना मीठा बना देती है कि छोटे-छोटे बच्चों से लेकर बड़े-बड़े बुड्ढे तक उसे बड़ी रुचि से चाट जाते हैं। —अज्ञात

हास्य पाचन शक्ति ठीक करने की बहुत अच्छी दवा है। हास्यरूपी परमौषधि के सेवन से हाज्मा जरूर ठीक हो जाता है। —एक डाक्टर

हिंसा

जहाँ सिर्फ कायरता और हिंसा के बीच किसी एक के चुनाव की बात हो वहाँ मैं हिंसा के पक्ष में राय दूंगा। —महात्मा गांधी

जो फूट डालती है, भेद बढाती है, वही हिंसा है। —विनोबा

हिंसा पशुता की प्रवृत्ति है मानवता की नही, और मनुष्य पशुता को छोड कर मानवता का पूर्ण विकास कर रहा है। —अज्ञात

जिस भांति भौरा फूलो की रक्षा करता हुआ मधु को ग्रहण करता है उसी प्रकार मनुष्य को हिंसा न करते हुए अर्थो को ग्रहण करना चाहिए। —विदुर

जो मनुष्य हिंसा नही करता और मास खाने से परहेज करता है, सारा ससार हाथ जोड कर उसका सम्मान करता है। —सत तिरुवल्लुवर

हित

परहित सरिस धर्म नहि भाई। —तुलसी

हित अनहित पशु पक्षिहु जाना। —तुलसी

कीरति भनिति भूति भल सोई। सुर सरि सम सब कर हित होई॥—तुलसी

जैसे बीज अपना अस्तित्व मिटाकर (पृथ्वी में मिलकर) वृक्ष बनकर एक का अनेक हो जाता है उसी प्रकार से वह प्राणी जो सब प्राणियो के हित में (सर्व भूत हिते रत) अपने को मिटा देता है वह अनन्त शक्तिमान् हो जाता है। —स्वामी भजनानन्द

यावत्स्वस्थो ह्यय देहो यावन्मृत्युश्च दूरत।
तावदात्महित कुर्यात्प्राणान्ते किं करिष्यति॥ —चाणक्य

जब तक देह नीरोग है और जब तक मृत्यु दूर है, तभी तक ही पुण्यादि करके अपना हित करना उचित है, मृत्यु हो जाने पर कोई क्या करेगा।

हिन्दी

हिन्दी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।
—महर्षि दयानन्द

भारत के विभिन्न प्रदेशो के बीच हिन्दी-प्रचार के द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत-बन्धु है। —योगिराज अरविन्द

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है। —महात्मा गाधी

देश के सबसे बडे भूभाग में बोली जानेवाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा-पद की अधिकारिणी है। —सुभाषचन्द्र बोस

मै दुनिया की सब भाषाओ की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश मे हिन्दी की इज्जत न हो, यह मै नही सह सकता। —आचार्य विनोबा भावे

राष्ट्रभाषा के प्रचार को मै राष्ट्रीयता का अग मानता हूँ।

—राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

हिन्दी स्वय अपनी ताकत से बढेगी। —प० नेहरू

हिन्दी का प्रचार राष्ट्रीयता का प्रचार है। —राजर्षि टडन

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। —महात्मा गाधी

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

—सुमित्रानन्दन पंत

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न उर को शूल ॥

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना नही है, वह तो है ही। —कन्हैयालाल मा० मुशी

हिन्दी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओ मे महानतम स्थान रखती है। —डा० अमरनाथ झा

हिन्दी उन सभी गुणो से अलकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओ की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है। —मैथिलीशरण गुप्त

मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिन्दी भाषा के अध्ययन में लगावें। हम यही समझे कि हमारे प्रथम धर्मों में से एक धर्म यह भी है।

—विनोबा

हिन्दू

यूनानियो ने व्याकरण में जो सफलता प्राप्त की, वह ससार भर के सबसे बडे वैयाकरण पाणिनि के आगे कुछ भी नही थी। —प्रो० मैक्समूलर

यूरोप के प्रथम दार्शनिक प्लेटो और पाइथैगोरस दोनों ने दर्शनशास्त्र का ज्ञान भारतीय गुरुओ से प्राप्त किया। —मॉनियर विलियम्स

पाश्चात्य दर्शनशास्त्र के आदि गुरु आर्य ऋषि हैं, इसमें सन्देह नही।

—प्रसिद्ध इतिहासज्ञ लैयब्रिज

हिन्दू चिकित्सक शल्य-क्रिया (शस्त्र-चिकित्सा) मे सिद्धहस्त थे। उन्ही से यूनानियों ने भी वैद्यक का ज्ञान प्राप्त किया। —डा० हण्टर

शल्य-चिकित्सा (शस्त्र-चिकित्सा) मे हिन्दुओ ने जो उन्नति की थी, वह उतनी ही आश्चर्यजनक थी जितनी रसायनशास्त्र मे की हुई उन्नति। —एलफिस्टन

सारी आर्य जाति ही वैज्ञानिको की जाति थी। —प्रोफेसर मैक्समूलर

बीजगणित और रेखागणित का आविष्कार और ज्योतिष के साथ उनका प्रथम प्रयोग हिन्दुओ के ही द्वारा हुआ था। —मॉनियर विलियम्स

हिमालय का 'हि' और सिन्धु (समुद्र) का इन्धु लेकर "हिन्धू" शब्द बना है। उसी का अपभ्रंश हिन्दू शब्द है। हिमालय से समुद्र तक के स्थान का हिन्दुस्तान और उसमे बसनेवाली जाति का नाम हिन्दू है। —जयदयाल गोयन्दका

हिन्दू लोग धार्मिक, प्रसन्न, न्यायप्रिय, सत्यभक्त, कृतज्ञ और प्रभुभक्ति से युक्त होते हैं। —सैमुएल जॉनसन

जिस (भारतीय) सभ्यता को अपने उच्चवर्ग के लोगो के अत्यन्त विशाल वैभव-विलास पर गर्व था, उसमें ताले-चाभी को लोग जानते ही नही थे। क्या कही पर हिन्दुओ की ईमानदारी के एक जरा से अंश के बराबर भी ईमानदारी की कल्पना की जा सकती है। —मेगस्थनीज

हिन्दुओ के चरित्र की निष्कपटता तथा ईमानदारी उनकी मुख्य पहचान है। वे कभी अनीति युक्त वचन नही बोलते। —श्री क्रिडिल

हिन्दू अनुकूल आचरण करने वाले तथा सबके प्रति दयालु होते हैं। उनका संसार में किसी से भी वैर नहीं है। —अबुलफजल

ध्यान की प्रणाली को उन्ही लोगो ने जन्म दिया है। उनमे स्वच्छता एव शुचिता के गुण वर्तमान हैं। उन लोगो में विवेक है तथा वे वीर हैं। ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद एव अन्य विद्याओ मे हिन्दू लोग आगे बढे हुए हैं। प्रतिमा-निर्माण, चित्रलेखन, वास्तु-कलाओ को उन्होने पूर्णता तक पहुंचा दिया है।

—अल्जहीज

यदि हम पक्षपात रहित होकर भलीभाँति परीक्षा करे, तो हमको स्वीकार करना होगा कि सारे ससार मे साहित्य, धर्म और सभ्यता का प्रसार हिन्दुओ ने किया है।

—श्री डी० ओ० ब्राउन (डेली ट्रिब्यून २०-२-१८८४)

हिन्दू-धर्म

मैंने यूरोप और एशिया के सभी धर्मो का अध्ययन किया है, परन्तु मुझे उन सबमें हिन्दू-धर्म ही सर्वश्रेष्ठ दिखाई देता है। मेरा विश्वास है कि इसके सामने एक दिन समस्त जगत् को सिर झुकाना पडेगा। —रोम्या रोला

हुस्न (दे० "सुन्दरता", "सौन्दर्य")

हुस्न हो क्या खुदनुमा जब कोई माइल ही न हो।
शमअको जलने से क्या मतलब, जो महफिल ही न हो॥

—डा० इकबाल

हृदय

पहाडो में भी हरियाली होती है, पाषाण हृदयो में भी रस रहता है। —प्रेमचन्द

भग्न हृदयो के लिए ससार सूना है। —प्रेमचन्द

If a good face is a letter of recommendation, a good heart is a letter of credit

यदि सुन्दर मुख सिफारिश पत्र है तो सुन्दर हृदय विश्वास-पत्र।

—बुलवर

मानव-हृदय एक रहस्यमय वस्तु है। —प्रेमचन्द ("वरदान")

हृदय की कोई भाषा नही है, हृदय हृदय से बातचीत करता है।

—महात्मा गांधी

A good heart is worth gold

सुन्दर हृदय का मूल्य स्वर्ण के सदृश है। —शेक्सपियर

तीर्थाना हृदय तीर्थं शुचीना हृदय शुचि। —वेदव्यास

तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ विशुद्ध हृदय है, पवित्र वस्तुओ में अति पवित्र भी विशुद्ध हृदय ही है।

मनुष्य का हृदय एक अथाह सागर है, जहाँ कमल के फूलों के साथ रक्त की प्यासी जोंके भी उत्पन्न होती रहती है। —अज्ञात

हाथ हाथ का अनुसरण करते हैं, नेत्र नेत्र पर ठहरते हैं और इस प्रकार हमारे हृदय का कार्य प्रारम्भ होता है। —रवीन्द्र

हृदय की आँख हमारे चर्मचक्षु से भी अधिक प्रवल है। —अज्ञात

Hearts are stronger than swords

हृदय कृपाण से अधिक शक्तिशाली होता है। —वेन्डेल फिलिप

The heart of a wise man should resemble a mirror, which reflects every object without being sullied by any

ज्ञानी पुरुष का हृदय दर्पण के सदृश होना चाहिए जो किसी वस्तु को विना दूषित किये हुए परावर्तित कर देता है। —कन्फ्यूशस

मनुष्य का हृदय अभिलाषाओं का क्रीडास्थल और कामनाओं का आवास है। —प्रेमचन्द

येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः।
नित्योत्सवस्तदा तेषां नित्यश्रीर्नित्यमंगलम्॥ —रामानुजाचार्य

जिनके हृदय में मंगलमय भगवान् विष्णु का आवास है उनके यहाँ सर्वदा उत्सव, सर्वदा मंगल और सर्वदा लक्ष्मी का निवास रहता है।

हृदयहीन

मनुष्य कितना ही हृदयहीन हो, उसके हृदय के किसी न किसी कोने में पराग की भाँति रस छिपा रहता है। जिस तरह पानी और पत्थर में आग छिपी रहती है उसी तरह मनुष्य के हृदय में भी—चाहे वह कैसा ही क्रूर और कठोर क्यों न हो, उत्कृष्ट और कोमल भाव छिपे रहते हैं। —प्रेमचन्द

केवल बुद्धि की वृद्धि होने से मनुष्य बहुधा हृदयशून्य हो जाता है। दया, प्रेम, शान्ति आदि हृदय के सात्विक गुण हैं। वे बुद्धि के प्रखर तेज से झुलस सकते हैं। —स्वामी विवेकानन्द

होनहार (दे० 'भावी')

जैसी हो भवितव्यता तैसी मिलै सहाय।
आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहाँ लै जाय॥ —तुलसी

विधि का लिखा को मेटन हारा। —तुलसी

होइहि सोइ जो रामरचि राखा। को करि तर्क बढावै साखा॥ —तुलसी

होनहार कितना प्रवल, कितना निष्ठुर और कितना निर्मम है। —प्रेमचन्द

तादृशी जायते बुद्धिर्व्यवसायोऽपि तादृग ।
सहायास्तादृशा एव यादृगी भवितव्यता॥ —चाणक्य

वैसी ही बुद्धि और वैसा ही उपाय होता है और वैसे ही सहायक मिलते हैं जैसा होनहार होता है।

करोतु नाम नीतिज्ञो व्यवसायमितस्तत ।
फल पुनस्तदेवास्य यद्विधेर्मनसि स्थितम॥ —हितोपदेश

नीति जाननेवाले इधर-उधर अपना प्रयास करें, किन्तु फल वही होगा जो विधाता के मन में है।

भवितव्याना द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र
—कालिदास (अभिज्ञान शाकुतल)

भावी को सर्वत्र द्वार खुला मिलता है।

अनुक्रमणिका

ग्रंथकारों की नामावली

च

फ

भ

स